

विदेह VIDEHA

विदेह-सदेह १-३७ विस्तृत अध्ययन

Videha Sadeha 1-37 Detailed Study

विदेह ई-लर्निङ्ग प्रश्नोत्तरी शृंखला · Videha eLearning Quiz Book Series

खण्ड ११ / २२ · Volume 11 of 22

सम्पादक / लेखक: गजेन्द्र ठाकुर

VIDEHA — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

विदेह ई-लर्निङ्ग: <https://www.videha.co.in/videha-elearning.htm>

© Gajendra Thakur, Editor — Videha eJournal [Beta Version; suggestions invited]

विषय-सूची / Contents

१. विदेह-सदेह १५ — विस्तृत अध्ययन

६५० प्रश्न

२. विदेह-सदेह १६ — विस्तृत अध्ययन

१८४९ प्रश्न

प्रत्येक अध्यायक प्रश्न-खण्डक बाद ओहि अध्यायक उत्तरमाला (उत्तर ओ व्याख्या) देल गेल अछि।

In each chapter, the answer key with explanations (उत्तरमाला) follows the questions.

अध्याय १ : विदेह-सदेह १५ — विस्तृत अध्ययन

खण्ड 2520 : विदेह-सदेह 15 — कुन्दन कुमार झा: गजल (पथिक)

१. खण्ड 2520, सूचकांक पंक्ति 1211: कुन्दन कुमार झाक “गजल (पथिक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गजल (पथिक)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२. खण्ड 2520, सूचकांक पंक्ति 1211: कुन्दन कुमार झाक “गजल (पथिक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३. खण्ड 2520, सूचकांक पंक्ति 1211: कुन्दन कुमार झाक “गजल (पथिक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४. खण्ड 2520, सूचकांक पंक्ति 1211: कुन्दन कुमार झाक “गजल (पथिक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) रूपक-प्रधान

५. खण्ड 2520, सूचकांक पंक्ति 1211: कुन्दन कुमार झाक “गजल (पथिक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) रूपक-प्रधान
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६. खण्ड 2520, सूचकांक पंक्ति 1211: कुन्दन कुमार झाक “गजल (पथिक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कुन्दन कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७. खण्ड 2520, सूचकांक पंक्ति 1211: कुन्दन कुमार झाक “गजल (पथिक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८. खण्ड 2520, सूचकांक पंक्ति 1211: कुन्दन कुमार झाक “गजल (पथिक)”क विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

९. खण्ड 2520, सूचकांक पंक्ति 1211: कुन्दन कुमार झाक “गजल (पथिक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०. खण्ड 2520, सूचकांक पंक्ति 1211: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2520, सूचकांक पंक्ति 1211मे कुन्दन कुमार झाक “गजल (पथिक)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “रूपक-प्रधान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2521 : विदेह-सदेह 15 — कुन्दन कुमार झा: गजल (अपने पाछू)

११. खण्ड 2521, सूचकांक पंक्ति 1212: कुन्दन कुमार झाक “गजल (अपने पाछू)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गजल (अपने पाछू)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२. खण्ड 2521, सूचकांक पंक्ति 1212: कुन्दन कुमार झाक “गजल (अपने पाछू)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३. खण्ड 2521, सूचकांक पंक्ति 1212: कुन्दन कुमार झाक “गजल (अपने पाछू)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४. खण्ड 2521, सूचकांक पंक्ति 1212: कुन्दन कुमार झाक “गजल (अपने पाछू)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) आत्मान्वेषण

१५. खण्ड 2521, सूचकांक पंक्ति 1212: कुन्दन कुमार झाक “गजल (अपने पाछू)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) आत्मान्वेषण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६. खण्ड 2521, सूचकांक पंक्ति 1212: कुन्दन कुमार झाक “गजल (अपने पाछू)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कुन्दन कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७. खण्ड 2521, सूचकांक पंक्ति 1212: कुन्दन कुमार झाक “गजल (अपने पाछू)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८. खण्ड 2521, सूचकांक पंक्ति 1212: कुन्दन कुमार झाक “गजल (अपने पाछू)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१९. खण्ड 2521, सूचकांक पंक्ति 1212: कुन्दन कुमार झाक “गजल (अपने पाछू)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०. खण्ड 2521, सूचकांक पंक्ति 1212: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2521, सूचकांक पंक्ति 1212मे कुन्दन कुमार झाक “गजल (अपने पाछू)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “आत्मान्वेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2522 : विदेह-सदेह 15 — कुन्दन कुमार झा: गजल (एगारह टप्पर)

२१. खण्ड 2522, सूचकांक पंक्ति 1213: कुन्दन कुमार झाक “गजल (एगारह टप्पर)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गजल (एगारह टप्पर)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२. खण्ड 2522, सूचकांक पंक्ति 1213: कुन्दन कुमार झाक “गजल (एगारह टप्पर)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३. खण्ड 2522, सूचकांक पंक्ति 1213: कुन्दन कुमार झाक “गजल (एगारह टप्पर)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४. खण्ड 2522, सूचकांक पंक्ति 1213: कुन्दन कुमार झाक “गजल (एगारह टप्पर)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सामाजिक व्यंग्य

२५. खण्ड 2522, सूचकांक पंक्ति 1213: कुन्दन कुमार झाक “गजल (एगारह टप्पर)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सामाजिक व्यंग्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६. खण्ड 2522, सूचकांक पंक्ति 1213: कुन्दन कुमार झाक “गजल (एगारह टप्पर)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कुन्दन कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७. खण्ड 2522, सूचकांक पंक्ति 1213: कुन्दन कुमार झाक “गजल (एगारह टप्पर)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८. खण्ड 2522, सूचकांक पंक्ति 1213: कुन्दन कुमार झाक “गजल (एगारह टप्पर)”कें विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२९. खण्ड 2522, सूचकांक पंक्ति 1213: कुन्दन कुमार झाक “गजल (एगारह टप्पर)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०. खण्ड 2522, सूचकांक पंक्ति 1213: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2522, सूचकांक पंक्ति 1213मे कुन्दन कुमार झाक “गजल (एगारह टप्पर)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “सामाजिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2523 : विदेह-सदेह 15 — कुन्दन कुमार झा: गजल (सपना)

३१. खण्ड 2523, सूचकांक पंक्ति 1214: कुन्दन कुमार झाक “गजल (सपना)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गजल (सपना)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२. खण्ड 2523, सूचकांक पंक्ति 1214: कुन्दन कुमार झाक “गजल (सपना)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३. खण्ड 2523, सूचकांक पंक्ति 1214: कुन्दन कुमार झाक “गजल (सपना)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४. खण्ड 2523, सूचकांक पंक्ति 1214: कुन्दन कुमार झाक “गजल (सपना)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) काल्पनिकता

३५. खण्ड 2523, सूचकांक पंक्ति 1214: कुन्दन कुमार झाक “गजल (सपना)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) काल्पनिकता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६. खण्ड 2523, सूचकांक पंक्ति 1214: कुन्दन कुमार झाक “गजल (सपना)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कुन्दन कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७. खण्ड 2523, सूचकांक पंक्ति 1214: कुन्दन कुमार झाक “गजल (सपना)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८. खण्ड 2523, सूचकांक पंक्ति 1214: कुन्दन कुमार झाक “गजल (सपना)”कें विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३९. खण्ड 2523, सूचकांक पंक्ति 1214: कुन्दन कुमार झाक “गजल (सपना)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०. खण्ड 2523, सूचकांक पंक्ति 1214: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2523, सूचकांक पंक्ति 1214मे कुन्दन कुमार झाक “गजल (सपना)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “काल्पनिकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2524 : विदेह-सदेह 15 — कुन्दन कुमार झा: गजल (सत्य)

४१. खण्ड 2524, सूचकांक पंक्ति 1215: कुन्दन कुमार झाक “गजल (सत्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गजल (सत्य)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२. खण्ड 2524, सूचकांक पंक्ति 1215: कुन्दन कुमार झाक “गजल (सत्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३. खण्ड 2524, सूचकांक पंक्ति 1215: कुन्दन कुमार झाक “गजल (सत्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४. खण्ड 2524, सूचकांक पंक्ति 1215: कुन्दन कुमार झाक “गजल (सत्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) यथार्थपरक

४५. खण्ड 2524, सूचकांक पंक्ति 1215: कुन्दन कुमार झाक “गजल (सत्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) यथार्थपरक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६. खण्ड 2524, सूचकांक पंक्ति 1215: कुन्दन कुमार झाक “गजल (सत्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कुन्दन कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७. खण्ड 2524, सूचकांक पंक्ति 1215: कुन्दन कुमार झाक “गजल (सत्य)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८. खण्ड 2524, सूचकांक पंक्ति 1215: कुन्दन कुमार झाक “गजल (सत्य)”कें विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४९. खण्ड 2524, सूचकांक पंक्ति 1215: कुन्दन कुमार झाक “गजल (सत्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०. खण्ड 2524, सूचकांक पंक्ति 1215: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2524, सूचकांक पंक्ति 1215मे कुन्दन कुमार झाक “गजल (सत्य)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “यथार्थपरक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2525 : विदेह-सदेह 15 — कुन्दन कुमार झा: गजल (घर-आँगन)

५१. खण्ड 2525, सूचकांक पंक्ति 1216: कुन्दन कुमार झाक “गजल (घर-आँगन)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गजल (घर-आँगन)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२. खण्ड 2525, सूचकांक पंक्ति 1216: कुन्दन कुमार झाक “गजल (घर-आँगन)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३. खण्ड 2525, सूचकांक पंक्ति 1216: कुन्दन कुमार झाक “गजल (घर-आँगन)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४. खण्ड 2525, सूचकांक पंक्ति 1216: कुन्दन कुमार झाक “गजल (घर-आँगन)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ग्रामीण-पारिवारिक

५५. खण्ड 2525, सूचकांक पंक्ति 1216: कुन्दन कुमार झाक “गजल (घर-आँगन)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ग्रामीण-पारिवारिक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६. खण्ड 2525, सूचकांक पंक्ति 1216: कुन्दन कुमार झाक “गजल (घर-आँगन)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कुन्दन कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७. खण्ड 2525, सूचकांक पंक्ति 1216: कुन्दन कुमार झाक “गजल (घर-आँगन)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८. खण्ड 2525, सूचकांक पंक्ति 1216: कुन्दन कुमार झाक “गजल (घर-आँगन)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५९. खण्ड 2525, सूचकांक पंक्ति 1216: कुन्दन कुमार झाक “गजल (घर-आँगन)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०. खण्ड 2525, सूचकांक पंक्ति 1216: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2525, सूचकांक पंक्ति 1216मे कुन्दन कुमार झाक “गजल (घर-आँगन)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “ग्रामीण-पारिवारिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2526 : विदेह-सदेह 15 — कुन्दन कुमार झा: गजल (राजनीति अउर मनुख)

६१. खण्ड 2526, सूचकांक पंक्ति 1217: कुन्दन कुमार झाक “गजल (राजनीति अउर मनुख)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गजल (राजनीति अउर मनुख)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२. खण्ड 2526, सूचकांक पंक्ति 1217: कुन्दन कुमार झाक “गजल (राजनीति अउर मनुख)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३. खण्ड 2526, सूचकांक पंक्ति 1217: कुन्दन कुमार झाक “गजल (राजनीति अउर मनुख)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४. खण्ड 2526, सूचकांक पंक्ति 1217: कुन्दन कुमार झाक “गजल (राजनीति अउर मनुख)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) राजनीतिक कटाक्ष

६५. खण्ड 2526, सूचकांक पंक्ति 1217: कुन्दन कुमार झाक “गजल (राजनीति अउर मनुख)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) राजनीतिक कटाक्ष
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६. खण्ड 2526, सूचकांक पंक्ति 1217: कुन्दन कुमार झाक “गजल (राजनीति अउर मनुख)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कुन्दन कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७. खण्ड 2526, सूचकांक पंक्ति 1217: कुन्दन कुमार झाक “गजल (राजनीति अउर मनुख)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८. खण्ड 2526, सूचकांक पंक्ति 1217: कुन्दन कुमार झाक “गजल (राजनीति अउर मनुख)”कें विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६९. खण्ड 2526, सूचकांक पंक्ति 1217: कुन्दन कुमार झाक “गजल (राजनीति अउर मनुख)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०. खण्ड 2526, सूचकांक पंक्ति 1217: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2526, सूचकांक पंक्ति 1217मे कुन्दन कुमार झाक “गजल (राजनीति अउर मनुख)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “राजनीतिक कटाक्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2527 : विदेह-सदेह 15 — राजदेव मण्डल: डायरीक पत्रा (१-१०)

७१. खण्ड 2527, सूचकांक पंक्ति 1218: राजदेव मण्डलक “डायरीक पत्रा (१-१०)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) डायरीक पत्रा (१-१०)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२. खण्ड 2527, सूचकांक पंक्ति 1218: राजदेव मण्डलक “डायरीक पत्रा (१-१०)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३. खण्ड 2527, सूचकांक पंक्ति 1218: राजदेव मण्डलक “डायरीक पत्रा (१-१०)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४. खण्ड 2527, सूचकांक पंक्ति 1218: राजदेव मण्डलक “डायरीक पत्रा (१-१०)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) दस टा कवितामे निजी डायरीक शैलीमे आत्म-संघर्ष

७५. खण्ड 2527, सूचकांक पंक्ति 1218: राजदेव मण्डलक “डायरीक पत्रा (१-१०)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) दस टा कवितामे निजी डायरीक शैलीमे आत्म-संघर्ष
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६. खण्ड 2527, सूचकांक पंक्ति 1218: राजदेव मण्डलक “डायरीक पत्रा (१-१०)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७. खण्ड 2527, सूचकांक पंक्ति 1218: राजदेव मण्डलक “डायरीक पत्रा (१-१०)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८. खण्ड 2527, सूचकांक पंक्ति 1218: राजदेव मण्डलक “डायरीक पत्रा (१-१०)”कें विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७९. खण्ड 2527, सूचकांक पंक्ति 1218: राजदेव मण्डलक “डायरीक पत्रा (१-१०)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०. खण्ड 2527, सूचकांक पंक्ति 1218: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2527, सूचकांक पंक्ति 1218मे राजदेव मण्डलक “डायरीक पत्रा (१-१०)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दस टा कवितामे निजी डायरीक शैलीमे आत्म-संघर्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2528 : विदेह-सदेह 15 — राजदेव मण्डल: डोलनी डाइन (काव्य-कथा १-७)

८१. खण्ड 2528, सूचकांक पंक्ति 1219: राजदेव मण्डलक “डोलनी डाइन (काव्य-कथा १-७)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) डोलनी डाइन (काव्य-कथा १-७)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२. खण्ड 2528, सूचकांक पंक्ति 1219: राजदेव मण्डलक “डोलनी डाइन (काव्य-कथा १-७)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३. खण्ड 2528, सूचकांक पंक्ति 1219: राजदेव मण्डलक “डोलनी डाइन (काव्य-कथा १-७)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) काव्य-कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४. खण्ड 2528, सूचकांक पंक्ति 1219: राजदेव मण्डलक “डोलनी डाइन (काव्य-कथा १-७)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) अन्धविश्वास

८५. खण्ड 2528, सूचकांक पंक्ति 1219: राजदेव मण्डलक “डोलनी डाइन (काव्य-कथा १-७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) अन्धविश्वास
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६. खण्ड 2528, सूचकांक पंक्ति 1219: राजदेव मण्डलक “डोलनी डाइन (काव्य-कथा १-७)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा काव्य-कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७. खण्ड 2528, सूचकांक पंक्ति 1219: राजदेव मण्डलक “डोलनी डाइन (काव्य-कथा १-७)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८. खण्ड 2528, सूचकांक पंक्ति 1219: राजदेव मण्डलक “डोलनी डाइन (काव्य-कथा १-७)”कें विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ काव्य-कथाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८९. खण्ड 2528, सूचकांक पंक्ति 1219: राजदेव मण्डलक “डोलनी डाइन (काव्य-कथा १-७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९०. खण्ड 2528, सूचकांक पंक्ति 1219: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2528, सूचकांक पंक्ति 1219मे राजदेव मण्डलक “डोलनी डाइन (काव्य-कथा १-७)” प्रविष्टि पद्य, काव्य-कथा आ “अन्धविश्वास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2529 : विदेह-सदेह 15 — राजदेव मण्डल: जानवरक बोली (कविता)

९१. खण्ड 2529, सूचकांक पंक्ति 1220: राजदेव मण्डलक “जानवरक बोली (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) जानवरक बोली (कविता)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९२. खण्ड 2529, सूचकांक पंक्ति 1220: राजदेव मण्डलक “जानवरक बोली (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९३. खण्ड 2529, सूचकांक पंक्ति 1220: राजदेव मण्डलक “जानवरक बोली (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९४. खण्ड 2529, सूचकांक पंक्ति 1220: राजदेव मण्डलक “जानवरक बोली (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रतीकात्मक

९५. खण्ड 2529, सूचकांक पंक्ति 1220: राजदेव मण्डलक “जानवरक बोली (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रतीकात्मक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९६. खण्ड 2529, सूचकांक पंक्ति 1220: राजदेव मण्डलक “जानवरक बोली (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७. खण्ड 2529, सूचकांक पंक्ति 1220: राजदेव मण्डलक “जानवरक बोली (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८. खण्ड 2529, सूचकांक पंक्ति 1220: राजदेव मण्डलक “जानवरक बोली (कविता)”कें विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१९. खण्ड 2529, सूचकांक पंक्ति 1220: राजदेव मण्डलक “जानवरक बोली (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००. खण्ड 2529, सूचकांक पंक्ति 1220: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2529, सूचकांक पंक्ति 1220मे राजदेव मण्डलक “जानवरक बोली (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रतीकात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2530 : विदेह-सदेह 15 — राजदेव मण्डल: अजगर (कविता)

१०१. खण्ड 2530, सूचकांक पंक्ति 1221: राजदेव मण्डलक “अजगर (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अजगर (कविता)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२. खण्ड 2530, सूचकांक पंक्ति 1221: राजदेव मण्डलक “अजगर (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३. खण्ड 2530, सूचकांक पंक्ति 1221: राजदेव मण्डलक “अजगर (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४. खण्ड 2530, सूचकांक पंक्ति 1221: राजदेव मण्डलक “अजगर (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) शोषकवर्गक अजगर सन निगलबाक आशंकाक चित्रण

१०५. खण्ड 2530, सूचकांक पंक्ति 1221: राजदेव मण्डलक “अजगर (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) शोषकवर्गक अजगर सन निगलबाक आशंकाक चित्रण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६. खण्ड 2530, सूचकांक पंक्ति 1221: राजदेव मण्डलक “अजगर (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७. खण्ड 2530, सूचकांक पंक्ति 1221: राजदेव मण्डलक “अजगर (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०८. खण्ड 2530, सूचकांक पंक्ति 1221: राजदेव मण्डलक “अजगर (कविता)”कें विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०९. खण्ड 2530, सूचकांक पंक्ति 1221: राजदेव मण्डलक “अजगर (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११०. खण्ड 2530, सूचकांक पंक्ति 1221: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2530, सूचकांक पंक्ति 1221मे राजदेव मण्डलक “अजगर (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शोषकवर्गक अजगर सन निगलबाक आशंकाक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2531 : विदेह-सदेह 15 — राजदेव मण्डल: अकासमे ठाढ़ पंछी (कविता)

१११. खण्ड 2531, सूचकांक पंक्ति 1222: राजदेव मण्डलक “अकासमे ठाढ़ पंछी (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अकासमे ठाढ़ पंछी (कविता)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११२. खण्ड 2531, सूचकांक पंक्ति 1222: राजदेव मण्डलक “अकासमे ठाढ़ पंछी (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११३. खण्ड 2531, सूचकांक पंक्ति 1222: राजदेव मण्डलक “अकासमे ठाढ़ पंछी (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११४. खण्ड 2531, सूचकांक पंक्ति 1222: राजदेव मण्डलक “अकासमे ठाढ़ पंछी (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ठहराएल प्रगति आ नियतिवादक प्रतीक

११५. खण्ड 2531, सूचकांक पंक्ति 1222: राजदेव मण्डलक “अकासमे ठाढ़ पंछी (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ठहराएल प्रगति आ नियतिवादक प्रतीक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११६. खण्ड 2531, सूचकांक पंक्ति 1222: राजदेव मण्डलक “अकासमे ठाढ़ पंछी (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११७. खण्ड 2531, सूचकांक पंक्ति 1222: राजदेव मण्डलक “अकासमे ठाढ़ पंछी (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११८. खण्ड 2531, सूचकांक पंक्ति 1222: राजदेव मण्डलक “अकासमे ठाढ़ पंछी (कविता)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११९. खण्ड 2531, सूचकांक पंक्ति 1222: राजदेव मण्डलक “अकासमे ठाढ़ पंछी (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२०. खण्ड 2531, सूचकांक पंक्ति 1222: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2531, सूचकांक पंक्ति 1222मे राजदेव मण्डलक “अकासमे ठाढ़ पंछी (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ठहराएल प्रगति आ नियतिवादक प्रतीक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2532 : विदेह-सदेह 15 — राजदेव मण्डल: बीआ केर पता (कविता)

१२१. खण्ड 2532, सूचकांक पंक्ति 1223: राजदेव मण्डलक “बीआ केर पता (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बीआ केर पता (कविता)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२२. खण्ड 2532, सूचकांक पंक्ति 1223: राजदेव मण्डलक “बीआ केर पता (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२३. खण्ड 2532, सूचकांक पंक्ति 1223: राजदेव मण्डलक “बीआ केर पता (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२४. खण्ड 2532, सूचकांक पंक्ति 1223: राजदेव मण्डलक “बीआ केर पता (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) आत्म-अन्वेषण

१२५. खण्ड 2532, सूचकांक पंक्ति 1223: राजदेव मण्डलक “बीआ केर पता (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) आत्म-अन्वेषण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२६. खण्ड 2532, सूचकांक पंक्ति 1223: राजदेव मण्डलक “बीआ केर पता (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२७. खण्ड 2532, सूचकांक पंक्ति 1223: राजदेव मण्डलक “बीआ केर पता (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२८. खण्ड 2532, सूचकांक पंक्ति 1223: राजदेव मण्डलक “बीआ केर पता (कविता)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२९. खण्ड 2532, सूचकांक पंक्ति 1223: राजदेव मण्डलक “बीआ केर पता (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३०. खण्ड 2532, सूचकांक पंक्ति 1223: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2532, सूचकांक पंक्ति 1223मे राजदेव मण्डलक “बीआ केर पता (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आत्म-अन्वेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2533 : विदेह-सदेह 15 — राजदेव मण्डल: कटैत गाछ (कविता)

१३१. खण्ड 2533, सूचकांक पंक्ति 1224: राजदेव मण्डलक “कटैत गाछ (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) कटैत गाछ (कविता)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३२. खण्ड 2533, सूचकांक पंक्ति 1224: राजदेव मण्डलक “कटैत गाछ (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३३. खण्ड 2533, सूचकांक पंक्ति 1224: राजदेव मण्डलक “कटैत गाछ (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३४. खण्ड 2533, सूचकांक पंक्ति 1224: राजदेव मण्डलक “कटैत गाछ (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) वृक्ष-आत्मकथात्मक

१३५. खण्ड 2533, सूचकांक पंक्ति 1224: राजदेव मण्डलक “कटैत गाछ (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) वृक्ष-आत्मकथात्मक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३६. खण्ड 2533, सूचकांक पंक्ति 1224: राजदेव मण्डलक “कटैत गाछ (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३७. खण्ड 2533, सूचकांक पंक्ति 1224: राजदेव मण्डलक “कटैत गाछ (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३८. खण्ड 2533, सूचकांक पंक्ति 1224: राजदेव मण्डलक “कटैत गाछ (कविता)”कें विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३९. खण्ड 2533, सूचकांक पंक्ति 1224: राजदेव मण्डलक “कटैत गाछ (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४०. खण्ड 2533, सूचकांक पंक्ति 1224: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2533, सूचकांक पंक्ति 1224मे राजदेव मण्डलक “कटैत गाछ (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वृक्ष-आत्मकथात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2534 : विदेह-सदेह 15 — राजदेव मण्डल: नमन, स्वरमे बास, अकाल, घरक आँख, अभ्यास, महफा आ अरछी, काटैत बीआ, कानैत ह...

१४१. खण्ड 2534, सूचकांक पंक्ति 1225: राजदेव मण्डलक “नमन, स्वरमे बास, अकाल, घरक आँख, अभ्यास, महफा आ अरछी, काटैत बीआ, कानैत हँसी, कनहेपर भोलबा, कुहेस, जानवरक ...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) नमन, स्वरमे बास, अकाल, घरक आँख, अभ्यास, महफा आ अरछी, काटैत बीआ, कानैत हँसी, कनहेपर भोलबा, कुहेस, जानवरक ...
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४२. खण्ड 2534, सूचकांक पंक्ति 1225: राजदेव मण्डलक “नमन, स्वरमे बास, अकाल, घरक आँख, अभ्यास, महफा आ अरछी, काटैत बीआ, कानैत हँसी, कनहेपर भोलबा, कुहेस, जानवरक ...”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४३. खण्ड 2534, सूचकांक पंक्ति 1225: राजदेव मण्डलक “नमन, स्वरमे बास, अकाल, घरक आँख, अभ्यास, महफा आ अरछी, काटैत बीआ, कानैत हँसी, कनहेपर भोलबा, कुहेस, जानवरक ...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४४. खण्ड 2534, सूचकांक पंक्ति 1225: राजदेव मण्डलक “नमन, स्वरमे बास, अकाल, घरक आँख, अभ्यास, महफा आ अरछी, काटैत बीआ, कानैत हँसी, कनहेपर भोलबा, कुहेस, जानवरक ...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बाइस टा स्वतन्त्र लघु-कवितामे विविध विषय

१४५. खण्ड 2534, सूचकांक पंक्ति 1225: राजदेव मण्डलक “नमन, स्वरमे बास, अकाल, घरक आँख, अभ्यास, महफा आ अरछी, काटैत बीआ, कानैत हँसी, कनहेपर भोलबा, कुहेस, जानवरक ...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बाइस टा स्वतन्त्र लघु-कवितामे विविध विषय
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४६. खण्ड 2534, सूचकांक पंक्ति 1225: राजदेव मण्डलक “नमन, स्वरमे बास, अकाल, घरक आँख, अभ्यास, महफा आ अरछी, काटैत बीआ, कानैत हँसी, कनहेपर भोलबा, कुहेस, जानवरक ...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४७. खण्ड 2534, सूचकांक पंक्ति 1225: राजदेव मण्डलक “नमन, स्वरमे बास, अकाल, घरक आँख, अभ्यास, महफा आ अरछी, काटैत बीआ, कानैत हँसी, कनहेपर भोलबा, कुहेस, जानवरक ...” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४८. खण्ड 2534, सूचकांक पंक्ति 1225: राजदेव मण्डलक “नमन, स्वरमे बास, अकाल, घरक आँख, अभ्यास, महफा आ अरछी, काटैत बीआ, कानैत हँसी, कनहेपर भोलबा, कुहेस, जानवरक ...”कें विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४९. खण्ड 2534, सूचकांक पंक्ति 1225: राजदेव मण्डलक “नमन, स्वरमे बास, अकाल, घरक आँख, अभ्यास, महफा आ अरछी, काटैत बीआ, कानैत हँसी, कनहेपर भोलबा, कुहेस, जानवरक ...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५०. खण्ड 2534, सूचकांक पंक्ति 1225: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2534, सूचकांक पंक्ति 1225मे राजदेव मण्डलक “नमन, स्वरमे बास, अकाल, घरक आँख, अभ्यास, महफा आ अरछी, काटैत बीआ, कानैत हँसी, कनहेपर भोलबा, कुहेस, जानवरक ...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बाइस टा स्वतन्त्र लघु-कवितामे विविध विषय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2535 : विदेह-सदेह 15 — सत्य नारायण झा: लहकैत समाज (कविता)

१५१. खण्ड 2535, सूचकांक पंक्ति 1226: सत्य नारायण झाक “लहकैत समाज (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) लहकैत समाज (कविता)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५२. खण्ड 2535, सूचकांक पंक्ति 1226: सत्य नारायण झाक “लहकैत समाज (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५३. खण्ड 2535, सूचकांक पंक्ति 1226: सत्य नारायण झाक “लहकैत समाज (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५४. खण्ड 2535, सूचकांक पंक्ति 1226: सत्य नारायण झाक “लहकैत समाज (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) निष्क्रिय

१५५. खण्ड 2535, सूचकांक पंक्ति 1226: सत्य नारायण झाक “लहकैत समाज (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) निष्क्रिय
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५६. खण्ड 2535, सूचकांक पंक्ति 1226: सत्य नारायण झाक “लहकैत समाज (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सत्य नारायण झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५७. खण्ड 2535, सूचकांक पंक्ति 1226: सत्य नारायण झाक “लहकैत समाज (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५८. खण्ड 2535, सूचकांक पंक्ति 1226: सत्य नारायण झाक “लहकैत समाज (कविता)”कें विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५९. खण्ड 2535, सूचकांक पंक्ति 1226: सत्य नारायण झाक “लहकैत समाज (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६०. खण्ड 2535, सूचकांक पंक्ति 1226: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2535, सूचकांक पंक्ति 1226मे सत्य नारायण झाक “लहकैत समाज (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “निष्क्रिय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2536 : विदेह-सदेह 15 — राम विलास साहु: किछु टुनका (कविता-पञ्चक)

१६१. खण्ड 2536, सूचकांक पंक्ति 1227: राम विलास साहुक “किछु टुनका (कविता-पञ्चक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) किछु टुनका (कविता-पञ्चक)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६२. खण्ड 2536, सूचकांक पंक्ति 1227: राम विलास साहुक “किछु टुनका (कविता-पञ्चक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६३. खण्ड 2536, सूचकांक पंक्ति 1227: राम विलास साहुक “किछु टुनका (कविता-पञ्चक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६४. खण्ड 2536, सूचकांक पंक्ति 1227: राम विलास साहुक “किछु टुनका (कविता-पञ्चक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रेम

१६५. खण्ड 2536, सूचकांक पंक्ति 1227: राम विलास साहुक “किछु टुनका (कविता-पञ्चक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रेम
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६६. खण्ड 2536, सूचकांक पंक्ति 1227: राम विलास साहुक “किछु टुनका (कविता-पञ्चक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६७. खण्ड 2536, सूचकांक पंक्ति 1227: राम विलास साहुक “किछु टुनका (कविता-पञ्चक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६८. खण्ड 2536, सूचकांक पंक्ति 1227: राम विलास साहुक “किछु टुनका (कविता-पञ्चक)”कें विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१६९. खण्ड 2536, सूचकांक पंक्ति 1227: राम विलास साहुक “किछु टुनका (कविता-पञ्चक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७०. खण्ड 2536, सूचकांक पंक्ति 1227: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2536, सूचकांक पंक्ति 1227मे राम विलास साहुक “किछु टुनका (कविता-पञ्चक)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2537 : विदेह-सदेह 15 — राम विलास साहु: मोह-माया (गीत), के बचेतौ तोहर जान (करुण गीत)

१७१. खण्ड 2537, सूचकांक पंक्ति 1228: राम विलास साहुक “मोह-माया (गीत), के बचेतौ तोहर जान (करुण गीत)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मोह-माया (गीत), के बचेतौ तोहर जान (करुण गीत)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७२. खण्ड 2537, सूचकांक पंक्ति 1228: राम विलास साहुक “मोह-माया (गीत), के बचेतौ तोहर जान (करुण गीत)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७३. खण्ड 2537, सूचकांक पंक्ति 1228: राम विलास साहुक “मोह-माया (गीत), के बचेतौ तोहर जान (करुण गीत)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गीत
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७४. खण्ड 2537, सूचकांक पंक्ति 1228: राम विलास साहुक “मोह-माया (गीत), के बचेतौ तोहर जान (करुण गीत)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) माया-जालक व्यंग्य

१७५. खण्ड 2537, सूचकांक पंक्ति 1228: राम विलास साहुक “मोह-माया (गीत), के बचेतौ तोहर जान (करुण गीत)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) माया-जालक व्यंग्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७६. खण्ड 2537, सूचकांक पंक्ति 1228: राम विलास साहुक “मोह-माया (गीत), के बचेतौ तोहर जान (करुण गीत)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा गीत
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७७. खण्ड 2537, सूचकांक पंक्ति 1228: राम विलास साहुक “मोह-माया (गीत), के बचेतौ तोहर जान (करुण गीत)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७८. खण्ड 2537, सूचकांक पंक्ति 1228: राम विलास साहुक “मोह-माया (गीत), के बचेतौ तोहर जान (करुण गीत)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१७९. खण्ड 2537, सूचकांक पंक्ति 1228: राम विलास साहुक “मोह-माया (गीत), के बचेतौ तोहर जान (करुण गीत)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८०. खण्ड 2537, सूचकांक पंक्ति 1228: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2537, सूचकांक पंक्ति 1228मे राम विलास साहुक “मोह-माया (गीत), के बचेतौ तोहर जान (करुण गीत)” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “माया-जालक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2538 : विदेह-सदेह 15 — सुरेन्द्र 'शैल': अभिसारिका (कविता)

१८१. खण्ड 2538, सूचकांक पंक्ति 1229: सुरेन्द्र 'शैल'क “अभिसारिका (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अभिसारिका (कविता)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८२. खण्ड 2538, सूचकांक पंक्ति 1229: सुरेन्द्र 'शैल'क “अभिसारिका (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८३. खण्ड 2538, सूचकांक पंक्ति 1229: सुरेन्द्र 'शैल'क “अभिसारिका (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८४. खण्ड 2538, सूचकांक पंक्ति 1229: सुरेन्द्र 'शैल'क “अभिसारिका (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) संस्कृतनिष्ठ शब्दावलीमे क्लासिकल शैलीक शृंगारिक वर्णन

१८५. खण्ड 2538, सूचकांक पंक्ति 1229: सुरेन्द्र 'शैल'क “अभिसारिका (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) संस्कृतनिष्ठ शब्दावलीमे क्लासिकल शैलीक शृंगारिक वर्णन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८६. खण्ड 2538, सूचकांक पंक्ति 1229: सुरेन्द्र 'शैल'क “अभिसारिका (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुरेन्द्र 'शैल', विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८७. खण्ड 2538, सूचकांक पंक्ति 1229: सुरेन्द्र 'शैल'क “अभिसारिका (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८८. खण्ड 2538, सूचकांक पंक्ति 1229: सुरेन्द्र 'शैल'क “अभिसारिका (कविता)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१८९. खण्ड 2538, सूचकांक पंक्ति 1229: सुरेन्द्र 'शैल'क “अभिसारिका (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९०. खण्ड 2538, सूचकांक पंक्ति 1229: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2538, सूचकांक पंक्ति 1229मे सुरेन्द्र 'शैल'क “अभिसारिका (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “संस्कृतनिष्ठ शब्दावलीमे क्लासिकल शैलीक शृंगारिक वर्णन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2539 : विदेह-सदेह 15 — सुरेन्द्र 'शैल': सासुर (व्यंग्य-प्रबन्ध)

१९१. खण्ड 2539, सूचकांक पंक्ति 1230: सुरेन्द्र 'शैल'क “सासुर (व्यंग्य-प्रबन्ध)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सासुर (व्यंग्य-प्रबन्ध)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९२. खण्ड 2539, सूचकांक पंक्ति 1230: सुरेन्द्र 'शैल'क “सासुर (व्यंग्य-प्रबन्ध)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९३. खण्ड 2539, सूचकांक पंक्ति 1230: सुरेन्द्र 'शैल'क “सासुर (व्यंग्य-प्रबन्ध)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९४. खण्ड 2539, सूचकांक पंक्ति 1230: सुरेन्द्र 'शैल'क “सासुर (व्यंग्य-प्रबन्ध)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सासुरक कटु अनुभवक हास्य-व्यंग्यपूर्ण लोक-गीतात्मक प्रबन्ध

१९५. खण्ड 2539, सूचकांक पंक्ति 1230: सुरेन्द्र 'शैल'क “सासुर (व्यंग्य-प्रबन्ध)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सासुरक कटु अनुभवक हास्य-व्यंग्यपूर्ण लोक-गीतात्मक प्रबन्ध
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९६. खण्ड 2539, सूचकांक पंक्ति 1230: सुरेन्द्र 'शैल'क “सासुर (व्यंग्य-प्रबन्ध)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुरेन्द्र 'शैल', विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९७. खण्ड 2539, सूचकांक पंक्ति 1230: सुरेन्द्र 'शैल'क “सासुर (व्यंग्य-प्रबन्ध)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९८. खण्ड 2539, सूचकांक पंक्ति 1230: सुरेन्द्र 'शैल'क “सासुर (व्यंग्य-प्रबन्ध)”कें विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१९९. खण्ड 2539, सूचकांक पंक्ति 1230: सुरेन्द्र 'शैल'क “सासुर (व्यंग्य-प्रबन्ध)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२००. खण्ड 2539, सूचकांक पंक्ति 1230: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2539, सूचकांक पंक्ति 1230मे सुरेन्द्र 'शैल'क “सासुर (व्यंग्य-प्रबन्ध)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सासुरक कटु अनुभवक हास्य-व्यंग्यपूर्ण लोक-गीतात्मक प्रबन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2540 : विदेह-सदेह 15 — राजीव रंजन मिश्र: गजल (१-२)

२०१. खण्ड 2540, सूचकांक पंक्ति 1231: राजीव रंजन मिश्रक “गजल (१-२)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गजल (१-२)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०२. खण्ड 2540, सूचकांक पंक्ति 1231: राजीव रंजन मिश्रक “गजल (१-२)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०३. खण्ड 2540, सूचकांक पंक्ति 1231: राजीव रंजन मिश्रक “गजल (१-२)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०४. खण्ड 2540, सूचकांक पंक्ति 1231: राजीव रंजन मिश्रक “गजल (१-२)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) जीवन-यात्रा आ आत्म-संघर्ष पर आधारित नव-शास्त्रीय गजल

२०५. खण्ड 2540, सूचकांक पंक्ति 1231: राजीव रंजन मिश्रक “गजल (१-२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) जीवन-यात्रा आ आत्म-संघर्ष पर आधारित नव-शास्त्रीय गजल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०६. खण्ड 2540, सूचकांक पंक्ति 1231: राजीव रंजन मिश्रक “गजल (१-२)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक राजीव रंजन मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०७. खण्ड 2540, सूचकांक पंक्ति 1231: राजीव रंजन मिश्रक “गजल (१-२)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०८. खण्ड 2540, सूचकांक पंक्ति 1231: राजीव रंजन मिश्रक “गजल (१-२)”कें विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२०९. खण्ड 2540, सूचकांक पंक्ति 1231: राजीव रंजन मिश्रक “गजल (१-२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१०. खण्ड 2540, सूचकांक पंक्ति 1231: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2540, सूचकांक पंक्ति 1231मे राजीव रंजन मिश्रक “गजल (१-२)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “जीवन-यात्रा आ आत्म-संघर्ष पर आधारित नव-शास्त्रीय गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2541 : विदेह-सदेह 15 — मुन्नाजी: बाल हाइकू (१२ टा)

२११. खण्ड 2541, सूचकांक पंक्ति 1232: मुन्नाजीक “बाल हाइकू (१२ टा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बाल हाइकू (१२ टा)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१२. खण्ड 2541, सूचकांक पंक्ति 1232: मुन्नाजीक “बाल हाइकू (१२ टा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१३. खण्ड 2541, सूचकांक पंक्ति 1232: मुन्नाजीक “बाल हाइकू (१२ टा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) हाइकू
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१४. खण्ड 2541, सूचकांक पंक्ति 1232: मुन्नाजीक “बाल हाइकू (१२ टा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बाल-मनोविज्ञान आ आधुनिक बाल-जीवनक सहज चित्रण करैत १२ टा मौलिक हाइकू

२१५. खण्ड 2541, सूचकांक पंक्ति 1232: मुन्नाजीक “बाल हाइकू (१२ टा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बाल-मनोविज्ञान आ आधुनिक बाल-जीवनक सहज चित्रण करैत १२ टा मौलिक हाइकू
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१६. खण्ड 2541, सूचकांक पंक्ति 1232: मुन्नाजीक “बाल हाइकू (१२ टा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक मुन्नाजी, विधा पद्य, उप-विधा हाइकू
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१७. खण्ड 2541, सूचकांक पंक्ति 1232: मुन्नाजीक “बाल हाइकू (१२ टा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१८. खण्ड 2541, सूचकांक पंक्ति 1232: मुन्नाजीक “बाल हाइकू (१२ टा)”कें विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ हाइकूक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२१९. खण्ड 2541, सूचकांक पंक्ति 1232: मुन्नाजीक “बाल हाइकू (१२ टा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२०. खण्ड 2541, सूचकांक पंक्ति 1232: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2541, सूचकांक पंक्ति 1232मे मुन्नाजीक “बाल हाइकू (१२ टा)” प्रविष्टि पद्य, हाइकू आ “बाल-मनोविज्ञान आ आधुनिक बाल-जीवनक सहज चित्रण करैत १२ टा मौलिक हाइकू” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2542 : विदेह-सदेह 15 — रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार': अभिनन्दन (कविता)

२२१. खण्ड 2542, सूचकांक पंक्ति 1233: रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क “अभिनन्दन (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अभिनन्दन (कविता)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२२. खण्ड 2542, सूचकांक पंक्ति 1233: रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारुदार'क “अभिनन्दन (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२३. खण्ड 2542, सूचकांक पंक्ति 1233: रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारुदार'क “अभिनन्दन (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२४. खण्ड 2542, सूचकांक पंक्ति 1233: रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारुदार'क “अभिनन्दन (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) विवाह-मंगलक शुभकामनात्मक कविता

२२५. खण्ड 2542, सूचकांक पंक्ति 1233: रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारुदार'क “अभिनन्दन (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) विवाह-मंगलक शुभकामनात्मक कविता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२६. खण्ड 2542, सूचकांक पंक्ति 1233: रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारुदार'क “अभिनन्दन (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारुदार', विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२७. खण्ड 2542, सूचकांक पंक्ति 1233: रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारुदार'क “अभिनन्दन (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२८. खण्ड 2542, सूचकांक पंक्ति 1233: रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारुदार'क “अभिनन्दन (कविता)”कें विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२२९. खण्ड 2542, सूचकांक पंक्ति 1233: रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क “अभिनन्दन (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३०. खण्ड 2542, सूचकांक पंक्ति 1233: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2542, सूचकांक पंक्ति 1233मे रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क “अभिनन्दन (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “विवाह-मंगलक शुभकामनात्मक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2543 : विदेह-सदेह 15 — इरा मल्लिक: बाल गजल (भरि रस्ता...)

२३१. खण्ड 2543, सूचकांक पंक्ति 1234: इरा मल्लिकक “बाल गजल (भरि रस्ता...)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बाल गजल (भरि रस्ता...)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३२. खण्ड 2543, सूचकांक पंक्ति 1234: इरा मल्लिकक “बाल गजल (भरि रस्ता...)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३३. खण्ड 2543, सूचकांक पंक्ति 1234: इरा मल्लिकक “बाल गजल (भरि रस्ता...)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बाल गजल
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३४. खण्ड 2543, सूचकांक पंक्ति 1234: इरा मल्लिकक “बाल गजल (भरि रस्ता...)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) वर्षा-ऋतुमे स्कूल जायबाक बालसुलभ कठिनाईक मार्मिक चित्रण

२३५. खण्ड 2543, सूचकांक पंक्ति 1234: इरा मल्लिकक “बाल गजल (भरि रस्ता...)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) वर्षा-ऋतुमे स्कूल जायबाक बालसुलभ कठिनाईक मार्मिक चित्रण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३६. खण्ड 2543, सूचकांक पंक्ति 1234: इरा मल्लिकक “बाल गजल (भरि रस्ता...)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक इरा मल्लिक, विधा पद्य, उप-विधा बाल गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३७. खण्ड 2543, सूचकांक पंक्ति 1234: इरा मल्लिकक “बाल गजल (भरि रस्ता...)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३८. खण्ड 2543, सूचकांक पंक्ति 1234: इरा मल्लिकक “बाल गजल (भरि रस्ता...)”कें विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बाल गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२३९. खण्ड 2543, सूचकांक पंक्ति 1234: इरा मल्लिकक “बाल गजल (भरि रस्ता...)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४०. खण्ड 2543, सूचकांक पंक्ति 1234: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2543, सूचकांक पंक्ति 1234मे इरा मल्लिकक “बाल गजल (भरि रस्ता...)” प्रविष्टि पद्य, बाल गजल आ “वर्षा-ऋतुमे स्कूल जायबाक बालसुलभ कठिनाईक मार्मिक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2544 : विदेह-सदेह 15 — इरा मल्लिक: बाल गजल (अछि बड़ जिद्दी बरसात)

२४१. खण्ड 2544, सूचकांक पंक्ति 1235: इरा मल्लिकक “बाल गजल (अछि बड़ जिद्दी बरसात)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बाल गजल (अछि बड़ जिद्दी बरसात)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४२. खण्ड 2544, सूचकांक पंक्ति 1235: इरा मल्लिकक “बाल गजल (अछि बड़ जिद्दी बरसात)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४३. खण्ड 2544, सूचकांक पंक्ति 1235: इरा मल्लिकक “बाल गजल (अछि बड़ जिद्दी बरसात)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बाल गजल
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४४. खण्ड 2544, सूचकांक पंक्ति 1235: इरा मल्लिकक “बाल गजल (अछि बड़ जिद्दी बरसात)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बरसातक मनमोहक उत्पातक बाल-दृष्टिसँ सजीव वर्णन

२४५. खण्ड 2544, सूचकांक पंक्ति 1235: इरा मल्लिकक “बाल गजल (अछि बड़ जिद्दी बरसात)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बरसातक मनमोहक उत्पातक बाल-दृष्टिसँ सजीव वर्णन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४६. खण्ड 2544, सूचकांक पंक्ति 1235: इरा मल्लिकक “बाल गजल (अछि बड़ जिद्दी बरसात)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक इरा मल्लिक, विधा पद्य, उप-विधा बाल गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४७. खण्ड 2544, सूचकांक पंक्ति 1235: इरा मल्लिकक “बाल गजल (अछि बड़ जिद्दी बरसात)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४८. खण्ड 2544, सूचकांक पंक्ति 1235: इरा मल्लिकक “बाल गजल (अछि बड़ जिद्दी बरसात)”कें विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बाल गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२४९. खण्ड 2544, सूचकांक पंक्ति 1235: इरा मल्लिकक “बाल गजल (अछि बड़ जिद्दी बरसात)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५०. खण्ड 2544, सूचकांक पंक्ति 1235: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2544, सूचकांक पंक्ति 1235मे इरा मल्लिकक “बाल गजल (अछि बड़ जिद्दी बरसात)” प्रविष्टि पद्य, बाल गजल आ “बरसातक मनमोहक उत्पातक बाल-दृष्टिसँ सजीव वर्णन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2545 : विदेह-सदेह 15 — इरा मल्लिक: शृंगार गजल (बरखा बरसै छै...)

२५१. खण्ड 2545, सूचकांक पंक्ति 1236: इरा मल्लिकक “शृंगार गजल (बरखा बरसै छै...)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) शृंगार गजल (बरखा बरसै छै...)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५२. खण्ड 2545, सूचकांक पंक्ति 1236: इरा मल्लिकक “शृंगार गजल (बरखा बरसै छै...)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५३. खण्ड 2545, सूचकांक पंक्ति 1236: इरा मल्लिकक “शृंगार गजल (बरखा बरसै छै...)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५४. खण्ड 2545, सूचकांक पंक्ति 1236: इरा मल्लिकक “शृंगार गजल (बरखा बरसै छै...)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) वर्षा-ऋतु आ विरह-मिलन पर आधारित प्रौढ़ शृंगारिक गजल

२५५. खण्ड 2545, सूचकांक पंक्ति 1236: इरा मल्लिकक “शृंगार गजल (बरखा बरसै छै...)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) वर्षा-ऋतु आ विरह-मिलन पर आधारित प्रौढ़ शृंगारिक गजल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५६. खण्ड 2545, सूचकांक पंक्ति 1236: इरा मल्लिकक “शृंगार गजल (बरखा बरसै छै...)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक इरा मल्लिक, विधा पद्य, उप-विधा गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५७. खण्ड 2545, सूचकांक पंक्ति 1236: इरा मल्लिकक “शृंगार गजल (बरखा बरसै छै...)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५८. खण्ड 2545, सूचकांक पंक्ति 1236: इरा मल्लिकक “शृंगार गजल (बरखा बरसै छै...)”कें विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२५९. खण्ड 2545, सूचकांक पंक्ति 1236: इरा मल्लिकक “शृंगार गजल (बरखा बरसै छै...)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६०. खण्ड 2545, सूचकांक पंक्ति 1236: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2545, सूचकांक पंक्ति 1236मे इरा मल्लिकक “शृंगार गजल (बरखा बरसै छै...)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “वर्षा-ऋतु आ विरह-मिलन पर आधारित प्रौढ़ शृंगारिक गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2546 : विदेह-सदेह 15 — बिन्देश्वर ठाकुर: गजल (अही छी हमर भवानी मैया)

२६१. खण्ड 2546, सूचकांक पंक्ति 1237: बिन्देश्वर ठाकुरक “गजल (अही छी हमर भवानी मैया)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गजल (अही छी हमर भवानी मैया)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६२. खण्ड 2546, सूचकांक पंक्ति 1237: बिन्देश्वर ठाकुरक “गजल (अही छी हमर भवानी मैया)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६३. खण्ड 2546, सूचकांक पंक्ति 1237: बिन्देश्वर ठाकुरक “गजल (अही छी हमर भवानी मैया)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६४. खण्ड 2546, सूचकांक पंक्ति 1237: बिन्देश्वर ठाकुरक “गजल (अही छी हमर भवानी मैया)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सरल वार्णिक बहर (१९ मात्रा)

२६५. खण्ड 2546, सूचकांक पंक्ति 1237: बिन्देश्वर ठाकुरक “गजल (अही छी हमर भवानी मैया)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सरल वार्णिक बहर (१९ मात्रा)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६६. खण्ड 2546, सूचकांक पंक्ति 1237: बिन्देश्वर ठाकुरक “गजल (अही छी हमर भवानी मैया)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक बिन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६७. खण्ड 2546, सूचकांक पंक्ति 1237: बिन्देश्वर ठाकुरक “गजल (अही छी हमर भवानी मैया)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६८. खण्ड 2546, सूचकांक पंक्ति 1237: बिन्देश्वर ठाकुरक “गजल (अही छी हमर भवानी मैया)”कें विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२६९. खण्ड 2546, सूचकांक पंक्ति 1237: बिन्देश्वर ठाकुरक “गजल (अही छी हमर भवानी मैया)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७०. खण्ड 2546, सूचकांक पंक्ति 1237: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2546, सूचकांक पंक्ति 1237मे बिन्देश्वर ठाकुरक “गजल (अही छी हमर भवानी मैया)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “सरल वार्णिक बहर (१९ मात्रा)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2547 : विदेह-सदेह 15 — बिन्देश्वर ठाकुर: पुनः चमकत रमझमला राज (कविता)

२७१. खण्ड 2547, सूचकांक पंक्ति 1238: बिन्देश्वर ठाकुरक “पुनः चमकत रमझमला राज (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) पुनः चमकत रमझमला राज (कविता)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७२. खण्ड 2547, सूचकांक पंक्ति 1238: बिन्देश्वर ठाकुरक “पुनः चमकत रमझमला राज (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७३. खण्ड 2547, सूचकांक पंक्ति 1238: बिन्देश्वर ठाकुरक “पुनः चमकत रमझमला राज (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७४. खण्ड 2547, सूचकांक पंक्ति 1238: बिन्देश्वर ठाकुरक “पुनः चमकत रमझमला राज (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मिथिला राज्यक पुनर्स्थापनाक स्वप्न आ भ्रष्टाचार-विरोधी राजनीतिक आह्वान

२७५. खण्ड 2547, सूचकांक पंक्ति 1238: बिन्देश्वर ठाकुरक “पुनः चमकत रमझमला राज (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मिथिला राज्यक पुनर्स्थापनाक स्वप्न आ भ्रष्टाचार-विरोधी राजनीतिक आह्वान
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७६. खण्ड 2547, सूचकांक पंक्ति 1238: बिन्देश्वर ठाकुरक “पुनः चमकत रमझमला राज (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककै की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक बिन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७७. खण्ड 2547, सूचकांक पंक्ति 1238: बिन्देश्वर ठाकुरक “पुनः चमकत रमझमला राज (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७८. खण्ड 2547, सूचकांक पंक्ति 1238: बिन्देश्वर ठाकुरक “पुनः चमकत रमझमला राज (कविता)” के विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२७९. खण्ड 2547, सूचकांक पंक्ति 1238: बिन्देश्वर ठाकुरक “पुनः चमकत रमझमला राज (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८०. खण्ड 2547, सूचकांक पंक्ति 1238: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2547, सूचकांक पंक्ति 1238मे बिन्देश्वर ठाकुरक “पुनः चमकत रमझमला राज (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मिथिला राज्यक पुनर्स्थापनाक स्वप्न आ भ्रष्टाचार-विरोधी राजनीतिक आह्वान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2548 : विदेह-सदेह 15 — अनिल मल्लिक: गजल (जिनगी भर'क साथ बीचेमे किए छोड़ि देलियै)

२८१. खण्ड 2548, सूचकांक पंक्ति 1239: अनिल मल्लिकक “गजल (जिनगी भर'क साथ बीचेमे किए छोड़ि देलियै)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गजल (जिनगी भर'क साथ बीचेमे किए छोड़ि देलियै)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८२. खण्ड 2548, सूचकांक पंक्ति 1239: अनिल मल्लिकक “गजल (जिनगी भर'क साथ बीचेमे किए छोड़ि देलियै)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८३. खण्ड 2548, सूचकांक पंक्ति 1239: अनिल मल्लिकक “गजल (जिनगी भर'क साथ बीचेमे किए छोड़ि देलियै)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८४. खण्ड 2548, सूचकांक पंक्ति 1239: अनिल मल्लिकक “गजल (जिनगी भर'क साथ बीचेमे किए छोड़ि देलियै)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) विरह-वेदनाक मार्मिक गजल (वर्ण-१८)

२८५. खण्ड 2548, सूचकांक पंक्ति 1239: अनिल मल्लिक “गजल (जिनगी भर'क साथ बीचेमे किए छोड़ि देलियै)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) विरह-वेदनाक मार्मिक गजल (वर्ण-१८)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८६. खण्ड 2548, सूचकांक पंक्ति 1239: अनिल मल्लिक “गजल (जिनगी भर'क साथ बीचेमे किए छोड़ि देलियै)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनिल मल्लिक, विधा पद्य, उप-विधा गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८७. खण्ड 2548, सूचकांक पंक्ति 1239: अनिल मल्लिक “गजल (जिनगी भर'क साथ बीचेमे किए छोड़ि देलियै)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८८. खण्ड 2548, सूचकांक पंक्ति 1239: अनिल मल्लिक “गजल (जिनगी भर'क साथ बीचेमे किए छोड़ि देलियै)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२८९. खण्ड 2548, सूचकांक पंक्ति 1239: अनिल मल्लिक “गजल (जिनगी भर'क साथ बीचेमे किए छोड़ि देलियै)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९०. खण्ड 2548, सूचकांक पंक्ति 1239: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2548, सूचकांक पंक्ति 1239मे अनिल मल्लिक “गजल (जिनगी भर'क साथ बीचेमे किए छोड़ि देलियै)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “विरह-वेदनाक मार्मिक गजल (वर्ण-१८)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2549 : विदेह-सदेह 15 — आशीष अनचिन्हार: विहनि गजल (ओकर हाथसँ छूल अछि देह)

२९१. खण्ड 2549, सूचकांक पंक्ति 1240: आशीष अनचिन्हारक “विहनि गजल (ओकर हाथसँ छूल अछि देह)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) विहनि गजल (ओकर हाथसँ छूल अछि देह)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९२. खण्ड 2549, सूचकांक पंक्ति 1240: आशीष अनचिन्हारक “विहनि गजल (ओकर हाथसँ छूल अछि देह)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९३. खण्ड 2549, सूचकांक पंक्ति 1240: आशीष अनचिन्हारक “विहनि गजल (ओकर हाथसँ छूल अछि देह)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९४. खण्ड 2549, सूचकांक पंक्ति 1240: आशीष अनचिन्हारक “विहनि गजल (ओकर हाथसँ छूल अछि देह)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रेम-भावना आ देह-वर्णनक दार्शनिक गजल (मात्रा-क्रम 222-2212-21)

२९५. खण्ड 2549, सूचकांक पंक्ति 1240: आशीष अनचिन्हारक “विहनि गजल (ओकर हाथसँ छूल अछि देह)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रेम-भावना आ देह-वर्णनक दार्शनिक गजल (मात्रा-क्रम 222-2212-21)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९६. खण्ड 2549, सूचकांक पंक्ति 1240: आशीष अनचिन्हारक “विहनि गजल (ओकर हाथसँ छूल अछि देह)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा पद्य, उप-विधा गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९७. खण्ड 2549, सूचकांक पंक्ति 1240: आशीष अनचिन्हारक “विहनि गजल (ओकर हाथसँ छूल अछि देह)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९८. खण्ड 2549, सूचकांक पंक्ति 1240: आशीष अनचिन्हारक “विहनि गजल (ओकर हाथसँ छूल अछि देह)”कें विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२९९. खण्ड 2549, सूचकांक पंक्ति 1240: आशीष अनचिन्हारक “विहनि गजल (ओकर हाथसँ छूल अछि देह)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे कएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३००. खण्ड 2549, सूचकांक पंक्ति 1240: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2549, सूचकांक पंक्ति 1240मे आशीष अनचिन्हारक “विहनि गजल (ओकर हाथसँ छूल अछि देह)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “प्रेम-भावना आ देह-वर्णनक दार्शनिक गजल (मात्रा-क्रम 222-2212-21)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2550 : विदेह-सदेह 15 — रवि भूषण पाठक: फसली पद्य (मकड़ जिन्दाबाद, खेसारी नवहरन, भगवान मरूआ..., १-७)

३०१. खण्ड 2550, सूचकांक पंक्ति 1241: रवि भूषण पाठकक “फसली पद्य (मकड़ जिन्दाबाद, खेसारी नवहरन, भगवान मरूआ..., १-७)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) फसली पद्य (मकड़ जिन्दाबाद, खेसारी नवहरन, भगवान मरूआ..., १-७)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०२. खण्ड 2550, सूचकांक पंक्ति 1241: रवि भूषण पाठकक “फसली पद्य (मकड़ जिन्दाबाद, खेसारी नवहरन, भगवान मरूआ..., १-७)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०३. खण्ड 2550, सूचकांक पंक्ति 1241: रवि भूषण पाठकक “फसली पद्य (मकड़ जिन्दाबाद, खेसारी नवहरन, भगवान मरूआ..., १-७)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०४. खण्ड 2550, सूचकांक पंक्ति 1241: रवि भूषण पाठकक “फसली पद्य (मकड़ जिन्दाबाद, खेसारी नवहरन, भगवान मरूआ..., १-७)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सात टा कविता

३०५. खण्ड 2550, सूचकांक पंक्ति 1241: रवि भूषण पाठकक “फसली पद्य (मकड़ जिन्दाबाद, खेसारी नवहरन, भगवान मरूआ..., १-७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सात टा कविता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०६. खण्ड 2550, सूचकांक पंक्ति 1241: रवि भूषण पाठकक “फसली पद्य (मकड़ जिन्दाबाद, खेसारी नवहरन, भगवान मरूआ..., १-७)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०७. खण्ड 2550, सूचकांक पंक्ति 1241: रवि भूषण पाठकक “फसली पद्य (मकड़ जिन्दाबाद, खेसारी नवहरन, भगवान मरूआ..., १-७)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०८. खण्ड 2550, सूचकांक पंक्ति 1241: रवि भूषण पाठकक “फसली पद्य (मकड़ जिन्दाबाद, खेसारी नवहरन, भगवान मरूआ..., १-७)”कें विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३०९. खण्ड 2550, सूचकांक पंक्ति 1241: रवि भूषण पाठकक “फसली पद्य (मकड़ जिन्दाबाद, खेसारी नवहरन, भगवान मरूआ..., १-७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१०. खण्ड 2550, सूचकांक पंक्ति 1241: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2550, सूचकांक पंक्ति 1241मे रवि भूषण पाठकक “फसली पद्य (मकड़ जिन्दाबाद, खेसारी नवहरन, भगवान मरूआ..., १-७)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सात टा कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2551 : विदेह-सदेह 15 — बाल मुकुन्द पाठक: गजल (हम हाल की कहाँ आब बेहाल अछि)

३११. खण्ड 2551, सूचकांक पंक्ति 1242: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (हम हाल की कहाँ आब बेहाल अछि)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गजल (हम हाल की कहाँ आब बेहाल अछि)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१२. खण्ड 2551, सूचकांक पंक्ति 1242: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (हम हाल की कहाँ आब बेहाल अछि)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१३. खण्ड 2551, सूचकांक पंक्ति 1242: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (हम हाल की कहीं आब बेहाल अछि)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१४. खण्ड 2551, सूचकांक पंक्ति 1242: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (हम हाल की कहीं आब बेहाल अछि)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सरल वार्णिक बहर (वर्ण-१४)

३१५. खण्ड 2551, सूचकांक पंक्ति 1242: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (हम हाल की कहीं आब बेहाल अछि)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सरल वार्णिक बहर (वर्ण-१४)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१६. खण्ड 2551, सूचकांक पंक्ति 1242: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (हम हाल की कहीं आब बेहाल अछि)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक बाल मुकुन्द पाठक, विधा पद्य, उप-विधा गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१७. खण्ड 2551, सूचकांक पंक्ति 1242: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (हम हाल की कहीं आब बेहाल अछि)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१८. खण्ड 2551, सूचकांक पंक्ति 1242: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (हम हाल की कहीं आब बेहाल अछि)”कें विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३१९. खण्ड 2551, सूचकांक पंक्ति 1242: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (हम हाल की कहीं आब बेहाल अछि)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२०. खण्ड 2551, सूचकांक पंक्ति 1242: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2551, सूचकांक पंक्ति 1242मे बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (हम हाल की कहाँ आब बेहाल अछि)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “सरल वार्णिक बहर (वर्ण-१४)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2552 : विदेह-सदेह 15 — बाल मुकुन्द पाठक: गजल (जहियासँ अपन घर नहि अछि)

३२१. खण्ड 2552, सूचकांक पंक्ति 1243: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (जहियासँ अपन घर नहि अछि)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गजल (जहियासँ अपन घर नहि अछि)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२२. खण्ड 2552, सूचकांक पंक्ति 1243: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (जहियासँ अपन घर नहि अछि)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२३. खण्ड 2552, सूचकांक पंक्ति 1243: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (जहियासँ अपन घर नहि अछि)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२४. खण्ड 2552, सूचकांक पंक्ति 1243: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (जहियासँ अपन घर नहि अछि)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सरल वार्णिक बहर (वर्ण-१३)

३२५. खण्ड 2552, सूचकांक पंक्ति 1243: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (जहियासँ अपन घर नहि अछि)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सरल वार्णिक बहर (वर्ण-१३)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२६. खण्ड 2552, सूचकांक पंक्ति 1243: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (जहियासँ अपन घर नहि अछि)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक बाल मुकुन्द पाठक, विधा पद्य, उप-विधा गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२७. खण्ड 2552, सूचकांक पंक्ति 1243: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (जहियासँ अपन घर नहि अछि)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२८. खण्ड 2552, सूचकांक पंक्ति 1243: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (जहियासँ अपन घर नहि अछि)”कें विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३२९. खण्ड 2552, सूचकांक पंक्ति 1243: बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (जहियासँ अपन घर नहि अछि)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३०. खण्ड 2552, सूचकांक पंक्ति 1243: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2552, सूचकांक पंक्ति 1243मे बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (जहियासँ अपन घर नहि अछि)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “सरल वार्णिक बहर (वर्ण-१३)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2553 : विदेह-सदेह 15 — अनामिका राज: क्षमाप्रार्थना (कविता)

३३१. खण्ड 2553, सूचकांक पंक्ति 1244: अनामिका राजक “क्षमाप्रार्थना (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) क्षमाप्रार्थना (कविता)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३२. खण्ड 2553, सूचकांक पंक्ति 1244: अनामिका राजक “क्षमाप्रार्थना (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३३. खण्ड 2553, सूचकांक पंक्ति 1244: अनामिका राजक “क्षमाप्रार्थना (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३४. खण्ड 2553, सूचकांक पंक्ति 1244: अनामिका राजक “क्षमाप्रार्थना (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नारी-पुरुष सम्बन्धक जटिलता आ स्त्री-अस्तित्वक द्वन्द्व पर दार्शनिक कविता

३३५. खण्ड 2553, सूचकांक पंक्ति 1244: अनामिका राजक “क्षमाप्रार्थना (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नारी-पुरुष सम्बन्धक जटिलता आ स्त्री-अस्तित्वक द्वन्द्व पर दार्शनिक कविता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३६. खण्ड 2553, सूचकांक पंक्ति 1244: अनामिका राजक “क्षमाप्रार्थना (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनामिका राज, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३७. खण्ड 2553, सूचकांक पंक्ति 1244: अनामिका राजक “क्षमाप्रार्थना (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३८. खण्ड 2553, सूचकांक पंक्ति 1244: अनामिका राजक “क्षमाप्रार्थना (कविता)”केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३३९. खण्ड 2553, सूचकांक पंक्ति 1244: अनामिका राजक “क्षमाप्रार्थना (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४०. खण्ड 2553, सूचकांक पंक्ति 1244: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2553, सूचकांक पंक्ति 1244मे अनामिका राजक “क्षमाप्रार्थना (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी-पुरुष सम्बन्धक जटिलता आ स्त्री-अस्तित्वक द्वन्द्व पर दार्शनिक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2554 : विदेह-सदेह 15 — सन्दीप कुमार साफी: बैशाखमे दलानपर..., सेवा, वर बिकाय लगनमे (कविता १-३)

३४१. खण्ड 2554, सूचकांक पंक्ति 1245: सन्दीप कुमार साफीक “बैशाखमे दलानपर..., सेवा, वर बिकाय लगनमे (कविता १-३)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बैशाखमे दलानपर..., सेवा, वर बिकाय लगनमे (कविता १-३)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४२. खण्ड 2554, सूचकांक पंक्ति 1245: सन्दीप कुमार साफीक “बैशाखमे दलानपर..., सेवा, वर बिकाय लगनमे (कविता १-३)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४३. खण्ड 2554, सूचकांक पंक्ति 1245: सन्दीप कुमार साफीक “बैशाखमे दलानपर..., सेवा, वर बिकाय लगनमे (कविता १-३)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४४. खण्ड 2554, सूचकांक पंक्ति 1245: सन्दीप कुमार साफीक “बैशाखमे दलानपर..., सेवा, वर बिकाय लगनमे (कविता १-३)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ग्रीष्म-वर्णन

३४५. खण्ड 2554, सूचकांक पंक्ति 1245: सन्दीप कुमार साफीक “बैशाखमे दलानपर..., सेवा, वर बिकाय लगनमे (कविता १-३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ग्रीष्म-वर्णन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४६. खण्ड 2554, सूचकांक पंक्ति 1245: सन्दीप कुमार साफीक “बैशाखमे दलानपर..., सेवा, वर बिकाय लगनमे (कविता १-३)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सन्दीप कुमार साफी, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४७. खण्ड 2554, सूचकांक पंक्ति 1245: सन्दीप कुमार साफीक “बैशाखमे दलानपर..., सेवा, वर बिकाय लगनमे (कविता १-३)” रचना/लेखकक कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४८. खण्ड 2554, सूचकांक पंक्ति 1245: सन्दीप कुमार साफीक “बैशाखमे दलानपर..., सेवा, वर बिकाय लगनमे (कविता १-३)” केँ विदेह-सदेह

15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३४९. खण्ड 2554, सूचकांक पंक्ति 1245: सन्दीप कुमार साफीक “बैशाखमे दलानपर..., सेवा, वर बिकाय लगनमे (कविता १-३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह

15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५०. खण्ड 2554, सूचकांक पंक्ति 1245: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2554, सूचकांक पंक्ति 1245मे सन्दीप कुमार साफीक “बैशाखमे दलानपर..., सेवा, वर बिकाय लगनमे (कविता १-३)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ग्रीष्म-वर्णन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2555 : विदेह-सदेह 15 — भालचन्द्र झा: आजुक बेटी (कविता)

३५१. खण्ड 2555, सूचकांक पंक्ति 1246: भालचन्द्र झाक “आजुक बेटी (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) आजुक बेटी (कविता)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५२. खण्ड 2555, सूचकांक पंक्ति 1246: भालचन्द्र झाक “आजुक बेटी (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५३. खण्ड 2555, सूचकांक पंक्ति 1246: भालचन्द्र झाक “आजुक बेटी (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५४. खण्ड 2555, सूचकांक पंक्ति 1246: भालचन्द्र झाक “आजुक बेटी (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कराटे क्लाससँ आत्मरक्षाक गुरु सिखैत आधुनिक बेटीक सशक्त चित्रण

३५५. खण्ड 2555, सूचकांक पंक्ति 1246: भालचन्द्र झाक “आजुक बेटी (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कराटे क्लाससँ आत्मरक्षाक गुर सिखैत आधुनिक बेटीक सशक्त चित्रण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५६. खण्ड 2555, सूचकांक पंक्ति 1246: भालचन्द्र झाक “आजुक बेटी (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक भालचन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५७. खण्ड 2555, सूचकांक पंक्ति 1246: भालचन्द्र झाक “आजुक बेटी (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५८. खण्ड 2555, सूचकांक पंक्ति 1246: भालचन्द्र झाक “आजुक बेटी (कविता)”कें विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३५९. खण्ड 2555, सूचकांक पंक्ति 1246: भालचन्द्र झाक “आजुक बेटी (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६०. खण्ड 2555, सूचकांक पंक्ति 1246: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2555, सूचकांक पंक्ति 1246मे भालचन्द्र झाक “आजुक बेटी (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “कराटे क्लाससँ आत्मरक्षाक गुर सिखैत आधुनिक बेटीक सशक्त चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2556 : विदेह-सदेह 15 — अमित मिश्र: हाथी गेलै भोज खाए (बाल-कविता)

३६१. खण्ड 2556, सूचकांक पंक्ति 1247: अमित मिश्रक “हाथी गेलै भोज खाए (बाल-कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) हाथी गेलै भोज खाए (बाल-कविता)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६२. खण्ड 2556, सूचकांक पंक्ति 1247: अमित मिश्रक “हाथी गेलै भोज खाए (बाल-कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६३. खण्ड 2556, सूचकांक पंक्ति 1247: अमित मिश्रक “हाथी गेलै भोज खाए (बाल-कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बाल-कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६४. खण्ड 2556, सूचकांक पंक्ति 1247: अमित मिश्रक “हाथी गेलै भोज खाए (बाल-कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भोजनमे पण्डित-हाथीक पेटूपन आ बकरीक विवशताक रोचक बाल-प्रबन्ध

३६५. खण्ड 2556, सूचकांक पंक्ति 1247: अमित मिश्रक “हाथी गेलै भोज खाए (बाल-कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भोजनमे पण्डित-हाथीक पेटूपन आ बकरीक विवशताक रोचक बाल-प्रबन्ध
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६६. खण्ड 2556, सूचकांक पंक्ति 1247: अमित मिश्रक “हाथी गेलै भोज खाए (बाल-कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अमित मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा बाल-कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६७. खण्ड 2556, सूचकांक पंक्ति 1247: अमित मिश्रक “हाथी गेलै भोज खाए (बाल-कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६८. खण्ड 2556, सूचकांक पंक्ति 1247: अमित मिश्रक “हाथी गेलै भोज खाए (बाल-कविता)”कें विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बाल-कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३६९. खण्ड 2556, सूचकांक पंक्ति 1247: अमित मिश्रक “हाथी गेलै भोज खाए (बाल-कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७०. खण्ड 2556, सूचकांक पंक्ति 1247: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2556, सूचकांक पंक्ति 1247मे अमित मिश्रक “हाथी गेलै भोज खाए (बाल-कविता)” प्रविष्टि पद्य, बाल-कविता आ “भोजनमे पण्डित-हाथीक पेटूपन आ बकरीक विवशताक रोचक बाल-प्रबन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2557 : विदेह-सदेह 15 — कामिनी कामायनी: संग देब सदिखन अहिना (कविता)

३७१. खण्ड 2557, सूचकांक पंक्ति 1248: कामिनी कामायनीक “संग देब सदिखन अहिना (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) संग देब सदिखन अहिना (कविता)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७२. खण्ड 2557, सूचकांक पंक्ति 1248: कामिनी कामायनीक “संग देब सदिखन अहिना (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७३. खण्ड 2557, सूचकांक पंक्ति 1248: कामिनी कामायनीक “संग देब सदिखन अहिना (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७४. खण्ड 2557, सूचकांक पंक्ति 1248: कामिनी कामायनीक “संग देब सदिखन अहिना (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रेम

३७५. खण्ड 2557, सूचकांक पंक्ति 1248: कामिनी कामायनीक “संग देब सदिखन अहिना (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रेम
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७६. खण्ड 2557, सूचकांक पंक्ति 1248: कामिनी कामायनीक “संग देब सदिखन अहिना (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कामिनी कामायनी, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७७. खण्ड 2557, सूचकांक पंक्ति 1248: कामिनी कामायनीक “संग देब सदिखन अहिना (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७८. खण्ड 2557, सूचकांक पंक्ति 1248: कामिनी कामायनीक “संग देब सदिखन अहिना (कविता)”कें विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३७९. खण्ड 2557, सूचकांक पंक्ति 1248: कामिनी कामायनीक “संग देब सदिखन अहिना (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८०. खण्ड 2557, सूचकांक पंक्ति 1248: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2557, सूचकांक पंक्ति 1248मे कामिनी कामायनीक “संग देब सदिखन अहिना (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2558 : विदेह-सदेह 15 — दुखन प्रसाद यादव: लीनाझपटी, आजादी सबहक जान छै, बिहार अछि सिरमौर धारा केर

३८१. खण्ड 2558, सूचकांक पंक्ति 1249: दुखन प्रसाद यादवक “लीनाझपटी, आजादी सबहक जान छै, बिहार अछि सिरमौर धारा केर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) लीनाझपटी, आजादी सबहक जान छै, बिहार अछि सिरमौर धारा केर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८२. खण्ड 2558, सूचकांक पंक्ति 1249: दुखन प्रसाद यादवक “लीनाझपटी, आजादी सबहक जान छै, बिहार अछि सिरमौर धारा केर”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८३. खण्ड 2558, सूचकांक पंक्ति 1249: दुखन प्रसाद यादवक “लीनाझपटी, आजादी सबहक जान छै, बिहार अछि सिरमौर धारा केर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८४. खण्ड 2558, सूचकांक पंक्ति 1249: दुखन प्रसाद यादवक “लीनाझपटी, आजादी सबहक जान छै, बिहार अछि सिरमौर धारा केर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भ्रष्टाचार

३८५. खण्ड 2558, सूचकांक पंक्ति 1249: दुखन प्रसाद यादवक “लीनाझपटी, आजादी सबहक जान छै, बिहार अछि सिरमौर धारा केर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भ्रष्टाचार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८६. खण्ड 2558, सूचकांक पंक्ति 1249: दुखन प्रसाद यादवक “लीनाझपटी, आजादी सबहक जान छै, बिहार अछि सिरमौर धारा केर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक दुखन प्रसाद यादव, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८७. खण्ड 2558, सूचकांक पंक्ति 1249: दुखन प्रसाद यादवक “लीनाझपटी, आजादी सबहक जान छै, बिहार अछि सिरमौर धारा केर” रचना/लेखकक कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८८. खण्ड 2558, सूचकांक पंक्ति 1249: दुखन प्रसाद यादवक “लीनाझपटी, आजादी सबहक जान छै, बिहार अछि सिरमौर धारा केर”कें विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३८९. खण्ड 2558, सूचकांक पंक्ति 1249: दुखन प्रसाद यादवक “लीनाझपटी, आजादी सबहक जान छै, बिहार अछि सिरमौर धारा केर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९०. खण्ड 2558, सूचकांक पंक्ति 1249: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2558, सूचकांक पंक्ति 1249मे दुखन प्रसाद यादवक “लीनाझपटी, आजादी सबहक जान छै, बिहार अछि सिरमौर धारा केर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भ्रष्टाचार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2559 : विदेह-सदेह 15 — सुबोध कुमार ठाकुर: केकरा सँ कहबै (कविता)

३९१. खण्ड 2559, सूचकांक पंक्ति 1250: सुबोध कुमार ठाकुरक “केकरा सँ कहबै (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) केकरा सँ कहबै (कविता)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९२. खण्ड 2559, सूचकांक पंक्ति 1250: सुबोध कुमार ठाकुरक “केकरा सँ कहबै (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९३. खण्ड 2559, सूचकांक पंक्ति 1250: सुबोध कुमार ठाकुरक “केकरा सँ कहबै (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९४. खण्ड 2559, सूचकांक पंक्ति 1250: सुबोध कुमार ठाकुरक “केकरा सँ कहबै (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रेम-पिपासा आ अभिव्यक्तिक असमर्थताक भावुक गीतात्मक कविता

३९५. खण्ड 2559, सूचकांक पंक्ति 1250: सुबोध कुमार ठाकुरक “केकरा सँ कहबै (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रेम-पिपासा आ अभिव्यक्तिक असमर्थताक भावुक गीतात्मक कविता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९६. खण्ड 2559, सूचकांक पंक्ति 1250: सुबोध कुमार ठाकुरक “केकरा सँ कहबै (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुबोध कुमार ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९७. खण्ड 2559, सूचकांक पंक्ति 1250: सुबोध कुमार ठाकुरक “केकरा सँ कहबै (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९८. खण्ड 2559, सूचकांक पंक्ति 1250: सुबोध कुमार ठाकुरक “केकरा सँ कहबै (कविता)”कें विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३९९. खण्ड 2559, सूचकांक पंक्ति 1250: सुबोध कुमार ठाकुरक “केकरा सँ कहबै (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४००. खण्ड 2559, सूचकांक पंक्ति 1250: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2559, सूचकांक पंक्ति 1250मे सुबोध कुमार ठाकुरक “केकरा सँ कहबै (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम-पिपासा आ अभिव्यक्तिक असमर्थताक भावुक गीतात्मक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2560 : विदेह-सदेह 15 — ओम प्रकाश झा: गजल (आइ किछु मोन पड़लै फेरसँ किए)

४०१. खण्ड 2560, सूचकांक पंक्ति 1251: ओम प्रकाश झाक “गजल (आइ किछु मोन पड़लै फेरसँ किए)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गजल (आइ किछु मोन पड़लै फेरसँ किए)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०२. खण्ड 2560, सूचकांक पंक्ति 1251: ओम प्रकाश झाक “गजल (आइ किछु मोन पड़लै फेरसँ किए)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०३. खण्ड 2560, सूचकांक पंक्ति 1251: ओम प्रकाश झाक “गजल (आइ किछु मोन पड़लै फेरसँ किए)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०४. खण्ड 2560, सूचकांक पंक्ति 1251: ओम प्रकाश झाक “गजल (आइ किछु मोन पड़लै फेरसँ किए)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) अरबी बहर — फाइलातुन-फऊलुन-मुस्तफइलुन

४०५. खण्ड 2560, सूचकांक पंक्ति 1251: ओम प्रकाश झाक “गजल (आइ किछु मोन पड़लै फेरसँ किए)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) अरबी बहर — फाइलातुन-फऊलुन-मुस्तफइलुन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०६. खण्ड 2560, सूचकांक पंक्ति 1251: ओम प्रकाश झाक “गजल (आइ किछु मोन पड़लै फेरसँ किए)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक ओम प्रकाश झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०७. खण्ड 2560, सूचकांक पंक्ति 1251: ओम प्रकाश झाक “गजल (आइ किछु मोन पड़लै फेरसँ किए)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०८. खण्ड 2560, सूचकांक पंक्ति 1251: ओम प्रकाश झाक “गजल (आइ किछु मोन पड़लै फेरसँ किए)”कें विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४०९. खण्ड 2560, सूचकांक पंक्ति 1251: ओम प्रकाश झाक “गजल (आइ किछु मोन पड़लै फेरसँ किए)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१०. खण्ड 2560, सूचकांक पंक्ति 1251: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2560, सूचकांक पंक्ति 1251मे ओम प्रकाश झाक “गजल (आइ किछु मोन पड़लै फेरसँ किए)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “अरबी बहर — फाइलातुन-फऊलुन-मुस्तफइलुन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2561 : विदेह-सदेह 15 — ओम प्रकाश झा: गजल (कहियो तँ हमर घरमे चान एतै)

४११. खण्ड 2561, सूचकांक पंक्ति 1252: ओम प्रकाश झाक “गजल (कहियो तँ हमर घरमे चान एतै)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गजल (कहियो तँ हमर घरमे चान एतै)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१२. खण्ड 2561, सूचकांक पंक्ति 1252: ओम प्रकाश झाक “गजल (कहियो तँ हमर घरमे चान एतै)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१३. खण्ड 2561, सूचकांक पंक्ति 1252: ओम प्रकाश झाक “गजल (कहियो तँ हमर घरमे चान एतै)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१४. खण्ड 2561, सूचकांक पंक्ति 1252: ओम प्रकाश झाक “गजल (कहियो तँ हमर घरमे चान एतै)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) अरबी बहर — मुस्तफइलुन-मफाईलुन-फऊलुन

४१५. खण्ड 2561, सूचकांक पंक्ति 1252: ओम प्रकाश झाक “गजल (कहियो तँ हमर घरमे चान एतै)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) अरबी बहर — मुस्तफइलुन-मफाईलुन-फऊलुन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१६. खण्ड 2561, सूचकांक पंक्ति 1252: ओम प्रकाश झाक “गजल (कहियो तँ हमर घरमे चान एतै)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक ओम प्रकाश झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१७. खण्ड 2561, सूचकांक पंक्ति 1252: ओम प्रकाश झाक “गजल (कहियो तँ हमर घरमे चान एतै)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१८. खण्ड 2561, सूचकांक पंक्ति 1252: ओम प्रकाश झाक “गजल (कहियो तँ हमर घरमे चान एतै)” केँ विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४१९. खण्ड 2561, सूचकांक पंक्ति 1252: ओम प्रकाश झाक “गजल (कहियो तँ हमर घरमे चान एतै)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२०. खण्ड 2561, सूचकांक पंक्ति 1252: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2561, सूचकांक पंक्ति 1252मे ओम प्रकाश झाक “गजल (कहियो तँ हमर घरमे चान एतै)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “अरबी बहर — मुस्तफइलुन-मफाईलुन-फऊलुन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2562 : विदेह-सदेह 15 — गंगेश गुंजन: गजल (नेता जी बकवास करै छथि)

४२१. खण्ड 2562, सूचकांक पंक्ति 1253: गंगेश गुंजनक “गजल (नेता जी बकवास करै छथि)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गजल (नेता जी बकवास करै छथि)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२२. खण्ड 2562, सूचकांक पंक्ति 1253: गंगेश गुंजनक “गजल (नेता जी बकवास करै छथि)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२३. खण्ड 2562, सूचकांक पंक्ति 1253: गंगेश गुंजनक “गजल (नेता जी बकवास करै छथि)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२४. खण्ड 2562, सूचकांक पंक्ति 1253: गंगेश गुंजनक “गजल (नेता जी बकवास करै छथि)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भ्रष्टाचारी आ जनविरोधी राजनीतिक नेतृत्व पर करारा व्यंग्य

४२५. खण्ड 2562, सूचकांक पंक्ति 1253: गंगेश गुंजनक “गजल (नेता जी बकवास करै छथि)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भ्रष्टाचारी आ जनविरोधी राजनीतिक नेतृत्व पर करारा व्यंग्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२६. खण्ड 2562, सूचकांक पंक्ति 1253: गंगेश गुंजनक “गजल (नेता जी बकवास करै छथि)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२७. खण्ड 2562, सूचकांक पंक्ति 1253: गंगेश गुंजनक “गजल (नेता जी बकवास करै छथि)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२८. खण्ड 2562, सूचकांक पंक्ति 1253: गंगेश गुंजनक “गजल (नेता जी बकवास करै छथि)”कें विदेह-सदेह 15क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४२९. खण्ड 2562, सूचकांक पंक्ति 1253: गंगेश गुंजनक “गजल (नेता जी बकवास करै छथि)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 15क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३०. खण्ड 2562, सूचकांक पंक्ति 1253: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2562, सूचकांक पंक्ति 1253मे गंगेश गुंजनक “गजल (नेता जी बकवास करै छथि)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “भ्रष्टाचारी आ जनविरोधी राजनीतिक नेतृत्व पर करारा व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 5245 : विदेह-सदेह 15 — सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर — विदेह प्रवेशिका (अंक १५)

४३१. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १५)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) कोसी बाढ़िपर विशेष; नेपाल-भारतक सांस्कृतिक कार्यक्रम।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

४३२. 'विदेह प्रवेशिका (अंक १५)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) कोसी बाढ़िपर विशेष; नेपाल-भारतक सांस्कृतिक कार्यक्रम।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

४३३. 'विदेह प्रवेशिका (अंक १५)'कें सम्पादकीय रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) कोसी बाढ़िपर विशेष; नेपाल-भारतक सांस्कृतिक कार्यक्रम।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

४३४. 'विदेह प्रवेशिका (अंक १५)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक कोसी बाढ़िपर विशेष; नेपाल-भारतक सांस्कृतिक कार्यक्रम। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

४३५. 'विदेह प्रवेशिका (अंक १५)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) कोसी बाढ़िपर विशेष; नेपाल-भारतक सांस्कृतिक कार्यक्रम।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

४३६. 'विदेह प्रवेशिका (अंक १५)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) कोसी बाढ़िपर विशेष; नेपाल-भारतक सांस्कृतिक कार्यक्रम।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

४३७. 'विदेह प्रवेशिका (अंक १५)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) कोसी बाढ़िपर विशेष; नेपाल-भारतक सांस्कृतिक कार्यक्रम।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

४३८. 'विदेह प्रवेशिका (अंक १५)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) कोसी बाढ़िपर विशेष; नेपाल-भारतक सांस्कृतिक कार्यक्रम।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

४३९. 'विदेह प्रवेशिका (अंक १५)'मे सम्पादकीयक रूप कथ्य कें कोना सहारा दैत अछि?

- (A) सम्पादकीयक रूप कोसी बाढ़िपर विशेष; नेपाल-भारतक सांस्कृतिक कार्यक्रम। कें स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकें मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

४४०. 'विदेह प्रवेशिका (अंक १५)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ कोसी बाढ़िपर विशेष; नेपाल-भारतक सांस्कृतिक कार्यक्रम। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5246 : विदेह-सदेह 15 — जितेन्द्र झा — नेपाल वन आ मधेश स्पेशल

४४१. 'नेपाल वन आ मधेश स्पेशल'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) नेपाल टी.वी. पर मैथिली कार्यक्रमक प्रसारण।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

४४२. 'नेपाल वन आ मधेश स्पेशल'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) नेपाल टी.वी. पर मैथिली कार्यक्रमक प्रसारण।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

४४३. 'नेपाल वन आ मधेश स्पेशल'केँ रिपोर्टाज रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) नेपाल टी.वी. पर मैथिली कार्यक्रमक प्रसारण।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

४४४. 'नेपाल वन आ मधेश स्पेशल'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक नेपाल टी.वी. पर मैथिली कार्यक्रमक प्रसारण। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

४४५. 'नेपाल वन आ मधेश स्पेशल'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) नेपाल टी.वी. पर मैथिली कार्यक्रमक प्रसारण।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

४४६. 'नेपाल वन आ मधेश स्पेशल'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) नेपाल टी.वी. पर मैथिली कार्यक्रमक प्रसारण।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

४४७. 'नेपाल वन आ मधेश स्पेशल'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) नेपाल टी.वी. पर मैथिली कार्यक्रमक प्रसारण।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

४४८. 'नेपाल वन आ मधेश स्पेशल' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) नेपाल टी.वी. पर मैथिली कार्यक्रमक प्रसारण।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

४४९. 'नेपाल वन आ मधेश स्पेशल'मे रिपोर्ताजक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) रिपोर्ताजक रूप नेपाल टी.वी. पर मैथिली कार्यक्रमक प्रसारण। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

४५०. 'नेपाल वन आ मधेश स्पेशल' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ नेपाल टी.वी. पर मैथिली कार्यक्रमक प्रसारण। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5247 : विदेह-सदेह 15 — उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' — नो एंट्री: मा प्रविश (चारिम कल्लोल अन्तिम खेप)

४५१. 'नो एंट्री: मा प्रविश (चारिम कल्लोल अन्तिम खेप)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) यमराजक न्याय-प्रक्रिया; नाटकक समापन।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

४५२. 'नो एंट्री: मा प्रविश (चारिम कल्लोल अन्तिम खेप)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) यमराजक न्याय-प्रक्रिया; नाटकक समापन।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

४५३. 'नो एंट्री: मा प्रविश (चारिम कल्लोल अन्तिम खेप)'केँ नाटक रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) यमराजक न्याय-प्रक्रिया; नाटकक समापन।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

४५४. 'नो एंट्री: मा प्रविश (चारिम कल्लोल अन्तिम खेप)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक यमराजक न्याय-प्रक्रिया; नाटकक समापन। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

४५५. 'नो एंट्री: मा प्रविश (चारिम कल्लोल अन्तिम खेप)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) यमराजक न्याय-प्रक्रिया; नाटकक समापन।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

४५६. 'नो एंट्री: मा प्रविश (चारिम कल्लोल अन्तिम खेप)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) यमराजक न्याय-प्रक्रिया; नाटकक समापन।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

४५७. 'नो एंट्री: मा प्रविश (चारिम कल्लोल अन्तिम खेप)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) यमराजक न्याय-प्रक्रिया; नाटकक समापन।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

४५८. 'नो एंट्री: मा प्रविश (चारिम कल्लोल अन्तिम खेप)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) यमराजक न्याय-प्रक्रिया; नाटकक समापन।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

४५९. 'नो एंट्री: मा प्रविश (चारिम कल्लोल अन्तिम खेप)'मे नाटकक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) नाटकक रूप यमराजक न्याय-प्रक्रिया; नाटकक समापन। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

४६०. 'नो एंट्री: मा प्रविश (चारिम कल्लोल अन्तिम खेप)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ यमराजक न्याय-प्रक्रिया; नाटकक समापन। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5248 : विदेह-सदेह 15 — भालचन्द्र झा — चूल्हि

४६१. 'चूल्हि'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) स्त्री-जीवनक शोषण आ चूल्हिक प्रतीकात्मक कथा।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

४६२. 'चूल्हि'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) स्त्री-जीवनक शोषण आ चूल्हिक प्रतीकात्मक कथा।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

४६३. 'चूल्हि'केँ कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) स्त्री-जीवनक शोषण आ चूल्हिक प्रतीकात्मक कथा।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

४६४. 'चूल्हे'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक स्त्री-जीवनक शोषण आ चूल्हेक प्रतीकात्मक कथा। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

४६५. 'चूल्हे'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) स्त्री-जीवनक शोषण आ चूल्हेक प्रतीकात्मक कथा।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

४६६. 'चूल्हे'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) स्त्री-जीवनक शोषण आ चूल्हेक प्रतीकात्मक कथा।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

४६७. 'चूल्हे'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) स्त्री-जीवनक शोषण आ चूल्हेक प्रतीकात्मक कथा।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

४६८. 'चूल्हे' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) स्त्री-जीवनक शोषण आ चूल्हेक प्रतीकात्मक कथा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

४६९. 'चूल्हे'मे कथाक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) कथाक रूप स्त्री-जीवनक शोषण आ चूल्हेक प्रतीकात्मक कथा। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

४७०. 'चूल्हे' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ स्त्री-जीवनक शोषण आ चूल्हेक प्रतीकात्मक कथा। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5249 : विदेह-सदेह 15 — विभा रानी — माउगि

४७१. 'माउगि'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) साम्प्रदायिक दंगामे स्त्री-एकताक राजनीतिक व्यंग्य।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

४७२. 'माउगि'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) साम्प्रदायिक दंगामे स्त्री-एकताक राजनीतिक व्यंग्य।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

४७३. 'माउगि'क कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) साम्प्रदायिक दंगामे स्त्री-एकताक राजनीतिक व्यंग्य।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

४७४. 'माउगि'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक साम्प्रदायिक दंगामे स्त्री-एकताक राजनीतिक व्यंग्य। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

४७५. 'माउगि'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) साम्प्रदायिक दंगामे स्त्री-एकताक राजनीतिक व्यंग्य।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

४७६. 'माउगि'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) साम्प्रदायिक दंगामे स्त्री-एकताक राजनीतिक व्यंग्य।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

४७७. 'माउगि'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) साम्प्रदायिक दंगामे स्त्री-एकताक राजनीतिक व्यंग्य।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

४७८. 'माउगि' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) साम्प्रदायिक दंगामे स्त्री-एकताक राजनीतिक व्यंग्य।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

४७९. 'माउगि'मे कथाक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) कथाक रूप साम्प्रदायिक दंगामे स्त्री-एकताक राजनीतिक व्यंग्य। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

४८०. 'माउगि' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ साम्प्रदायिक दंगामे स्त्री-एकताक राजनीतिक व्यंग्य। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5250 : विदेह-सदेह 15 — मैथिलीपुत्र प्रदीप — ॐ (मा): यज्ञक प्रकार आ नासदीय सूक्त

४८१. 'ॐ (मा): यज्ञक प्रकार आ नासदीय सूक्त'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) नित्य-नैमित्तिक यज्ञ; ऋग्वेदक सृष्टि-सूक्त।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

४८२. 'ॐ (मा): यज्ञक प्रकार आ नासदीय सूक्त'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) नित्य-नैमित्तिक यज्ञ; ऋग्वेदक सृष्टि-सूक्त।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

४८३. 'ॐ (मा): यज्ञक प्रकार आ नासदीय सूक्त'केँ आध्यात्मिक निबन्ध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) नित्य-नैमित्तिक यज्ञ; ऋग्वेदक सृष्टि-सूक्त।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

४८४. 'ॐ (मा): यज्ञक प्रकार आ नासदीय सूक्त'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक नित्य-नैमित्तिक यज्ञ; ऋग्वेदक सृष्टि-सूक्त। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

४८५. 'ॐ (मा): यज्ञक प्रकार आ नासदीय सूक्त'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) नित्य-नैमित्तिक यज्ञ; ऋग्वेदक सृष्टि-सूक्त।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

४८६. 'ॐ (मा): यज्ञक प्रकार आ नासदीय सूक्त'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) नित्य-नैमित्तिक यज्ञ; ऋग्वेदक सृष्टि-सूक्त।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

४८७. 'ॐ (मा): यज्ञक प्रकार आ नासदीय सूक्त'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) नित्य-नैमित्तिक यज्ञ; ऋग्वेदक सृष्टि-सूक्त।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

४८८. 'ॐ (मा): यज्ञक प्रकार आ नासदीय सूक्त' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) नित्य-नैमित्तिक यज्ञ; ऋग्वेदक सृष्टि-सूक्त।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

४८९. 'ॐ (मा): यज्ञक प्रकार आ नासदीय सूक्त'मे आध्यात्मिक निबन्धक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) आध्यात्मिक निबन्धक रूप नित्य-नैमित्तिक यज्ञ; ऋग्वेदक सृष्टि-सूक्त। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

४९०. 'ॐ (मा): यज्ञक प्रकार आ नासदीय सूक्त' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ नित्य-नैमित्तिक यज्ञ; ऋग्वेदक सृष्टि-सूक्त। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5251 : विदेह-सदेह 15 — पालन झा — सन्त साहेब रामदास (पुत्र-वियोग आ वैराग्य)

४९१. 'सन्त साहेब रामदास (पुत्र-वियोग आ वैराग्य)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) प्रीतमक मृत्युपर साहेब रामदासक वैराग्य।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

४९२. 'सन्त साहेब रामदास (पुत्र-वियोग आ वैराग्य)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) प्रीतमक मृत्युपर साहेब रामदासक वैराग्य।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

४९३. 'सन्त साहेब रामदास (पुत्र-वियोग आ वैराग्य)'केँ जीवनी रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) प्रीतमक मृत्युपर साहेब रामदासक वैराग्य।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

४९४. 'सन्त साहेब रामदास (पुत्र-वियोग आ वैराग्य)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक प्रीतमक मृत्युपर साहेब रामदासक वैराग्य। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

४९५. 'सन्त साहेब रामदास (पुत्र-वियोग आ वैराग्य)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) प्रीतमक मृत्युपर साहेब रामदासक वैराग्य।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

४९६. 'सन्त साहेब रामदास (पुत्र-वियोग आ वैराग्य)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) प्रीतमक मृत्युपर साहेब रामदासक वैराग्य।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

४९७. 'सन्त साहेब रामदास (पुत्र-वियोग आ वैराग्य)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) प्रीतमक मृत्युपर साहेब रामदासक वैराग्य।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

४९८. 'सन्त साहेब रामदास (पुत्र-वियोग आ वैराग्य)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) प्रीतमक मृत्युपर साहेब रामदासक वैराग्य।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

४९९. 'सन्त साहेब रामदास (पुत्र-वियोग आ वैराग्य)'मे जीवनीक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) जीवनीक रूप प्रीतमक मृत्युपर साहेब रामदासक वैराग्य। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

५००. 'सन्त साहेब रामदास (पुत्र-वियोग आ वैराग्य)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ प्रीतमक मृत्युपर साहेब रामदासक वैराग्य। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5252 : विदेह-सदेह 15 — ज्योति झा चौधरी — दैनिकी (दोसर दिन)

५०१. 'दैनिकी (दोसर दिन)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) कोलकाता भ्रमणक दोसर दिनक संस्मरण।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

५०२. 'दैनिकी (दोसर दिन)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) कोलकाता भ्रमणक दोसर दिनक संस्मरण।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

५०३. 'दैनिकी (दोसर दिन)'केँ यात्रा-वृत्तान्त रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) कोलकाता भ्रमणक दोसर दिनक संस्मरण।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

५०४. 'दैनिकी (दोसर दिन)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक कोलकाता भ्रमणक दोसर दिनक संस्मरण। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

५०५. 'दैनिकी (दोसर दिन)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) कोलकाता भ्रमणक दोसर दिनक संस्मरण।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

५०६. 'दैनिकी (दोसर दिन)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) कोलकाता भ्रमणक दोसर दिनक संस्मरण।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

५०७. 'दैनिकी (दोसर दिन)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) कोलकाता भ्रमणक दोसर दिनक संस्मरण।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

५०८. 'दैनिकी (दोसर दिन)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) कोलकाता भ्रमणक दोसर दिनक संस्मरण।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

५०९. 'दैनिकी (दोसर दिन)'मे यात्रा-वृत्तान्तक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) यात्रा-वृत्तान्तक रूप कोलकाता भ्रमणक दोसर दिनक संस्मरण। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

५१०. 'दैनिकी (दोसर दिन)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ कोलकाता भ्रमणक दोसर दिनक संस्मरण। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5253 : विदेह-सदेह 15 — प्रेम शंकर सिंह — बीसम शताब्दी मैथिली साहित्यक स्वर्णिम युग (आगाँ)

५११. 'बीसम शताब्दी मैथिली साहित्यक स्वर्णिम युग (आगाँ)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) शताब्दीक काव्य-गद्य-पत्रिका-प्रकाशनक इतिहास।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

५१२. 'बीसम शताब्दी मैथिली साहित्यक स्वर्णिम युग (आगाँ)' मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) शताब्दीक काव्य-गद्य-पत्रिका-प्रकाशनक इतिहास।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

५१३. 'बीसम शताब्दी मैथिली साहित्यक स्वर्णिम युग (आगाँ)' केँ साहित्येतिहास रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) शताब्दीक काव्य-गद्य-पत्रिका-प्रकाशनक इतिहास।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

५१४. 'बीसम शताब्दी मैथिली साहित्यक स्वर्णिम युग (आगाँ)' क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक शताब्दीक काव्य-गद्य-पत्रिका-प्रकाशनक इतिहास। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

५१५. 'बीसम शताब्दी मैथिली साहित्यक स्वर्णिम युग (आगाँ)' मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) शताब्दीक काव्य-गद्य-पत्रिका-प्रकाशनक इतिहास।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

५१६. 'बीसम शताब्दी मैथिली साहित्यक स्वर्णिम युग (आगाँ)' क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) शताब्दीक काव्य-गद्य-पत्रिका-प्रकाशनक इतिहास।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

५१७. 'बीसम शताब्दी मैथिली साहित्यक स्वर्णिम युग (आगाँ)' मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) शताब्दीक काव्य-गद्य-पत्रिका-प्रकाशनक इतिहास।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

५१८. 'बीसम शताब्दी मैथिली साहित्यक स्वर्णिम युग (आगाँ)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) शताब्दीक काव्य-गद्य-पत्रिका-प्रकाशनक इतिहास। क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

५१९. 'बीसम शताब्दी मैथिली साहित्यक स्वर्णिम युग (आगाँ)' मे साहित्येतिहासक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) साहित्येतिहासक रूप शताब्दीक काव्य-गद्य-पत्रिका-प्रकाशनक इतिहास। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

५२०. 'बीसम शताब्दी मैथिली साहित्यक स्वर्णिम युग (आगँ)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ शताब्दीक काव्य-गद्य-पत्रिका-प्रकाशनक इतिहास। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5254 : विदेह-सदेह 15 — शिव प्रसाद यादव — मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार (दोसर भाग)

५२१. 'मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार (दोसर भाग)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) मैथिली कथा-उपन्यासक प्राथमिकता।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

५२२. 'मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार (दोसर भाग)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) मैथिली कथा-उपन्यासक प्राथमिकता।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

५२३. 'मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार (दोसर भाग)'केँ साक्षात्कार रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) मैथिली कथा-उपन्यासक प्राथमिकता।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

५२४. 'मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार (दोसर भाग)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक मैथिली कथा-उपन्यासक प्राथमिकता। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

५२५. 'मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार (दोसर भाग)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) मैथिली कथा-उपन्यासक प्राथमिकता।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

५२६. 'मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार (दोसर भाग)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) मैथिली कथा-उपन्यासक प्राथमिकता।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

५२७. 'मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार (दोसर भाग)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) मैथिली कथा-उपन्यासक प्राथमिकता।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

५२८. 'मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार (दोसर भाग)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) मैथिली कथा-उपन्यासक प्राथमिकता।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

५२९. 'मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार (दोसर भाग)'मे साक्षात्कारक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) साक्षात्कारक रूप मैथिली कथा-उपन्यासक प्राथमिकता। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

५३०. 'मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार (दोसर भाग)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ मैथिली कथा-उपन्यासक प्राथमिकता। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5255 : विदेह-सदेह 15 — मायानन्द मिश्र — मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध: स्त्रीधन (समाप्त)

५३१. 'मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध: स्त्रीधन (समाप्त)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) उपन्यास-चतुष्टयक समग्र मूल्यांकन।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

५३२. 'मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध: स्त्रीधन (समाप्त)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) उपन्यास-चतुष्टयक समग्र मूल्यांकन।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

५३३. 'मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध: स्त्रीधन (समाप्त)'केँ शोध-निबन्ध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) उपन्यास-चतुष्टयक समग्र मूल्यांकन।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

५३४. 'मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध: स्त्रीधन (समाप्त)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक उपन्यास-चतुष्टयक समग्र मूल्यांकन। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

५३५. 'मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध: स्त्रीधन (समाप्त)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) उपन्यास-चतुष्टयक समग्र मूल्यांकन।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

५३६. 'मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध: स्त्रीधन (समाप्त)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) उपन्यास-चतुष्टयक समग्र मूल्यांकन।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

५३७. 'मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध: स्त्रीधन (समाप्त)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) उपन्यास-चतुष्टयक समग्र मूल्यांकन।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

५३८. 'मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध: स्त्रीधन (समाप्त)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) उपन्यास-चतुष्टयक समग्र मूल्यांकन।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

५३९. 'मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध: स्त्रीधन (समाप्त)'मे शोध-निबन्धक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) शोध-निबन्धक रूप उपन्यास-चतुष्टयक समग्र मूल्यांकन। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

५४०. 'मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध: स्त्रीधन (समाप्त)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ उपन्यास-चतुष्टयक समग्र मूल्यांकन। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5256 : विदेह-सदेह 15 — गजेन्द्र ठाकुर — सहस्रबाढ़नि (आगाँ)

५४१. 'सहस्रबाढ़नि (आगाँ)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) नन्दक तांत्रिक अन्धविश्वासमे गिरबाक चित्रण।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

५४२. 'सहस्रबाढ़नि (आगाँ)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) नन्दक तांत्रिक अन्धविश्वासमे गिरबाक चित्रण।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

५४३. 'सहस्रबाढ़नि (आगाँ)'केँ उपन्यास रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) नन्दक तांत्रिक अन्धविश्वासमे गिरबाक चित्रण।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

५४४. 'सहस्रबाढ़नि (आगाँ)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक नन्दक तांत्रिक अन्धविश्वासमे गिरबाक चित्रण। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

५४५. 'सहस्रबाढ़नि (आगाँ)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) नन्दक तांत्रिक अन्धविश्वासमे गिरबाक चित्रण।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

५४६. 'सहस्रबाढ़नि (आगाँ)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) नन्दक तांत्रिक अन्धविश्वासमे गिरबाक चित्रण।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

५४७. 'सहस्रबाढ़नि (आगाँ)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) नन्दक तांत्रिक अन्धविश्वासमे गिरबाक चित्रण।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

५४८. 'सहस्रबाढ़नि (आगाँ)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) नन्दक तांत्रिक अन्धविश्वासमे गिरबाक चित्रण।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

५४९. 'सहस्रबाढ़नि (आगाँ)'मे उपन्यासक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) उपन्यासक रूप नन्दक तांत्रिक अन्धविश्वासमे गिरबाक चित्रण। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

५५०. 'सहस्रबाढ़नि (आगाँ)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ नन्दक तांत्रिक अन्धविश्वासमे गिरबाक चित्रण। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5257 : विदेह-सदेह 15 — रामजी चौधरी — विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (महेशवानी/समदाउन)

५५१. 'विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (महेशवानी/समदाउन)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) गौरी-शिवक प्रणय-विरह; गौना-गीतक रागबद्ध पद्य।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

५५२. 'विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (महेशवानी/समदाउन)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) गौरी-शिवक प्रणय-विरह; गौना-गीतक रागबद्ध पद्य।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

५५३. 'विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (महेशवानी/समदाउन)'कें पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) गौरी-शिवक प्रणय-विरह; गौना-गीतक रागबद्ध पद्य।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

५५४. 'विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (महेशवानी/समदाउन)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक गौरी-शिवक प्रणय-विरह; गौना-गीतक रागबद्ध पद्य। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

५५५. 'विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (महेशवानी/समदाउन)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) गौरी-शिवक प्रणय-विरह; गौना-गीतक रागबद्ध पद्य।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

५५६. 'विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (महेशवानी/समदाउन)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) गौरी-शिवक प्रणय-विरह; गौना-गीतक रागबद्ध पद्य।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

५५७. 'विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (महेशवानी/समदाउन)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) गौरी-शिवक प्रणय-विरह; गौना-गीतक रागबद्ध पद्य।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

५५८. 'विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (महेशवानी/समदाउन)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) गौरी-शिवक प्रणय-विरह; गौना-गीतक रागबद्ध पद्य।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

५५९. 'विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (महेशवानी/समदाउन)'मे पद्यक रूप कथ्य कें कोना सहारा दैत अछि?

- (A) पद्यक रूप गौरी-शिवक प्रणय-विरह; गौना-गीतक रागबद्ध पद्य। कें स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकें मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

५६०. 'विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (महेशवानी/समदाउन)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ गौरी-शिवक प्रणय-विरह; गौना-गीतक रागबद्ध पद्य। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5258 : विदेह-सदेह 15 — गंगेश गुंजन — भेटताह अनन्त ? / दिल्ली नगर बस मे तामस :एक-दू

५६१. 'भेटताह अनन्त ? / दिल्ली नगर बस मे तामस :एक-दू'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) पुत्र-शोक; वृद्ध-उपेक्षाक सशक्त काव्यिक प्रतिवाद।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

५६२. 'भेटताह अनन्त ? / दिल्ली नगर बस मे तामस :एक-दू'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) पुत्र-शोक; वृद्ध-उपेक्षाक सशक्त काव्यिक प्रतिवाद।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

५६३. 'भेटताह अनन्त ? / दिल्ली नगर बस मे तामस :एक-दू'केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) पुत्र-शोक; वृद्ध-उपेक्षाक सशक्त काव्यिक प्रतिवाद।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

५६४. 'भेटताह अनन्त ? / दिल्ली नगर बस मे तामस :एक-दू'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक पुत्र-शोक; वृद्ध-उपेक्षाक सशक्त काव्यिक प्रतिवाद। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

५६५. 'भेटताह अनन्त ? / दिल्ली नगर बस मे तामस :एक-दू'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) पुत्र-शोक; वृद्ध-उपेक्षाक सशक्त काव्यिक प्रतिवाद।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

५६६. 'भेटताह अनन्त ? / दिल्ली नगर बस मे तामस :एक-दू'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) पुत्र-शोक; वृद्ध-उपेक्षाक सशक्त काव्यिक प्रतिवाद।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

५६७. 'भेटताह अनन्त ? / दिल्ली नगर बस मे तामस :एक-दू'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) पुत्र-शोक; वृद्ध-उपेक्षाक सशक्त काव्यिक प्रतिवाद।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

५६८. 'भेटताह अनन्त ? / दिल्ली नगर बस मे तामस :एक-दू' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) पुत्र-शोक; वृद्ध-उपेक्षाक सशक्त काव्यिक प्रतिवाद।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

५६९. 'भेटताह अनन्त ? / दिल्ली नगर बस मे तामस :एक-दू'मे पद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) पद्यक रूप पुत्र-शोक; वृद्ध-उपेक्षाक सशक्त काव्यिक प्रतिवाद। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

५७०. 'भेटताह अनन्त ? / दिल्ली नगर बस मे तामस :एक-दू' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ पुत्र-शोक; वृद्ध-उपेक्षाक सशक्त काव्यिक प्रतिवाद। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5259 : विदेह-सदेह 15 — ज्योति झा चौधरी — ईशक अराधना

५७१. 'ईशक अराधना'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) कर्मयोगी जीवन-दर्शनक प्रार्थनामूलक कविता।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

५७२. 'ईशक अराधना'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) कर्मयोगी जीवन-दर्शनक प्रार्थनामूलक कविता।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

५७३. 'ईशक अराधना'केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) कर्मयोगी जीवन-दर्शनक प्रार्थनामूलक कविता।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

५७४. 'ईशक अराधना'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक कर्मयोगी जीवन-दर्शनक प्रार्थनामूलक कविता। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

५७५. 'ईशक अराधना'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) कर्मयोगी जीवन-दर्शनक प्रार्थनामूलक कविता।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

५७६. 'ईशक अराधना'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) कर्मयोगी जीवन-दर्शनक प्रार्थनामूलक कविता।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

५७७. 'ईशक अराधना'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) कर्मयोगी जीवन-दर्शनक प्रार्थनामूलक कविता।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

५७८. 'ईशक अराधना' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) कर्मयोगी जीवन-दर्शनक प्रार्थनामूलक कविता।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

५७९. 'ईशक अराधना'मे पद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) पद्यक रूप कर्मयोगी जीवन-दर्शनक प्रार्थनामूलक कविता। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

५८०. 'ईशक अराधना' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ कर्मयोगी जीवन-दर्शनक प्रार्थनामूलक कविता। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5260 : विदेह-सदेह 15 — प्रकाश झा — हमर मिथिलाक दर्शन

५८१. 'हमर मिथिलाक दर्शन'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) मिथिलाक ग्रामीण जीवन-सौन्दर्यक गौरव-गान।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

५८२. 'हमर मिथिलाक दर्शन'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) मिथिलाक ग्रामीण जीवन-सौन्दर्यक गौरव-गान।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

५८३. 'हमर मिथिलाक दर्शन'केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) मिथिलाक ग्रामीण जीवन-सौन्दर्यक गौरव-गान।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

५८४. 'हमर मिथिलाक दर्शन'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक मिथिलाक ग्रामीण जीवन-सौन्दर्यक गौरव-गान। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

५८५. 'हमर मिथिलाक दर्शन'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) मिथिलाक ग्रामीण जीवन-सौन्दर्यक गौरव-गान।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

५८६. 'हमर मिथिलाक दर्शन'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) मिथिलाक ग्रामीण जीवन-सौन्दर्यक गौरव-गान।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

५८७. 'हमर मिथिलाक दर्शन'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) मिथिलाक ग्रामीण जीवन-सौन्दर्यक गौरव-गान।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

५८८. 'हमर मिथिलाक दर्शन' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) मिथिलाक ग्रामीण जीवन-सौन्दर्यक गौरव-गान।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

५८९. 'हमर मिथिलाक दर्शन'मे पद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) पद्यक रूप मिथिलाक ग्रामीण जीवन-सौन्दर्यक गौरव-गान। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

५९०. 'हमर मिथिलाक दर्शन' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ मिथिलाक ग्रामीण जीवन-सौन्दर्यक गौरव-गान। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5261 : विदेह-सदेह 15 — जितमोहन झा — मात-पिता-गुरु-प्रभु चरणमे (भक्तिगीत)

५९१. 'मात-पिता-गुरु-प्रभु चरणमे (भक्तिगीत)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) माता-पिता-गुरुक ऋण स्वीकार करैत भक्ति गीत।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

५९२. 'मात-पिता-गुरु-प्रभु चरणमे (भक्तिगीत)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) माता-पिता-गुरुक ऋण स्वीकार करैत भक्ति गीत।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

५९३. 'मात-पिता-गुरु-प्रभु चरणमे (भक्तिगीत)'केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) माता-पिता-गुरुक ऋण स्वीकार करैत भक्ति गीत।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

५९४. 'मात-पिता-गुरु-प्रभु चरणमे (भक्तिगीत)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक माता-पिता-गुरुक ऋण स्वीकार करैत भक्ति गीत। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

५९५. 'मात-पिता-गुरु-प्रभु चरणमे (भक्तिगीत)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) माता-पिता-गुरुक ऋण स्वीकार करैत भक्ति गीत।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

५९६. 'मात-पिता-गुरु-प्रभु चरणमे (भक्तिगीत)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) माता-पिता-गुरुक ऋण स्वीकार करैत भक्ति गीत।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

५९७. 'मात-पिता-गुरु-प्रभु चरणमे (भक्तिगीत)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) माता-पिता-गुरुक ऋण स्वीकार करैत भक्ति गीत।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

५९८. 'मात-पिता-गुरु-प्रभु चरणमे (भक्तिगीत)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) माता-पिता-गुरुक ऋण स्वीकार करैत भक्ति गीत।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

५९९. 'मात-पिता-गुरु-प्रभु चरणमे (भक्तिगीत)'मे पद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) पद्यक रूप माता-पिता-गुरुक ऋण स्वीकार करैत भक्ति गीत। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

६००. 'मात-पिता-गुरु-प्रभु चरणमे (भक्तिगीत)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ माता-पिता-गुरुक ऋण स्वीकार करैत भक्ति गीत। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5262 : विदेह-सदेह 15 — गजेन्द्र ठाकुर — महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व (गदा-युद्ध) सँ द्रोण-पर्व

६०१. 'महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व (गदा-युद्ध) सँ द्रोण-पर्व'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) दुःशासन-वध, कर्ण-अर्जुन युद्ध; द्रोण-पर्व।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

६०२. 'महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व (गदा-युद्ध) सँ द्रोण-पर्व'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) दुःशासन-वध, कर्ण-अर्जुन युद्ध; द्रोण-पर्व।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

६०३. 'महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व (गदा-युद्ध) सँ द्रोण-पर्व'केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) दुःशासन-वध, कर्ण-अर्जुन युद्ध; द्रोण-पर्व।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

६०४. 'महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व (गदा-युद्ध) सँ द्रोण-पर्व'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक दुःशासन-वध, कर्ण-अर्जुन युद्ध; द्रोण-पर्व। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

६०५. 'महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व (गदा-युद्ध) सँ द्रोण-पर्व'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) दुःशासन-वध, कर्ण-अर्जुन युद्ध; द्रोण-पर्व।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

६०६. 'महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व (गदा-युद्ध) सँ द्रोण-पर्व'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) दुःशासन-वध, कर्ण-अर्जुन युद्ध; द्रोण-पर्व।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

६०७. 'महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व (गदा-युद्ध) सँ द्रोण-पर्व'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) दुःशासन-वध, कर्ण-अर्जुन युद्ध; द्रोण-पर्व।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

६०८. 'महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व (गदा-युद्ध) सँ द्रोण-पर्व' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) दुःशासन-वध, कर्ण-अर्जुन युद्ध; द्रोण-पर्व।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

६०९. 'महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व (गदा-युद्ध) सँ द्रोण-पर्व'मे पद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) पद्यक रूप दुःशासन-वध, कर्ण-अर्जुन युद्ध; द्रोण-पर्व। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

६१०. 'महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व (गदा-युद्ध) सँ द्रोण-पर्व' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ दुःशासन-वध, कर्ण-अर्जुन युद्ध; द्रोण-पर्व। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5263 : विदेह-सदेह 15 — गजेन्द्र ठाकुर — संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)

६११. 'संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) 'यथा-तथा' संरचना; कालिदास तुलना।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

६१२. 'संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) 'यथा-तथा' संरचना; कालिदास तुलना।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

६१३. 'संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)'केँ शिक्षा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) 'यथा-तथा' संरचना; कालिदास तुलना।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

६१४. 'संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक 'यथा-तथा' संरचना; कालिदास तुलना। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

६१५. 'संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) 'यथा-तथा' संरचना; कालिदास तुलना।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

६१६. 'संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)' क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) 'यथा-तथा' संरचना; कालिदास तुलना।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

६१७. 'संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)' मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) 'यथा-तथा' संरचना; कालिदास तुलना।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

६१८. 'संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) 'यथा-तथा' संरचना; कालिदास तुलना। क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

६१९. 'संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)' मे शिक्षाक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) शिक्षाक रूप 'यथा-तथा' संरचना; कालिदास तुलना। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

६२०. 'संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ 'यथा-तथा' संरचना; कालिदास तुलना। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5264 : विदेह-सदेह 15 — तूलिका — मिथिला कला (आगाँ): कोबर (पुरैन पात)

६२१. 'मिथिला कला (आगाँ): कोबर (पुरैन पात)' क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) विवाह-कोबर घरमे बनाओल जायबला चित्रांकन।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

६२२. 'मिथिला कला (आगाँ): कोबर (पुरैन पात)' मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) विवाह-कोबर घरमे बनाओल जायबला चित्रांकन।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

६२३. 'मिथिला कला (आगाँ): कोबर (पुरैन पात)' केँ कला रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) विवाह-कोबर घरमे बनाओल जायबला चित्रांकन।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

६२४. 'मिथिला कला (आगां): कोबर (पुरैन पात)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक विवाह-कोबर घरमे बनाओल जायबला चित्रांकन। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

६२५. 'मिथिला कला (आगां): कोबर (पुरैन पात)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) विवाह-कोबर घरमे बनाओल जायबला चित्रांकन।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

६२६. 'मिथिला कला (आगां): कोबर (पुरैन पात)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) विवाह-कोबर घरमे बनाओल जायबला चित्रांकन।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

६२७. 'मिथिला कला (आगां): कोबर (पुरैन पात)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) विवाह-कोबर घरमे बनाओल जायबला चित्रांकन।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

६२८. 'मिथिला कला (आगां): कोबर (पुरैन पात)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) विवाह-कोबर घरमे बनाओल जायबला चित्रांकन।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

६२९. 'मिथिला कला (आगां): कोबर (पुरैन पात)'मे कलाक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) कलाक रूप विवाह-कोबर घरमे बनाओल जायबला चित्रांकन। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

६३०. 'मिथिला कला (आगां): कोबर (पुरैन पात)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ विवाह-कोबर घरमे बनाओल जायबला चित्रांकन। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5265 : विदेह-सदेह 15 — प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन' — पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: गणेश-कार्तिकेय-भैरव

६३१. 'पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: गणेश-कार्तिकेय-भैरव'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) गणेशक लम्बोदर-मूर्ति; भैरवक तांत्रिक स्वरूप।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

६३२. 'पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: गणेश-कार्तिकेय-भैरव'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) गणेशक लम्बोदर-मूर्ति; भैरवक तांत्रिक स्वरूप।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

६३३. 'पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: गणेश-कार्तिकेय-भैरव'कें शोध-निबन्ध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) गणेशक लम्बोदर-मूर्ति; भैरवक तांत्रिक स्वरूप।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

६३४. 'पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: गणेश-कार्तिकेय-भैरव'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक गणेशक लम्बोदर-मूर्ति; भैरवक तांत्रिक स्वरूप। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

६३५. 'पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: गणेश-कार्तिकेय-भैरव'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) गणेशक लम्बोदर-मूर्ति; भैरवक तांत्रिक स्वरूप।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

६३६. 'पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: गणेश-कार्तिकेय-भैरव'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) गणेशक लम्बोदर-मूर्ति; भैरवक तांत्रिक स्वरूप।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

६३७. 'पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: गणेश-कार्तिकेय-भैरव'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) गणेशक लम्बोदर-मूर्ति; भैरवक तांत्रिक स्वरूप।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

६३८. 'पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: गणेश-कार्तिकेय-भैरव' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) गणेशक लम्बोदर-मूर्ति; भैरवक तांत्रिक स्वरूप।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

६३९. 'पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: गणेश-कार्तिकेय-भैरव'मे शोध-निबन्धक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) शोध-निबन्धक रूप गणेशक लम्बोदर-मूर्ति; भैरवक तांत्रिक स्वरूप। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

६४०. 'पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: गणेश-कार्तिकेय-भैरव' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकें गणेशक लम्बोदर-मूर्ति; भैरवक तांत्रिक स्वरूप। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5266 : विदेह-सदेह 15 — गजेन्द्र ठाकुर — मधुश्रावणी (प्रथम सँ तेरहम दिनक कथा)

६४१. 'मधुश्रावणी (प्रथम सँ तेरहम दिनक कथा)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) मौना पञ्चमीसँ पूर्णाहुति धरिक व्रत-कथा।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

६४२. 'मधुश्रावणी (प्रथम सँ तेरहम दिनक कथा)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) मौना पञ्चमीसँ पूर्णाहुति धरिक व्रत-कथा।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

६४३. 'मधुश्रावणी (प्रथम सँ तेरहम दिनक कथा)'कें निबन्ध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) मौना पञ्चमीसँ पूर्णाहुति धरिक व्रत-कथा।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

६४४. 'मधुश्रावणी (प्रथम सँ तेरहम दिनक कथा)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक मौना पञ्चमीसँ पूर्णाहुति धरिक व्रत-कथा। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

६४५. 'मधुश्रावणी (प्रथम सँ तेरहम दिनक कथा)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) मौना पञ्चमीसँ पूर्णाहुति धरिक व्रत-कथा।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

६४६. 'मधुश्रावणी (प्रथम सँ तेरहम दिनक कथा)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) मौना पञ्चमीसँ पूर्णाहुति धरिक व्रत-कथा।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

६४७. 'मधुश्रावणी (प्रथम सँ तेरहम दिनक कथा)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) मौना पञ्चमीसँ पूर्णाहुति धरिक व्रत-कथा।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

६४८. 'मधुश्रावणी (प्रथम सँ तेरहम दिनक कथा)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) मौना पञ्चमीसँ पूर्णाहुति धरिक व्रत-कथा। क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

६४९. 'मधुश्रावणी (प्रथम सँ तेरहम दिनक कथा)' मे निबन्धक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) निबन्धक रूप मौना पञ्चमीसँ पूर्णाहुति धरिक व्रत-कथा। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

६५०. 'मधुश्रावणी (प्रथम सँ तेरहम दिनक कथा)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ मौना पञ्चमीसँ पूर्णाहुति धरिक व्रत-कथा। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तरमाला — अध्याय १ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (A) गजल (पथिक) — सूचकांक पंक्ति 1211मे कुन्दन कुमार झाक प्रविष्टि “गजल (पथिक)” रूपमे देल अछि।
२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३. (C) गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।
४. (D) रूपक-प्रधान — टिप्पणीक पहिल संकेत “रूपक-प्रधान” अछि।
५. (A) रूपक-प्रधान — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रूपक-प्रधान” रूपमे देखाइत अछि।
६. (B) लेखक कुन्दन कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८. (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१०. (B) खण्ड 2520, सूचकांक पंक्ति 1211मे कुन्दन कुमार झाक “गजल (पथिक)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “रूपक-प्रधान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
११. (A) गजल (अपने पाछू) — सूचकांक पंक्ति 1212मे कुन्दन कुमार झाक प्रविष्टि “गजल (अपने पाछू)” रूपमे देल अछि।
१२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१३. (C) गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।
१४. (D) आत्मान्वेषण — टिप्पणीक पहिल संकेत “आत्मान्वेषण” अछि।
१५. (A) आत्मान्वेषण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आत्मान्वेषण” रूपमे देखाइत अछि।
१६. (B) लेखक कुन्दन कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१८. (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२०. (B) खण्ड 2521, सूचकांक पंक्ति 1212मे कुन्दन कुमार झाक “गजल (अपने पाछू)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “आत्मान्वेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२१. (A) गजल (एगारह टप्पर) — सूचकांक पंक्ति 1213मे कुन्दन कुमार झाक प्रविष्टि “गजल (एगारह टप्पर)” रूपमे देल अछि।
२२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२३. (C) गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।
२४. (D) सामाजिक व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक व्यंग्य” अछि।
२५. (A) सामाजिक व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।
२६. (B) लेखक कुन्दन कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२८. (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३०. (B) खण्ड 2522, सूचकांक पंक्ति 1213मे कुन्दन कुमार झाक “गजल (एगारह टप्पर)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “सामाजिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३१. (A) गजल (सपना) — सूचकांक पंक्ति 1214मे कुन्दन कुमार झाक प्रविष्टि “गजल (सपना)” रूपमे देल अछि।
३२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३३. (C) गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।
३४. (D) काल्पनिकता — टिप्पणीक पहिल संकेत “काल्पनिकता” अछि।
३५. (A) काल्पनिकता — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “काल्पनिकता” रूपमे देखाइत अछि।
३६. (B) लेखक कुन्दन कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३८. (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४०. (B) खण्ड 2523, सूचकांक पंक्ति 1214मे कुन्दन कुमार झाक “गजल (सपना)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “काल्पनिकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४१. (A) गजल (सत्य) — सूचकांक पंक्ति 1215मे कुन्दन कुमार झाक प्रविष्टि “गजल (सत्य)” रूपमे देल अछि।
४२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४३. (C) गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।
४४. (D) यथार्थपरक — टिप्पणीक पहिल संकेत “यथार्थपरक” अछि।
४५. (A) यथार्थपरक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “यथार्थपरक” रूपमे देखाइत अछि।
४६. (B) लेखक कुन्दन कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४८. (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५०. (B) खण्ड 2524, सूचकांक पंक्ति 1215मे कुन्दन कुमार झाक “गजल (सत्य)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “यथार्थपरक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५१. (A) गजल (घर-आँगन) — सूचकांक पंक्ति 1216मे कुन्दन कुमार झाक प्रविष्टि “गजल (घर-आँगन)” रूपमे देल अछि।
५२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५३. (C) गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।
५४. (D) ग्रामीण-पारिवारिक — टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण-पारिवारिक” अछि।
५५. (A) ग्रामीण-पारिवारिक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण-पारिवारिक” रूपमे देखाइत अछि।
५६. (B) लेखक कुन्दन कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५८. (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६०. (B) खण्ड 2525, सूचकांक पंक्ति 1216मे कुन्दन कुमार झाक “गजल (घर-आँगन)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “ग्रामीण-पारिवारिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६१. (A) गजल (राजनीति अउर मनुख) — सूचकांक पंक्ति 1217मे कुन्दन कुमार झाक प्रविष्टि “गजल (राजनीति अउर मनुख)” रूपमे देल अछि।
६२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६३. (C) गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।
६४. (D) राजनीतिक कटाक्ष — टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनीतिक कटाक्ष” अछि।
६५. (A) राजनीतिक कटाक्ष — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनीतिक कटाक्ष” रूपमे देखाइत अछि।
६६. (B) लेखक कुन्दन कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६८. (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७०. (B) खण्ड 2526, सूचकांक पंक्ति 1217मे कुन्दन कुमार झाक “गजल (राजनीति अउर मनुख)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “राजनीतिक कटाक्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७१. (A) डायरीक पत्रा (१-१०) — सूचकांक पंक्ति 1218मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “डायरीक पत्रा (१-१०)” रूपमे देल अछि।
७२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
७४. (D) दस टा कवितामे निजी डायरीक शैलीमे आत्म-संघर्ष — टिप्पणीक पहिल संकेत “दस टा कवितामे निजी डायरीक शैलीमे आत्म-संघर्ष” अछि।
७५. (A) दस टा कवितामे निजी डायरीक शैलीमे आत्म-संघर्ष — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दस टा कवितामे निजी डायरीक शैलीमे आत्म-संघर्ष” रूपमे देखाइत अछि।
७६. (B) लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
७९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

८०. (B) खण्ड 2527, सूचकांक पंक्ति 1218मे राजदेव मण्डलक “डायरीक पत्रा (१-१०)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दस टा कवितामे निजी डायरीक शैलीमे आत्म-संघर्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

८१. (A) डोलनी डाइन (काव्य-कथा १-७) — सूचकांक पंक्ति 1219मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “डोलनी डाइन (काव्य-कथा १-७)” रूपमे देल अछि।

८२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

८३. (C) काव्य-कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “काव्य-कथा” अछि।

८४. (D) अन्धविश्वास — टिप्पणीक पहिल संकेत “अन्धविश्वास” अछि।

८५. (A) अन्धविश्वास — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अन्धविश्वास” रूपमे देखाइत अछि।

८६. (B) लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा काव्य-कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

८८. (D) ई पाठ काव्य-कथाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

८९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

९०. (B) खण्ड 2528, सूचकांक पंक्ति 1219मे राजदेव मण्डलक “डोलनी डाइन (काव्य-कथा १-७)” प्रविष्टि पद्य, काव्य-कथा आ “अन्धविश्वास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

९१. (A) जानवरक बोली (कविता) — सूचकांक पंक्ति 1220मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “जानवरक बोली (कविता)” रूपमे देल अछि।

९२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

९३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

९४. (D) प्रतीकात्मक — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रतीकात्मक” अछि।

९५. (A) प्रतीकात्मक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रतीकात्मक” रूपमे देखाइत अछि।

९६. (B) लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

९८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

९९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१००. (B) खण्ड 2529, सूचकांक पंक्ति 1220मे राजदेव मण्डलक “जानवरक बोली (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रतीकात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१०१. (A) अजगर (कविता) — सूचकांक पंक्ति 1221मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “अजगर (कविता)” रूपमे देल अछि।

१०२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१०३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

१०४. (D) शोषकवर्गक अजगर सन निगलबाक आशंकाक चित्रण — टिप्पणीक पहिल संकेत “शोषकवर्गक अजगर सन निगलबाक आशंकाक चित्रण” अछि।

१०५. (A) शोषकवर्गक अजगर सन निगलबाक आशंकाक चित्रण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शोषकवर्गक अजगर सन निगलबाक आशंकाक चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

१०६. (B) लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१०७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१०८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१०९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
११०. (B) खण्ड 2530, सूचकांक पंक्ति 1221मे राजदेव मण्डलक “अजगर (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शोषकवर्गक अजगर सन निगलबाक आशंकाक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१११. (A) अकासमे ठाढ़ पंछी (कविता) — सूचकांक पंक्ति 1222मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “अकासमे ठाढ़ पंछी (कविता)” रूपमे देल अछि।
११२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
११३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
११४. (D) ठहराएल प्रगति आ नियतिवादक प्रतीक — टिप्पणीक पहिल संकेत “ठहराएल प्रगति आ नियतिवादक प्रतीक” अछि।
११५. (A) ठहराएल प्रगति आ नियतिवादक प्रतीक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ठहराएल प्रगति आ नियतिवादक प्रतीक” रूपमे देखाइत अछि।
११६. (B) लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
११७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
११८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
११९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१२०. (B) खण्ड 2531, सूचकांक पंक्ति 1222मे राजदेव मण्डलक “अकासमे ठाढ़ पंछी (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ठहराएल प्रगति आ नियतिवादक प्रतीक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१२१. (A) बीआ केर पता (कविता) — सूचकांक पंक्ति 1223मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “बीआ केर पता (कविता)” रूपमे देल अछि।
१२२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१२३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
१२४. (D) आत्म-अन्वेषण — टिप्पणीक पहिल संकेत “आत्म-अन्वेषण” अछि।
१२५. (A) आत्म-अन्वेषण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आत्म-अन्वेषण” रूपमे देखाइत अछि।
१२६. (B) लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१२८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१२९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१३०. (B) खण्ड 2532, सूचकांक पंक्ति 1223मे राजदेव मण्डलक “बीआ केर पता (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आत्म-अन्वेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१३१. (A) कटैत गाछ (कविता) — सूचकांक पंक्ति 1224मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “कटैत गाछ (कविता)” रूपमे देल अछि।
१३२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१३३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
१३४. (D) वृक्ष-आत्मकथात्मक — टिप्पणीक पहिल संकेत “वृक्ष-आत्मकथात्मक” अछि।
१३५. (A) वृक्ष-आत्मकथात्मक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वृक्ष-आत्मकथात्मक” रूपमे देखाइत अछि।
१३६. (B) लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१३८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१३९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१४०. (B) खण्ड 2533, सूचकांक पंक्ति 1224मे राजदेव मण्डलक “कटैत गाछ (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वृक्ष-आत्मकथात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१४१. (A) नमन, स्वरमे बास, अकाल, घरक आँख, अभ्यास, महफा आ अरछी, काटैत बीआ, कानैत हँसी, कनहेपर भोलबा, कुहेस, जानवरक ... — सूचकांक पंक्ति 1225मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “नमन, स्वरमे बास, अकाल, घरक आँख, अभ्यास, महफा आ अरछी, काटैत बीआ, कानैत हँसी, कनहेपर भोलबा, कुहेस, जानवरक ...” रूपमे देल अछि।
१४२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१४३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
१४४. (D) बाइस टा स्वतन्त्र लघु-कवितामे विविध विषय — टिप्पणीक पहिल संकेत “बाइस टा स्वतन्त्र लघु-कवितामे विविध विषय” अछि।
१४५. (A) बाइस टा स्वतन्त्र लघु-कवितामे विविध विषय — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाइस टा स्वतन्त्र लघु-कवितामे विविध विषय” रूपमे देखाइत अछि।
१४६. (B) लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१४८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१४९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१५०. (B) खण्ड 2534, सूचकांक पंक्ति 1225मे राजदेव मण्डलक “नमन, स्वरमे बास, अकाल, घरक आँख, अभ्यास, महफा आ अरछी, काटैत बीआ, कानैत हँसी, कनहेपर भोलबा, कुहेस, जानवरक ...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बाइस टा स्वतन्त्र लघु-कवितामे विविध विषय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१५१. (A) लहकैत समाज (कविता) — सूचकांक पंक्ति 1226मे सत्य नारायण झाक प्रविष्टि “लहकैत समाज (कविता)” रूपमे देल अछि।
१५२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१५३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
१५४. (D) निष्क्रिय — टिप्पणीक पहिल संकेत “निष्क्रिय” अछि।
१५५. (A) निष्क्रिय — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “निष्क्रिय” रूपमे देखाइत अछि।
१५६. (B) लेखक सत्य नारायण झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१५८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१५९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१६०. (B) खण्ड 2535, सूचकांक पंक्ति 1226मे सत्य नारायण झाक “लहकैत समाज (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “निष्क्रिय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१६१. (A) किछु टुनका (कविता-पञ्चक) — सूचकांक पंक्ति 1227मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “किछु टुनका (कविता-पञ्चक)” रूपमे देल अछि।
१६२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१६३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
१६४. (D) प्रेम — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम” अछि।
१६५. (A) प्रेम — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।

१६६. (B) लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१६८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१६९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१७०. (B) खण्ड 2536, सूचकांक पंक्ति 1227मे राम विलास साहुक “किछु टुनका (कविता-पञ्चक)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१७१. (A) मोह-माया (गीत), के बचेतौ तोहर जान (करुण गीत) — सूचकांक पंक्ति 1228मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “मोह-माया (गीत), के बचेतौ तोहर जान (करुण गीत)” रूपमे देल अछि।
१७२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१७३. (C) गीत — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।
१७४. (D) माया-जालक व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “माया-जालक व्यंग्य” अछि।
१७५. (A) माया-जालक व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “माया-जालक व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।
१७६. (B) लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा गीत — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१७८. (D) ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१७९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१८०. (B) खण्ड 2537, सूचकांक पंक्ति 1228मे राम विलास साहुक “मोह-माया (गीत), के बचेतौ तोहर जान (करुण गीत)” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “माया-जालक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१८१. (A) अभिसारिका (कविता) — सूचकांक पंक्ति 1229मे सुरेन्द्र 'शैल'क प्रविष्टि “अभिसारिका (कविता)” रूपमे देल अछि।
१८२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१८३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
१८४. (D) संस्कृतनिष्ठ शब्दावलीमे क्लासिकल शैलीक शृंगारिक वर्णन — टिप्पणीक पहिल संकेत “संस्कृतनिष्ठ शब्दावलीमे क्लासिकल शैलीक शृंगारिक वर्णन” अछि।
१८५. (A) संस्कृतनिष्ठ शब्दावलीमे क्लासिकल शैलीक शृंगारिक वर्णन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “संस्कृतनिष्ठ शब्दावलीमे क्लासिकल शैलीक शृंगारिक वर्णन” रूपमे देखाइत अछि।
१८६. (B) लेखक सुरेन्द्र 'शैल', विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१८८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१८९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१९०. (B) खण्ड 2538, सूचकांक पंक्ति 1229मे सुरेन्द्र 'शैल'क “अभिसारिका (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “संस्कृतनिष्ठ शब्दावलीमे क्लासिकल शैलीक शृंगारिक वर्णन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१९१. (A) सासुर (व्यंग्य-प्रबन्ध) — सूचकांक पंक्ति 1230मे सुरेन्द्र 'शैल'क प्रविष्टि “सासुर (व्यंग्य-प्रबन्ध)” रूपमे देल अछि।
१९२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१९३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

१९४. (D) सासुरक कटु अनुभवक हास्य-व्यंग्यपूर्ण लोक-गीतात्मक प्रबन्ध — टिप्पणीक पहिल संकेत “सासुरक कटु अनुभवक हास्य-व्यंग्यपूर्ण लोक-गीतात्मक प्रबन्ध” अछि।

१९५. (A) सासुरक कटु अनुभवक हास्य-व्यंग्यपूर्ण लोक-गीतात्मक प्रबन्ध — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सासुरक कटु अनुभवक हास्य-व्यंग्यपूर्ण लोक-गीतात्मक प्रबन्ध” रूपमे देखाइत अछि।

१९६. (B) लेखक सुरेन्द्र 'शैल', विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१९८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१९९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२००. (B) खण्ड 2539, सूचकांक पंक्ति 1230मे सुरेन्द्र 'शैल'क “सासुर (व्यंग्य-प्रबन्ध)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सासुरक कटु अनुभवक हास्य-व्यंग्यपूर्ण लोक-गीतात्मक प्रबन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२०१. (A) गजल (१-२) — सूचकांक पंक्ति 1231मे राजीव रंजन मिश्रक प्रविष्टि “गजल (१-२)” रूपमे देल अछि।

२०२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२०३. (C) गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

२०४. (D) जीवन-यात्रा आ आत्म-संघर्ष पर आधारित नव-शास्त्रीय गजल — टिप्पणीक पहिल संकेत “जीवन-यात्रा आ आत्म-संघर्ष पर आधारित नव-शास्त्रीय गजल” अछि।

२०५. (A) जीवन-यात्रा आ आत्म-संघर्ष पर आधारित नव-शास्त्रीय गजल — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जीवन-यात्रा आ आत्म-संघर्ष पर आधारित नव-शास्त्रीय गजल” रूपमे देखाइत अछि।

२०६. (B) लेखक राजीव रंजन मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा गजल — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२०७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२०८. (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२०९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२१०. (B) खण्ड 2540, सूचकांक पंक्ति 1231मे राजीव रंजन मिश्रक “गजल (१-२)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “जीवन-यात्रा आ आत्म-संघर्ष पर आधारित नव-शास्त्रीय गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२११. (A) बाल हाइकू (१२ टा) — सूचकांक पंक्ति 1232मे मुन्नाजीक प्रविष्टि “बाल हाइकू (१२ टा)” रूपमे देल अछि।

२१२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२१३. (C) हाइकू — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “हाइकू” अछि।

२१४. (D) बाल-मनोविज्ञान आ आधुनिक बाल-जीवनक सहज चित्रण करैत १२ टा मौलिक हाइकू — टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल-मनोविज्ञान आ आधुनिक बाल-जीवनक सहज चित्रण करैत १२ टा मौलिक हाइकू” अछि।

२१५. (A) बाल-मनोविज्ञान आ आधुनिक बाल-जीवनक सहज चित्रण करैत १२ टा मौलिक हाइकू — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल-मनोविज्ञान आ आधुनिक बाल-जीवनक सहज चित्रण करैत १२ टा मौलिक हाइकू” रूपमे देखाइत अछि।

२१६. (B) लेखक मुन्नाजी, विधा पद्य, उप-विधा हाइकू — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२१७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२१८. (D) ई पाठ हाइकूक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२१९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२२०. (B) खण्ड 2541, सूचकांक पंक्ति 1232मे मुन्नाजीक “बाल हाइकू (१२ टा)” प्रविष्टि पद्य, हाइकू आ “बाल-मनोविज्ञान आ आधुनिक बाल-जीवनक सहज चित्रण करैत १२ टा मौलिक हाइकू” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२२१. (A) अभिनन्दन (कविता) — सूचकांक पंक्ति 1233मे रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क प्रविष्टि “अभिनन्दन (कविता)” रूपमे देल अछि।
२२२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२२३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
२२४. (D) विवाह-मंगलक शुभकामनात्मक कविता — टिप्पणीक पहिल संकेत “विवाह-मंगलक शुभकामनात्मक कविता” अछि।
२२५. (A) विवाह-मंगलक शुभकामनात्मक कविता — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विवाह-मंगलक शुभकामनात्मक कविता” रूपमे देखाइत अछि।
२२६. (B) लेखक रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार', विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२२८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२२९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२३०. (B) खण्ड 2542, सूचकांक पंक्ति 1233मे रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क “अभिनन्दन (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “विवाह-मंगलक शुभकामनात्मक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२३१. (A) बाल गजल (भरि रस्ता...) — सूचकांक पंक्ति 1234मे इरा मल्लिकक प्रविष्टि “बाल गजल (भरि रस्ता...)” रूपमे देल अछि।
२३२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२३३. (C) बाल गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल गजल” अछि।
२३४. (D) वर्षा-ऋतुमे स्कूल जायबाक बालसुलभ कठिनाईक मार्मिक चित्रण — टिप्पणीक पहिल संकेत “वर्षा-ऋतुमे स्कूल जायबाक बालसुलभ कठिनाईक मार्मिक चित्रण” अछि।
२३५. (A) वर्षा-ऋतुमे स्कूल जायबाक बालसुलभ कठिनाईक मार्मिक चित्रण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वर्षा-ऋतुमे स्कूल जायबाक बालसुलभ कठिनाईक मार्मिक चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।
२३६. (B) लेखक इरा मल्लिक, विधा पद्य, उप-विधा बाल गजल — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२३८. (D) ई पाठ बाल गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२३९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२४०. (B) खण्ड 2543, सूचकांक पंक्ति 1234मे इरा मल्लिकक “बाल गजल (भरि रस्ता...)” प्रविष्टि पद्य, बाल गजल आ “वर्षा-ऋतुमे स्कूल जायबाक बालसुलभ कठिनाईक मार्मिक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२४१. (A) बाल गजल (अछि बड़ जिद्दी बरसात) — सूचकांक पंक्ति 1235मे इरा मल्लिकक प्रविष्टि “बाल गजल (अछि बड़ जिद्दी बरसात)” रूपमे देल अछि।
२४२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२४३. (C) बाल गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल गजल” अछि।
२४४. (D) बरसातक मनमोहक उत्पातक बाल-दृष्टिसँ सजीव वर्णन — टिप्पणीक पहिल संकेत “बरसातक मनमोहक उत्पातक बाल-दृष्टिसँ सजीव वर्णन” अछि।

२४५. (A) बरसातक मनमोहक उत्पातक बाल-दृष्टिसँ सजीव वर्णन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बरसातक मनमोहक उत्पातक बाल-दृष्टिसँ सजीव वर्णन” रूपमे देखाइत अछि।
२४६. (B) लेखक इरा मल्लिक, विधा पद्य, उप-विधा बाल गजल — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२४८. (D) ई पाठ बाल गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२४९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२५०. (B) खण्ड 2544, सूचकांक पंक्ति 1235मे इरा मल्लिकक “बाल गजल (अछि बड़ जिद्दी बरसात)” प्रविष्टि पद्य, बाल गजल आ “बरसातक मनमोहक उत्पातक बाल-दृष्टिसँ सजीव वर्णन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२५१. (A) शृंगार गजल (बरखा बरसै छै...) — सूचकांक पंक्ति 1236मे इरा मल्लिकक प्रविष्टि “शृंगार गजल (बरखा बरसै छै...)” रूपमे देल अछि।
२५२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२५३. (C) गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।
२५४. (D) वर्षा-ऋतु आ विरह-मिलन पर आधारित प्रौढ़ शृंगारिक गजल — टिप्पणीक पहिल संकेत “वर्षा-ऋतु आ विरह-मिलन पर आधारित प्रौढ़ शृंगारिक गजल” अछि।
२५५. (A) वर्षा-ऋतु आ विरह-मिलन पर आधारित प्रौढ़ शृंगारिक गजल — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वर्षा-ऋतु आ विरह-मिलन पर आधारित प्रौढ़ शृंगारिक गजल” रूपमे देखाइत अछि।
२५६. (B) लेखक इरा मल्लिक, विधा पद्य, उप-विधा गजल — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२५८. (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२५९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२६०. (B) खण्ड 2545, सूचकांक पंक्ति 1236मे इरा मल्लिकक “शृंगार गजल (बरखा बरसै छै...)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “वर्षा-ऋतु आ विरह-मिलन पर आधारित प्रौढ़ शृंगारिक गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२६१. (A) गजल (अही छी हमर भवानी मैया) — सूचकांक पंक्ति 1237मे बिन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “गजल (अही छी हमर भवानी मैया)” रूपमे देल अछि।
२६२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२६३. (C) गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।
२६४. (D) सरल वार्णिक बहर (१९ मात्रा) — टिप्पणीक पहिल संकेत “सरल वार्णिक बहर (१९ मात्रा)” अछि।
२६५. (A) सरल वार्णिक बहर (१९ मात्रा) — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सरल वार्णिक बहर (१९ मात्रा)” रूपमे देखाइत अछि।
२६६. (B) लेखक बिन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा गजल — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२६८. (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२६९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२७०. (B) खण्ड 2546, सूचकांक पंक्ति 1237मे बिन्देश्वर ठाकुरक “गजल (अही छी हमर भवानी मैया)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “सरल वार्णिक बहर (१९ मात्रा)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२७१. (A) पुनः चमकत रमझमला राज (कविता) — सूचकांक पंक्ति 1238मे बिन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “पुनः चमकत रमझमला राज (कविता)” रूपमे देल अछि।
२७२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२७३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
२७४. (D) मिथिला राज्यक पुनर्स्थापनाक स्वप्न आ भ्रष्टाचार-विरोधी राजनीतिक आह्वान — टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिला राज्यक पुनर्स्थापनाक स्वप्न आ भ्रष्टाचार-विरोधी राजनीतिक आह्वान” अछि।
२७५. (A) मिथिला राज्यक पुनर्स्थापनाक स्वप्न आ भ्रष्टाचार-विरोधी राजनीतिक आह्वान — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिला राज्यक पुनर्स्थापनाक स्वप्न आ भ्रष्टाचार-विरोधी राजनीतिक आह्वान” रूपमे देखाइत अछि।
२७६. (B) लेखक बिन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२७८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२७९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२८०. (B) खण्ड 2547, सूचकांक पंक्ति 1238मे बिन्देश्वर ठाकुरक “पुनः चमकत रमझमला राज (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मिथिला राज्यक पुनर्स्थापनाक स्वप्न आ भ्रष्टाचार-विरोधी राजनीतिक आह्वान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२८१. (A) गजल (जिनगी भर'क साथ बीचेमे किए छोड़ि देलियै) — सूचकांक पंक्ति 1239मे अनिल मल्लिकक प्रविष्टि “गजल (जिनगी भर'क साथ बीचेमे किए छोड़ि देलियै)” रूपमे देल अछि।
२८२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२८३. (C) गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।
२८४. (D) विरह-वेदनाक मार्मिक गजल (वर्ण-१८) — टिप्पणीक पहिल संकेत “विरह-वेदनाक मार्मिक गजल (वर्ण-१८)” अछि।
२८५. (A) विरह-वेदनाक मार्मिक गजल (वर्ण-१८) — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विरह-वेदनाक मार्मिक गजल (वर्ण-१८)” रूपमे देखाइत अछि।
२८६. (B) लेखक अनिल मल्लिक, विधा पद्य, उप-विधा गजल — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२८८. (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२८९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२९०. (B) खण्ड 2548, सूचकांक पंक्ति 1239मे अनिल मल्लिकक “गजल (जिनगी भर'क साथ बीचेमे किए छोड़ि देलियै)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “विरह-वेदनाक मार्मिक गजल (वर्ण-१८)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२९१. (A) विहनि गजल (ओकर हाथसँ छूल अछि देह) — सूचकांक पंक्ति 1240मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “विहनि गजल (ओकर हाथसँ छूल अछि देह)” रूपमे देल अछि।
२९२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२९३. (C) गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।
२९४. (D) प्रेम-भावना आ देह-वर्णनक दार्शनिक गजल (मात्रा-क्रम 222-2212-21) — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम-भावना आ देह-वर्णनक दार्शनिक गजल (मात्रा-क्रम 222-2212-21)” अछि।
२९५. (A) प्रेम-भावना आ देह-वर्णनक दार्शनिक गजल (मात्रा-क्रम 222-2212-21) — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम-भावना आ देह-वर्णनक दार्शनिक गजल (मात्रा-क्रम 222-2212-21)” रूपमे देखाइत अछि।

२९६. (B) लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा पद्य, उप-विधा गजल — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२९८. (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२९९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३००. (B) खण्ड 2549, सूचकांक पंक्ति 1240मे आशीष अनचिन्हारक “विहनि गजल (ओकर हाथसँ छूल अछि देह)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “प्रेम-भावना आ देह-वर्णनक दार्शनिक गजल (मात्रा-क्रम 222-2212-21)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३०१. (A) फसली पद्य (मकड़ जिन्दाबाद, खेसारी नवहरन, भगवान मरूआ..., १-७) — सूचकांक पंक्ति 1241मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “फसली पद्य (मकड़ जिन्दाबाद, खेसारी नवहरन, भगवान मरूआ..., १-७)” रूपमे देल अछि।
३०२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३०३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
३०४. (D) सात टा कविता — टिप्पणीक पहिल संकेत “सात टा कविता” अछि।
३०५. (A) सात टा कविता — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सात टा कविता” रूपमे देखाइत अछि।
३०६. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३०७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३०८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३०९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३१०. (B) खण्ड 2550, सूचकांक पंक्ति 1241मे रवि भूषण पाठकक “फसली पद्य (मकड़ जिन्दाबाद, खेसारी नवहरन, भगवान मरूआ..., १-७)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सात टा कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३११. (A) गजल (हम हाल की कहाँ आब बेहाल अछि) — सूचकांक पंक्ति 1242मे बाल मुकुन्द पाठकक प्रविष्टि “गजल (हम हाल की कहाँ आब बेहाल अछि)” रूपमे देल अछि।
३१२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३१३. (C) गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।
३१४. (D) सरल वार्णिक बहर (वर्ण-१४) — टिप्पणीक पहिल संकेत “सरल वार्णिक बहर (वर्ण-१४)” अछि।
३१५. (A) सरल वार्णिक बहर (वर्ण-१४) — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सरल वार्णिक बहर (वर्ण-१४)” रूपमे देखाइत अछि।
३१६. (B) लेखक बाल मुकुन्द पाठक, विधा पद्य, उप-विधा गजल — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३१७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३१८. (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३१९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३२०. (B) खण्ड 2551, सूचकांक पंक्ति 1242मे बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (हम हाल की कहाँ आब बेहाल अछि)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “सरल वार्णिक बहर (वर्ण-१४)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३२१. (A) गजल (जहियासँ अपन घर नहि अछि) — सूचकांक पंक्ति 1243मे बाल मुकुन्द पाठकक प्रविष्टि “गजल (जहियासँ अपन घर नहि अछि)” रूपमे देल अछि।
३२२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३२३. (C) गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

३२४. (D) सरल वार्णिक बहर (वर्ण-१३) — टिप्पणीक पहिल संकेत “सरल वार्णिक बहर (वर्ण-१३)” अछि।

३२५. (A) सरल वार्णिक बहर (वर्ण-१३) — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सरल वार्णिक बहर (वर्ण-१३)” रूपमे देखाइत अछि।

३२६. (B) लेखक बाल मुकुन्द पाठक, विधा पद्य, उप-विधा गजल — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

३२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३२८. (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

३२९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३३०. (B) खण्ड 2552, सूचकांक पंक्ति 1243मे बाल मुकुन्द पाठकक “गजल (जहियासँ अपन घर नहि अछि)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “सरल वार्णिक बहर (वर्ण-१३)” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३३१. (A) क्षमाप्रार्थना (कविता) — सूचकांक पंक्ति 1244मे अनामिका राजक प्रविष्टि “क्षमाप्रार्थना (कविता)” रूपमे देल अछि।

३३२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३३३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

३३४. (D) नारी-पुरुष सम्बन्धक जटिलता आ स्त्री-अस्तित्वक द्वन्द्व पर दार्शनिक कविता — टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी-पुरुष सम्बन्धक जटिलता आ स्त्री-अस्तित्वक द्वन्द्व पर दार्शनिक कविता” अछि।

३३५. (A) नारी-पुरुष सम्बन्धक जटिलता आ स्त्री-अस्तित्वक द्वन्द्व पर दार्शनिक कविता — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी-पुरुष सम्बन्धक जटिलता आ स्त्री-अस्तित्वक द्वन्द्व पर दार्शनिक कविता” रूपमे देखाइत अछि।

३३६. (B) लेखक अनामिका राज, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

३३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३३८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

३३९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३४०. (B) खण्ड 2553, सूचकांक पंक्ति 1244मे अनामिका राजक “क्षमाप्रार्थना (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी-पुरुष सम्बन्धक जटिलता आ स्त्री-अस्तित्वक द्वन्द्व पर दार्शनिक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३४१. (A) बैशाखमे दलानपर..., सेवा, वर बिकाय लगनमे (कविता १-३) — सूचकांक पंक्ति 1245मे सन्दीप कुमार साफीक प्रविष्टि “बैशाखमे दलानपर..., सेवा, वर बिकाय लगनमे (कविता १-३)” रूपमे देल अछि।

३४२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३४३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

३४४. (D) ग्रीष्म-वर्णन — टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रीष्म-वर्णन” अछि।

३४५. (A) ग्रीष्म-वर्णन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रीष्म-वर्णन” रूपमे देखाइत अछि।

३४६. (B) लेखक सन्दीप कुमार साफी, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

३४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३४८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

३४९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३५०. (B) खण्ड 2554, सूचकांक पंक्ति 1245मे सन्दीप कुमार साफीक “बैशाखमे दलानपर..., सेवा, वर बिकाय लगनमे (कविता १-३)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ग्रीष्म-वर्णन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३५१. (A) आजुक बेटी (कविता) — सूचकांक पंक्ति 1246मे भालचन्द्र झाक प्रविष्टि “आजुक बेटी (कविता)” रूपमे देल अछि।

३५२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३५३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

३५४. (D) कराटे क्लाससँ आत्मरक्षाक गुर सिखैत आधुनिक बेटीक सशक्त चित्रण — टिप्पणीक पहिल संकेत “कराटे क्लाससँ आत्मरक्षाक गुर सिखैत आधुनिक बेटीक सशक्त चित्रण” अछि।

३५५. (A) कराटे क्लाससँ आत्मरक्षाक गुर सिखैत आधुनिक बेटीक सशक्त चित्रण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कराटे क्लाससँ आत्मरक्षाक गुर सिखैत आधुनिक बेटीक सशक्त चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

३५६. (B) लेखक भालचन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३५८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३५९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३६०. (B) खण्ड 2555, सूचकांक पंक्ति 1246मे भालचन्द्र झाक “आजुक बेटी (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “कराटे क्लाससँ आत्मरक्षाक गुर सिखैत आधुनिक बेटीक सशक्त चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३६१. (A) हाथी गेलै भोज खाए (बाल-कविता) — सूचकांक पंक्ति 1247मे अमित मिश्रक प्रविष्टि “हाथी गेलै भोज खाए (बाल-कविता)” रूपमे देल अछि।

३६२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३६३. (C) बाल-कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल-कविता” अछि।

३६४. (D) भोजनमे पण्डित-हाथीक पेटूपन आ बकरीक विवशताक रोचक बाल-प्रबन्ध — टिप्पणीक पहिल संकेत “भोजनमे पण्डित-हाथीक पेटूपन आ बकरीक विवशताक रोचक बाल-प्रबन्ध” अछि।

३६५. (A) भोजनमे पण्डित-हाथीक पेटूपन आ बकरीक विवशताक रोचक बाल-प्रबन्ध — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भोजनमे पण्डित-हाथीक पेटूपन आ बकरीक विवशताक रोचक बाल-प्रबन्ध” रूपमे देखाइत अछि।

३६६. (B) लेखक अमित मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा बाल-कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३६८. (D) ई पाठ बाल-कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३६९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३७०. (B) खण्ड 2556, सूचकांक पंक्ति 1247मे अमित मिश्रक “हाथी गेलै भोज खाए (बाल-कविता)” प्रविष्टि पद्य, बाल-कविता आ “भोजनमे पण्डित-हाथीक पेटूपन आ बकरीक विवशताक रोचक बाल-प्रबन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३७१. (A) संग देब सदखन अहिना (कविता) — सूचकांक पंक्ति 1248मे कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “संग देब सदखन अहिना (कविता)” रूपमे देल अछि।

३७२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३७३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

३७४. (D) प्रेम — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम” अछि।

३७५. (A) प्रेम — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।

३७६. (B) लेखक कामिनी कामायनी, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३७८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३७९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३८०. (B) खण्ड 2557, सूचकांक पंक्ति 1248मे कामिनी कामायनीक “संग देब सदिखन अहिना (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३८१. (A) लीनाझपटी, आजादी सबहक जान छै, बिहार अछि सिरमौर धारा केर — सूचकांक पंक्ति 1249मे दुखन प्रसाद यादवक प्रविष्टि “लीनाझपटी, आजादी सबहक जान छै, बिहार अछि सिरमौर धारा केर” रूपमे देल अछि।
३८२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३८३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
३८४. (D) भ्रष्टाचार — टिप्पणीक पहिल संकेत “भ्रष्टाचार” अछि।
३८५. (A) भ्रष्टाचार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भ्रष्टाचार” रूपमे देखाइत अछि।
३८६. (B) लेखक दुखन प्रसाद यादव, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३८८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३८९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३९०. (B) खण्ड 2558, सूचकांक पंक्ति 1249मे दुखन प्रसाद यादवक “लीनाझपटी, आजादी सबहक जान छै, बिहार अछि सिरमौर धारा केर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भ्रष्टाचार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३९१. (A) केकरा सँ कहबै (कविता) — सूचकांक पंक्ति 1250मे सुबोध कुमार ठाकुरक प्रविष्टि “केकरा सँ कहबै (कविता)” रूपमे देल अछि।
३९२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३९३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
३९४. (D) प्रेम-पिपासा आ अभिव्यक्तिक असमर्थताक भावुक गीतात्मक कविता — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम-पिपासा आ अभिव्यक्तिक असमर्थताक भावुक गीतात्मक कविता” अछि।
३९५. (A) प्रेम-पिपासा आ अभिव्यक्तिक असमर्थताक भावुक गीतात्मक कविता — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम-पिपासा आ अभिव्यक्तिक असमर्थताक भावुक गीतात्मक कविता” रूपमे देखाइत अछि।
३९६. (B) लेखक सुबोध कुमार ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३९८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३९९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४००. (B) खण्ड 2559, सूचकांक पंक्ति 1250मे सुबोध कुमार ठाकुरक “केकरा सँ कहबै (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम-पिपासा आ अभिव्यक्तिक असमर्थताक भावुक गीतात्मक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४०१. (A) गजल (आइ किछु मोन पड़लै फेरसँ किए) — सूचकांक पंक्ति 1251मे ओम प्रकाश झाक प्रविष्टि “गजल (आइ किछु मोन पड़लै फेरसँ किए)” रूपमे देल अछि।
४०२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४०३. (C) गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

४०४. (D) अरबी बहर — फाइलातुन-फऊलुन-मुस्तफइलुन — टिप्पणीक पहिल संकेत “अरबी बहर — फाइलातुन-फऊलुन-मुस्तफइलुन” अछि।

४०५. (A) अरबी बहर — फाइलातुन-फऊलुन-मुस्तफइलुन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अरबी बहर — फाइलातुन-फऊलुन-मुस्तफइलुन” रूपमे देखाइत अछि।

४०६. (B) लेखक ओम प्रकाश झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

४०७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४०८. (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

४०९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४१०. (B) खण्ड 2560, सूचकांक पंक्ति 1251मे ओम प्रकाश झाक “गजल (आइ किछु मोन पड़लै फेरसँ किए)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “अरबी बहर — फाइलातुन-फऊलुन-मुस्तफइलुन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४११. (A) गजल (कहियो तँ हमर घरमे चान एतै) — सूचकांक पंक्ति 1252मे ओम प्रकाश झाक प्रविष्टि “गजल (कहियो तँ हमर घरमे चान एतै)” रूपमे देल अछि।

४१२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४१३. (C) गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

४१४. (D) अरबी बहर — मुस्तफइलुन-मफाईलुन-फऊलुन — टिप्पणीक पहिल संकेत “अरबी बहर — मुस्तफइलुन-मफाईलुन-फऊलुन” अछि।

४१५. (A) अरबी बहर — मुस्तफइलुन-मफाईलुन-फऊलुन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अरबी बहर — मुस्तफइलुन-मफाईलुन-फऊलुन” रूपमे देखाइत अछि।

४१६. (B) लेखक ओम प्रकाश झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

४१७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४१८. (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

४१९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४२०. (B) खण्ड 2561, सूचकांक पंक्ति 1252मे ओम प्रकाश झाक “गजल (कहियो तँ हमर घरमे चान एतै)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “अरबी बहर — मुस्तफइलुन-मफाईलुन-फऊलुन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४२१. (A) गजल (नेता जी बकवास करै छथि) — सूचकांक पंक्ति 1253मे गंगेश गुंजनक प्रविष्टि “गजल (नेता जी बकवास करै छथि)” रूपमे देल अछि।

४२२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४२३. (C) गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

४२४. (D) भ्रष्टाचारी आ जनविरोधी राजनीतिक नेतृत्व पर करारा व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “भ्रष्टाचारी आ जनविरोधी राजनीतिक नेतृत्व पर करारा व्यंग्य” अछि।

४२५. (A) भ्रष्टाचारी आ जनविरोधी राजनीतिक नेतृत्व पर करारा व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भ्रष्टाचारी आ जनविरोधी राजनीतिक नेतृत्व पर करारा व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

४२६. (B) लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा गजल — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

४२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४२८. (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

४२९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४३०. (B) खण्ड 2562, सूचकांक पंक्ति 1253मे गंगेश गुंजनक “गजल (नेता जी बकवास करै छथि)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “भ्रष्टाचारी आ जनविरोधी राजनीतिक नेतृत्व पर करारा व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 15क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४३१. (A) कोसी बाढ़िपर विशेष; नेपाल-भारतक सांस्कृतिक कार्यक्रम। — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कें कोसी बाढ़िपर विशेष; नेपाल-भारतक सांस्कृतिक कार्यक्रम। सँ जोड़ैत अछि।
४३२. (A) कोसी बाढ़िपर विशेष; नेपाल-भारतक सांस्कृतिक कार्यक्रम। — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।
४३३. (A) कोसी बाढ़िपर विशेष; नेपाल-भारतक सांस्कृतिक कार्यक्रम। — सुरक्षित पठन स्रोत-सार कोसी बाढ़िपर विशेष; नेपाल-भारतक सांस्कृतिक कार्यक्रम। धरि सीमित रहैत अछि।
४३४. (A) शीर्षक कोसी बाढ़िपर विशेष; नेपाल-भारतक सांस्कृतिक कार्यक्रम। दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।
४३५. (A) कोसी बाढ़िपर विशेष; नेपाल-भारतक सांस्कृतिक कार्यक्रम। — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल कोसी बाढ़िपर विशेष; नेपाल-भारतक सांस्कृतिक कार्यक्रम। सँ बनैत अछि।
४३६. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।
४३७. (A) कोसी बाढ़िपर विशेष; नेपाल-भारतक सांस्कृतिक कार्यक्रम। — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ कोसी बाढ़िपर विशेष; नेपाल-भारतक सांस्कृतिक कार्यक्रम।क आधार पर ग्रहणीय अछि।
४३८. (A) कोसी बाढ़िपर विशेष; नेपाल-भारतक सांस्कृतिक कार्यक्रम।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्वपूर्ण अछि।
४३९. (A) सम्पादकीयक रूप कोसी बाढ़िपर विशेष; नेपाल-भारतक सांस्कृतिक कार्यक्रम। कें स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।
४४०. (A) उत्तरकें कोसी बाढ़िपर विशेष; नेपाल-भारतक सांस्कृतिक कार्यक्रम। धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।
४४१. (A) नेपाल टी.वी. पर मैथिली कार्यक्रमक प्रसारण। — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कें नेपाल टी.वी. पर मैथिली कार्यक्रमक प्रसारण। सँ जोड़ैत अछि।
४४२. (A) नेपाल टी.वी. पर मैथिली कार्यक्रमक प्रसारण। — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।
४४३. (A) नेपाल टी.वी. पर मैथिली कार्यक्रमक प्रसारण। — सुरक्षित पठन स्रोत-सार नेपाल टी.वी. पर मैथिली कार्यक्रमक प्रसारण। धरि सीमित रहैत अछि।
४४४. (A) शीर्षक नेपाल टी.वी. पर मैथिली कार्यक्रमक प्रसारण। दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।
४४५. (A) नेपाल टी.वी. पर मैथिली कार्यक्रमक प्रसारण। — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल नेपाल टी.वी. पर मैथिली कार्यक्रमक प्रसारण। सँ बनैत अछि।
४४६. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।
४४७. (A) नेपाल टी.वी. पर मैथिली कार्यक्रमक प्रसारण। — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ नेपाल टी.वी. पर मैथिली कार्यक्रमक प्रसारण।क आधार पर ग्रहणीय अछि।
४४८. (A) नेपाल टी.वी. पर मैथिली कार्यक्रमक प्रसारण।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्वपूर्ण अछि।
४४९. (A) रिपोर्टाजक रूप नेपाल टी.वी. पर मैथिली कार्यक्रमक प्रसारण। कें स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।
४५०. (A) उत्तरकें नेपाल टी.वी. पर मैथिली कार्यक्रमक प्रसारण। धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।
४५१. (A) यमराजक न्याय-प्रक्रिया; नाटकक समापन। — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कें यमराजक न्याय-प्रक्रिया; नाटकक समापन। सँ जोड़ैत अछि।
४५२. (A) यमराजक न्याय-प्रक्रिया; नाटकक समापन। — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।
४५३. (A) यमराजक न्याय-प्रक्रिया; नाटकक समापन। — सुरक्षित पठन स्रोत-सार यमराजक न्याय-प्रक्रिया; नाटकक समापन। धरि सीमित रहैत अछि।
४५४. (A) शीर्षक यमराजक न्याय-प्रक्रिया; नाटकक समापन। दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।
४५५. (A) यमराजक न्याय-प्रक्रिया; नाटकक समापन। — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल यमराजक न्याय-प्रक्रिया; नाटकक समापन। सँ बनैत अछि।
४५६. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

४५७. (A) यमराजक न्याय-प्रक्रिया; नाटकक समापन। — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ यमराजक न्याय-प्रक्रिया; नाटकक समापन।क आधार पर ग्रहणीय अछि।
४५८. (A) यमराजक न्याय-प्रक्रिया; नाटकक समापन।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्वपूर्ण अछि।
४५९. (A) नाटकक रूप यमराजक न्याय-प्रक्रिया; नाटकक समापन। केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।
४६०. (A) उत्तरकेँ यमराजक न्याय-प्रक्रिया; नाटकक समापन। धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।
४६१. (A) स्त्री-जीवनक शोषण आ चूल्हिक प्रतीकात्मक कथा। — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ स्त्री-जीवनक शोषण आ चूल्हिक प्रतीकात्मक कथा। सँ जोड़ैत अछि।
४६२. (A) स्त्री-जीवनक शोषण आ चूल्हिक प्रतीकात्मक कथा। — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।
४६३. (A) स्त्री-जीवनक शोषण आ चूल्हिक प्रतीकात्मक कथा। — सुरक्षित पठन स्रोत-सार स्त्री-जीवनक शोषण आ चूल्हिक प्रतीकात्मक कथा। धरि सीमित रहैत अछि।
४६४. (A) शीर्षक स्त्री-जीवनक शोषण आ चूल्हिक प्रतीकात्मक कथा। दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।
४६५. (A) स्त्री-जीवनक शोषण आ चूल्हिक प्रतीकात्मक कथा। — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल स्त्री-जीवनक शोषण आ चूल्हिक प्रतीकात्मक कथा। सँ बनैत अछि।
४६६. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।
४६७. (A) स्त्री-जीवनक शोषण आ चूल्हिक प्रतीकात्मक कथा। — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ स्त्री-जीवनक शोषण आ चूल्हिक प्रतीकात्मक कथा।क आधार पर ग्रहणीय अछि।
४६८. (A) स्त्री-जीवनक शोषण आ चूल्हिक प्रतीकात्मक कथा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्वपूर्ण अछि।
४६९. (A) कथाक रूप स्त्री-जीवनक शोषण आ चूल्हिक प्रतीकात्मक कथा। केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।
४७०. (A) उत्तरकेँ स्त्री-जीवनक शोषण आ चूल्हिक प्रतीकात्मक कथा। धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।
४७१. (A) साम्प्रदायिक दंगामे स्त्री-एकताक राजनीतिक व्यंग्य। — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ साम्प्रदायिक दंगामे स्त्री-एकताक राजनीतिक व्यंग्य। सँ जोड़ैत अछि।
४७२. (A) साम्प्रदायिक दंगामे स्त्री-एकताक राजनीतिक व्यंग्य। — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।
४७३. (A) साम्प्रदायिक दंगामे स्त्री-एकताक राजनीतिक व्यंग्य। — सुरक्षित पठन स्रोत-सार साम्प्रदायिक दंगामे स्त्री-एकताक राजनीतिक व्यंग्य। धरि सीमित रहैत अछि।
४७४. (A) शीर्षक साम्प्रदायिक दंगामे स्त्री-एकताक राजनीतिक व्यंग्य। दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।
४७५. (A) साम्प्रदायिक दंगामे स्त्री-एकताक राजनीतिक व्यंग्य। — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल साम्प्रदायिक दंगामे स्त्री-एकताक राजनीतिक व्यंग्य। सँ बनैत अछि।
४७६. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।
४७७. (A) साम्प्रदायिक दंगामे स्त्री-एकताक राजनीतिक व्यंग्य। — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ साम्प्रदायिक दंगामे स्त्री-एकताक राजनीतिक व्यंग्य।क आधार पर ग्रहणीय अछि।
४७८. (A) साम्प्रदायिक दंगामे स्त्री-एकताक राजनीतिक व्यंग्य।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्वपूर्ण अछि।
४७९. (A) कथाक रूप साम्प्रदायिक दंगामे स्त्री-एकताक राजनीतिक व्यंग्य। केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।
४८०. (A) उत्तरकेँ साम्प्रदायिक दंगामे स्त्री-एकताक राजनीतिक व्यंग्य। धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।
४८१. (A) नित्य-नैमित्तिक यज्ञ; ऋग्वेदक सृष्टि-सूक्त। — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ नित्य-नैमित्तिक यज्ञ; ऋग्वेदक सृष्टि-सूक्त। सँ जोड़ैत अछि।

५४७. (A) नन्दक तांत्रिक अन्धविश्वासमे गिरबाक चित्रण। — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ नन्दक तांत्रिक अन्धविश्वासमे गिरबाक चित्रण।क आधार पर ग्रहणीय अछि।
५४८. (A) नन्दक तांत्रिक अन्धविश्वासमे गिरबाक चित्रण।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।
५४९. (A) उपन्यासक रूप नन्दक तांत्रिक अन्धविश्वासमे गिरबाक चित्रण। केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।
५५०. (A) उत्तरकेँ नन्दक तांत्रिक अन्धविश्वासमे गिरबाक चित्रण। धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।
५५१. (A) गौरी-शिवक प्रणय-विरह; गौना-गीतक रागबद्ध पद्य। — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ गौरी-शिवक प्रणय-विरह; गौना-गीतक रागबद्ध पद्य। सँ जोड़ैत अछि।
५५२. (A) गौरी-शिवक प्रणय-विरह; गौना-गीतक रागबद्ध पद्य। — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।
५५३. (A) गौरी-शिवक प्रणय-विरह; गौना-गीतक रागबद्ध पद्य। — सुरक्षित पठन स्रोत-सार गौरी-शिवक प्रणय-विरह; गौना-गीतक रागबद्ध पद्य। धरि सीमित रहैत अछि।
५५४. (A) शीर्षक गौरी-शिवक प्रणय-विरह; गौना-गीतक रागबद्ध पद्य। दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।
५५५. (A) गौरी-शिवक प्रणय-विरह; गौना-गीतक रागबद्ध पद्य। — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल गौरी-शिवक प्रणय-विरह; गौना-गीतक रागबद्ध पद्य। सँ बनैत अछि।
५५६. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।
५५७. (A) गौरी-शिवक प्रणय-विरह; गौना-गीतक रागबद्ध पद्य। — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ गौरी-शिवक प्रणय-विरह; गौना-गीतक रागबद्ध पद्य।क आधार पर ग्रहणीय अछि।
५५८. (A) गौरी-शिवक प्रणय-विरह; गौना-गीतक रागबद्ध पद्य।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।
५५९. (A) पद्यक रूप गौरी-शिवक प्रणय-विरह; गौना-गीतक रागबद्ध पद्य। केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।
५६०. (A) उत्तरकेँ गौरी-शिवक प्रणय-विरह; गौना-गीतक रागबद्ध पद्य। धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।
५६१. (A) पुत्र-शोक; वृद्ध-उपेक्षाक सशक्त काव्यिक प्रतिवाद। — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ पुत्र-शोक; वृद्ध-उपेक्षाक सशक्त काव्यिक प्रतिवाद। सँ जोड़ैत अछि।
५६२. (A) पुत्र-शोक; वृद्ध-उपेक्षाक सशक्त काव्यिक प्रतिवाद। — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।
५६३. (A) पुत्र-शोक; वृद्ध-उपेक्षाक सशक्त काव्यिक प्रतिवाद। — सुरक्षित पठन स्रोत-सार पुत्र-शोक; वृद्ध-उपेक्षाक सशक्त काव्यिक प्रतिवाद। धरि सीमित रहैत अछि।
५६४. (A) शीर्षक पुत्र-शोक; वृद्ध-उपेक्षाक सशक्त काव्यिक प्रतिवाद। दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।
५६५. (A) पुत्र-शोक; वृद्ध-उपेक्षाक सशक्त काव्यिक प्रतिवाद। — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल पुत्र-शोक; वृद्ध-उपेक्षाक सशक्त काव्यिक प्रतिवाद। सँ बनैत अछि।
५६६. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।
५६७. (A) पुत्र-शोक; वृद्ध-उपेक्षाक सशक्त काव्यिक प्रतिवाद। — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ पुत्र-शोक; वृद्ध-उपेक्षाक सशक्त काव्यिक प्रतिवाद।क आधार पर ग्रहणीय अछि।
५६८. (A) पुत्र-शोक; वृद्ध-उपेक्षाक सशक्त काव्यिक प्रतिवाद।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।
५६९. (A) पद्यक रूप पुत्र-शोक; वृद्ध-उपेक्षाक सशक्त काव्यिक प्रतिवाद। केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।
५७०. (A) उत्तरकेँ पुत्र-शोक; वृद्ध-उपेक्षाक सशक्त काव्यिक प्रतिवाद। धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।
५७१. (A) कर्मयोगी जीवन-दर्शनक प्रार्थनामूलक कविता। — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ कर्मयोगी जीवन-दर्शनक प्रार्थनामूलक कविता। सँ जोड़ैत अछि।

५७२. (A) कर्मयोगी जीवन-दर्शनक प्रार्थनामूलक कविता। — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

५७३. (A) कर्मयोगी जीवन-दर्शनक प्रार्थनामूलक कविता। — सुरक्षित पठन स्रोत-सार कर्मयोगी जीवन-दर्शनक प्रार्थनामूलक कविता। धरि सीमित रहैत अछि।

५७४. (A) शीर्षक कर्मयोगी जीवन-दर्शनक प्रार्थनामूलक कविता। दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

५७५. (A) कर्मयोगी जीवन-दर्शनक प्रार्थनामूलक कविता। — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल कर्मयोगी जीवन-दर्शनक प्रार्थनामूलक कविता। सँ बनैत अछि।

५७६. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

५७७. (A) कर्मयोगी जीवन-दर्शनक प्रार्थनामूलक कविता। — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ कर्मयोगी जीवन-दर्शनक प्रार्थनामूलक कविता।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

५७८. (A) कर्मयोगी जीवन-दर्शनक प्रार्थनामूलक कविता। क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

५७९. (A) पद्यक रूप कर्मयोगी जीवन-दर्शनक प्रार्थनामूलक कविता। कैँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

५८०. (A) उत्तरकें कर्मयोगी जीवन-दर्शनक प्रार्थनामूलक कविता। धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

५८१. (A) मिथिलाक ग्रामीण जीवन-सौन्दर्यक गौरव-गान। — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ मिथिलाक ग्रामीण जीवन-सौन्दर्यक गौरव-गान। सँ जोड़ैत अछि।

५८२. (A) मिथिलाक ग्रामीण जीवन-सौन्दर्यक गौरव-गान। — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

५८३. (A) मिथिलाक ग्रामीण जीवन-सौन्दर्यक गौरव-गान। — सुरक्षित पठन स्रोत-सार मिथिलाक ग्रामीण जीवन-सौन्दर्यक गौरव-गान। धरि सीमित रहैत अछि।

५८४. (A) शीर्षक मिथिलाक ग्रामीण जीवन-सौन्दर्यक गौरव-गान। दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पृष्ठ होइत अछि।

५८५. (A) मिथिलाक ग्रामीण जीवन-सौन्दर्यक गौरव-गान। — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मिथिलाक ग्रामीण जीवन-सौन्दर्यक गौरव-गान। सँ बनैत अछि।

५८६. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोडब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

५८७. (A) मिथिलाक ग्रामीण जीवन-सौन्दर्यक गौरव-गान। — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मिथिलाक ग्रामीण जीवन-सौन्दर्यक गौरव-गान। आधार पर ग्रहणीय अछि।

५८८. (A) मिथिलाक ग्रामीण जीवन-सौन्दर्यक गौरव-गान।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्वपूर्ण अछि।

५८९. (A) पद्यक रूप मिथिलाक ग्रामीण जीवन-सौन्दर्यक गौरव-गान। केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

५९०. (A) उत्तरकें मिथिलाक ग्रामीण जीवन-सौन्दर्यक गौरव-गान। धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

५११. (A) माता-पिता-गुरुक ऋण स्वीकार करैत भक्ति गीत। — स्रोत-सत्र एहि खण्ड केँ माता-पिता-गुरुक ऋण स्वीकार करैत भक्ति गीत। सँ जोड़ैत अछि।

५१२. (A) माता-पिता-गुरुक ऋण स्वीकार करैत भक्ति गीत। — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

५९३. (A) माता-पिता-गुरुक ऋण स्वीकार करैत भक्ति गीत। — सुरक्षित पठन स्रोत-सार माता-पिता-गुरुक ऋण स्वीकार करैत भक्ति गीत। धरि सीमित रहैत अछि।

५१४. (A) शीर्षक माता-पिता-गुरुक ऋण स्वीकार करैत भक्ति गीत। दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पष्ट होइत अछि।

५९५. (A) माता-पिता-गुरुक ऋण स्वीकार करैत भक्ति गीत। — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल माता-पिता-गुरुक ऋण स्वीकार करैत भक्ति गीत। सँ बनैत अछि।

५९६. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

५९७. (A) माता-पिता-गुरुक ऋण स्वीकार करैत भक्ति गीत। — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ माता-पिता-गुरुक ऋण स्वीकार करैत भक्ति गीत।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

५९८. (A) माता-पिता-गुरुक ऋण स्वीकार करैत भक्ति गीत।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्वपूर्ण अछि।

६३१. (A) गणेशक लम्बोदर-मूर्ति; भैरवक तांत्रिक स्वरूप। — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ गणेशक लम्बोदर-मूर्ति; भैरवक तांत्रिक स्वरूप। सँ जोड़ैत अछि।
६३२. (A) गणेशक लम्बोदर-मूर्ति; भैरवक तांत्रिक स्वरूप। — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।
६३३. (A) गणेशक लम्बोदर-मूर्ति; भैरवक तांत्रिक स्वरूप। — सुरक्षित पठन स्रोत-सार गणेशक लम्बोदर-मूर्ति; भैरवक तांत्रिक स्वरूप। धरि सीमित रहैत अछि।
६३४. (A) शीर्षक गणेशक लम्बोदर-मूर्ति; भैरवक तांत्रिक स्वरूप। दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।
६३५. (A) गणेशक लम्बोदर-मूर्ति; भैरवक तांत्रिक स्वरूप। — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल गणेशक लम्बोदर-मूर्ति; भैरवक तांत्रिक स्वरूप। सँ बनैत अछि।
६३६. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।
६३७. (A) गणेशक लम्बोदर-मूर्ति; भैरवक तांत्रिक स्वरूप। — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ गणेशक लम्बोदर-मूर्ति; भैरवक तांत्रिक स्वरूप।क आधार पर ग्रहणीय अछि।
६३८. (A) गणेशक लम्बोदर-मूर्ति; भैरवक तांत्रिक स्वरूप।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्वपूर्ण अछि।
६३९. (A) शोध-निबन्धक रूप गणेशक लम्बोदर-मूर्ति; भैरवक तांत्रिक स्वरूप। केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।
६४०. (A) उत्तरकेँ गणेशक लम्बोदर-मूर्ति; भैरवक तांत्रिक स्वरूप। धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।
६४१. (A) मौना पञ्चमीसँ पूर्णाहुति धरिक व्रत-कथा। — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ मौना पञ्चमीसँ पूर्णाहुति धरिक व्रत-कथा। सँ जोड़ैत अछि।
६४२. (A) मौना पञ्चमीसँ पूर्णाहुति धरिक व्रत-कथा। — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।
६४३. (A) मौना पञ्चमीसँ पूर्णाहुति धरिक व्रत-कथा। — सुरक्षित पठन स्रोत-सार मौना पञ्चमीसँ पूर्णाहुति धरिक व्रत-कथा। धरि सीमित रहैत अछि।
६४४. (A) शीर्षक मौना पञ्चमीसँ पूर्णाहुति धरिक व्रत-कथा। दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।
६४५. (A) मौना पञ्चमीसँ पूर्णाहुति धरिक व्रत-कथा। — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मौना पञ्चमीसँ पूर्णाहुति धरिक व्रत-कथा। सँ बनैत अछि।
६४६. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।
६४७. (A) मौना पञ्चमीसँ पूर्णाहुति धरिक व्रत-कथा। — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मौना पञ्चमीसँ पूर्णाहुति धरिक व्रत-कथा।क आधार पर ग्रहणीय अछि।
६४८. (A) मौना पञ्चमीसँ पूर्णाहुति धरिक व्रत-कथा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्वपूर्ण अछि।
६४९. (A) निबन्धक रूप मौना पञ्चमीसँ पूर्णाहुति धरिक व्रत-कथा। केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।
६५०. (A) उत्तरकेँ मौना पञ्चमीसँ पूर्णाहुति धरिक व्रत-कथा। धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

अध्याय २ : विदेह-सदेह १६ — विस्तृत अध्ययन

खण्ड ३४ : विदेह-सदेह १६ — मचण्ड नाटकक कथावस्तु (विस्तार)

१. 'मचण्ड' नाटकक केन्द्रीय पात्र मुतालिफ कोन भाषा बजैत छथि?
 - (A) तमिल
 - (B) हिन्दी
 - (C) मैथिली
 - (D) बंगाली
२. नाटकमे मुतालिफक भाषाकेँ बुझाबए लेल कोन पात्र नियुक्त अछि?
 - (A) भाषा अनुवादक (बा अनुवादिका)
 - (B) केवल सिपाही
 - (C) ओकील
 - (D) कोनो नहि
३. नाटकक आरम्भ कोन स्थानपर होइत अछि?
 - (A) कोर्टक हाजत (जेल जाइत क्रममे)
 - (B) गाम
 - (C) विदेश
 - (D) कोनो नहि
४. मुतालिफपर कोन प्रकारक अपराधक आरोप अछि, ओकीलक कथन अनुसार?
 - (A) मादक पदार्थ-तस्करीसँ सम्बद्ध
 - (B) चोरी
 - (C) हत्या
 - (D) कोनो नहि
५. नाटकमे 'हबीबुल्ला' कोन भूमिकाक पात्र छथि?
 - (A) तस्करक सरदार
 - (B) खुफिया अधिकारी
 - (C) ओकील
 - (D) सिपाही
६. मुतालिफकेँ कतय धरि लऽ जाएब प्रस्तावित अछि?
 - (A) दिल्लीक तिहार जेल
 - (B) चेन्नैक जेल
 - (C) विदेश
 - (D) कोनो नहि
७. मुतालिफक बचाव लेल नाटकमे के सोझाँ अबैत छथि?
 - (A) एकटा तमिल-भाषी ओकील
 - (B) केवल अनुवादक
 - (C) कोनो नहि
 - (D) खुफिया अधिकारी स्वयं
८. 'लुल्हा' आ 'पीअर बच्चा'क प्रसंग नाटकमे कोन विषयक प्रतीक थिक?
 - (A) समाजमे असमानता आ भाग्यक भेद
 - (B) केवल हास्य
 - (C) नाटकक मुख्य कथासँ असम्बद्ध प्रसंग
 - (D) कोनो नहि

९. 'मचण्ड' नाटकक समग्र विषय की कहल जा सकैत अछि?

- (A) भाषिक अल्पसंख्यक, न्याय-व्यवस्था आ सामाजिक असमानताक अन्तर्संबंध
- (B) केवल हास्य-नाटक
- (C) ऐतिहासिक नाटक
- (D) कोनो नहि

खण्ड 2563 : विदेह-सदेह 16 — साहित्यकारक नाम: सदेह १६ मे रचना

१०. खण्ड 2563, सूचकांक पंक्ति 1254: साहित्यकारक नामक "सदेह १६ मे रचना" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सदेह १६ मे रचना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११. खण्ड 2563, सूचकांक पंक्ति 1254: साहित्यकारक नामक "सदेह १६ मे रचना"क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) विधा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२. खण्ड 2563, सूचकांक पंक्ति 1254: साहित्यकारक नामक "सदेह १६ मे रचना"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) उप-विधा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३. खण्ड 2563, सूचकांक पंक्ति 1254: साहित्यकारक नामक "सदेह १६ मे रचना" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) समालोचनात्मक टिप्पणी

१४. खण्ड 2563, सूचकांक पंक्ति 1254: साहित्यकारक नामक "सदेह १६ मे रचना" प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) समालोचनात्मक टिप्पणी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५. खण्ड 2563, सूचकांक पंक्ति 1254: साहित्यकारक नामक "सदेह १६ मे रचना"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक साहित्यकारक नाम, विधा विधा, उप-विधा उप-विधा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६. खण्ड 2563, सूचकांक पंक्ति 1254: साहित्यकारक नामक "सदेह १६ मे रचना" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७. खण्ड 2563, सूचकांक पंक्ति 1254: साहित्यकारक नामक “सदेह १६ मे रचना”कें विदेह-सदेह 16क विधा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ उप-विधाक रूपमे विधा-संसारसँ जुड़ल अछि।

१८. खण्ड 2563, सूचकांक पंक्ति 1254: साहित्यकारक नामक “सदेह १६ मे रचना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९. खण्ड 2563, सूचकांक पंक्ति 1254: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2563, सूचकांक पंक्ति 1254मे साहित्यकारक नामक “सदेह १६ मे रचना” प्रविष्टि विधा, उप-विधा आ “समालोचनात्मक टिप्पणी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2564 : विदेह-सदेह 16 — गजेन्द्र ठाकुर: मचण्ड (नाटक)

२०. खण्ड 2564, सूचकांक पंक्ति 1255: गजेन्द्र ठाकुरक “मचण्ड (नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मचण्ड (नाटक)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१. खण्ड 2564, सूचकांक पंक्ति 1255: गजेन्द्र ठाकुरक “मचण्ड (नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२. खण्ड 2564, सूचकांक पंक्ति 1255: गजेन्द्र ठाकुरक “मचण्ड (नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) नाटक
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३. खण्ड 2564, सूचकांक पंक्ति 1255: गजेन्द्र ठाकुरक “मचण्ड (नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) आतंकवाद

२४. खण्ड 2564, सूचकांक पंक्ति 1255: गजेन्द्र ठाकुरक “मचण्ड (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) आतंकवाद
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५. खण्ड 2564, सूचकांक पंक्ति 1255: गजेन्द्र ठाकुरक “मचण्ड (नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा नाटक
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६. खण्ड 2564, सूचकांक पंक्ति 1255: गजेन्द्र ठाकुरक “मचण्ड (नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७. खण्ड 2564, सूचकांक पंक्ति 1255: गजेन्द्र ठाकुरक “मचण्ड (नाटक)”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ नाटकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२८. खण्ड 2564, सूचकांक पंक्ति 1255: गजेन्द्र ठाकुरक “मचण्ड (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९. खण्ड 2564, सूचकांक पंक्ति 1255: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2564, सूचकांक पंक्ति 1255मे गजेन्द्र ठाकुरक “मचण्ड (नाटक)” प्रविष्टि गद्य, नाटक आ “आतंकवाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2565 : विदेह-सदेह 16 — गजेन्द्र ठाकुर: कियो बूझि नै सकल हमरा — गजलकार श्री ओम प्रकाश झा पर आलेख

३०. खण्ड 2565, सूचकांक पंक्ति 1256: गजेन्द्र ठाकुरक “कियो बूझि नै सकल हमरा — गजलकार श्री ओम प्रकाश झा पर आलेख” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) कियो बूझि नै सकल हमरा — गजलकार श्री ओम प्रकाश झा पर आलेख
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१. खण्ड 2565, सूचकांक पंक्ति 1256: गजेन्द्र ठाकुरक “कियो बूझि नै सकल हमरा — गजलकार श्री ओम प्रकाश झा पर आलेख”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२. खण्ड 2565, सूचकांक पंक्ति 1256: गजेन्द्र ठाकुरक “कियो बूझि नै सकल हमरा — गजलकार श्री ओम प्रकाश झा पर आलेख”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलेख/समालोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३. खण्ड 2565, सूचकांक पंक्ति 1256: गजेन्द्र ठाकुरक “कियो बूझि नै सकल हमरा — गजलकार श्री ओम प्रकाश झा पर आलेख” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) गजलकार ओम प्रकाश झाक गजल-कलाक विवेचन

३४. खण्ड 2565, सूचकांक पंक्ति 1256: गजेन्द्र ठाकुरक “कियो बूझि नै सकल हमरा — गजलकार श्री ओम प्रकाश झा पर आलेख” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) गजलकार ओम प्रकाश झाक गजल-कलाक विवेचन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५. खण्ड 2565, सूचकांक पंक्ति 1256: गजेन्द्र ठाकुरक “कियो बूझि नै सकल हमरा — गजलकार श्री ओम प्रकाश झा पर आलेख”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा आलेख/समालोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६. खण्ड 2565, सूचकांक पंक्ति 1256: गजेन्द्र ठाकुरक “कियो बूझि नै सकल हमरा — गजलकार श्री ओम प्रकाश झा पर आलेख” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७. खण्ड 2565, सूचकांक पंक्ति 1256: गजेन्द्र ठाकुरक “कियो बूझि नै सकल हमरा — गजलकार श्री ओम प्रकाश झा पर आलेख”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलेख/समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३८. खण्ड 2565, सूचकांक पंक्ति 1256: गजेन्द्र ठाकुरक “कियो बूझि नै सकल हमरा — गजलकार श्री ओम प्रकाश झा पर आलेख” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९. खण्ड 2565, सूचकांक पंक्ति 1256: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2565, सूचकांक पंक्ति 1256मे गजेन्द्र ठाकुरक “कियो बूझि नै सकल हमरा — गजलकार श्री ओम प्रकाश झा पर आलेख” प्रविष्टि गद्य, आलेख/समालोचना आ “गजलकार ओम प्रकाश झाक गजल-कलाक विवेचन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2566 : विदेह-सदेह 16 — गजेन्द्र ठाकुर: रेस (बाल विहिन)

४०. खण्ड 2566, सूचकांक पंक्ति 1257: गजेन्द्र ठाकुरक “रेस (बाल विहिन)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) रेस (बाल विहिन)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१. खण्ड 2566, सूचकांक पंक्ति 1257: गजेन्द्र ठाकुरक “रेस (बाल विहिन)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२. खण्ड 2566, सूचकांक पंक्ति 1257: गजेन्द्र ठाकुरक “रेस (बाल विहिन)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बाल विहिन
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३. खण्ड 2566, सूचकांक पंक्ति 1257: गजेन्द्र ठाकुरक “रेस (बाल विहिन)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) खेल-भावना

४४. खण्ड 2566, सूचकांक पंक्ति 1257: गजेन्द्र ठाकुरक “रेस (बाल विहिन)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) खेल-भावना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५. खण्ड 2566, सूचकांक पंक्ति 1257: गजेन्द्र ठाकुरक “रेस (बाल विहिन)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा बाल विहिन
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६. खण्ड 2566, सूचकांक पंक्ति 1257: गजेन्द्र ठाकुरक “रेस (बाल विहिन)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७. खण्ड 2566, सूचकांक पंक्ति 1257: गजेन्द्र ठाकुरक “रेस (बाल विहिन)”क विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बाल विहिनक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४८. खण्ड 2566, सूचकांक पंक्ति 1257: गजेन्द्र ठाकुरक “रेस (बाल विहिन)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९. खण्ड 2566, सूचकांक पंक्ति 1257: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2566, सूचकांक पंक्ति 1257मे गजेन्द्र ठाकुरक “रेस (बाल विहिन)” प्रविष्टि गद्य, बाल विहिन आ “खेल-भावना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2567 : विदेह-सदेह 16 — गजेन्द्र ठाकुर: संपादकीय — मैथिली विधिपीडिया, 'सगर राति दीप जरय' इतिहास

५०. खण्ड 2567, सूचकांक पंक्ति 1258: गजेन्द्र ठाकुरक “संपादकीय — मैथिली विधिपीडिया, 'सगर राति दीप जरय' इतिहास” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) संपादकीय — मैथिली विधिपीडिया, 'सगर राति दीप जरय' इतिहास
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१. खण्ड 2567, सूचकांक पंक्ति 1258: गजेन्द्र ठाकुरक “संपादकीय — मैथिली विधिपीडिया, 'सगर राति दीप जरय' इतिहास”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२. खण्ड 2567, सूचकांक पंक्ति 1258: गजेन्द्र ठाकुरक “संपादकीय — मैथिली विधिपीडिया, 'सगर राति दीप जरय' इतिहास”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) संपादकीय
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३. खण्ड 2567, सूचकांक पंक्ति 1258: गजेन्द्र ठाकुरक “संपादकीय — मैथिली विधिपीडिया, 'सगर राति दीप जरय' इतिहास” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मैथिली विकिपीडियाक ऐतिहासिक दस्तावेज

५४. खण्ड 2567, सूचकांक पंक्ति 1258: गजेन्द्र ठाकुरक “संपादकीय — मैथिली विधिपीडिया, 'सगर राति दीप जरय' इतिहास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मैथिली विकिपीडियाक ऐतिहासिक दस्तावेज
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५. खण्ड 2567, सूचकांक पंक्ति 1258: गजेन्द्र ठाकुरक “संपादकीय — मैथिली विधिपीडिया, 'सगर राति दीप जरय' इतिहास”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा सम्पादकीय
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६. खण्ड 2567, सूचकांक पंक्ति 1258: गजेन्द्र ठाकुरक “संपादकीय — मैथिली विधिपीडिया, 'सगर राति दीप जरय' इतिहास” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७. खण्ड 2567, सूचकांक पंक्ति 1258: गजेन्द्र ठाकुरक “संपादकीय — मैथिली विधिपीडिया, 'सगर राति दीप जरय' इतिहास”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ सम्पादकीयक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५८. खण्ड 2567, सूचकांक पंक्ति 1258: गजेन्द्र ठाकुरक “संपादकीय — मैथिली विधिपीडिया, 'सगर राति दीप जरय' इतिहास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९. खण्ड 2567, सूचकांक पंक्ति 1258: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2567, सूचकांक पंक्ति 1258मे गजेन्द्र ठाकुरक “संपादकीय — मैथिली विधिपीडिया, 'सगर राति दीप जरय' इतिहास” प्रविष्टि गद्य, सम्पादकीय आ “मैथिली विकिपीडियाक ऐतिहासिक दस्तावेज” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2568 : विदेह-सदेह 16 — अक्षय कुमार झा: प्रेमक अधिकार

६०. खण्ड 2568, सूचकांक पंक्ति 1259: अक्षय कुमार झाक “प्रेमक अधिकार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) प्रेमक अधिकार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१. खण्ड 2568, सूचकांक पंक्ति 1259: अक्षय कुमार झाक “प्रेमक अधिकार”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२. खण्ड 2568, सूचकांक पंक्ति 1259: अक्षय कुमार झाक “प्रेमक अधिकार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३. खण्ड 2568, सूचकांक पंक्ति 1259: अक्षय कुमार झाक “प्रेमक अधिकार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पारिवारिक सम्बन्धक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

६४. खण्ड 2568, सूचकांक पंक्ति 1259: अक्षय कुमार झाक “प्रेमक अधिकार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पारिवारिक सम्बन्धक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५. खण्ड 2568, सूचकांक पंक्ति 1259: अक्षय कुमार झाक “प्रेमक अधिकार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अक्षय कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६. खण्ड 2568, सूचकांक पंक्ति 1259: अक्षय कुमार झाक “प्रेमक अधिकार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७. खण्ड 2568, सूचकांक पंक्ति 1259: अक्षय कुमार झाक “प्रेमक अधिकार”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६८. खण्ड 2568, सूचकांक पंक्ति 1259: अक्षय कुमार झाक “प्रेमक अधिकार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९. खण्ड 2568, सूचकांक पंक्ति 1259: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2568, सूचकांक पंक्ति 1259मे अक्षय कुमार झाक “प्रेमक अधिकार” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “पारिवारिक सम्बन्धक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2569 : विदेह-सदेह 16 — जगदीश प्रसाद मण्डल: पलभरि

७०. खण्ड 2569, सूचकांक पंक्ति 1260: जगदीश प्रसाद मण्डलक “पलभरि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) पलभरि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१. खण्ड 2569, सूचकांक पंक्ति 1260: जगदीश प्रसाद मण्डलक “पलभरि”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२. खण्ड 2569, सूचकांक पंक्ति 1260: जगदीश प्रसाद मण्डलक “पलभरि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३. खण्ड 2569, सूचकांक पंक्ति 1260: जगदीश प्रसाद मण्डलक “पलभरि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) यथार्थवादी

७४. खण्ड 2569, सूचकांक पंक्ति 1260: जगदीश प्रसाद मण्डलक “पलभरि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) यथार्थवादी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५. खण्ड 2569, सूचकांक पंक्ति 1260: जगदीश प्रसाद मण्डलक “पलभरि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जगदीश प्रसाद मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६. खण्ड 2569, सूचकांक पंक्ति 1260: जगदीश प्रसाद मण्डलक “पलभरि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७. खण्ड 2569, सूचकांक पंक्ति 1260: जगदीश प्रसाद मण्डलक “पलभरि”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७८. खण्ड 2569, सूचकांक पंक्ति 1260: जगदीश प्रसाद मण्डलक “पलभरि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९. खण्ड 2569, सूचकांक पंक्ति 1260: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2569, सूचकांक पंक्ति 1260मे जगदीश प्रसाद मण्डलक “पलभरि” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “यथार्थवादी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2570 : विदेह-सदेह 16 — जगदीश प्रसाद मण्डल: रिजल्ट

८०. खण्ड 2570, सूचकांक पंक्ति 1261: जगदीश प्रसाद मण्डलक “रिजल्ट” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) रिजल्ट
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१. खण्ड 2570, सूचकांक पंक्ति 1261: जगदीश प्रसाद मण्डलक “रिजल्ट”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२. खण्ड 2570, सूचकांक पंक्ति 1261: जगदीश प्रसाद मण्डलक “रिजल्ट”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३. खण्ड 2570, सूचकांक पंक्ति 1261: जगदीश प्रसाद मण्डलक “रिजल्ट” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) परीक्षा-परिणामक चिन्ता

८४. खण्ड 2570, सूचकांक पंक्ति 1261: जगदीश प्रसाद मण्डलक “रिजल्ट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) परीक्षा-परिणामक चिन्ता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५. खण्ड 2570, सूचकांक पंक्ति 1261: जगदीश प्रसाद मण्डलक “रिजल्ट”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जगदीश प्रसाद मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६. खण्ड 2570, सूचकांक पंक्ति 1261: जगदीश प्रसाद मण्डलक “रिजल्ट” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७. खण्ड 2570, सूचकांक पंक्ति 1261: जगदीश प्रसाद मण्डलक “रिजल्ट”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८८. खण्ड 2570, सूचकांक पंक्ति 1261: जगदीश प्रसाद मण्डलक “रिजल्ट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९. खण्ड 2570, सूचकांक पंक्ति 1261: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2570, सूचकांक पंक्ति 1261मे जगदीश प्रसाद मण्डलक “रिजल्ट” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “परीक्षा-परिणामक चिन्ता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2571 : विदेह-सदेह 16 — उमेश पासवान: अजोह

९०. खण्ड 2571, सूचकांक पंक्ति 1262: उमेश पासवानक “अजोह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अजोह
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९१. खण्ड 2571, सूचकांक पंक्ति 1262: उमेश पासवानक “अजोह”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९२. खण्ड 2571, सूचकांक पंक्ति 1262: उमेश पासवानक “अजोह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९३. खण्ड 2571, सूचकांक पंक्ति 1262: उमेश पासवानक “अजोह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बाल-जीवनक शरारत

९४. खण्ड 2571, सूचकांक पंक्ति 1262: उमेश पासवानक “अजोह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बाल-जीवनक शरारत
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९५. खण्ड 2571, सूचकांक पंक्ति 1262: उमेश पासवानक “अजोह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक उमेश पासवान, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९६. खण्ड 2571, सूचकांक पंक्ति 1262: उमेश पासवानक “अजोह” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९७. खण्ड 2571, सूचकांक पंक्ति 1262: उमेश पासवानक “अजोह”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

९८. खण्ड 2571, सूचकांक पंक्ति 1262: उमेश पासवानक “अजोह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९९. खण्ड 2571, सूचकांक पंक्ति 1262: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2571, सूचकांक पंक्ति 1262मे उमेश पासवानक “अजोह” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “बाल-जीवनक शरारत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2572 : विदेह-सदेह 16 — लक्ष्मी दासः दुष्टपना

१००. खण्ड 2572, सूचकांक पंक्ति 1263: लक्ष्मी दासक “दुष्टपना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) दुष्टपना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०१. खण्ड 2572, सूचकांक पंक्ति 1263: लक्ष्मी दासक “दुष्टपना”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२. खण्ड 2572, सूचकांक पंक्ति 1263: लक्ष्मी दासक “दुष्टपना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३. खण्ड 2572, सूचकांक पंक्ति 1263: लक्ष्मी दासक “दुष्टपना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) किसानक पीड़ा

१०४. खण्ड 2572, सूचकांक पंक्ति 1263: लक्ष्मी दासक “दुष्टपना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) किसानक पीड़ा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५. खण्ड 2572, सूचकांक पंक्ति 1263: लक्ष्मी दासक “दुष्टपना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक लक्ष्मी दास, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६. खण्ड 2572, सूचकांक पंक्ति 1263: लक्ष्मी दासक “दुष्टपना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७. खण्ड 2572, सूचकांक पंक्ति 1263: लक्ष्मी दासक “दुष्टपना”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०८. खण्ड 2572, सूचकांक पंक्ति 1263: लक्ष्मी दासक “दुष्टपना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०९. खण्ड 2572, सूचकांक पंक्ति 1263: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2572, सूचकांक पंक्ति 1263मे लक्ष्मी दासक “दुष्टपना” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “किसानक पीड़ा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2573 : विदेह-सदेह 16 — योगेन्द्र पाठक 'वियोगी': खजाना

११०. खण्ड 2573, सूचकांक पंक्ति 1264: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “खजाना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) खजाना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१११. खण्ड 2573, सूचकांक पंक्ति 1264: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “खजाना”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११२. खण्ड 2573, सूचकांक पंक्ति 1264: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “खजाना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११३. खण्ड 2573, सूचकांक पंक्ति 1264: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “खजाना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रवासी बालक

११४. खण्ड 2573, सूचकांक पंक्ति 1264: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “खजाना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रवासी बालक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११५. खण्ड 2573, सूचकांक पंक्ति 1264: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “खजाना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक योगेन्द्र पाठक 'वियोगी', विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११६. खण्ड 2573, सूचकांक पंक्ति 1264: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “खजाना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११७. खण्ड 2573, सूचकांक पंक्ति 1264: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “खजाना”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११८. खण्ड 2573, सूचकांक पंक्ति 1264: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “खजाना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११९. खण्ड 2573, सूचकांक पंक्ति 1264: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2573, सूचकांक पंक्ति 1264मे योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “खजाना” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “प्रवासी बालक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2574 : विदेह-सदेह 16 — योगेन्द्र पाठक 'वियोगी': विजय (१ आ २)

१२०. खण्ड 2574, सूचकांक पंक्ति 1265: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “विजय (१ आ २)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) विजय (१ आ २)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२१. खण्ड 2574, सूचकांक पंक्ति 1265: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “विजय (१ आ २)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२२. खण्ड 2574, सूचकांक पंक्ति 1265: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “विजय (१ आ २)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२३. खण्ड 2574, सूचकांक पंक्ति 1265: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “विजय (१ आ २)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नारी सशक्तिकरण

१२४. खण्ड 2574, सूचकांक पंक्ति 1265: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “विजय (१ आ २)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नारी सशक्तिकरण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२५. खण्ड 2574, सूचकांक पंक्ति 1265: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “विजय (१ आ २)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक योगेन्द्र पाठक 'वियोगी', विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२६. खण्ड 2574, सूचकांक पंक्ति 1265: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “विजय (१ आ २)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२७. खण्ड 2574, सूचकांक पंक्ति 1265: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “विजय (१ आ २)”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२८. खण्ड 2574, सूचकांक पंक्ति 1265: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “विजय (१ आ २)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२९. खण्ड 2574, सूचकांक पंक्ति 1265: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2574, सूचकांक पंक्ति 1265मे योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “विजय (१ आ २)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नारी सशक्तिकरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2575 : विदेह-सदेह 16 — जे.पी.गुप्ता 'प्रसिद्ध मोनूजी': बेटी रूपी बोझ

१३०. खण्ड 2575, सूचकांक पंक्ति 1266: जे.पी.गुप्ता 'प्रसिद्ध मोनूजी'क “बेटी रूपी बोझ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बेटी रूपी बोझ
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३१. खण्ड 2575, सूचकांक पंक्ति 1266: जे.पी.गुप्ता 'प्रसिद्ध मोनूजी'क “बेटी रूपी बोझ”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३२. खण्ड 2575, सूचकांक पंक्ति 1266: जे.पी.गुप्ता 'प्रसिद्ध मोनूजी'क “बेटी रूपी बोझ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३३. खण्ड 2575, सूचकांक पंक्ति 1266: जे.पी.गुप्ता 'प्रसिद्ध मोनूजी'क “बेटी रूपी बोझ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) दहेज प्रथा

१३४. खण्ड 2575, सूचकांक पंक्ति 1266: जे.पी.गुप्ता 'प्रसिद्ध मोनूजी'क “बेटी रूपी बोझ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) दहेज प्रथा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३५. खण्ड 2575, सूचकांक पंक्ति 1266: जे.पी.गुप्ता 'प्रसिद्ध मोनूजी'क “बेटी रूपी बोझ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जे.पी.गुप्ता 'प्रसिद्ध मोनूजी', विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३६. खण्ड 2575, सूचकांक पंक्ति 1266: जे.पी.गुप्ता 'प्रसिद्ध मोनूजी'क “बेटी रूपी बोझ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३७. खण्ड 2575, सूचकांक पंक्ति 1266: जे.पी.गुप्ता 'प्रसिद्ध मोनूजी'क “बेटी रूपी बोझ”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३८. खण्ड 2575, सूचकांक पंक्ति 1266: जे.पी.गुप्ता 'प्रसिद्ध मोनूजी'क “बेटी रूपी बोझ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३९. खण्ड 2575, सूचकांक पंक्ति 1266: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2575, सूचकांक पंक्ति 1266मे जे.पी.गुप्ता 'प्रसिद्ध मोनूजी'क “बेटी रूपी बोझ” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “दहेज प्रथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2576 : विदेह-सदेह 16 — शारदा नन्द सिंह: की करब से अहीं कहू (विहिनि कथा)

१४०. खण्ड 2576, सूचकांक पंक्ति 1267: शारदा नन्द सिंहक “की करब से अहीं कहू (विहिनि कथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) की करब से अहीं कहू (विहिनि कथा)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४१. खण्ड 2576, सूचकांक पंक्ति 1267: शारदा नन्द सिंहक “की करब से अहीं कहू (विहिनि कथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४२. खण्ड 2576, सूचकांक पंक्ति 1267: शारदा नन्द सिंहक “की करब से अहीं कहू (विहिनि कथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) विहिनि कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४३. खण्ड 2576, सूचकांक पंक्ति 1267: शारदा नन्द सिंहक “की करब से अहीं कहू (विहिनि कथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ग्रामीण ऋणग्रस्तता

१४४. खण्ड 2576, सूचकांक पंक्ति 1267: शारदा नन्द सिंहक “की करब से अहीं कहू (विहिनि कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ग्रामीण ऋणग्रस्तता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४५. खण्ड 2576, सूचकांक पंक्ति 1267: शारदा नन्द सिंहक “की करब से अहीं कहू (विहिनि कथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शारदा नन्द सिंह, विधा गद्य, उप-विधा विहिनि कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४६. खण्ड 2576, सूचकांक पंक्ति 1267: शारदा नन्द सिंहक “की करब से अहीं कहू (विहिनि कथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४७. खण्ड 2576, सूचकांक पंक्ति 1267: शारदा नन्द सिंहक “की करब से अहीं कहू (विहिनि कथा)”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ विहिनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४८. खण्ड 2576, सूचकांक पंक्ति 1267: शारदा नन्द सिंहक “की करब से अहीं कहू (विहिनि कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४९. खण्ड 2576, सूचकांक पंक्ति 1267: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2576, सूचकांक पंक्ति 1267मे शारदा नन्द सिंहक “की करब से अहीं कहू (विहिनि कथा)” प्रविष्टि गद्य, विहिनि कथा आ “ग्रामीण ऋणग्रस्तता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2577 : विदेह-सदेह 16 — कपिलेश्वर राउत: बडका खीरा

१५०. खण्ड 2577, सूचकांक पंक्ति 1268: कपिलेश्वर राउतक “बडका खीरा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बडका खीरा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५१. खण्ड 2577, सूचकांक पंक्ति 1268: कपिलेश्वर राउतक “बडका खीरा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५२. खण्ड 2577, सूचकांक पंक्ति 1268: कपिलेश्वर राउतक “बडका खीरा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५३. खण्ड 2577, सूचकांक पंक्ति 1268: कपिलेश्वर राउतक “बडका खीरा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रयोगात्मक कृषि

१५४. खण्ड 2577, सूचकांक पंक्ति 1268: कपिलेश्वर राउतक “बडका खीरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रयोगात्मक कृषि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५५. खण्ड 2577, सूचकांक पंक्ति 1268: कपिलेश्वर राउतक “बडका खीरा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कपिलेश्वर राउत, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५६. खण्ड 2577, सूचकांक पंक्ति 1268: कपिलेश्वर राउतक “बडका खीरा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५७. खण्ड 2577, सूचकांक पंक्ति 1268: कपिलेश्वर राउतक “बडका खीरा”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५८. खण्ड 2577, सूचकांक पंक्ति 1268: कपिलेश्वर राउतक “बडका खीरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५९. खण्ड 2577, सूचकांक पंक्ति 1268: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2577, सूचकांक पंक्ति 1268मे कपिलेश्वर राउतक “बडका खीरा” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “प्रयोगात्मक कृषि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2578 : विदेह-सदेह 16 — कपिलेश्वर राउत: अधला

१६०. खण्ड 2578, सूचकांक पंक्ति 1269: कपिलेश्वर राउतक “अधला” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अधला
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६१. खण्ड 2578, सूचकांक पंक्ति 1269: कपिलेश्वर राउतक “अधला”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६२. खण्ड 2578, सूचकांक पंक्ति 1269: कपिलेश्वर राउतक “अधला”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६३. खण्ड 2578, सूचकांक पंक्ति 1269: कपिलेश्वर राउतक “अधला” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) लोक-कथा शैली

१६४. खण्ड 2578, सूचकांक पंक्ति 1269: कपिलेश्वर राउतक “अधला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) लोक-कथा शैली
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६५. खण्ड 2578, सूचकांक पंक्ति 1269: कपिलेश्वर राउतक “अधला”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कपिलेश्वर राउत, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६६. खण्ड 2578, सूचकांक पंक्ति 1269: कपिलेश्वर राउतक “अधला” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६७. खण्ड 2578, सूचकांक पंक्ति 1269: कपिलेश्वर राउतक “अधला”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१६८. खण्ड 2578, सूचकांक पंक्ति 1269: कपिलेश्वर राउतक “अधला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६१. खण्ड 2578, सूचकांक पंक्ति 1269: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2578, सूचकांक पंक्ति 1269मे कपिलेश्वर राउतक “अधला” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “लोक-कथा शैली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2579 : विदेह-सदेह 16 — दुर्गानन्द मण्डल: बुधि

१७०. खण्ड 2579, सूचकांक पंक्ति 1270: दुर्गानन्द मण्डलक “बुधि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बुधि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७१. खण्ड 2579, सूचकांक पंक्ति 1270: दुर्गानन्द मण्डलक “बुधि”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७२. खण्ड 2579, सूचकांक पंक्ति 1270: दुर्गानन्द मण्डलक “बुधि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७३. खण्ड 2579, सूचकांक पंक्ति 1270: दुर्गानन्द मण्डलक “बुधि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) लोक-कथा रंग

१७४. खण्ड 2579, सूचकांक पंक्ति 1270: दुर्गानन्द मण्डलक “बुधि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) लोक-कथा रंग
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७५. खण्ड 2579, सूचकांक पंक्ति 1270: दुर्गानन्द मण्डलक “बुधि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक दुर्गानन्द मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७६. खण्ड 2579, सूचकांक पंक्ति 1270: दुर्गानन्द मण्डलक “बुधि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७७. खण्ड 2579, सूचकांक पंक्ति 1270: दुर्गानन्द मण्डलक “बुधि”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१७८. खण्ड 2579, सूचकांक पंक्ति 1270: दुर्गानन्द मण्डलक “बुधि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७९. खण्ड 2579, सूचकांक पंक्ति 1270: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2579, सूचकांक पंक्ति 1270मे दुर्गानन्द मण्डलक “बुधि” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “लोक-कथा रंग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2580 : विदेह-सदेह 16 — दुर्गानन्द मण्डल: छुतहरि

१८०. खण्ड 2580, सूचकांक पंक्ति 1271: दुर्गानन्द मण्डलक “छुतहरि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) छुतहरि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८१. खण्ड 2580, सूचकांक पंक्ति 1271: दुर्गानन्द मण्डलक “छुतहरि”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८२. खण्ड 2580, सूचकांक पंक्ति 1271: दुर्गानन्द मण्डलक “छुतहरि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८३. खण्ड 2580, सूचकांक पंक्ति 1271: दुर्गानन्द मण्डलक “छुतहरि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सामाजिक मूल्य

१८४. खण्ड 2580, सूचकांक पंक्ति 1271: दुर्गानन्द मण्डलक “छुतहरि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सामाजिक मूल्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८५. खण्ड 2580, सूचकांक पंक्ति 1271: दुर्गानन्द मण्डलक “छुतहरि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक दुर्गानन्द मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८६. खण्ड 2580, सूचकांक पंक्ति 1271: दुर्गानन्द मण्डलक “छुतहरि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८७. खण्ड 2580, सूचकांक पंक्ति 1271: दुर्गानन्द मण्डलक “छुतहरि”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१८८. खण्ड 2580, सूचकांक पंक्ति 1271: दुर्गानन्द मण्डलक “छुतहरि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८९. खण्ड 2580, सूचकांक पंक्ति 1271: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2580, सूचकांक पंक्ति 1271मे दुर्गानन्द मण्डलक “छुतहरि” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “सामाजिक मूल्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2581 : विदेह-सदेह 16 — राजदेव मण्डल: रुसल बौआ (बाल विहिन)

१९०. खण्ड 2581, सूचकांक पंक्ति 1272: राजदेव मण्डलक “रुसल बौआ (बाल विहिन)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) रुसल बौआ (बाल विहिन)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९१. खण्ड 2581, सूचकांक पंक्ति 1272: राजदेव मण्डलक “रुसल बौआ (बाल विहिन)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९२. खण्ड 2581, सूचकांक पंक्ति 1272: राजदेव मण्डलक “रुसल बौआ (बाल विहिन)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) विहिनि कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९३. खण्ड 2581, सूचकांक पंक्ति 1272: राजदेव मण्डलक “रुसल बौआ (बाल विहिन)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बाल-मनोविज्ञान

१९४. खण्ड 2581, सूचकांक पंक्ति 1272: राजदेव मण्डलक “रुसल बौआ (बाल विहिन)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बाल-मनोविज्ञान
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९५. खण्ड 2581, सूचकांक पंक्ति 1272: राजदेव मण्डलक “रुसल बौआ (बाल विहिन)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक राजदेव मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा विहिनि कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९६. खण्ड 2581, सूचकांक पंक्ति 1272: राजदेव मण्डलक “रुसल बौआ (बाल विहिन)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९७. खण्ड 2581, सूचकांक पंक्ति 1272: राजदेव मण्डलक “रुसल बौआ (बाल विहिन)”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ विहिनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१९८. खण्ड 2581, सूचकांक पंक्ति 1272: राजदेव मण्डलक “रुसल बौआ (बाल विहिन)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९९. खण्ड 2581, सूचकांक पंक्ति 1272: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2581, सूचकांक पंक्ति 1272मे राजदेव मण्डलक “रुसल बौआ (बाल विहिन)” प्रविष्टि गद्य, विहिनि कथा आ “बाल-मनोविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2582 : विदेह-सदेह 16 — राजदेव मण्डल: दोख केकर

२००. खण्ड 2582, सूचकांक पंक्ति 1273: राजदेव मण्डलक “दोख केकर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) दोख केकर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०१. खण्ड 2582, सूचकांक पंक्ति 1273: राजदेव मण्डलक “दोख केकर”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०२. खण्ड 2582, सूचकांक पंक्ति 1273: राजदेव मण्डलक “दोख केकर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०३. खण्ड 2582, सूचकांक पंक्ति 1273: राजदेव मण्डलक “दोख केकर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सास-बहू सम्बन्ध

२०४. खण्ड 2582, सूचकांक पंक्ति 1273: राजदेव मण्डलक “दोख केकर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सास-बहू सम्बन्ध
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०५. खण्ड 2582, सूचकांक पंक्ति 1273: राजदेव मण्डलक “दोख केकर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक राजदेव मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०६. खण्ड 2582, सूचकांक पंक्ति 1273: राजदेव मण्डलक “दोख केकर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०७. खण्ड 2582, सूचकांक पंक्ति 1273: राजदेव मण्डलक “दोख केकर”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२०८. खण्ड 2582, सूचकांक पंक्ति 1273: राजदेव मण्डलक “दोख केकर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०९. खण्ड 2582, सूचकांक पंक्ति 1273: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2582, सूचकांक पंक्ति 1273मे राजदेव मण्डलक “दोख केकर” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “सास-बहू सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2583 : विदेह-सदेह 16 — राजदेव मण्डल: जाल (पटकथा)

२१०. खण्ड 2583, सूचकांक पंक्ति 1274: राजदेव मण्डलक “जाल (पटकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) जाल (पटकथा)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२११. खण्ड 2583, सूचकांक पंक्ति 1274: राजदेव मण्डलक “जाल (पटकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१२. खण्ड 2583, सूचकांक पंक्ति 1274: राजदेव मण्डलक “जाल (पटकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) पटकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१३. खण्ड 2583, सूचकांक पंक्ति 1274: राजदेव मण्डलक “जाल (पटकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मैथिली पटकथाक प्रथम प्रयोग

२१४. खण्ड 2583, सूचकांक पंक्ति 1274: राजदेव मण्डलक “जाल (पटकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मैथिली पटकथाक प्रथम प्रयोग
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१५. खण्ड 2583, सूचकांक पंक्ति 1274: राजदेव मण्डलक “जाल (पटकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक राजदेव मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा पटकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१६. खण्ड 2583, सूचकांक पंक्ति 1274: राजदेव मण्डलक “जाल (पटकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगौं बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१७. खण्ड 2583, सूचकांक पंक्ति 1274: राजदेव मण्डलक “जाल (पटकथा)”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ पटकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२१८. खण्ड 2583, सूचकांक पंक्ति 1274: राजदेव मण्डलक “जाल (पटकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१९. खण्ड 2583, सूचकांक पंक्ति 1274: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2583, सूचकांक पंक्ति 1274मे राजदेव मण्डलक “जाल (पटकथा)” प्रविष्टि गद्य, पटकथा आ “मैथिली पटकथाक प्रथम प्रयोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2584 : विदेह-सदेह 16 — जितेन्द्र झा: गतिविधि; सांस्कृतिक सम्मानसँ मजबुत हएत राष्ट्रियता: बिमल

२२०. खण्ड 2584, सूचकांक पंक्ति 1275: जितेन्द्र झाक “गतिविधि; सांस्कृतिक सम्मानसँ मजबुत हएत राष्ट्रियता: बिमल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गतिविधि; सांस्कृतिक सम्मानसँ मजबुत हएत राष्ट्रियता: बिमल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२१. खण्ड 2584, सूचकांक पंक्ति 1275: जितेन्द्र झाक “गतिविधि; सांस्कृतिक सम्मानसँ मजबुत हएत राष्ट्रियता: बिमल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२२. खण्ड 2584, सूचकांक पंक्ति 1275: जितेन्द्र झाक “गतिविधि; सांस्कृतिक सम्मानसँ मजबुत हएत राष्ट्रियता: बिमल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) रिपोर्टाज
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२३. खण्ड 2584, सूचकांक पंक्ति 1275: जितेन्द्र झाक “गतिविधि; सांस्कृतिक सम्मानसँ मजबुत हएत राष्ट्रियता: बिमल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नेपाल

२२४. खण्ड 2584, सूचकांक पंक्ति 1275: जितेन्द्र झाक “गतिविधि; सांस्कृतिक सम्मानसँ मजबुत हएत राष्ट्रियता: बिमल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नेपाल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२५. खण्ड 2584, सूचकांक पंक्ति 1275: जितेन्द्र झाक “गतिविधि; सांस्कृतिक सम्मानसँ मजबुत हएत राष्ट्रियता: बिमल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जितेन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्टाज
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२६. खण्ड 2584, सूचकांक पंक्ति 1275: जितेन्द्र झाक “गतिविधि; सांस्कृतिक सम्मानसँ मजबुत हएत राष्ट्रियता: बिमल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२७. खण्ड 2584, सूचकांक पंक्ति 1275: जितेन्द्र झाक “गतिविधि; सांस्कृतिक सम्मानसँ मजबुत हएत राष्ट्रियता: बिमल”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ रिपोर्टाजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२२८. खण्ड 2584, सूचकांक पंक्ति 1275: जितेन्द्र झाक “गतिविधि; सांस्कृतिक सम्मानसँ मजबुत हएत राष्ट्रियता: बिमल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२९. खण्ड 2584, सूचकांक पंक्ति 1275: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2584, सूचकांक पंक्ति 1275मे जितेन्द्र झाक “गतिविधि; सांस्कृतिक सम्मानसँ मजबुत हएत राष्ट्रियता: बिमल” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्टाज आ “नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2585 : विदेह-सदेह 16 — जितेन्द्र झा: सभासद् साह फरार — की भेटत जनकपुर बमकाण्ड पीडितके न्याय?

२३०. खण्ड 2585, सूचकांक पंक्ति 1276: जितेन्द्र झाक “सभासद् साह फरार — की भेटत जनकपुर बमकाण्ड पीडितके न्याय?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सभासद् साह फरार — की भेटत जनकपुर बमकाण्ड पीडितके न्याय?
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३१. खण्ड 2585, सूचकांक पंक्ति 1276: जितेन्द्र झाक “सभासद् साह फरार — की भेटत जनकपुर बमकाण्ड पीडितके न्याय?”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३२. खण्ड 2585, सूचकांक पंक्ति 1276: जितेन्द्र झाक “सभासद् साह फरार — की भेटत जनकपुर बमकाण्ड पीडितके न्याय?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) रिपोर्टाज
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३३. खण्ड 2585, सूचकांक पंक्ति 1276: जितेन्द्र झाक “सभासद् साह फरार — की भेटत जनकपुर बमकाण्ड पीडितके न्याय?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) जनकपुर बमकाण्डक राजनीतिक विश्लेषण

२३४. खण्ड 2585, सूचकांक पंक्ति 1276: जितेन्द्र झाक “सभासद् साह फरार — की भेटत जनकपुर बमकाण्ड पीडितके न्याय?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) जनकपुर बमकाण्डक राजनीतिक विश्लेषण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३५. खण्ड 2585, सूचकांक पंक्ति 1276: जितेन्द्र झाक “सभासद् साह फरार — की भेटत जनकपुर बमकाण्ड पीडितके न्याय?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जितेन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्टाज
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३६. खण्ड 2585, सूचकांक पंक्ति 1276: जितेन्द्र झाक “सभासद् साह फरार — की भेटत जनकपुर बमकाण्ड पीडितके न्याय?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३७. खण्ड 2585, सूचकांक पंक्ति 1276: जितेन्द्र झाक “सभासद् साह फरार — की भेटत जनकपुर बमकाण्ड पीडितके न्याय?” के विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२३८. खण्ड 2585, सूचकांक पंक्ति 1276: जितेन्द्र झाक “सभासद् साह फरार — की भेटत जनकपुर बमकाण्ड पीडितके न्याय?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३९. खण्ड 2585, सूचकांक पंक्ति 1276: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2585, सूचकांक पंक्ति 1276मे जितेन्द्र झाक “सभासद् साह फरार — की भेटत जनकपुर बमकाण्ड पीडितके न्याय?” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “जनकपुर बमकाण्डक राजनीतिक विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2586 : विदेह-सदेह 16 — जगदानन्द झा 'मनु': अनमोल झा जीक "टेकनोलजी" क समीक्षा

२४०. खण्ड 2586, सूचकांक पंक्ति 1277: जगदानन्द झा 'मनु'क “अनमोल झा जीक "टेकनोलजी" क समीक्षा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अनमोल झा जीक "टेकनोलजी" क समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४१. खण्ड 2586, सूचकांक पंक्ति 1277: जगदानन्द झा 'मनु'क “अनमोल झा जीक "टेकनोलजी" क समीक्षा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४२. खण्ड 2586, सूचकांक पंक्ति 1277: जगदानन्द झा 'मनु'क “अनमोल झा जीक "टेकनोलजी" क समीक्षा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४३. खण्ड 2586, सूचकांक पंक्ति 1277: जगदानन्द झा 'मनु'क “अनमोल झा जीक "टेकनोलजी" क समीक्षा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) विहिनि कथा संग्रहक सूक्ष्म समीक्षा

२४४. खण्ड 2586, सूचकांक पंक्ति 1277: जगदानन्द झा 'मनु'क “अनमोल झा जीक “टेकनोलजी” क समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) विहिनि कथा संग्रहक सूक्ष्म समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४५. खण्ड 2586, सूचकांक पंक्ति 1277: जगदानन्द झा 'मनु'क “अनमोल झा जीक “टेकनोलजी” क समीक्षा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४६. खण्ड 2586, सूचकांक पंक्ति 1277: जगदानन्द झा 'मनु'क “अनमोल झा जीक “टेकनोलजी” क समीक्षा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४७. खण्ड 2586, सूचकांक पंक्ति 1277: जगदानन्द झा 'मनु'क “अनमोल झा जीक “टेकनोलजी” क समीक्षा”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२४८. खण्ड 2586, सूचकांक पंक्ति 1277: जगदानन्द झा 'मनु'क “अनमोल झा जीक “टेकनोलजी” क समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४९. खण्ड 2586, सूचकांक पंक्ति 1277: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2586, सूचकांक पंक्ति 1277मे जगदानन्द झा 'मनु'क “अनमोल झा जीक “टेकनोलजी” क समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “विहिनि कथा संग्रहक सूक्ष्म समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2587 : विदेह-सदेह 16 — जगदानन्द झा 'मनु': मैथिलीमे एकरूपताक अभाव

२५०. खण्ड 2587, सूचकांक पंक्ति 1278: जगदानन्द झा 'मनु'क “मैथिलीमे एकरूपताक अभाव” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिलीमे एकरूपताक अभाव
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५१. खण्ड 2587, सूचकांक पंक्ति 1278: जगदानन्द झा 'मनु'क “मैथिलीमे एकरूपताक अभाव”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५२. खण्ड 2587, सूचकांक पंक्ति 1278: जगदानन्द झा 'मनु'क “मैथिलीमे एकरूपताक अभाव”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) भाषा-निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५३. खण्ड 2587, सूचकांक पंक्ति 1278: जगदानन्द झा 'मनु'क “मैथिलीमे एकरूपताक अभाव” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मानक मैथिलीक पैरवी

२५४. खण्ड 2587, सूचकांक पंक्ति 1278: जगदानन्द झा 'मनु'क “मैथिलीमे एकरूपताक अभाव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मानक मैथिलीक पैरवी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५५. खण्ड 2587, सूचकांक पंक्ति 1278: जगदानन्द झा 'मनु'क “मैथिलीमे एकरूपताक अभाव”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा भाषा-निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५६. खण्ड 2587, सूचकांक पंक्ति 1278: जगदानन्द झा 'मनु'क “मैथिलीमे एकरूपताक अभाव” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५७. खण्ड 2587, सूचकांक पंक्ति 1278: जगदानन्द झा 'मनु'क “मैथिलीमे एकरूपताक अभाव”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ भाषा-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२५८. खण्ड 2587, सूचकांक पंक्ति 1278: जगदानन्द झा 'मनु'क “मैथिलीमे एकरूपताक अभाव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५९. खण्ड 2587, सूचकांक पंक्ति 1278: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2587, सूचकांक पंक्ति 1278मे जगदानन्द झा 'मनु'क “मैथिलीमे एकरूपताक अभाव” प्रविष्टि गद्य, भाषा-निबन्ध आ “मानक मैथिलीक पैरवी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2588 : विदेह-सदेह 16 — जगदानन्द झा 'मनु': मनुखक जीवन

२६०. खण्ड 2588, सूचकांक पंक्ति 1279: जगदानन्द झा 'मनु'क “मनुखक जीवन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मनुखक जीवन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६१. खण्ड 2588, सूचकांक पंक्ति 1279: जगदानन्द झा 'मनु'क “मनुखक जीवन”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६२. खण्ड 2588, सूचकांक पंक्ति 1279: जगदानन्द झा 'मनु'क “मनुखक जीवन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६३. खण्ड 2588, सूचकांक पंक्ति 1279: जगदानन्द झा 'मनु'क “मनुखक जीवन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मनुष्यताक दार्शनिक प्रश्न

२६४. खण्ड 2588, सूचकांक पंक्ति 1279: जगदानन्द झा 'मनु'क “मनुखक जीवन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मनुष्यताक दार्शनिक प्रश्न
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६५. खण्ड 2588, सूचकांक पंक्ति 1279: जगदानन्द झा 'मनु'क “मनुखक जीवन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६६. खण्ड 2588, सूचकांक पंक्ति 1279: जगदानन्द झा 'मनु'क “मनुखक जीवन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६७. खण्ड 2588, सूचकांक पंक्ति 1279: जगदानन्द झा 'मनु'क “मनुखक जीवन”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२६८. खण्ड 2588, सूचकांक पंक्ति 1279: जगदानन्द झा 'मनु'क “मनुखक जीवन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६९. खण्ड 2588, सूचकांक पंक्ति 1279: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2588, सूचकांक पंक्ति 1279मे जगदानन्द झा 'मनु'क “मनुखक जीवन” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “मनुष्यताक दार्शनिक प्रश्न” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2589 : विदेह-सदेह 16 — जगदानन्द झा 'मनु': बाबीक पिआर

२७०. खण्ड 2589, सूचकांक पंक्ति 1280: जगदानन्द झा 'मनु'क “बाबीक पिआर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बाबीक पिआर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७१. खण्ड 2589, सूचकांक पंक्ति 1280: जगदानन्द झा 'मनु'क “बाबीक पिआर”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७२. खण्ड 2589, सूचकांक पंक्ति 1280: जगदानन्द झा 'मनु'क “बाबीक पिआर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७३. खण्ड 2589, सूचकांक पंक्ति 1280: जगदानन्द झा 'मनु'क “बाबीक पिआर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रवासी सन्तानक मातृभूमि-प्रेम

२७४. खण्ड 2589, सूचकांक पंक्ति 1280: जगदानन्द झा 'मनु'क “बाबीक पिआर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रवासी सन्तानक मातृभूमि-प्रेम
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७५. खण्ड 2589, सूचकांक पंक्ति 1280: जगदानन्द झा 'मनु'क “बाबीक पिआर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७६. खण्ड 2589, सूचकांक पंक्ति 1280: जगदानन्द झा 'मनु'क “बाबीक पिआर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७७. खण्ड 2589, सूचकांक पंक्ति 1280: जगदानन्द झा 'मनु'क “बाबीक पिआर”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२७८. खण्ड 2589, सूचकांक पंक्ति 1280: जगदानन्द झा 'मनु'क “बाबीक पिआर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७९. खण्ड 2589, सूचकांक पंक्ति 1280: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2589, सूचकांक पंक्ति 1280मे जगदानन्द झा 'मनु'क “बाबीक पिआर” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “प्रवासी सन्तानक मातृभूमि-प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2590 : विदेह-सदेह 16 — सत्य नारायण झा: अरण्य देश

२८०. खण्ड 2590, सूचकांक पंक्ति 1281: सत्य नारायण झाक “अरण्य देश” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अरण्य देश
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८१. खण्ड 2590, सूचकांक पंक्ति 1281: सत्य नारायण झाक “अरण्य देश”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८२. खण्ड 2590, सूचकांक पंक्ति 1281: सत्य नारायण झाक “अरण्य देश”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८३. खण्ड 2590, सूचकांक पंक्ति 1281: सत्य नारायण झाक “अरण्य देश” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) रूपकात्मक

२८४. खण्ड 2590, सूचकांक पंक्ति 1281: सत्य नारायण झाक “अरण्य देश” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) रूपकात्मक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८५. खण्ड 2590, सूचकांक पंक्ति 1281: सत्य नारायण झाक “अरण्य देश”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सत्य नारायण झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८६. खण्ड 2590, सूचकांक पंक्ति 1281: सत्य नारायण झाक “अरण्य देश” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८७. खण्ड 2590, सूचकांक पंक्ति 1281: सत्य नारायण झाक “अरण्य देश”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२८८. खण्ड 2590, सूचकांक पंक्ति 1281: सत्य नारायण झाक “अरण्य देश” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८९. खण्ड 2590, सूचकांक पंक्ति 1281: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2590, सूचकांक पंक्ति 1281मे सत्य नारायण झाक “अरण्य देश” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “रूपकात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2591 : विदेह-सदेह 16 — सत्य नारायण झा: जनक (विहिनि कथा)

२९०. खण्ड 2591, सूचकांक पंक्ति 1282: सत्य नारायण झाक “जनक (विहिनि कथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) जनक (विहिनि कथा)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९१. खण्ड 2591, सूचकांक पंक्ति 1282: सत्य नारायण झाक “जनक (विहिनि कथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९२. खण्ड 2591, सूचकांक पंक्ति 1282: सत्य नारायण झाक “जनक (विहिनि कथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) विहिनि कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९३. खण्ड 2591, सूचकांक पंक्ति 1282: सत्य नारायण झाक “जनक (विहिनि कथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पिता-पुत्र सम्बन्ध

२९४. खण्ड 2591, सूचकांक पंक्ति 1282: सत्य नारायण झाक “जनक (विहिनि कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पिता-पुत्र सम्बन्ध
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९५. खण्ड 2591, सूचकांक पंक्ति 1282: सत्य नारायण झाक “जनक (विहिनि कथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सत्य नारायण झा, विधा गद्य, उप-विधा विहिनि कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९६. खण्ड 2591, सूचकांक पंक्ति 1282: सत्य नारायण झाक “जनक (विहिनि कथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९७. खण्ड 2591, सूचकांक पंक्ति 1282: सत्य नारायण झाक “जनक (विहिनि कथा)”क विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ विहिनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२९८. खण्ड 2591, सूचकांक पंक्ति 1282: सत्य नारायण झाक “जनक (विहिनि कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९९. खण्ड 2591, सूचकांक पंक्ति 1282: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2591, सूचकांक पंक्ति 1282मे सत्य नारायण झाक “जनक (विहिनि कथा)” प्रविष्टि गद्य, विहिनि कथा आ “पिता-पुत्र सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2592 : विदेह-सदेह 16 — सत्य नारायण झा: निशीथ (विहिनि कथा)

३००. खण्ड 2592, सूचकांक पंक्ति 1283: सत्य नारायण झाक “निशीथ (विहिनि कथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) निशीथ (विहिनि कथा)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०१. खण्ड 2592, सूचकांक पंक्ति 1283: सत्य नारायण झाक “निशीथ (विहिनि कथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०२. खण्ड 2592, सूचकांक पंक्ति 1283: सत्य नारायण झाक “निशीथ (विहिनि कथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) विहिनि कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०३. खण्ड 2592, सूचकांक पंक्ति 1283: सत्य नारायण झाक “निशीथ (विहिनि कथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रेमक विरह

३०४. खण्ड 2592, सूचकांक पंक्ति 1283: सत्य नारायण झाक “निशीथ (विहिनि कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रेमक विरह
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०५. खण्ड 2592, सूचकांक पंक्ति 1283: सत्य नारायण झाक “निशीथ (विहिनि कथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सत्य नारायण झा, विधा गद्य, उप-विधा विहिनि कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०६. खण्ड 2592, सूचकांक पंक्ति 1283: सत्य नारायण झाक “निशीथ (विहिनि कथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०७. खण्ड 2592, सूचकांक पंक्ति 1283: सत्य नारायण झाक “निशीथ (विहिनि कथा)”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ विहिनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३०८. खण्ड 2592, सूचकांक पंक्ति 1283: सत्य नारायण झाक “निशीथ (विहिनि कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०९. खण्ड 2592, सूचकांक पंक्ति 1283: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2592, सूचकांक पंक्ति 1283मे सत्य नारायण झाक “निशीथ (विहिनि कथा)” प्रविष्टि गद्य, विहिनि कथा आ “प्रेमक विरह” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2593 : विदेह-सदेह 16 — सत्य नारायण झाक: बेचारा लोक

३१०. खण्ड 2593, सूचकांक पंक्ति 1284: सत्य नारायण झाक “बेचारा लोक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बेचारा लोक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३११. खण्ड 2593, सूचकांक पंक्ति 1284: सत्य नारायण झाक “बेचारा लोक”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१२. खण्ड 2593, सूचकांक पंक्ति 1284: सत्य नारायण झाक “बेचारा लोक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१३. खण्ड 2593, सूचकांक पंक्ति 1284: सत्य नारायण झाक “बेचारा लोक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) आर्थिक विषमता

३१४. खण्ड 2593, सूचकांक पंक्ति 1284: सत्य नारायण झाक “बेचारा लोक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) आर्थिक विषमता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१५. खण्ड 2593, सूचकांक पंक्ति 1284: सत्य नारायण झाक “बेचारा लोक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सत्य नारायण झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१६. खण्ड 2593, सूचकांक पंक्ति 1284: सत्य नारायण झाक “बेचारा लोक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१७. खण्ड 2593, सूचकांक पंक्ति 1284: सत्य नारायण झाक “बेचारा लोक”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३१८. खण्ड 2593, सूचकांक पंक्ति 1284: सत्य नारायण झाक “बेचारा लोक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१९. खण्ड 2593, सूचकांक पंक्ति 1284: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2593, सूचकांक पंक्ति 1284मे सत्य नारायण झाक “बेचारा लोक” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “आर्थिक विषमता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2594 : विदेह-सदेह 16 — सत्य नारायण झा: स्मृति (विहिनि कथा)

३२०. खण्ड 2594, सूचकांक पंक्ति 1285: सत्य नारायण झाक “स्मृति (विहिनि कथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) स्मृति (विहिनि कथा)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२१. खण्ड 2594, सूचकांक पंक्ति 1285: सत्य नारायण झाक “स्मृति (विहिनि कथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२२. खण्ड 2594, सूचकांक पंक्ति 1285: सत्य नारायण झाक “स्मृति (विहिनि कथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) विहिनि कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२३. खण्ड 2594, सूचकांक पंक्ति 1285: सत्य नारायण झाक “स्मृति (विहिनि कथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रेम-स्मृति

३२४. खण्ड 2594, सूचकांक पंक्ति 1285: सत्य नारायण झाक “स्मृति (विहिनि कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रेम-स्मृति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२५. खण्ड 2594, सूचकांक पंक्ति 1285: सत्य नारायण झाक “स्मृति (विहिनि कथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सत्य नारायण झा, विधा गद्य, उप-विधा विहिनि कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२६. खण्ड 2594, सूचकांक पंक्ति 1285: सत्य नारायण झाक “स्मृति (विहिनि कथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२७. खण्ड 2594, सूचकांक पंक्ति 1285: सत्य नारायण झाक “स्मृति (विहिनि कथा)”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ विहिनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३२८. खण्ड 2594, सूचकांक पंक्ति 1285: सत्य नारायण झाक “स्मृति (विहिनि कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२९. खण्ड 2594, सूचकांक पंक्ति 1285: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2594, सूचकांक पंक्ति 1285मे सत्य नारायण झाक “स्मृति (विहिनि कथा)” प्रविष्टि गद्य, विहिनि कथा आ “प्रेम-स्मृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2595 : विदेह-सदेह 16 — लक्ष्मी दास: गंगाजलक धोल

३३०. खण्ड 2595, सूचकांक पंक्ति 1286: लक्ष्मी दासक “गंगाजलक धोल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गंगाजलक धोल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३१. खण्ड 2595, सूचकांक पंक्ति 1286: लक्ष्मी दासक “गंगाजलक धोल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३२. खण्ड 2595, सूचकांक पंक्ति 1286: लक्ष्मी दासक “गंगाजलक धोल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३३. खण्ड 2595, सूचकांक पंक्ति 1286: लक्ष्मी दासक “गंगाजलक धोल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) दाम्पत्य-जीवनक व्यंग्य

३३४. खण्ड 2595, सूचकांक पंक्ति 1286: लक्ष्मी दासक “गंगाजलक धोल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) दाम्पत्य-जीवनक व्यंग्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३५. खण्ड 2595, सूचकांक पंक्ति 1286: लक्ष्मी दासक “गंगाजलक धोल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक लक्ष्मी दास, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३६. खण्ड 2595, सूचकांक पंक्ति 1286: लक्ष्मी दासक “गंगाजलक धोल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३७. खण्ड 2595, सूचकांक पंक्ति 1286: लक्ष्मी दासक “गंगाजलक धोल”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३३८. खण्ड 2595, सूचकांक पंक्ति 1286: लक्ष्मी दासक “गंगाजलक धोल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३९. खण्ड 2595, सूचकांक पंक्ति 1286: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2595, सूचकांक पंक्ति 1286मे लक्ष्मी दासक “गंगाजलक धोल” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “दाम्पत्य-जीवनक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2596 : विदेह-सदेह 16 — गौरी शंकर साह: छोटकी

३४०. खण्ड 2596, सूचकांक पंक्ति 1287: गौरी शंकर साहक “छोटकी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) छोटकी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४१. खण्ड 2596, सूचकांक पंक्ति 1287: गौरी शंकर साहक “छोटकी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४२. खण्ड 2596, सूचकांक पंक्ति 1287: गौरी शंकर साहक “छोटकी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४३. खण्ड 2596, सूचकांक पंक्ति 1287: गौरी शंकर साहक “छोटकी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) चरित्र-प्रधान

३४४. खण्ड 2596, सूचकांक पंक्ति 1287: गौरी शंकर साहक “छोटकी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) चरित्र-प्रधान
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४५. खण्ड 2596, सूचकांक पंक्ति 1287: गौरी शंकर साहक “छोटकी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गौरी शंकर साह, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४६. खण्ड 2596, सूचकांक पंक्ति 1287: गौरी शंकर साहक “छोटकी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४७. खण्ड 2596, सूचकांक पंक्ति 1287: गौरी शंकर साहक “छोटकी”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३४८. खण्ड 2596, सूचकांक पंक्ति 1287: गौरी शंकर साहक “छोटकी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४९. खण्ड 2596, सूचकांक पंक्ति 1287: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2596, सूचकांक पंक्ति 1287मे गौरी शंकर साहक “छोटकी” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “चरित्र-प्रधान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2597 : विदेह-सदेह 16 — डा. शिवकुमार प्रसाद: सखारी-पेटारी करे तानी-भरनी (समीक्षा)

३५०. खण्ड 2597, सूचकांक पंक्ति 1288: डा. शिवकुमार प्रसादक “सखारी-पेटारी करे तानी-भरनी (समीक्षा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सखारी-पेटारी करे तानी-भरनी (समीक्षा)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५१. खण्ड 2597, सूचकांक पंक्ति 1288: डा. शिवकुमार प्रसादक “सखारी-पेटारी करे तानी-भरनी (समीक्षा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५२. खण्ड 2597, सूचकांक पंक्ति 1288: डा. शिवकुमार प्रसादक “सखारी-पेटारी करे तानी-भरनी (समीक्षा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५३. खण्ड 2597, सूचकांक पंक्ति 1288: डा. शिवकुमार प्रसादक “सखारी-पेटारी करे तानी-भरनी (समीक्षा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नन्द विलास रायकृत 'सखारी-पेटारी'क सूक्ष्म विश्लेषण

३५४. खण्ड 2597, सूचकांक पंक्ति 1288: डा. शिवकुमार प्रसादक “सखारी-पेटारी करे तानी-भरनी (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नन्द विलास रायकृत 'सखारी-पेटारी'क सूक्ष्म विश्लेषण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५५. खण्ड 2597, सूचकांक पंक्ति 1288: डा. शिवकुमार प्रसादक “सखारी-पेटारी करे तानी-भरनी (समीक्षा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डा. शिवकुमार प्रसाद, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५६. खण्ड 2597, सूचकांक पंक्ति 1288: डा. शिवकुमार प्रसादक “सखारी-पेटारी करे तानी-भरनी (समीक्षा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५७. खण्ड 2597, सूचकांक पंक्ति 1288: डा. शिवकुमार प्रसादक “सखारी-पेटारी करे तानी-भरनी (समीक्षा)”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३५८. खण्ड 2597, सूचकांक पंक्ति 1288: डा. शिवकुमार प्रसादक “सखारी-पेटारी करे तानी-भरनी (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५९. खण्ड 2597, सूचकांक पंक्ति 1288: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2597, सूचकांक पंक्ति 1288मे डा. शिवकुमार प्रसादक “सखारी-पेटारी करे तानी-भरनी (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “नन्द विलास रायकृत 'सखारी-पेटारी'क सूक्ष्म विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2598 : विदेह-सदेह 16 — डा. शिवकुमार प्रसाद: अदिया इमकी

३६०. खण्ड 2598, सूचकांक पंक्ति 1289: डा. शिवकुमार प्रसादक “अदिया इमकी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अदिया इमकी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६१. खण्ड 2598, सूचकांक पंक्ति 1289: डा. शिवकुमार प्रसादक “अदिया इमकी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६२. खण्ड 2598, सूचकांक पंक्ति 1289: डा. शिवकुमार प्रसादक “अदिया इमकी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६३. खण्ड 2598, सूचकांक पंक्ति 1289: डा. शिवकुमार प्रसादक “अदिया इमकी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) शिक्षा व्यवस्था

३६४. खण्ड 2598, सूचकांक पंक्ति 1289: डा. शिवकुमार प्रसादक “अदिया इमकी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) शिक्षा व्यवस्था
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६५. खण्ड 2598, सूचकांक पंक्ति 1289: डा. शिवकुमार प्रसादक “अदिया इमकी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डा. शिवकुमार प्रसाद, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६६. खण्ड 2598, सूचकांक पंक्ति 1289: डा. शिवकुमार प्रसादक “अदिया इमकी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६७. खण्ड 2598, सूचकांक पंक्ति 1289: डा. शिवकुमार प्रसादक “अदिया इमकी”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३६८. खण्ड 2598, सूचकांक पंक्ति 1289: डा. शिवकुमार प्रसादक “अदिया इमकी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६९. खण्ड 2598, सूचकांक पंक्ति 1289: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2598, सूचकांक पंक्ति 1289मे डा. शिवकुमार प्रसादक “अदिया इमकी” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “शिक्षा व्यवस्था” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2599 : विदेह-सदेह 16 — ओम प्रकाश झा: कूलच्छनी

३७०. खण्ड 2599, सूचकांक पंक्ति 1290: ओम प्रकाश झाक “कूलच्छनी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) कूलच्छनी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७१. खण्ड 2599, सूचकांक पंक्ति 1290: ओम प्रकाश झाक “कूलच्छनी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७२. खण्ड 2599, सूचकांक पंक्ति 1290: ओम प्रकाश झाक “कूलच्छनी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७३. खण्ड 2599, सूचकांक पंक्ति 1290: ओम प्रकाश झाक “कूलच्छनी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पुत्र-मोह आ पुत्री-उपेक्षा

३७४. खण्ड 2599, सूचकांक पंक्ति 1290: ओम प्रकाश झाक “कूलच्छनी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पुत्र-मोह आ पुत्री-उपेक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७५. खण्ड 2599, सूचकांक पंक्ति 1290: ओम प्रकाश झाक “कूलच्छनी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७६. खण्ड 2599, सूचकांक पंक्ति 1290: ओम प्रकाश झाक “कूलच्छनी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७७. खण्ड 2599, सूचकांक पंक्ति 1290: ओम प्रकाश झाक “कूलच्छनी”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३७८. खण्ड 2599, सूचकांक पंक्ति 1290: ओम प्रकाश झाक “कूलच्छनी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७९. खण्ड 2599, सूचकांक पंक्ति 1290: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2599, सूचकांक पंक्ति 1290मे ओम प्रकाश झाक “कूलच्छनी” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “पुत्र-मोह आ पुत्री-उपेक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2600 : विदेह-सदेह 16 — ओम प्रकाश झा: बेटीक बिआह

३८०. खण्ड 2600, सूचकांक पंक्ति 1291: ओम प्रकाश झाक “बेटीक बिआह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बेटीक बिआह
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८१. खण्ड 2600, सूचकांक पंक्ति 1291: ओम प्रकाश झाक “बेटीक बिआह”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८२. खण्ड 2600, सूचकांक पंक्ति 1291: ओम प्रकाश झाक “बेटीक बिआह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८३. खण्ड 2600, सूचकांक पंक्ति 1291: ओम प्रकाश झाक “बेटीक बिआह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) दहेज प्रथा पर करारा प्रहार

३८४. खण्ड 2600, सूचकांक पंक्ति 1291: ओम प्रकाश झाक “बेटीक बिआह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) दहेज प्रथा पर करारा प्रहार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८५. खण्ड 2600, सूचकांक पंक्ति 1291: ओम प्रकाश झाक “बेटीक बिआह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८६. खण्ड 2600, सूचकांक पंक्ति 1291: ओम प्रकाश झाक “बेटीक बिआह” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८७. खण्ड 2600, सूचकांक पंक्ति 1291: ओम प्रकाश झाक “बेटीक बिआह”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३८८. खण्ड 2600, सूचकांक पंक्ति 1291: ओम प्रकाश झाक “बेटीक बिआह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८९. खण्ड 2600, सूचकांक पंक्ति 1291: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2600, सूचकांक पंक्ति 1291मे ओम प्रकाश झाक “बेटीक बिआह” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “दहेज प्रथा पर करारा प्रहार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2601 : विदेह-सदेह 16 — डॉ. कीर्तिनाथ झा: शेफाली, फूलपरासवाली आ हम

३९०. खण्ड 2601, सूचकांक पंक्ति 1292: डॉ. कीर्तिनाथ झाक “शेफाली, फूलपरासवाली आ हम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) शेफाली, फूलपरासवाली आ हम
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९१. खण्ड 2601, सूचकांक पंक्ति 1292: डॉ. कीर्तिनाथ झाक “शेफाली, फूलपरासवाली आ हम”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९२. खण्ड 2601, सूचकांक पंक्ति 1292: डॉ. कीर्तिनाथ झाक “शेफाली, फूलपरासवाली आ हम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९३. खण्ड 2601, सूचकांक पंक्ति 1292: डॉ. कीर्तिनाथ झाक “शेफाली, फूलपरासवाली आ हम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) आत्म-कथात्मक

३९४. खण्ड 2601, सूचकांक पंक्ति 1292: डॉ. कीर्तिनाथ झाक “शेफाली, फूलपरासवाली आ हम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) आत्म-कथात्मक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९५. खण्ड 2601, सूचकांक पंक्ति 1292: डॉ. कीर्तिनाथ झाक “शेफाली, फूलपरासवाली आ हम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कीर्तिनाथ झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९६. खण्ड 2601, सूचकांक पंक्ति 1292: डॉ. कीर्तिनाथ झाक “शेफाली, फूलपरासवाली आ हम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९७. खण्ड 2601, सूचकांक पंक्ति 1292: डॉ. कीर्तिनाथ झाक “शेफाली, फूलपरासवाली आ हम”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३९८. खण्ड 2601, सूचकांक पंक्ति 1292: डॉ. कीर्तिनाथ झाक “शेफाली, फूलपरासवाली आ हम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९९. खण्ड 2601, सूचकांक पंक्ति 1292: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2601, सूचकांक पंक्ति 1292मे डॉ. कीर्तिनाथ झाक “शेफाली, फूलपरासवाली आ हम” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “आत्म-कथात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2602 : विदेह-सदेह 16 — आशीष अनिचन्हारः निरपेक्ष-गुट-निरपेक्ष (व्यंग्य निबन्ध)

४००. खण्ड 2602, सूचकांक पंक्ति 1293: आशीष अनिचन्हारक “निरपेक्ष-गुट-निरपेक्ष (व्यंग्य निबन्ध)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) निरपेक्ष-गुट-निरपेक्ष (व्यंग्य निबन्ध)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०१. खण्ड 2602, सूचकांक पंक्ति 1293: आशीष अनिचन्हारक “निरपेक्ष-गुट-निरपेक्ष (व्यंग्य निबन्ध)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०२. खण्ड 2602, सूचकांक पंक्ति 1293: आशीष अनिचन्हारक “निरपेक्ष-गुट-निरपेक्ष (व्यंग्य निबन्ध)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) व्यंग्य निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०३. खण्ड 2602, सूचकांक पंक्ति 1293: आशीष अनिचन्हारक “निरपेक्ष-गुट-निरपेक्ष (व्यंग्य निबन्ध)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) तीख व्यंग्य

४०४. खण्ड 2602, सूचकांक पंक्ति 1293: आशीष अनिचन्हारक “निरपेक्ष-गुट-निरपेक्ष (व्यंग्य निबन्ध)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) तीख व्यंग्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०५. खण्ड 2602, सूचकांक पंक्ति 1293: आशीष अनिचन्हारक “निरपेक्ष-गुट-निरपेक्ष (व्यंग्य निबन्ध)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०६. खण्ड 2602, सूचकांक पंक्ति 1293: आशीष अनिचन्हारक “निरपेक्ष-गुट-निरपेक्ष (व्यंग्य निबन्ध)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०७. खण्ड 2602, सूचकांक पंक्ति 1293: आशीष अनिचन्हारक “निरपेक्ष-गुट-निरपेक्ष (व्यंग्य निबन्ध)” के विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ व्यंग्य निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४०८. खण्ड 2602, सूचकांक पंक्ति 1293: आशीष अनिचन्हारक “निरपेक्ष-गुट-निरपेक्ष (व्यंग्य निबन्ध)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०९. खण्ड 2602, सूचकांक पंक्ति 1293: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2602, सूचकांक पंक्ति 1293मे आशीष अनिचन्हारक “निरपेक्ष-गुट-निरपेक्ष (व्यंग्य निबन्ध)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य निबन्ध आ “तीख व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2603 : विदेह-सदेह 16 — आशीष अनिचन्हार: लास्ट टाइम सजेशन (व्यंग्य निबन्ध)

४१०. खण्ड 2603, सूचकांक पंक्ति 1294: आशीष अनिचन्हारक “लास्ट टाइम सजेशन (व्यंग्य निबन्ध)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) लास्ट टाइम सजेशन (व्यंग्य निबन्ध)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४११. खण्ड 2603, सूचकांक पंक्ति 1294: आशीष अनिचन्हारक “लास्ट टाइम सजेशन (व्यंग्य निबन्ध)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१२. खण्ड 2603, सूचकांक पंक्ति 1294: आशीष अनिचन्हारक “लास्ट टाइम सजेशन (व्यंग्य निबन्ध)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) व्यंग्य निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१३. खण्ड 2603, सूचकांक पंक्ति 1294: आशीष अनिचन्हारक “लास्ट टाइम सजेशन (व्यंग्य निबन्ध)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) शिक्षा व्यवस्था पर करारा व्यंग्य

४१४. खण्ड 2603, सूचकांक पंक्ति 1294: आशीष अनिचन्हारक “लास्ट टाइम सजेशन (व्यंग्य निबन्ध)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) शिक्षा व्यवस्था पर करारा व्यंग्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१५. खण्ड 2603, सूचकांक पंक्ति 1294: आशीष अनिचन्हारक “लास्ट टाइम सजेशन (व्यंग्य निबन्ध)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१६. खण्ड 2603, सूचकांक पंक्ति 1294: आशीष अनिचन्हारक “लास्ट टाइम सजेशन (व्यंग्य निबन्ध)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१७. खण्ड 2603, सूचकांक पंक्ति 1294: आशीष अनिचन्हारक “लास्ट टाइम सजेशन (व्यंग्य निबन्ध)”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ व्यंग्य निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४१८. खण्ड 2603, सूचकांक पंक्ति 1294: आशीष अनिचन्हारक “लास्ट टाइम सजेशन (व्यंग्य निबन्ध)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१९. खण्ड 2603, सूचकांक पंक्ति 1294: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2603, सूचकांक पंक्ति 1294मे आशीष अनिचन्हारक “लास्ट टाइम सजेशन (व्यंग्य निबन्ध)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य निबन्ध आ “शिक्षा व्यवस्था पर करारा व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2604 : विदेह-सदेह 16 — आशीष अनिचन्हार: मैथिली गजल व्याकरणक शुरुआती प्रयोग (समालोचना)

४२०. खण्ड 2604, सूचकांक पंक्ति 1295: आशीष अनिचन्हारक “मैथिली गजल व्याकरणक शुरुआती प्रयोग (समालोचना)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिली गजल व्याकरणक शुरुआती प्रयोग (समालोचना)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२१. खण्ड 2604, सूचकांक पंक्ति 1295: आशीष अनिचन्हारक “मैथिली गजल व्याकरणक शुरुआती प्रयोग (समालोचना)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२२. खण्ड 2604, सूचकांक पंक्ति 1295: आशीष अनिचन्हारक “मैथिली गजल व्याकरणक शुरुआती प्रयोग (समालोचना)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२३. खण्ड 2604, सूचकांक पंक्ति 1295: आशीष अनिचन्हारक “मैथिली गजल व्याकरणक शुरुआती प्रयोग (समालोचना)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) श्री गजेन्द्र ठाकुरकृत 'मैथिली गजल शास्त्र'क सूक्ष्म विवेचन

४२४. खण्ड 2604, सूचकांक पंक्ति 1295: आशीष अनिचन्हारक “मैथिली गजल व्याकरणक शुरुआती प्रयोग (समालोचना)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) श्री गजेन्द्र ठाकुरकृत 'मैथिली गजल शास्त्र'क सूक्ष्म विवेचन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२५. खण्ड 2604, सूचकांक पंक्ति 1295: आशीष अनिचन्हारक “मैथिली गजल व्याकरणक शुरुआती प्रयोग (समालोचना)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२६. खण्ड 2604, सूचकांक पंक्ति 1295: आशीष अनिचन्हारक “मैथिली गजल व्याकरणक शुरुआती प्रयोग (समालोचना)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२७. खण्ड 2604, सूचकांक पंक्ति 1295: आशीष अनिचन्हारक “मैथिली गजल व्याकरणक शुरुआती प्रयोग (समालोचना)”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४२८. खण्ड 2604, सूचकांक पंक्ति 1295: आशीष अनिचन्हारक “मैथिली गजल व्याकरणक शुरुआती प्रयोग (समालोचना)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२९. खण्ड 2604, सूचकांक पंक्ति 1295: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2604, सूचकांक पंक्ति 1295मे आशीष अनिचन्हारक “मैथिली गजल व्याकरणक शुरुआती प्रयोग (समालोचना)” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “श्री गजेन्द्र ठाकुरकृत 'मैथिली गजल शास्त्र'क सूक्ष्म विवेचन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2605 : विदेह-सदेह 16 — आशीष अनिचन्हार: चिकनी माटिमे उपजल नागफेनी (समालोचना)

४३०. खण्ड 2605, सूचकांक पंक्ति 1296: आशीष अनिचन्हारक “चिकनी माटिमे उपजल नागफेनी (समालोचना)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) चिकनी माटिमे उपजल नागफेनी (समालोचना)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३१. खण्ड 2605, सूचकांक पंक्ति 1296: आशीष अनिचन्हारक “चिकनी माटिमे उपजल नागफेनी (समालोचना)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३२. खण्ड 2605, सूचकांक पंक्ति 1296: आशीष अनिचन्हारक “चिकनी माटिमे उपजल नागफेनी (समालोचना)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३३. खण्ड 2605, सूचकांक पंक्ति 1296: आशीष अनिचन्हारक “चिकनी माटिमे उपजल नागफेनी (समालोचना)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) रमेशजीक गजल-संग्रह 'नागफेनी'क आलोचनात्मक विश्लेषण

४३४. खण्ड 2605, सूचकांक पंक्ति 1296: आशीष अनिचन्हारक “चिकनी माटिमे उपजल नागफेनी (समालोचना)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) रमेशजीक गजल-संग्रह 'नागफेनी'क आलोचनात्मक विश्लेषण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३५. खण्ड 2605, सूचकांक पंक्ति 1296: आशीष अनिचन्हारक “चिकनी माटिमे उपजल नागफेनी (समालोचना)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३६. खण्ड 2605, सूचकांक पंक्ति 1296: आशीष अनिचन्हारक “चिकनी माटिमे उपजल नागफेनी (समालोचना)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३७. खण्ड 2605, सूचकांक पंक्ति 1296: आशीष अनिचन्हारक “चिकनी माटिमे उपजल नागफेनी (समालोचना)”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४३८. खण्ड 2605, सूचकांक पंक्ति 1296: आशीष अनिचन्हारक “चिकनी माटिमे उपजल नागफेनी (समालोचना)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३९. खण्ड 2605, सूचकांक पंक्ति 1296: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2605, सूचकांक पंक्ति 1296मे आशीष अनिचन्हारक “चिकनी माटिमे उपजल नागफेनी (समालोचना)” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “रमेशजीक गजल-संग्रह 'नागफेनी'क आलोचनात्मक विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2606 : विदेह-सदेह 16 — आशीष अनिचन्हार: मायानंद मिश्रक “मैथिली साहित्यिक इतिहास” (समालोचना)

४४०. खण्ड 2606, सूचकांक पंक्ति 1297: आशीष अनिचन्हारक “मायानंद मिश्रक “मैथिली साहित्यिक इतिहास” (समालोचना)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मायानंद मिश्रक “मैथिली साहित्यिक इतिहास” (समालोचना)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४१. खण्ड 2606, सूचकांक पंक्ति 1297: आशीष अनिचन्हारक “मायानंद मिश्रक “मैथिली साहित्यिक इतिहास” (समालोचना)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४२. खण्ड 2606, सूचकांक पंक्ति 1297: आशीष अनिचन्हारक “मायानंद मिश्रक “मैथिली साहित्यिक इतिहास” (समालोचना)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४३. खण्ड 2606, सूचकांक पंक्ति 1297: आशीष अनिचन्हारक “मायानंद मिश्रक “मैथिली साहित्यिक इतिहास” (समालोचना)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) इतिहास-लेखनक त्रुटिपर प्रश्नचिह्न

४४४. खण्ड 2606, सूचकांक पंक्ति 1297: आशीष अनिचन्हारक “मायानंद मिश्रक “मैथिली साहित्यिक इतिहास” (समालोचना)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) इतिहास-लेखनक त्रुटिपर प्रश्नचिह्न
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४५. खण्ड 2606, सूचकांक पंक्ति 1297: आशीष अनिचन्हारक “मायानंद मिश्रक “मैथिली साहित्यिक इतिहास” (समालोचना)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४६. खण्ड 2606, सूचकांक पंक्ति 1297: आशीष अनिचन्हारक “मायानंद मिश्रक “मैथिली साहित्यिक इतिहास” (समालोचना)” रचना/लेखकक कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४७. खण्ड 2606, सूचकांक पंक्ति 1297: आशीष अनिचन्हारक “मायानंद मिश्रक “मैथिली साहित्यिक इतिहास” (समालोचना)”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४४८. खण्ड 2606, सूचकांक पंक्ति 1297: आशीष अनिचन्हारक “मायानंद मिश्रक “मैथिली साहित्यिक इतिहास” (समालोचना)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४९. खण्ड 2606, सूचकांक पंक्ति 1297: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2606, सूचकांक पंक्ति 1297मे आशीष अनिचन्हारक “मायानंद मिश्रक “मैथिली साहित्यिक इतिहास” (समालोचना)” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “इतिहास-लेखनक त्रुटिपर प्रश्नचिह्न” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2607 : विदेह-सदेह 16 — आशीष अनिचन्हार: मैथिली काव्यशास्त्रमे झारू छंदक अवधारणा

४५०. खण्ड 2607, सूचकांक पंक्ति 1298: आशीष अनिचन्हारक “मैथिली काव्यशास्त्रमे झारू छंदक अवधारणा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिली काव्यशास्त्रमे झारू छंदक अवधारणा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५१. खण्ड 2607, सूचकांक पंक्ति 1298: आशीष अनिचन्हारक “मैथिली काव्यशास्त्रमे झारू छंदक अवधारणा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५२. खण्ड 2607, सूचकांक पंक्ति 1298: आशीष अनिचन्हारक “मैथिली काव्यशास्त्रमे झारू छंदक अवधारणा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शोध-आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५३. खण्ड 2607, सूचकांक पंक्ति 1298: आशीष अनिचन्हारक “मैथिली काव्यशास्त्रमे झारू छंदक अवधारणा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) रामदेव मण्डल 'झारूदार'क 'झारू छंद'क सैद्धान्तिकी

४५४. खण्ड 2607, सूचकांक पंक्ति 1298: आशीष अनिचन्हारक “मैथिली काव्यशास्त्रमे झारू छंदक अवधारणा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) रामदेव मण्डल 'झारूदार'क 'झारू छंद'क सैद्धान्तिकी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५५. खण्ड 2607, सूचकांक पंक्ति 1298: आशीष अनिचन्हारक “मैथिली काव्यशास्त्रमे झारू छंदक अवधारणा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५६. खण्ड 2607, सूचकांक पंक्ति 1298: आशीष अनिचन्हारक “मैथिली काव्यशास्त्रमे झारू छंदक अवधारणा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५७. खण्ड 2607, सूचकांक पंक्ति 1298: आशीष अनिचन्हारक “मैथिली काव्यशास्त्रमे झारू छंदक अवधारणा”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४५८. खण्ड 2607, सूचकांक पंक्ति 1298: आशीष अनिचन्हारक “मैथिली काव्यशास्त्रमे झारू छंदक अवधारणा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५९. खण्ड 2607, सूचकांक पंक्ति 1298: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2607, सूचकांक पंक्ति 1298मे आशीष अनिचन्हारक “मैथिली काव्यशास्त्रमे झारू छंदक अवधारणा” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “रामदेव मण्डल 'झारूदार'क 'झारू छंद'क सैद्धान्तिकी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2608 : विदेह-सदेह 16 — आशीष अनिचन्हार: नेपालक नोर मरूभूमिमे (समालोचना)

४६०. खण्ड 2608, सूचकांक पंक्ति 1299: आशीष अनिचन्हारक “नेपालक नोर मरूभूमिमे (समालोचना)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) नेपालक नोर मरूभूमिमे (समालोचना)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६१. खण्ड 2608, सूचकांक पंक्ति 1299: आशीष अनिचन्हारक “नेपालक नोर मरूभूमिमे (समालोचना)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६२. खण्ड 2608, सूचकांक पंक्ति 1299: आशीष अनिचन्हारक “नेपालक नोर मरूभूमिमे (समालोचना)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६३. खण्ड 2608, सूचकांक पंक्ति 1299: आशीष अनिचन्हारक “नेपालक नोर मरूभूमिमे (समालोचना)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) विन्देश्वर ठाकुरक पोथीक समीक्षा

४६४. खण्ड 2608, सूचकांक पंक्ति 1299: आशीष अनिचन्हारक “नेपालक नोर मरूभूमिमे (समालोचना)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) विन्देश्वर ठाकुरक पोथीक समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६५. खण्ड 2608, सूचकांक पंक्ति 1299: आशीष अनिचन्हारक “नेपालक नोर मरूभूमिमे (समालोचना)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६६. खण्ड 2608, सूचकांक पंक्ति 1299: आशीष अनिचन्हारक “नेपालक नोर मरूभूमिमे (समालोचना)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६७. खण्ड 2608, सूचकांक पंक्ति 1299: आशीष अनिचन्हारक “नेपालक नोर मरूभूमिमे (समालोचना)”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४६८. खण्ड 2608, सूचकांक पंक्ति 1299: आशीष अनिचन्हारक “नेपालक नोर मरूभूमिमे (समालोचना)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६९. खण्ड 2608, सूचकांक पंक्ति 1299: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2608, सूचकांक पंक्ति 1299मे आशीष अनिचन्हारक “नेपालक नोर मरूभूमिमे (समालोचना)” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “विन्देश्वर ठाकुरक पोथीक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2609 : विदेह-सदेह 16 — आशीष अनिचन्हारक: कलंकित चान (समालोचना)

४७०. खण्ड 2609, सूचकांक पंक्ति 1300: आशीष अनिचन्हारक “कलंकित चान (समालोचना)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) कलंकित चान (समालोचना)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७१. खण्ड 2609, सूचकांक पंक्ति 1300: आशीष अनिचन्हारक “कलंकित चान (समालोचना)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७२. खण्ड 2609, सूचकांक पंक्ति 1300: आशीष अनिचन्हारक “कलंकित चान (समालोचना)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७३. खण्ड 2609, सूचकांक पंक्ति 1300: आशीष अनिचन्हारक “कलंकित चान (समालोचना)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'क गजल-संग्रहक समीक्षा

४७४. खण्ड 2609, सूचकांक पंक्ति 1300: आशीष अनिचन्हारक “कलंकित चान (समालोचना)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'क गजल-संग्रहक समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७५. खण्ड 2609, सूचकांक पंक्ति 1300: आशीष अनिचन्हारक “कलंकित चान (समालोचना)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७६. खण्ड 2609, सूचकांक पंक्ति 1300: आशीष अनिचन्हारक “कलंकित चान (समालोचना)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७७. खण्ड 2609, सूचकांक पंक्ति 1300: आशीष अनिचन्हारक “कलंकित चान (समालोचना)” के विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४७८. खण्ड 2609, सूचकांक पंक्ति 1300: आशीष अनिचन्हारक “कलंकित चान (समालोचना)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७९. खण्ड 2609, सूचकांक पंक्ति 1300: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2609, सूचकांक पंक्ति 1300मे आशीष अनिचन्हारक “कलंकित चान (समालोचना)” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'क गजल-संग्रहक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2610 : विदेह-सदेह 16 — आशीष अनिचन्हार: तीन टा बिंदु — भाषा करे मनोविज्ञान

४८०. खण्ड 2610, सूचकांक पंक्ति 1301: आशीष अनिचन्हारक “तीन टा बिंदु — भाषा करे मनोविज्ञान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) तीन टा बिंदु — भाषा करे मनोविज्ञान
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८१. खण्ड 2610, सूचकांक पंक्ति 1301: आशीष अनिचन्हारक “तीन टा बिंदु — भाषा करे मनोविज्ञान”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८२. खण्ड 2610, सूचकांक पंक्ति 1301: आशीष अनिचन्हारक “तीन टा बिंदु — भाषा करे मनोविज्ञान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शोध-आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८३. खण्ड 2610, सूचकांक पंक्ति 1301: आशीष अनिचन्हारक “तीन टा बिंदु — भाषा करे मनोविज्ञान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भाषा-मनोविज्ञान

४८४. खण्ड 2610, सूचकांक पंक्ति 1301: आशीष अनिचन्हारक “तीन टा बिंदु — भाषा करे मनोविज्ञान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भाषा-मनोविज्ञान
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८५. खण्ड 2610, सूचकांक पंक्ति 1301: आशीष अनिचन्हारक “तीन टा बिंदु — भाषा करे मनोविज्ञान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८६. खण्ड 2610, सूचकांक पंक्ति 1301: आशीष अनिचन्हारक “तीन टा बिंदु — भाषा करे मनोविज्ञान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८७. खण्ड 2610, सूचकांक पंक्ति 1301: आशीष अनिचन्हारक “तीन टा बिंदु — भाषा करे मनोविज्ञान”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४८८. खण्ड 2610, सूचकांक पंक्ति 1301: आशीष अनिचन्हारक “तीन टा बिंदु — भाषा करे मनोविज्ञान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८९. खण्ड 2610, सूचकांक पंक्ति 1301: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2610, सूचकांक पंक्ति 1301मे आशीष अनिचन्हारक “तीन टा बिंदु — भाषा करे मनोविज्ञान” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “भाषा-मनोविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2611 : विदेह-सदेह 16 — डॉ अरुण कुमार सिंह: सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा

४९०. खण्ड 2611, सूचकांक पंक्ति 1302: डॉ अरुण कुमार सिंहक “सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९१. खण्ड 2611, सूचकांक पंक्ति 1302: डॉ अरुण कुमार सिंहक “सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा”क मुख्य विधा कोन अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) गद्य
 (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
४९२. खण्ड 2611, सूचकांक पंक्ति 1302: डॉ अरुण कुमार सिंहक “सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (C) शोध/क्षेत्रीय अध्ययन
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
४९३. खण्ड 2611, सूचकांक पंक्ति 1302: डॉ अरुण कुमार सिंहक “सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
 (D) कोशी क्षेत्रक भौगोलिक-आर्थिक-सांस्कृतिक लेखा-जोखा
४९४. खण्ड 2611, सूचकांक पंक्ति 1302: डॉ अरुण कुमार सिंहक “सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?
- (A) कोशी क्षेत्रक भौगोलिक-आर्थिक-सांस्कृतिक लेखा-जोखा
 (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
४९५. खण्ड 2611, सूचकांक पंक्ति 1302: डॉ अरुण कुमार सिंहक “सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) लेखक डॉ अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध/क्षेत्रीय अध्ययन
 (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
४९६. खण्ड 2611, सूचकांक पंक्ति 1302: डॉ अरुण कुमार सिंहक “सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
४९७. खण्ड 2611, सूचकांक पंक्ति 1302: डॉ अरुण कुमार सिंहक “सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
 (D) ई पाठ शोध/क्षेत्रीय अध्ययनक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४९८. खण्ड 2611, सूचकांक पंक्ति 1302: डॉ अरुण कुमार सिंहक “सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९९. खण्ड 2611, सूचकांक पंक्ति 1302: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2611, सूचकांक पंक्ति 1302मे डॉ अरुण कुमार सिंहक “सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा” प्रविष्टि गद्य, शोध/क्षेत्रीय अध्ययन आ “कोशी क्षेत्रक भौगोलिक-आर्थिक-सांस्कृतिक लेखा-जोखा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2612 : विदेह-सदेह 16 — शिवकुमार झा 'टिल्लू': बडका साहेव: परम्परागत संस्कार केर पराभव — भाग २

५००. खण्ड 2612, सूचकांक पंक्ति 1303: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “बडका साहेव: परम्परागत संस्कार केर पराभव — भाग २” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बडका साहेव: परम्परागत संस्कार केर पराभव — भाग २
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०१. खण्ड 2612, सूचकांक पंक्ति 1303: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “बडका साहेव: परम्परागत संस्कार केर पराभव — भाग २”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०२. खण्ड 2612, सूचकांक पंक्ति 1303: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “बडका साहेव: परम्परागत संस्कार केर पराभव — भाग २”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) नाटक-समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०३. खण्ड 2612, सूचकांक पंक्ति 1303: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “बडका साहेव: परम्परागत संस्कार केर पराभव — भाग २” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ब्राह्मणवादी मानसिकताक पतन

५०४. खण्ड 2612, सूचकांक पंक्ति 1303: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “बडका साहेव: परम्परागत संस्कार केर पराभव — भाग २” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ब्राह्मणवादी मानसिकताक पतन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०५. खण्ड 2612, सूचकांक पंक्ति 1303: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “बडका साहेव: परम्परागत संस्कार केर पराभव — भाग २”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शिवकुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा नाटक-समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०६. खण्ड 2612, सूचकांक पंक्ति 1303: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “बडका साहेव: परम्परागत संस्कार केर पराभव — भाग २” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०७. खण्ड 2612, सूचकांक पंक्ति 1303: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “बडका साहेव: परम्परागत संस्कार केर पराभव — भाग २”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ नाटक-समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५०८. खण्ड 2612, सूचकांक पंक्ति 1303: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “बडका साहेव: परम्परागत संस्कार केर पराभव — भाग २” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०९. खण्ड 2612, सूचकांक पंक्ति 1303: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2612, सूचकांक पंक्ति 1303मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “बडका साहेव: परम्परागत संस्कार केर पराभव — भाग २” प्रविष्टि गद्य, नाटक-समीक्षा आ “ब्राह्मणवादी मानसिकताक पतन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2613 : विदेह-सदेह 16 — शिवकुमार झा 'टिल्लू': दुःखक दुपहरिया: संसारी संवेदनाक तीख अनुभूति

५१०. खण्ड 2613, सूचकांक पंक्ति 1304: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “दुःखक दुपहरिया: संसारी संवेदनाक तीख अनुभूति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) दुःखक दुपहरिया: संसारी संवेदनाक तीख अनुभूति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५११. खण्ड 2613, सूचकांक पंक्ति 1304: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “दुःखक दुपहरिया: संसारी संवेदनाक तीख अनुभूति”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१२. खण्ड 2613, सूचकांक पंक्ति 1304: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “दुःखक दुपहरिया: संसारी संवेदनाक तीख अनुभूति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) काव्य-समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१३. खण्ड 2613, सूचकांक पंक्ति 1304: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “दुःखक दुपहरिया: संसारी संवेदनाक तीख अनुभूति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कवि संजेश गुंजनक काव्य-संकलनक समालोचना

५१४. खण्ड 2613, सूचकांक पंक्ति 1304: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “दुःखक दुपहरिया: संसारी संवेदनाक तीख अनुभूति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कवि संजेश गुंजनक काव्य-संकलनक समालोचना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१५. खण्ड 2613, सूचकांक पंक्ति 1304: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “दुःखक दुपहरिया: संसारी संवेदनाक तीख अनुभूति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शिवकुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा काव्य-समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१६. खण्ड 2613, सूचकांक पंक्ति 1304: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “दुःखक दुपहरिया: संसारी संवेदनाक तीख अनुभूति” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१७. खण्ड 2613, सूचकांक पंक्ति 1304: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “दुःखक दुपहरिया: संसारी संवेदनाक तीख अनुभूति”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ काव्य-समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५१८. खण्ड 2613, सूचकांक पंक्ति 1304: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “दुःखक दुपहरिया: संसारी संवेदनाक तीख अनुभूति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१९. खण्ड 2613, सूचकांक पंक्ति 1304: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2613, सूचकांक पंक्ति 1304मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “दुःखक दुपहरिया: संसारी संवेदनाक तीख अनुभूति” प्रविष्टि गद्य, काव्य-समीक्षा आ “कवि संजेश गुंजनक काव्य-संकलनक समालोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2614 : विदेह-सदेह 16 — शिवकुमार झा 'टिल्लू': देवीजी: बालमनोविज्ञानक सहज स्पर्शन

५२०. खण्ड 2614, सूचकांक पंक्ति 1305: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “देवीजी: बालमनोविज्ञानक सहज स्पर्शन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) देवीजी: बालमनोविज्ञानक सहज स्पर्शन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२१. खण्ड 2614, सूचकांक पंक्ति 1305: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “देवीजी: बालमनोविज्ञानक सहज स्पर्शन”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२२. खण्ड 2614, सूचकांक पंक्ति 1305: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “देवीजी: बालमनोविज्ञानक सहज स्पर्शन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२३. खण्ड 2614, सूचकांक पंक्ति 1305: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “देवीजी: बालमनोविज्ञानक सहज स्पर्शन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ज्योति झा चौधरीक बाल-साहित्यक विवेचन

५२४. खण्ड 2614, सूचकांक पंक्ति 1305: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “देवीजी: बालमनोविज्ञानक सहज स्पर्शन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ज्योति झा चौधरीक बाल-साहित्यक विवेचन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२५. खण्ड 2614, सूचकांक पंक्ति 1305: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “देवीजी: बालमनोविज्ञानक सहज स्पर्शन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शिवकुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२६. खण्ड 2614, सूचकांक पंक्ति 1305: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “देवीजी: बालमनोविज्ञानक सहज स्पर्शन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२७. खण्ड 2614, सूचकांक पंक्ति 1305: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “देवीजी: बालमनोविज्ञानक सहज स्पर्शन”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५२८. खण्ड 2614, सूचकांक पंक्ति 1305: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “देवीजी: बालमनोविज्ञानक सहज स्पर्शन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२९. खण्ड 2614, सूचकांक पंक्ति 1305: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2614, सूचकांक पंक्ति 1305मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “देवीजी: बालमनोविज्ञानक सहज स्पर्शन” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “ज्योति झा चौधरीक बाल-साहित्यक विवेचन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2615 : विदेह-सदेह 16 — शिवकुमार झा 'टिल्लू': सहज प्रवृत्तिक गुणात्मक प्रयोग: गुम्म भेल ठाढ़ छी

५३०. खण्ड 2615, सूचकांक पंक्ति 1306: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “सहज प्रवृत्तिक गुणात्मक प्रयोग: गुम्म भेल ठाढ़ छी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सहज प्रवृत्तिक गुणात्मक प्रयोग: गुम्म भेल ठाढ़ छी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३१. खण्ड 2615, सूचकांक पंक्ति 1306: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “सहज प्रवृत्तिक गुणात्मक प्रयोग: गुम्म भेल ठाढ़ छी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३२. खण्ड 2615, सूचकांक पंक्ति 1306: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “सहज प्रवृत्तिक गुणात्मक प्रयोग: गुम्म भेल ठाढ़ छी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) काव्य-समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३३. खण्ड 2615, सूचकांक पंक्ति 1306: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “सहज प्रवृत्तिक गुणात्मक प्रयोग: गुम्म भेल ठाढ़ छी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कवि सोपाल झा 'सोपेश'क काव्य-संग्रहक समीक्षा

५३४. खण्ड 2615, सूचकांक पंक्ति 1306: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “सहज प्रवृत्तिक गुणात्मक प्रयोग: गुम्म भेल ठाढ़ छी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कवि सोपाल झा 'सोपेश'क काव्य-संग्रहक समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३५. खण्ड 2615, सूचकांक पंक्ति 1306: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “सहज प्रवृत्तिक गुणात्मक प्रयोग: गुम्म भेल ठाढ़ छी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शिवकुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा काव्य-समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३६. खण्ड 2615, सूचकांक पंक्ति 1306: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “सहज प्रवृत्तिक गुणात्मक प्रयोग: गुम्म भेल ठाढ़ छी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३७. खण्ड 2615, सूचकांक पंक्ति 1306: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “सहज प्रवृत्तिक गुणात्मक प्रयोग: गुम्म भेल ठाढ़ छी”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ काव्य-समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५३८. खण्ड 2615, सूचकांक पंक्ति 1306: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “सहज प्रवृत्तिक गुणात्मक प्रयोग: गुम्म भेल ठाढ़ छी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३९. खण्ड 2615, सूचकांक पंक्ति 1306: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2615, सूचकांक पंक्ति 1306मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “सहज प्रवृत्तिक गुणात्मक प्रयोग: गुम्म भेल ठाढ़ छी” प्रविष्टि गद्य, काव्य-समीक्षा आ “कवि सोपाल झा 'सोपेश'क काव्य-संग्रहक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2616 : विदेह-सदेह 16 — शिवकुमार झा 'टिल्लू': घृष्ट शिरोमणि महामहोपाध्याय गोनू झा

५४०. खण्ड 2616, सूचकांक पंक्ति 1307: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “घृष्ट शिरोमणि महामहोपाध्याय गोनू झा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) घृष्ट शिरोमणि महामहोपाध्याय गोनू झा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४१. खण्ड 2616, सूचकांक पंक्ति 1307: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “घृष्ट शिरोमणि महामहोपाध्याय गोनू झा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४२. खण्ड 2616, सूचकांक पंक्ति 1307: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “घृष्ट शिरोमणि महामहोपाध्याय गोनू झा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) नाटक-समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४३. खण्ड 2616, सूचकांक पंक्ति 1307: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “घृष्ट शिरोमणि महामहोपाध्याय गोनू झा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बैकुण्ठ झाक नाटकक समीक्षा

५४४. खण्ड 2616, सूचकांक पंक्ति 1307: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “घृष्ट शिरोमणि महामहोपाध्याय गोनू झा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बैकुण्ठ झाक नाटकक समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४५. खण्ड 2616, सूचकांक पंक्ति 1307: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “घृष्ट शिरोमणि महामहोपाध्याय गोनू झा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शिवकुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा नाटक-समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४६. खण्ड 2616, सूचकांक पंक्ति 1307: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “घृष्ट शिरोमणि महामहोपाध्याय गोनू झा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४७. खण्ड 2616, सूचकांक पंक्ति 1307: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “घृष्ट शिरोमणि महामहोपाध्याय गोनु झा”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ नाटक-समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५४८. खण्ड 2616, सूचकांक पंक्ति 1307: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “घृष्ट शिरोमणि महामहोपाध्याय गोनु झा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४९. खण्ड 2616, सूचकांक पंक्ति 1307: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2616, सूचकांक पंक्ति 1307मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “घृष्ट शिरोमणि महामहोपाध्याय गोनु झा” प्रविष्टि गद्य, नाटक-समीक्षा आ “बैकुण्ठ झाक नाटकक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2617 : विदेह-सदेह 16 — शिवकुमार झा 'टिल्लू': मैथिली बाल साहित्य उद्भव ओ विकास

५५०. खण्ड 2617, सूचकांक पंक्ति 1308: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली बाल साहित्य उद्भव ओ विकास” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिली बाल साहित्य उद्भव ओ विकास
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५१. खण्ड 2617, सूचकांक पंक्ति 1308: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली बाल साहित्य उद्भव ओ विकास”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५२. खण्ड 2617, सूचकांक पंक्ति 1308: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली बाल साहित्य उद्भव ओ विकास”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शोध-आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५३. खण्ड 2617, सूचकांक पंक्ति 1308: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली बाल साहित्य उद्भव ओ विकास” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बाल-साहित्यक इतिहास आ विधाक विकास-यात्रा

५५४. खण्ड 2617, सूचकांक पंक्ति 1308: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली बाल साहित्य उद्भव ओ विकास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बाल-साहित्यक इतिहास आ विधाक विकास-यात्रा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५५. खण्ड 2617, सूचकांक पंक्ति 1308: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली बाल साहित्य उद्भव ओ विकास”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शिवकुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५६. खण्ड 2617, सूचकांक पंक्ति 1308: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली बाल साहित्य उद्भव ओ विकास” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५७. खण्ड 2617, सूचकांक पंक्ति 1308: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली बाल साहित्य उद्भव ओ विकास”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५५८. खण्ड 2617, सूचकांक पंक्ति 1308: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली बाल साहित्य उद्भव ओ विकास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५९. खण्ड 2617, सूचकांक पंक्ति 1308: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2617, सूचकांक पंक्ति 1308मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली बाल साहित्य उद्भव ओ विकास” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “बाल-साहित्यक इतिहास आ विधाक विकास-यात्रा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2618 : विदेह-सदेह 16 — शिवकुमार झा 'टिल्लू': "आब ओ नहि एथुन" (लघु कथा)

५६०. खण्ड 2618, सूचकांक पंक्ति 1309: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “"आब ओ नहि एथुन" (लघु कथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) "आब ओ नहि एथुन" (लघु कथा)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६१. खण्ड 2618, सूचकांक पंक्ति 1309: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “"आब ओ नहि एथुन" (लघु कथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६२. खण्ड 2618, सूचकांक पंक्ति 1309: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “"आब ओ नहि एथुन" (लघु कथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६३. खण्ड 2618, सूचकांक पंक्ति 1309: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “"आब ओ नहि एथुन" (लघु कथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पारिवारिक सम्बन्ध

५६४. खण्ड 2618, सूचकांक पंक्ति 1309: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “"आब ओ नहि एथुन" (लघु कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पारिवारिक सम्बन्ध
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६५. खण्ड 2618, सूचकांक पंक्ति 1309: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “"आब ओ नहि एथुन" (लघु कथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शिवकुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६६. खण्ड 2618, सूचकांक पंक्ति 1309: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “"आब ओ नहि एथुन" (लघु कथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६७. खण्ड 2618, सूचकांक पंक्ति 1309: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “"आब ओ नहि एथुन" (लघु कथा)”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५६८. खण्ड 2618, सूचकांक पंक्ति 1309: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “'आब ओ नहि एथुन" (लघु कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६९. खण्ड 2618, सूचकांक पंक्ति 1309: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2618, सूचकांक पंक्ति 1309मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “'आब ओ नहि एथुन" (लघु कथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “पारिवारिक सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2619 : विदेह-सदेह 16 — शिवकुमार झा 'टिल्लू': पेटक मारि (बाल विहिनि कथा)

५७०. खण्ड 2619, सूचकांक पंक्ति 1310: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “पेटक मारि (बाल विहिनि कथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) पेटक मारि (बाल विहिनि कथा)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७१. खण्ड 2619, सूचकांक पंक्ति 1310: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “पेटक मारि (बाल विहिनि कथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७२. खण्ड 2619, सूचकांक पंक्ति 1310: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “पेटक मारि (बाल विहिनि कथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बाल विहिनि कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७३. खण्ड 2619, सूचकांक पंक्ति 1310: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “पेटक मारि (बाल विहिनि कथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) हास्य

५७४. खण्ड 2619, सूचकांक पंक्ति 1310: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “पेटक मारि (बाल विहिनि कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) हास्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७५. खण्ड 2619, सूचकांक पंक्ति 1310: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “पेटक मारि (बाल विहिनि कथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शिवकुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा बाल विहिनि कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७६. खण्ड 2619, सूचकांक पंक्ति 1310: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “पेटक मारि (बाल विहिनि कथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७७. खण्ड 2619, सूचकांक पंक्ति 1310: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “पेटक मारि (बाल विहिनि कथा)”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बाल विहिनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५७८. खण्ड 2619, सूचकांक पंक्ति 1310: शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “पेटक मारि (बाल विहिनि कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७९. खण्ड 2619, सूचकांक पंक्ति 1310: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2619, सूचकांक पंक्ति 1310मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “पेटक मारि (बाल विहिनि कथा)” प्रविष्टि गद्य, बाल विहिनि कथा आ “हास्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2620 : विदेह-सदेह 16 — अमर कान्त अमर: सुजीतक गन्ध सुगन्ध छोडि रहल

५८०. खण्ड 2620, सूचकांक पंक्ति 1311: अमर कान्त अमरक “सुजीतक गन्ध सुगन्ध छोडि रहल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सुजीतक गन्ध सुगन्ध छोडि रहल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८१. खण्ड 2620, सूचकांक पंक्ति 1311: अमर कान्त अमरक “सुजीतक गन्ध सुगन्ध छोडि रहल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८२. खण्ड 2620, सूचकांक पंक्ति 1311: अमर कान्त अमरक “सुजीतक गन्ध सुगन्ध छोडि रहल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८३. खण्ड 2620, सूचकांक पंक्ति 1311: अमर कान्त अमरक “सुजीतक गन्ध सुगन्ध छोडि रहल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सुजीत झाक रचना-संसारक सकारात्मक आकलन

५८४. खण्ड 2620, सूचकांक पंक्ति 1311: अमर कान्त अमरक “सुजीतक गन्ध सुगन्ध छोडि रहल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सुजीत झाक रचना-संसारक सकारात्मक आकलन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८५. खण्ड 2620, सूचकांक पंक्ति 1311: अमर कान्त अमरक “सुजीतक गन्ध सुगन्ध छोडि रहल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अमर कान्त अमर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८६. खण्ड 2620, सूचकांक पंक्ति 1311: अमर कान्त अमरक “सुजीतक गन्ध सुगन्ध छोडि रहल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८७. खण्ड 2620, सूचकांक पंक्ति 1311: अमर कान्त अमरक “सुजीतक गन्ध सुगन्ध छोडि रहल”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५८८. खण्ड 2620, सूचकांक पंक्ति 1311: अमर कान्त अमरक “सुजीतक गन्ध सुगन्ध छोडि रहल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८९. खण्ड 2620, सूचकांक पंक्ति 1311: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2620, सूचकांक पंक्ति 1311मे अमर कान्त अमरक “सुजीतक गन्ध सुगन्ध छोडि रहल” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “सुजीत झाक रचना-संसारक सकारात्मक आकलन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2621 : विदेह-सदेह 16 — उमेश मण्डल: दूध

५९०. खण्ड 2621, सूचकांक पंक्ति 1312: उमेश मण्डलक “दूध” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) दूध
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९१. खण्ड 2621, सूचकांक पंक्ति 1312: उमेश मण्डलक “दूध”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९२. खण्ड 2621, सूचकांक पंक्ति 1312: उमेश मण्डलक “दूध”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९३. खण्ड 2621, सूचकांक पंक्ति 1312: उमेश मण्डलक “दूध” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) हास्य

५९४. खण्ड 2621, सूचकांक पंक्ति 1312: उमेश मण्डलक “दूध” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) हास्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९५. खण्ड 2621, सूचकांक पंक्ति 1312: उमेश मण्डलक “दूध”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९६. खण्ड 2621, सूचकांक पंक्ति 1312: उमेश मण्डलक “दूध” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९७. खण्ड 2621, सूचकांक पंक्ति 1312: उमेश मण्डलक “दूध”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५९८. खण्ड 2621, सूचकांक पंक्ति 1312: उमेश मण्डलक “दूध” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९९. खण्ड 2621, सूचकांक पंक्ति 1312: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2621, सूचकांक पंक्ति 1312मे उमेश मण्डलक “दूध” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “हास्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2622 : विदेह-सदेह 16 — उमेश मण्डल: 81म सगर राति दीप जरए — देवघर (रिपोर्टाज)

६००. खण्ड 2622, सूचकांक पंक्ति 1313: उमेश मण्डलक “81म सगर राति दीप जरए — देवघर (रिपोर्टाज)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 81म सगर राति दीप जरए — देवघर (रिपोर्टाज)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०१. खण्ड 2622, सूचकांक पंक्ति 1313: उमेश मण्डलक “81म सगर राति दीप जरए — देवघर (रिपोर्टाज)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०२. खण्ड 2622, सूचकांक पंक्ति 1313: उमेश मण्डलक “81म सगर राति दीप जरए — देवघर (रिपोर्टाज)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) रिपोर्टाज
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०३. खण्ड 2622, सूचकांक पंक्ति 1313: उमेश मण्डलक “81म सगर राति दीप जरए — देवघर (रिपोर्टाज)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) 'सगर राति' आन्दोलनक महत्वपूर्ण दस्तावेज

६०४. खण्ड 2622, सूचकांक पंक्ति 1313: उमेश मण्डलक “81म सगर राति दीप जरए — देवघर (रिपोर्ताज)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) 'सगर राति' आन्दोलनक महत्वपूर्ण दस्तावेज
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०५. खण्ड 2622, सूचकांक पंक्ति 1313: उमेश मण्डलक “81म सगर राति दीप जरए — देवघर (रिपोर्ताज)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०६. खण्ड 2622, सूचकांक पंक्ति 1313: उमेश मण्डलक “81म सगर राति दीप जरए — देवघर (रिपोर्ताज)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०७. खण्ड 2622, सूचकांक पंक्ति 1313: उमेश मण्डलक “81म सगर राति दीप जरए — देवघर (रिपोर्ताज)”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६०८. खण्ड 2622, सूचकांक पंक्ति 1313: उमेश मण्डलक “81म सगर राति दीप जरए — देवघर (रिपोर्ताज)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०९. खण्ड 2622, सूचकांक पंक्ति 1313: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2622, सूचकांक पंक्ति 1313मे उमेश मण्डलक “81म सगर राति दीप जरए — देवघर (रिपोर्ताज)” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “‘सगर राति’ आन्दोलनक महत्वपूर्ण दस्तावेज” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2623 : विदेह-सदेह 16 — उमेश मण्डल: मैथिली: सरकार आ हम सभ (भाषण)

६१०. खण्ड 2623, सूचकांक पंक्ति 1314: उमेश मण्डलक “मैथिली: सरकार आ हम सभ (भाषण)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिली: सरकार आ हम सभ (भाषण)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६११. खण्ड 2623, सूचकांक पंक्ति 1314: उमेश मण्डलक “मैथिली: सरकार आ हम सभ (भाषण)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१२. खण्ड 2623, सूचकांक पंक्ति 1314: उमेश मण्डलक “मैथिली: सरकार आ हम सभ (भाषण)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) भाषण
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१३. खण्ड 2623, सूचकांक पंक्ति 1314: उमेश मण्डलक “मैथिली: सरकार आ हम सभ (भाषण)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भाषा-राजनीति

६१४. खण्ड 2623, सूचकांक पंक्ति 1314: उमेश मण्डलक “मैथिली: सरकार आ हम सभ (भाषण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भाषा-राजनीति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१५. खण्ड 2623, सूचकांक पंक्ति 1314: उमेश मण्डलक “मैथिली: सरकार आ हम सभ (भाषण)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा भाषण
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१६. खण्ड 2623, सूचकांक पंक्ति 1314: उमेश मण्डलक “मैथिली: सरकार आ हम सभ (भाषण)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१७. खण्ड 2623, सूचकांक पंक्ति 1314: उमेश मण्डलक “मैथिली: सरकार आ हम सभ (भाषण)”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ भाषणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६१८. खण्ड 2623, सूचकांक पंक्ति 1314: उमेश मण्डलक “मैथिली: सरकार आ हम सभ (भाषण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१९. खण्ड 2623, सूचकांक पंक्ति 1314: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2623, सूचकांक पंक्ति 1314मे उमेश मण्डलक “मैथिली: सरकार आ हम सभ (भाषण)” प्रविष्टि गद्य, भाषण आ “भाषा-राजनीति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2624 : विदेह-सदेह 16 — उमेश मण्डल: 80म सगर राति — निर्मलीमे 45 गोट पोथीक लोकापर्ण (रिपोर्ताज)

६२०. खण्ड 2624, सूचकांक पंक्ति 1315: उमेश मण्डलक “80म सगर राति — निर्मलीमे 45 गोट पोथीक लोकापर्ण (रिपोर्ताज)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 80म सगर राति — निर्मलीमे 45 गोट पोथीक लोकापर्ण (रिपोर्ताज)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२१. खण्ड 2624, सूचकांक पंक्ति 1315: उमेश मण्डलक “80म सगर राति — निर्मलीमे 45 गोट पोथीक लोकापर्ण (रिपोर्ताज)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२२. खण्ड 2624, सूचकांक पंक्ति 1315: उमेश मण्डलक “80म सगर राति — निर्मलीमे 45 गोट पोथीक लोकापर्ण (रिपोर्ताज)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) रिपोर्ताज
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२३. खण्ड 2624, सूचकांक पंक्ति 1315: उमेश मण्डलक “80म सगर राति — निर्मलीमे 45 गोट पोथीक लोकापर्ण (रिपोर्ताज)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सगर राति आन्दोलन

६२४. खण्ड 2624, सूचकांक पंक्ति 1315: उमेश मण्डलक “80म सगर राति — निर्मलीमे 45 गोट पोथीक लोकापर्ण (रिपोर्ताज)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सगर राति आन्दोलन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२५. खण्ड 2624, सूचकांक पंक्ति 1315: उमेश मण्डलक “80म सगर राति — निर्मलीमे 45 गोत पोथीक लोकापर्ण (रिपोर्ताज)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२६. खण्ड 2624, सूचकांक पंक्ति 1315: उमेश मण्डलक “80म सगर राति — निर्मलीमे 45 गोत पोथीक लोकापर्ण (रिपोर्ताज)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२७. खण्ड 2624, सूचकांक पंक्ति 1315: उमेश मण्डलक “80म सगर राति — निर्मलीमे 45 गोत पोथीक लोकापर्ण (रिपोर्ताज)”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६२८. खण्ड 2624, सूचकांक पंक्ति 1315: उमेश मण्डलक “80म सगर राति — निर्मलीमे 45 गोत पोथीक लोकापर्ण (रिपोर्ताज)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२९. खण्ड 2624, सूचकांक पंक्ति 1315: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2624, सूचकांक पंक्ति 1315मे उमेश मण्डलक “80म सगर राति — निर्मलीमे 45 गोत पोथीक लोकापर्ण (रिपोर्ताज)” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “सगर राति आन्दोलन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2625 : विदेह-सदेह 16 — उमेश मण्डल: विदेह द्वारा मैथिली पोथी प्रदर्शनी (इतिहास)

६३०. खण्ड 2625, सूचकांक पंक्ति 1316: उमेश मण्डलक “विदेह द्वारा मैथिली पोथी प्रदर्शनी (इतिहास)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) विदेह द्वारा मैथिली पोथी प्रदर्शनी (इतिहास)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३१. खण्ड 2625, सूचकांक पंक्ति 1316: उमेश मण्डलक “विदेह द्वारा मैथिली पोथी प्रदर्शनी (इतिहास)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३२. खण्ड 2625, सूचकांक पंक्ति 1316: उमेश मण्डलक “विदेह द्वारा मैथिली पोथी प्रदर्शनी (इतिहास)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) इतिहास/दस्तावेज
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३३. खण्ड 2625, सूचकांक पंक्ति 1316: उमेश मण्डलक “विदेह द्वारा मैथिली पोथी प्रदर्शनी (इतिहास)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) विदेहक २८ टा पोथी प्रदर्शनीक सम्पूर्ण इतिहास

६३४. खण्ड 2625, सूचकांक पंक्ति 1316: उमेश मण्डलक “विदेह द्वारा मैथिली पोथी प्रदर्शनी (इतिहास)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) विदेहक २८ टा पोथी प्रदर्शनीक सम्पूर्ण इतिहास
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३५. खण्ड 2625, सूचकांक पंक्ति 1316: उमेश मण्डलक “विदेह द्वारा मैथिली पोथी प्रदर्शनी (इतिहास)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा इतिहास/दस्तावेज
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३६. खण्ड 2625, सूचकांक पंक्ति 1316: उमेश मण्डलक “विदेह द्वारा मैथिली पोथी प्रदर्शनी (इतिहास)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३७. खण्ड 2625, सूचकांक पंक्ति 1316: उमेश मण्डलक “विदेह द्वारा मैथिली पोथी प्रदर्शनी (इतिहास)”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ इतिहास/दस्तावेजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६३८. खण्ड 2625, सूचकांक पंक्ति 1316: उमेश मण्डलक “विदेह द्वारा मैथिली पोथी प्रदर्शनी (इतिहास)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३९. खण्ड 2625, सूचकांक पंक्ति 1316: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2625, सूचकांक पंक्ति 1316मे उमेश मण्डलक “विदेह द्वारा मैथिली पोथी प्रदर्शनी (इतिहास)” प्रविष्टि गद्य, इतिहास/दस्तावेज आ “विदेहक २८ टा पोथी प्रदर्शनीक सम्पूर्ण इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2626 : विदेह-सदेह 16 — नन्द विलास राय: मदन-अमर

६४०. खण्ड 2626, सूचकांक पंक्ति 1317: नन्द विलास रायक “मदन-अमर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मदन-अमर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४१. खण्ड 2626, सूचकांक पंक्ति 1317: नन्द विलास रायक “मदन-अमर”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४२. खण्ड 2626, सूचकांक पंक्ति 1317: नन्द विलास रायक “मदन-अमर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४३. खण्ड 2626, सूचकांक पंक्ति 1317: नन्द विलास रायक “मदन-अमर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) जातिगत भेदभाव

६४४. खण्ड 2626, सूचकांक पंक्ति 1317: नन्द विलास रायक “मदन-अमर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) जातिगत भेदभाव
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४५. खण्ड 2626, सूचकांक पंक्ति 1317: नन्द विलास रायक “मदन-अमर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक नन्द विलास राय, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४६. खण्ड 2626, सूचकांक पंक्ति 1317: नन्द विलास रायक “मदन-अमर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४७. खण्ड 2626, सूचकांक पंक्ति 1317: नन्द विलास रायक “मदन-अमर”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६४८. खण्ड 2626, सूचकांक पंक्ति 1317: नन्द विलास रायक “मदन-अमर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४९. खण्ड 2626, सूचकांक पंक्ति 1317: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2626, सूचकांक पंक्ति 1317मे नन्द विलास रायक “मदन-अमर” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “जातिगत भेदभाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2627 : विदेह-सदेह 16 — पूनम मण्डल: “सगर राधत दीप जरय” — ७९म आ ८०म आयोजनक रिपोर्टाज

६५०. खण्ड 2627, सूचकांक पंक्ति 1318: पूनम मण्डलक ““सगर राधत दीप जरय” — ७९म आ ८०म आयोजनक रिपोर्टाज” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) “सगर राधत दीप जरय” — ७९म आ ८०म आयोजनक रिपोर्टाज
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५१. खण्ड 2627, सूचकांक पंक्ति 1318: पूनम मण्डलक ““सगर राधत दीप जरय” — ७९म आ ८०म आयोजनक रिपोर्टाज”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५२. खण्ड 2627, सूचकांक पंक्ति 1318: पूनम मण्डलक ““सगर राधत दीप जरय” — ७९म आ ८०म आयोजनक रिपोर्टाज”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) रिपोर्टाज
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५३. खण्ड 2627, सूचकांक पंक्ति 1318: पूनम मण्डलक ““सगर राधत दीप जरय” — ७९म आ ८०म आयोजनक रिपोर्टाज” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सगर राति आन्दोलनक कथा-गोष्ठीक विवरण

६५४. खण्ड 2627, सूचकांक पंक्ति 1318: पूनम मण्डलक “"सगर राधत दीप जरय" — ७९म आ ८०म आयोजनक रिपोर्टाज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सगर राति आन्दोलनक कथा-गोष्ठीक विवरण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५५. खण्ड 2627, सूचकांक पंक्ति 1318: पूनम मण्डलक “"सगर राधत दीप जरय" — ७९म आ ८०म आयोजनक रिपोर्टाज”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक पूनम मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्टाज
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५६. खण्ड 2627, सूचकांक पंक्ति 1318: पूनम मण्डलक “"सगर राधत दीप जरय" — ७९म आ ८०म आयोजनक रिपोर्टाज” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५७. खण्ड 2627, सूचकांक पंक्ति 1318: पूनम मण्डलक “"सगर राधत दीप जरय" — ७९म आ ८०म आयोजनक रिपोर्टाज”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ रिपोर्टाजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६५८. खण्ड 2627, सूचकांक पंक्ति 1318: पूनम मण्डलक “"सगर राधत दीप जरय" — ७९म आ ८०म आयोजनक रिपोर्टाज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५९. खण्ड 2627, सूचकांक पंक्ति 1318: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2627, सूचकांक पंक्ति 1318मे पूनम मण्डलक “"सगर राधत दीप जरय" — ७९म आ ८०म आयोजनक रिपोर्टाज” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्टाज आ “सगर राति आन्दोलनक कथा-गोष्ठीक विवरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2628 : विदेह-सदेह 16 — राम विलास साहु: बाल-बोध

६६०. खण्ड 2628, सूचकांक पंक्ति 1319: राम विलास साहुक “बाल-बोध” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बाल-बोध
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६१. खण्ड 2628, सूचकांक पंक्ति 1319: राम विलास साहुक “बाल-बोध”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६२. खण्ड 2628, सूचकांक पंक्ति 1319: राम विलास साहुक “बाल-बोध”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६३. खण्ड 2628, सूचकांक पंक्ति 1319: राम विलास साहुक “बाल-बोध” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) गरीबी

६६४. खण्ड 2628, सूचकांक पंक्ति 1319: राम विलास साहुक “बाल-बोध” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) गरीबी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६५. खण्ड 2628, सूचकांक पंक्ति 1319: राम विलास साहुक “बाल-बोध”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक राम विलास साहु, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६६. खण्ड 2628, सूचकांक पंक्ति 1319: राम विलास साहुक “बाल-बोध” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६७. खण्ड 2628, सूचकांक पंक्ति 1319: राम विलास साहुक “बाल-बोध”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६६८. खण्ड 2628, सूचकांक पंक्ति 1319: राम विलास साहुक “बाल-बोध” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६९. खण्ड 2628, सूचकांक पंक्ति 1319: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2628, सूचकांक पंक्ति 1319मे राम विलास साहुक “बाल-बोध” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “गरीबी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2629 : विदेह-सदेह 16 — सुरेन्द्र शैल: धनुष यज्ञ — सीता स्वयंवर आ जयमाल

६७०. खण्ड 2629, सूचकांक पंक्ति 1320: सुरेन्द्र शैलक “धनुष यज्ञ — सीता स्वयंवर आ जयमाल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) धनुष यज्ञ — सीता स्वयंवर आ जयमाल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७१. खण्ड 2629, सूचकांक पंक्ति 1320: सुरेन्द्र शैलक “धनुष यज्ञ — सीता स्वयंवर आ जयमाल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७२. खण्ड 2629, सूचकांक पंक्ति 1320: सुरेन्द्र शैलक “धनुष यज्ञ — सीता स्वयंवर आ जयमाल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शोध-आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७३. खण्ड 2629, सूचकांक पंक्ति 1320: सुरेन्द्र शैलक “धनुष यज्ञ — सीता स्वयंवर आ जयमाल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पौराणिक परम्पराक विवेचन

६७४. खण्ड 2629, सूचकांक पंक्ति 1320: सुरेन्द्र शैलक “धनुष यज्ञ — सीता स्वयंवर आ जयमाल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पौराणिक परम्पराक विवेचन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७५. खण्ड 2629, सूचकांक पंक्ति 1320: सुरेन्द्र शैलक “धनुष यज्ञ — सीता स्वयंवर आ जयमाल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुरेन्द्र शैल, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७६. खण्ड 2629, सूचकांक पंक्ति 1320: सुरेन्द्र शैलक “धनुष यज्ञ — सीता स्वयंवर आ जयमाल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७७. खण्ड 2629, सूचकांक पंक्ति 1320: सुरेन्द्र शैलक “धनुष यज्ञ — सीता स्वयंवर आ जयमाल”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६७८. खण्ड 2629, सूचकांक पंक्ति 1320: सुरेन्द्र शैलक “धनुष यज्ञ — सीता स्वयंवर आ जयमाल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७९. खण्ड 2629, सूचकांक पंक्ति 1320: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2629, सूचकांक पंक्ति 1320मे सुरेन्द्र शैलक “धनुष यज्ञ — सीता स्वयंवर आ जयमाल” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “पौराणिक परम्पराक विवेचन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2630 : विदेह-सदेह 16 — अमित मिश्र: बस एकटा गल्फ्रेहड

६८०. खण्ड 2630, सूचकांक पंक्ति 1321: अमित मिश्रक “बस एकटा गल्फ्रेहड” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बस एकटा गल्फ्रेहड
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८१. खण्ड 2630, सूचकांक पंक्ति 1321: अमित मिश्रक “बस एकटा गल्फ्रेहड”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८२. खण्ड 2630, सूचकांक पंक्ति 1321: अमित मिश्रक “बस एकटा गल्फ्रेहड”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८३. खण्ड 2630, सूचकांक पंक्ति 1321: अमित मिश्रक “बस एकटा गल्फ्रेहड” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) व्यंग्य

६८४. खण्ड 2630, सूचकांक पंक्ति 1321: अमित मिश्रक “बस एकटा गल्फ्रेहड” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) व्यंग्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८५. खण्ड 2630, सूचकांक पंक्ति 1321: अमित मिश्रक “बस एकटा गल्फ्रेहड”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अमित मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८६. खण्ड 2630, सूचकांक पंक्ति 1321: अमित मिश्रक “बस एकटा गल्फ्रेहड” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८७. खण्ड 2630, सूचकांक पंक्ति 1321: अमित मिश्रक “बस एकटा गल्फ्रेहड”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६८८. खण्ड 2630, सूचकांक पंक्ति 1321: अमित मिश्रक “बस एकटा गल्फ्रेहड” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८९. खण्ड 2630, सूचकांक पंक्ति 1321: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2630, सूचकांक पंक्ति 1321मे अमित मिश्रक “बस एकटा गल्फ्रेहड” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2631 : विदेह-सदेह 16 — डॉ. बचेश्वर झा: सासुरक साइधकलक कथा-बेथा

६९०. खण्ड 2631, सूचकांक पंक्ति 1322: डॉ. बचेश्वर झाक “सासुरक साइधकलक कथा-बेथा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सासुरक साइधकलक कथा-बेथा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९१. खण्ड 2631, सूचकांक पंक्ति 1322: डॉ. बचेश्वर झाक “सासुरक साइधकलक कथा-बेथा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९२. खण्ड 2631, सूचकांक पंक्ति 1322: डॉ. बचेश्वर झाक “सासुरक साइधकलक कथा-बेथा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९३. खण्ड 2631, सूचकांक पंक्ति 1322: डॉ. बचेश्वर झाक “सासुरक साइधकलक कथा-बेथा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) हास्य

६९४. खण्ड 2631, सूचकांक पंक्ति 1322: डॉ. बचेश्वर झाक “सासुरक साइधकलक कथा-बेथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) हास्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९५. खण्ड 2631, सूचकांक पंक्ति 1322: डॉ. बचेश्वर झाक “सासुरक साइधकलक कथा-बेथा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. बचेश्वर झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९६. खण्ड 2631, सूचकांक पंक्ति 1322: डॉ. बचेश्वर झाक “सासुरक साइधकलक कथा-बेथा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९७. खण्ड 2631, सूचकांक पंक्ति 1322: डॉ. बचेश्वर झाक “सासुरक साइधकलक कथा-बेथा”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६९८. खण्ड 2631, सूचकांक पंक्ति 1322: डॉ. बचेश्वर झाक “सासुरक साइधकलक कथा-बेथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९९. खण्ड 2631, सूचकांक पंक्ति 1322: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2631, सूचकांक पंक्ति 1322मे डॉ. बचेश्वर झाक “सासुरक साइधकलक कथा-बेथा” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “हास्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2632 : विदेह-सदेह 16 — जवाहर लाल कश्यप: स्ट्रेस बस्टर

७००. खण्ड 2632, सूचकांक पंक्ति 1323: जवाहर लाल कश्यपक “स्ट्रेस बस्टर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) स्ट्रेस बस्टर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०१. खण्ड 2632, सूचकांक पंक्ति 1323: जवाहर लाल कश्यपक “स्ट्रेस बस्टर”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०२. खण्ड 2632, सूचकांक पंक्ति 1323: जवाहर लाल कश्यपक “स्ट्रेस बस्टर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०३. खण्ड 2632, सूचकांक पंक्ति 1323: जवाहर लाल कश्यपक “स्ट्रेस बस्टर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नारी-पुरुष सम्बन्ध

७०४. खण्ड 2632, सूचकांक पंक्ति 1323: जवाहर लाल कश्यपक “स्ट्रेस बस्टर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नारी-पुरुष सम्बन्ध
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०५. खण्ड 2632, सूचकांक पंक्ति 1323: जवाहर लाल कश्यपक “स्ट्रेस बस्टर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जवाहर लाल कश्यप, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०६. खण्ड 2632, सूचकांक पंक्ति 1323: जवाहर लाल कश्यपक “स्ट्रेस बस्टर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०७. खण्ड 2632, सूचकांक पंक्ति 1323: जवाहर लाल कश्यपक “स्ट्रेस बस्टर”क विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७०८. खण्ड 2632, सूचकांक पंक्ति 1323: जवाहर लाल कश्यपक “स्ट्रेस बस्टर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०९. खण्ड 2632, सूचकांक पंक्ति 1323: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2632, सूचकांक पंक्ति 1323मे जवाहर लाल कश्यपक “स्ट्रेस बस्टर” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नारी-पुरुष सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2633 : विदेह-सदेह 16 — फागुलाल साहु: माइक डाँट

७१०. खण्ड 2633, सूचकांक पंक्ति 1324: फागुलाल साहुक “माइक डाँट” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) माइक डाँट
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७११. खण्ड 2633, सूचकांक पंक्ति 1324: फागुलाल साहुक “माइक डाँट”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१२. खण्ड 2633, सूचकांक पंक्ति 1324: फागुलाल साहुक “माइक डाँट”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१३. खण्ड 2633, सूचकांक पंक्ति 1324: फागुलाल साहुक “माइक डाँट” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रेरणादायी

७१४. खण्ड 2633, सूचकांक पंक्ति 1324: फागुलाल साहुक “माइक डॉट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रेरणादायी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१५. खण्ड 2633, सूचकांक पंक्ति 1324: फागुलाल साहुक “माइक डॉट”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक फागुलाल साहु, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१६. खण्ड 2633, सूचकांक पंक्ति 1324: फागुलाल साहुक “माइक डॉट” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१७. खण्ड 2633, सूचकांक पंक्ति 1324: फागुलाल साहुक “माइक डॉट”केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७१८. खण्ड 2633, सूचकांक पंक्ति 1324: फागुलाल साहुक “माइक डॉट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१९. खण्ड 2633, सूचकांक पंक्ति 1324: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2633, सूचकांक पंक्ति 1324मे फागुलाल साहुक “माइक डॉट” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “प्रेरणादायी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2634 : विदेह-सदेह 16 — अखिलेश मण्डल: ललियाएल मुँह

७२०. खण्ड 2634, सूचकांक पंक्ति 1325: अखिलेश मण्डलक “ललियाएल मुँह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ललियाएल मुँह
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२१. खण्ड 2634, सूचकांक पंक्ति 1325: अखिलेश मण्डलक “ललियाएल मुँह”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२२. खण्ड 2634, सूचकांक पंक्ति 1325: अखिलेश मण्डलक “ललियाएल मुँह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२३. खण्ड 2634, सूचकांक पंक्ति 1325: अखिलेश मण्डलक “ललियाएल मुँह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) व्यंग्य

७२४. खण्ड 2634, सूचकांक पंक्ति 1325: अखिलेश मण्डलक “ललियाएल मुँह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) व्यंग्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२५. खण्ड 2634, सूचकांक पंक्ति 1325: अखिलेश मण्डलक “ललियाएल मुँह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अखिलेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२६. खण्ड 2634, सूचकांक पंक्ति 1325: अखिलेश मण्डलक “ललियाएल मुँह” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२७. खण्ड 2634, सूचकांक पंक्ति 1325: अखिलेश मण्डलक “ललियाएल मुँह”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७२८. खण्ड 2634, सूचकांक पंक्ति 1325: अखिलेश मण्डलक “ललियाएल मुँह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२९. खण्ड 2634, सूचकांक पंक्ति 1325: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2634, सूचकांक पंक्ति 1325मे अखिलेश मण्डलक “ललियाएल मुँह” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2635 : विदेह-सदेह 16 — बिपिन कुमार कर्ण 'करण': सरकारी नौकरी किए?

७३०. खण्ड 2635, सूचकांक पंक्ति 1326: बिपिन कुमार कर्ण 'करण'क “सरकारी नौकरी किए?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सरकारी नौकरी किए?
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३१. खण्ड 2635, सूचकांक पंक्ति 1326: बिपिन कुमार कर्ण 'करण'क “सरकारी नौकरी किए?”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३२. खण्ड 2635, सूचकांक पंक्ति 1326: बिपिन कुमार कर्ण 'करण'क “सरकारी नौकरी किए?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा/साक्षात्कार
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३३. खण्ड 2635, सूचकांक पंक्ति 1326: बिपिन कुमार कर्ण 'करण'क “सरकारी नौकरी किए?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बिहारक सरकारी नौकरीक मोह

७३४. खण्ड 2635, सूचकांक पंक्ति 1326: बिपिन कुमार कर्ण 'करण'क “सरकारी नौकरी किए?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बिहारक सरकारी नौकरीक मोह
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३५. खण्ड 2635, सूचकांक पंक्ति 1326: बिपिन कुमार कर्ण 'करण'क “सरकारी नौकरी किए?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक बिपिन कुमार कर्ण 'करण', विधा गद्य, उप-विधा कथा/साक्षात्कार
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३६. खण्ड 2635, सूचकांक पंक्ति 1326: बिपिन कुमार कर्ण 'करण'क “सरकारी नौकरी किए?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३७. खण्ड 2635, सूचकांक पंक्ति 1326: बिपिन कुमार कर्ण 'करण'क “सरकारीए नौकरी किए?” केँ विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथा/साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७३८. खण्ड 2635, सूचकांक पंक्ति 1326: बिपिन कुमार कर्ण 'करण'क “सरकारीए नौकरी किए?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३९. खण्ड 2635, सूचकांक पंक्ति 1326: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2635, सूचकांक पंक्ति 1326मे बिपिन कुमार कर्ण 'करण'क “सरकारीए नौकरी किए?” प्रविष्टि गद्य, कथा/साक्षात्कार आ “बिहारक सरकारी नौकरीक मोह” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2636 : विदेह-सदेह 16 — बेचन ठाकुर: हरिया इन्सपेक्टर

७४०. खण्ड 2636, सूचकांक पंक्ति 1327: बेचन ठाकुरक “हरिया इन्सपेक्टर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) हरिया इन्सपेक्टर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४१. खण्ड 2636, सूचकांक पंक्ति 1327: बेचन ठाकुरक “हरिया इन्सपेक्टर”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४२. खण्ड 2636, सूचकांक पंक्ति 1327: बेचन ठाकुरक “हरिया इन्सपेक्टर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४३. खण्ड 2636, सूचकांक पंक्ति 1327: बेचन ठाकुरक “हरिया इन्सपेक्टर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) व्यवस्था पर व्यंग्य

७४४. खण्ड 2636, सूचकांक पंक्ति 1327: बेचन ठाकुरक “हरिया इन्सपेक्टर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) व्यवस्था पर व्यंग्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४५. खण्ड 2636, सूचकांक पंक्ति 1327: बेचन ठाकुरक “हरिया इन्सपेक्टर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक बेचन ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४६. खण्ड 2636, सूचकांक पंक्ति 1327: बेचन ठाकुरक “हरिया इन्सपेक्टर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४७. खण्ड 2636, सूचकांक पंक्ति 1327: बेचन ठाकुरक “हरिया इन्सपेक्टर”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७४८. खण्ड 2636, सूचकांक पंक्ति 1327: बेचन ठाकुरक “हरिया इन्सपेक्टर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४९. खण्ड 2636, सूचकांक पंक्ति 1327: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2636, सूचकांक पंक्ति 1327मे बेचन ठाकुरक “हरिया इन्सपेक्टर” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “व्यवस्था पर व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2637 : विदेह-सदेह 16 — संजय कुमार मण्डल: एकन्त

७५०. खण्ड 2637, सूचकांक पंक्ति 1328: संजय कुमार मण्डलक “एकन्त” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) एकन्त
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५१. खण्ड 2637, सूचकांक पंक्ति 1328: संजय कुमार मण्डलक “एकन्त”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५२. खण्ड 2637, सूचकांक पंक्ति 1328: संजय कुमार मण्डलक “एकन्त”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५३. खण्ड 2637, सूचकांक पंक्ति 1328: संजय कुमार मण्डलक “एकन्त” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) गरीबी

७५४. खण्ड 2637, सूचकांक पंक्ति 1328: संजय कुमार मण्डलक “एकन्त” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) गरीबी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५५. खण्ड 2637, सूचकांक पंक्ति 1328: संजय कुमार मण्डलक “एकन्त”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक संजय कुमार मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५६. खण्ड 2637, सूचकांक पंक्ति 1328: संजय कुमार मण्डलक “एकन्त” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५७. खण्ड 2637, सूचकांक पंक्ति 1328: संजय कुमार मण्डलक “एकन्त”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७५८. खण्ड 2637, सूचकांक पंक्ति 1328: संजय कुमार मण्डलक “एकन्त” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५९. खण्ड 2637, सूचकांक पंक्ति 1328: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2637, सूचकांक पंक्ति 1328मे संजय कुमार मण्डलक “एकन्त” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “गरीबी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2638 : विदेह-सदेह 16 — ललन कुमार कामत: स्कूलक फीस

७६०. खण्ड 2638, सूचकांक पंक्ति 1329: ललन कुमार कामतक “स्कूलक फीस” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) स्कूलक फीस
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६१. खण्ड 2638, सूचकांक पंक्ति 1329: ललन कुमार कामतक “स्कूलक फीस”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६२. खण्ड 2638, सूचकांक पंक्ति 1329: ललन कुमार कामतक “स्कूलक फीस”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६३. खण्ड 2638, सूचकांक पंक्ति 1329: ललन कुमार कामतक “स्कूलक फीस” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) गरीबी

७६४. खण्ड 2638, सूचकांक पंक्ति 1329: ललन कुमार कामतक “स्कूलक फीस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) गरीबी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६५. खण्ड 2638, सूचकांक पंक्ति 1329: ललन कुमार कामतक “स्कूलक फीस”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक ललन कुमार कामत, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६६. खण्ड 2638, सूचकांक पंक्ति 1329: ललन कुमार कामतक “स्कूलक फीस” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६७. खण्ड 2638, सूचकांक पंक्ति 1329: ललन कुमार कामतक “स्कूलक फीस”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७६८. खण्ड 2638, सूचकांक पंक्ति 1329: ललन कुमार कामतक “स्कूलक फीस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६९. खण्ड 2638, सूचकांक पंक्ति 1329: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2638, सूचकांक पंक्ति 1329मे ललन कुमार कामतक “स्कूलक फीस” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “गरीबी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2639 : विदेह-सदेह 16 — ललन कुमार कामत: सफरनामा

७७०. खण्ड 2639, सूचकांक पंक्ति 1330: ललन कुमार कामतक “सफरनामा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सफरनामा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७१. खण्ड 2639, सूचकांक पंक्ति 1330: ललन कुमार कामतक “सफरनामा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७२. खण्ड 2639, सूचकांक पंक्ति 1330: ललन कुमार कामतक “सफरनामा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) यात्रा-वृत्तान्त
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७३. खण्ड 2639, सूचकांक पंक्ति 1330: ललन कुमार कामतक “सफरनामा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) 'सगर राति' यात्राक रोचक विवरण

७७४. खण्ड 2639, सूचकांक पंक्ति 1330: ललन कुमार कामतक “सफरनामा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) 'सगर राति' यात्राक रोचक विवरण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७५. खण्ड 2639, सूचकांक पंक्ति 1330: ललन कुमार कामतक “सफरनामा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक ललन कुमार कामत, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७६. खण्ड 2639, सूचकांक पंक्ति 1330: ललन कुमार कामतक “सफरनामा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगौं बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७७. खण्ड 2639, सूचकांक पंक्ति 1330: ललन कुमार कामतक “सफरनामा”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७७८. खण्ड 2639, सूचकांक पंक्ति 1330: ललन कुमार कामतक “सफरनामा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७९. खण्ड 2639, सूचकांक पंक्ति 1330: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2639, सूचकांक पंक्ति 1330मे ललन कुमार कामतक “सफरनामा” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “'सगर राति' यात्राक रोचक विवरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2640 : विदेह-सदेह 16 — ललन कुमार कामत: बेटी

७८०. खण्ड 2640, सूचकांक पंक्ति 1331: ललन कुमार कामतक “बेटी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बेटी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८१. खण्ड 2640, सूचकांक पंक्ति 1331: ललन कुमार कामतक “बेटी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८२. खण्ड 2640, सूचकांक पंक्ति 1331: ललन कुमार कामतक “बेटी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८३. खण्ड 2640, सूचकांक पंक्ति 1331: ललन कुमार कामतक “बेटी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पिता-पुत्री सम्बन्ध

७८४. खण्ड 2640, सूचकांक पंक्ति 1331: ललन कुमार कामतक “बेटी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पिता-पुत्री सम्बन्ध
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८५. खण्ड 2640, सूचकांक पंक्ति 1331: ललन कुमार कामतक “बेटी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक ललन कुमार कामत, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८६. खण्ड 2640, सूचकांक पंक्ति 1331: ललन कुमार कामतक “बेटी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८७. खण्ड 2640, सूचकांक पंक्ति 1331: ललन कुमार कामतक “बेटी”कें विदेह-सदेह 16क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७८८. खण्ड 2640, सूचकांक पंक्ति 1331: ललन कुमार कामतक “बेटी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८९. खण्ड 2640, सूचकांक पंक्ति 1331: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2640, सूचकांक पंक्ति 1331मे ललन कुमार कामतक “बेटी” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “पिता-पुत्री सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2641 : विदेह-सदेह 16 — जगदानंद झा 'मनु': छुट्टी भड गेले (बाल कविता)

७९०. खण्ड 2641, सूचकांक पंक्ति 1332: जगदानंद झा 'मनु'क “छुट्टी भड गेले (बाल कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) छुट्टी भड गेले (बाल कविता)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९१. खण्ड 2641, सूचकांक पंक्ति 1332: जगदानंद झा 'मनु'क “छुट्टी भड गेले (बाल कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९२. खण्ड 2641, सूचकांक पंक्ति 1332: जगदानंद झा 'मनु'क “छुट्टी भड गेले (बाल कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बाल कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९३. खण्ड 2641, सूचकांक पंक्ति 1332: जगदानंद झा 'मनु'क “छुट्टी भड गेले (बाल कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बाल-मनोविज्ञान

७९४. खण्ड 2641, सूचकांक पंक्ति 1332: जगदानंद झा 'मनु'क “छुट्टी भड गेले (बाल कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बाल-मनोविज्ञान
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९५. खण्ड 2641, सूचकांक पंक्ति 1332: जगदानंद झा 'मनु'क “छुट्टी भड गेले (बाल कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जगदानंद झा 'मनु', विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९६. खण्ड 2641, सूचकांक पंक्ति 1332: जगदानंद झा 'मनु'क “छुट्टी भड गेले (बाल कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९७. खण्ड 2641, सूचकांक पंक्ति 1332: जगदानंद झा 'मनु'क “छुट्टी भड गेले (बाल कविता)”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७९८. खण्ड 2641, सूचकांक पंक्ति 1332: जगदानंद झा 'मनु'क “छुट्टी भड गेले (बाल कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९९. खण्ड 2641, सूचकांक पंक्ति 1332: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2641, सूचकांक पंक्ति 1332मे जगदानंद झा 'मनु'क “छुट्टी भड गेले (बाल कविता)” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “बाल-मनोविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2642 : विदेह-सदेह 16 — जगदानंद झा 'मनु': प्रकृति (बाल कविता)

८००. खण्ड 2642, सूचकांक पंक्ति 1333: जगदानंद झा 'मनु'क “प्रकृति (बाल कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) प्रकृति (बाल कविता)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०१. खण्ड 2642, सूचकांक पंक्ति 1333: जगदानंद झा 'मनु'क “प्रकृति (बाल कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०२. खण्ड 2642, सूचकांक पंक्ति 1333: जगदानंद झा 'मनु'क “प्रकृति (बाल कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बाल कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०३. खण्ड 2642, सूचकांक पंक्ति 1333: जगदानंद झा 'मनु'क “प्रकृति (बाल कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रकृति-वर्णन

८०४. खण्ड 2642, सूचकांक पंक्ति 1333: जगदानंद झा 'मनु'क “प्रकृति (बाल कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रकृति-वर्णन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०५. खण्ड 2642, सूचकांक पंक्ति 1333: जगदानंद झा 'मनु'क “प्रकृति (बाल कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जगदानंद झा 'मनु', विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०६. खण्ड 2642, सूचकांक पंक्ति 1333: जगदानंद झा 'मनु'क “प्रकृति (बाल कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०७. खण्ड 2642, सूचकांक पंक्ति 1333: जगदानंद झा 'मनु'क “प्रकृति (बाल कविता)”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८०८. खण्ड 2642, सूचकांक पंक्ति 1333: जगदानंद झा 'मनु'क “प्रकृति (बाल कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०९. खण्ड 2642, सूचकांक पंक्ति 1333: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2642, सूचकांक पंक्ति 1333मे जगदानंद झा 'मनु'क “प्रकृति (बाल कविता)” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “प्रकृति-वर्णन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2643 : विदेह-सदेह 16 — जगदानंद झा 'मनु': किछु गजल (बहुते)

८१०. खण्ड 2643, सूचकांक पंक्ति 1334: जगदानंद झा 'मनु'क “किछु गजल (बहुते)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) किछु गजल (बहुते)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८११. खण्ड 2643, सूचकांक पंक्ति 1334: जगदानंद झा 'मनु'क “किछु गजल (बहुते)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१२. खण्ड 2643, सूचकांक पंक्ति 1334: जगदानंद झा 'मनु'क “किछु गजल (बहुते)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१३. खण्ड 2643, सूचकांक पंक्ति 1334: जगदानंद झा 'मनु'क “किछु गजल (बहुते)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) शृंगार

८१४. खण्ड 2643, सूचकांक पंक्ति 1334: जगदानंद झा 'मनु'क “किछु गजल (बहुते)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) शृंगार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१५. खण्ड 2643, सूचकांक पंक्ति 1334: जगदानंद झा 'मनु'क “किछु गजल (बहुते)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जगदानंद झा 'मनु', विधा पद्य, उप-विधा गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१६. खण्ड 2643, सूचकांक पंक्ति 1334: जगदानंद झा 'मनु'क “किछु गजल (बहुते)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१७. खण्ड 2643, सूचकांक पंक्ति 1334: जगदानंद झा 'मनु'क “किछु गजल (बहुते)”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८१८. खण्ड 2643, सूचकांक पंक्ति 1334: जगदानंद झा 'मनु'क “किछु गजल (बहुते)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१९. खण्ड 2643, सूचकांक पंक्ति 1334: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2643, सूचकांक पंक्ति 1334मे जगदानंद झा 'मनु'क “किछु गजल (बहुते)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2644 : विदेह-सदेह 16 — जगदानंद झा 'मनु': भवित गजल

८२०. खण्ड 2644, सूचकांक पंक्ति 1335: जगदानंद झा 'मनु'क “भवित गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) भवित गजल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२१. खण्ड 2644, सूचकांक पंक्ति 1335: जगदानंद झा 'मनु'क “भवित गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२२. खण्ड 2644, सूचकांक पंक्ति 1335: जगदानंद झा 'मनु'क “भवित गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२३. खण्ड 2644, सूचकांक पंक्ति 1335: जगदानंद झा 'मनु'क “भवित गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भक्ति

८२४. खण्ड 2644, सूचकांक पंक्ति 1335: जगदानंद झा 'मनु'क “भवित गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भक्ति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२५. खण्ड 2644, सूचकांक पंक्ति 1335: जगदानंद झा 'मनु'क “भवित गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जगदानंद झा 'मनु', विधा पद्य, उप-विधा गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२६. खण्ड 2644, सूचकांक पंक्ति 1335: जगदानंद झा 'मनु'क “भवित गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२७. खण्ड 2644, सूचकांक पंक्ति 1335: जगदानंद झा 'मनु'क “भवित गजल”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८२८. खण्ड 2644, सूचकांक पंक्ति 1335: जगदानंद झा 'मनु'क “भवित गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२९. खण्ड 2644, सूचकांक पंक्ति 1335: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2644, सूचकांक पंक्ति 1335मे जगदानंद झा 'मनु'क “भवित गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “भक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2645 : विदेह-सदेह 16 — नीतीश कर्ण: प्रेमक बुन्नी

८३०. खण्ड 2645, सूचकांक पंक्ति 1336: नीतीश कर्णक “प्रेमक बुन्नी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) प्रेमक बुन्नी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३१. खण्ड 2645, सूचकांक पंक्ति 1336: नीतीश कर्णक “प्रेमक बुन्नी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३२. खण्ड 2645, सूचकांक पंक्ति 1336: नीतीश कर्णक “प्रेमक बुन्नी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३३. खण्ड 2645, सूचकांक पंक्ति 1336: नीतीश कर्णक “प्रेमक बुन्नी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रेम

८३४. खण्ड 2645, सूचकांक पंक्ति 1336: नीतीश कर्णक “प्रेमक बुन्नी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रेम
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३५. खण्ड 2645, सूचकांक पंक्ति 1336: नीतीश कर्णक “प्रेमक बुन्नी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक नीतीश कर्ण, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३६. खण्ड 2645, सूचकांक पंक्ति 1336: नीतीश कर्णक “प्रेमक बुत्री” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३७. खण्ड 2645, सूचकांक पंक्ति 1336: नीतीश कर्णक “प्रेमक बुत्री”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८३८. खण्ड 2645, सूचकांक पंक्ति 1336: नीतीश कर्णक “प्रेमक बुत्री” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३९. खण्ड 2645, सूचकांक पंक्ति 1336: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2645, सूचकांक पंक्ति 1336मे नीतीश कर्णक “प्रेमक बुत्री” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2646 : विदेह-सदेह 16 — नीतीश कर्णक: कोना सुनाबु

८४०. खण्ड 2646, सूचकांक पंक्ति 1337: नीतीश कर्णक “कोना सुनाबु” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) कोना सुनाबु
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४१. खण्ड 2646, सूचकांक पंक्ति 1337: नीतीश कर्णक “कोना सुनाबु”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४२. खण्ड 2646, सूचकांक पंक्ति 1337: नीतीश कर्णक “कोना सुनाबु”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४३. खण्ड 2646, सूचकांक पंक्ति 1337: नीतीश कर्णक “कोना सुनाबु” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रेम

८४४. खण्ड 2646, सूचकांक पंक्ति 1337: नीतीश कर्णक “कोना सुनाबु” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रेम
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४५. खण्ड 2646, सूचकांक पंक्ति 1337: नीतीश कर्णक “कोना सुनाबु”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक नीतीश कर्ण, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४६. खण्ड 2646, सूचकांक पंक्ति 1337: नीतीश कर्णक “कोना सुनाबु” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४७. खण्ड 2646, सूचकांक पंक्ति 1337: नीतीश कर्णक “कोना सुनाबु”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८४८. खण्ड 2646, सूचकांक पंक्ति 1337: नीतीश कर्णक “कोना सुनाबु” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४९. खण्ड 2646, सूचकांक पंक्ति 1337: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2646, सूचकांक पंक्ति 1337मे नीतीश कर्णक “कोना सुनाबु” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2647 : विदेह-सदेह 16 — बिनीता झा: जिनगी

८५०. खण्ड 2647, सूचकांक पंक्ति 1338: बिनीता झाक “जिनगी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) जिनगी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५१. खण्ड 2647, सूचकांक पंक्ति 1338: बिनीता झाक “जिनगी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५२. खण्ड 2647, सूचकांक पंक्ति 1338: बिनीता झाक “जिनगी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५३. खण्ड 2647, सूचकांक पंक्ति 1338: बिनीता झाक “जिनगी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) जीवन-दर्शन

८५४. खण्ड 2647, सूचकांक पंक्ति 1338: बिनीता झाक “जिनगी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) जीवन-दर्शन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५५. खण्ड 2647, सूचकांक पंक्ति 1338: बिनीता झाक “जिनगी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक बिनीता झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५६. खण्ड 2647, सूचकांक पंक्ति 1338: बिनीता झाक “जिनगी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५७. खण्ड 2647, सूचकांक पंक्ति 1338: बिनीता झाक “जिनगी”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८५८. खण्ड 2647, सूचकांक पंक्ति 1338: बिनीता झाक “जिनगी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५९. खण्ड 2647, सूचकांक पंक्ति 1338: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2647, सूचकांक पंक्ति 1338मे बिनीता झाक “जिनगी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जीवन-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2648 : विदेह-सदेह 16 — बिनीता झा: किछु पाँति राधाकृष्ण सरकार लेल

८६०. खण्ड 2648, सूचकांक पंक्ति 1339: बिनीता झाक “किछु पाँति राधाकृष्ण सरकार लेल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) किछु पाँति राधाकृष्ण सरकार लेल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६१. खण्ड 2648, सूचकांक पंक्ति 1339: बिनीता झाक “किछु पाँति राधाकृष्ण सरकार लेल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६२. खण्ड 2648, सूचकांक पंक्ति 1339: बिनीता झाक “किछु पाँति राधाकृष्ण सरकार लेल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) भजन
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६३. खण्ड 2648, सूचकांक पंक्ति 1339: बिनीता झाक “किछु पाँति राधाकृष्ण सरकार लेल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) आध्यात्मिकता

८६४. खण्ड 2648, सूचकांक पंक्ति 1339: बिनीता झाक “किछु पाँति राधाकृष्ण सरकार लेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) आध्यात्मिकता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६५. खण्ड 2648, सूचकांक पंक्ति 1339: बिनीता झाक “किछु पाँति राधाकृष्ण सरकार लेल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक बिनीता झा, विधा पद्य, उप-विधा भजन
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६६. खण्ड 2648, सूचकांक पंक्ति 1339: बिनीता झाक “किछु पाँति राधाकृष्ण सरकार लेल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६७. खण्ड 2648, सूचकांक पंक्ति 1339: बिनीता झाक “किछु पाँति राधाकृष्ण सरकार लेल”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ भजनक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८६८. खण्ड 2648, सूचकांक पंक्ति 1339: बिनीता झाक “किछु पाँति राधाकृष्ण सरकार लेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६९. खण्ड 2648, सूचकांक पंक्ति 1339: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2648, सूचकांक पंक्ति 1339मे बिनीता झाक “किछु पाँति राधाकृष्ण सरकार लेल” प्रविष्टि पद्य, भजन आ “आध्यात्मिकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2649 : विदेह-सदेह 16 — विन्देश्वर ठाकुर: पैसा एतड कमा रहल छी

८७०. खण्ड 2649, सूचकांक पंक्ति 1340: विन्देश्वर ठाकुरक “पैसा एतड कमा रहल छी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) पैसा एतड कमा रहल छी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७१. खण्ड 2649, सूचकांक पंक्ति 1340: विन्देश्वर ठाकुरक “पैसा एतड कमा रहल छी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७२. खण्ड 2649, सूचकांक पंक्ति 1340: विन्देश्वर ठाकुरक “पैसा एतड कमा रहल छी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७३. खण्ड 2649, सूचकांक पंक्ति 1340: विन्देश्वर ठाकुरक “पैसा एतड कमा रहल छी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रवासी मजदूरक पीड़ा

८७४. खण्ड 2649, सूचकांक पंक्ति 1340: विन्देश्वर ठाकुरक “पैसा एतड कमा रहल छी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रवासी मजदूरक पीड़ा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७५. खण्ड 2649, सूचकांक पंक्ति 1340: विन्देश्वर ठाकुरक “पैसा एतड कमा रहल छी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक विन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७६. खण्ड 2649, सूचकांक पंक्ति 1340: विन्देश्वर ठाकुरक “पैसा एतड कमा रहल छी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७७. खण्ड 2649, सूचकांक पंक्ति 1340: विन्देश्वर ठाकुरक “पैसा एतड कमा रहल छी”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८७८. खण्ड 2649, सूचकांक पंक्ति 1340: विन्देश्वर ठाकुरक “पैसा एतड कमा रहल छी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७९. खण्ड 2649, सूचकांक पंक्ति 1340: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2649, सूचकांक पंक्ति 1340मे विन्देश्वर ठाकुरक “पैसा एतड कमा रहल छी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रवासी मजदूरक पीड़ा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2650 : विदेह-सदेह 16 — विन्देश्वर ठाकुर: एना मनाएब एहिबेरक दशै

८८०. खण्ड 2650, सूचकांक पंक्ति 1341: विन्देश्वर ठाकुरक “एना मनाएब एहिबेरक दशै” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) एना मनाएब एहिबेरक दशै
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८१. खण्ड 2650, सूचकांक पंक्ति 1341: विन्देश्वर ठाकुरक “एना मनाएब एहिबेरक दशै”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८२. खण्ड 2650, सूचकांक पंक्ति 1341: विन्देश्वर ठाकुरक “एना मनाएब एहिबेरक दशै”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८३. खण्ड 2650, सूचकांक पंक्ति 1341: विन्देश्वर ठाकुरक “एना मनाएब एहिबेरक दशै” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नेपाल

८८४. खण्ड 2650, सूचकांक पंक्ति 1341: विन्देश्वर ठाकुरक “एना मनाएब एहिबेरक दशै” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नेपाल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८५. खण्ड 2650, सूचकांक पंक्ति 1341: विन्देश्वर ठाकुरक “एना मनाएब एहिबेरक दशै”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक विन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८६. खण्ड 2650, सूचकांक पंक्ति 1341: विन्देश्वर ठाकुरक “एना मनाएब एहिबेरक दशै” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८७. खण्ड 2650, सूचकांक पंक्ति 1341: विन्देश्वर ठाकुरक “एना मनाएब एहिबेरक दशै”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८८८. खण्ड 2650, सूचकांक पंक्ति 1341: विन्देश्वर ठाकुरक “एना मनाएब एहिबेरक दशै” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८९. खण्ड 2650, सूचकांक पंक्ति 1341: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2650, सूचकांक पंक्ति 1341मे विन्देश्वर ठाकुरक “एना मनाएब एहिबेरक दशै” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2651 : विदेह-सदेह 16 — विन्देश्वर ठाकुर: गजल, गजल सन, गीत (बहुते)

८९०. खण्ड 2651, सूचकांक पंक्ति 1342: विन्देश्वर ठाकुरक “गजल, गजल सन, गीत (बहुते)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गजल, गजल सन, गीत (बहुते)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९१. खण्ड 2651, सूचकांक पंक्ति 1342: विन्देश्वर ठाकुरक “गजल, गजल सन, गीत (बहुते)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९२. खण्ड 2651, सूचकांक पंक्ति 1342: विन्देश्वर ठाकुरक “गजल, गजल सन, गीत (बहुते)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल/गीत
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९३. खण्ड 2651, सूचकांक पंक्ति 1342: विन्देश्वर ठाकुरक “गजल, गजल सन, गीत (बहुते)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रेम

८९४. खण्ड 2651, सूचकांक पंक्ति 1342: विन्देश्वर ठाकुरक “गजल, गजल सन, गीत (बहुते)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रेम
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९५. खण्ड 2651, सूचकांक पंक्ति 1342: विन्देश्वर ठाकुरक “गजल, गजल सन, गीत (बहुते)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक विन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा गजल/गीत
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९६. खण्ड 2651, सूचकांक पंक्ति 1342: विन्देश्वर ठाकुरक “गजल, गजल सन, गीत (बहुते)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९७. खण्ड 2651, सूचकांक पंक्ति 1342: विन्देश्वर ठाकुरक “गजल, गजल सन, गीत (बहुते)”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजल/गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८९८. खण्ड 2651, सूचकांक पंक्ति 1342: विन्देश्वर ठाकुरक “गजल, गजल सन, गीत (बहुते)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९९. खण्ड 2651, सूचकांक पंक्ति 1342: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2651, सूचकांक पंक्ति 1342मे विन्देश्वर ठाकुरक “गजल, गजल सन, गीत (बहुते)” प्रविष्टि पद्य, गजल/गीत आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2652 : विदेह-सदेह 16 — विन्देश्वर ठाकुर: भेटब दोसर दिवालीमे

९००. खण्ड 2652, सूचकांक पंक्ति 1343: विन्देश्वर ठाकुरक “भेटब दोसर दिवालीमे” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) भेटब दोसर दिवालीमे
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९०१. खण्ड 2652, सूचकांक पंक्ति 1343: विन्देश्वर ठाकुरक “भेटब दोसर दिवालीमे”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९०२. खण्ड 2652, सूचकांक पंक्ति 1343: विन्देश्वर ठाकुरक “भेटब दोसर दिवालीमे”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गीत
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३. खण्ड 2652, सूचकांक पंक्ति 1343: विन्देश्वर ठाकुरक “भेटब दोसर दिवालीमे” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सांस्कृतिक

१०४. खण्ड 2652, सूचकांक पंक्ति 1343: विन्देश्वर ठाकुरक “भेटब दोसर दिवालीमे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सांस्कृतिक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५. खण्ड 2652, सूचकांक पंक्ति 1343: विन्देश्वर ठाकुरक “भेटब दोसर दिवालीमे”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक विन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा गीत
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६. खण्ड 2652, सूचकांक पंक्ति 1343: विन्देश्वर ठाकुरक “भेटब दोसर दिवालीमे” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७. खण्ड 2652, सूचकांक पंक्ति 1343: विन्देश्वर ठाकुरक “भेटब दोसर दिवालीमे”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०८. खण्ड 2652, सूचकांक पंक्ति 1343: विन्देश्वर ठाकुरक “भेटब दोसर दिवालीमे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०९. खण्ड 2652, सूचकांक पंक्ति 1343: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2652, सूचकांक पंक्ति 1343मे विन्देश्वर ठाकुरक “भेटब दोसर दिवालीमे” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “सांस्कृतिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2653 : विदेह-सदेह 16 — विन्देश्वर ठाकुर: छठिक शुभकामना

९१०. खण्ड 2653, सूचकांक पंक्ति 1344: विन्देश्वर ठाकुरक “छठिक शुभकामना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) छठिक शुभकामना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९११. खण्ड 2653, सूचकांक पंक्ति 1344: विन्देश्वर ठाकुरक “छठिक शुभकामना”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९१२. खण्ड 2653, सूचकांक पंक्ति 1344: विन्देश्वर ठाकुरक “छठिक शुभकामना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९१३. खण्ड 2653, सूचकांक पंक्ति 1344: विन्देश्वर ठाकुरक “छठिक शुभकामना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) लोक-आस्था

९१४. खण्ड 2653, सूचकांक पंक्ति 1344: विन्देश्वर ठाकुरक “छठिक शुभकामना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) लोक-आस्था
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९१५. खण्ड 2653, सूचकांक पंक्ति 1344: विन्देश्वर ठाकुरक “छठिक शुभकामना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक विन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९१६. खण्ड 2653, सूचकांक पंक्ति 1344: विन्देश्वर ठाकुरक “छठिक शुभकामना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९१७. खण्ड 2653, सूचकांक पंक्ति 1344: विन्देश्वर ठाकुरक “छठिक शुभकामना”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

९१८. खण्ड 2653, सूचकांक पंक्ति 1344: विन्देश्वर ठाकुरक “छठिक शुभकामना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९१९. खण्ड 2653, सूचकांक पंक्ति 1344: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2653, सूचकांक पंक्ति 1344मे विन्देश्वर ठाकुरक “छठिक शुभकामना” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “लोक-आस्था” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2654 : विदेह-सदेह 16 — विन्देश्वर ठाकुर: रक्षाबन्धन

९२०. खण्ड 2654, सूचकांक पंक्ति 1345: विन्देश्वर ठाकुरक “रक्षाबन्धन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) रक्षाबन्धन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९२१. खण्ड 2654, सूचकांक पंक्ति 1345: विन्देश्वर ठाकुरक “रक्षाबन्धन”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९२२. खण्ड 2654, सूचकांक पंक्ति 1345: विन्देश्वर ठाकुरक “रक्षाबन्धन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९२३. खण्ड 2654, सूचकांक पंक्ति 1345: विन्देश्वर ठाकुरक “रक्षाबन्धन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भाई-बहिनक प्रेम

९२४. खण्ड 2654, सूचकांक पंक्ति 1345: विन्देश्वर ठाकुरक “रक्षाबन्धन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भाई-बहिनक प्रेम
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९२५. खण्ड 2654, सूचकांक पंक्ति 1345: विन्देश्वर ठाकुरक “रक्षाबन्धन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक विन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२६. खण्ड 2654, सूचकांक पंक्ति 1345: विन्देश्वर ठाकुरक “रक्षाबन्धन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२७. खण्ड 2654, सूचकांक पंक्ति 1345: विन्देश्वर ठाकुरक “रक्षाबन्धन”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२८. खण्ड 2654, सूचकांक पंक्ति 1345: विन्देश्वर ठाकुरक “रक्षाबन्धन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२९. खण्ड 2654, सूचकांक पंक्ति 1345: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2654, सूचकांक पंक्ति 1345मे विन्देश्वर ठाकुरक “रक्षाबन्धन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भाई-बहिनक प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2655 : विदेह-सदेह 16 — विन्देश्वर ठाकुर: अहा किये कनलौ?

१३०. खण्ड 2655, सूचकांक पंक्ति 1346: विन्देश्वर ठाकुरक “अहा किये कनलौ?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अहा किये कनलौ?
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३१. खण्ड 2655, सूचकांक पंक्ति 1346: विन्देश्वर ठाकुरक “अहा किये कनलौ?”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३२. खण्ड 2655, सूचकांक पंक्ति 1346: विन्देश्वर ठाकुरक “अहा किये कनलौ?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३३. खण्ड 2655, सूचकांक पंक्ति 1346: विन्देश्वर ठाकुरक “अहा किये कनलौ?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रेम

९३४. खण्ड 2655, सूचकांक पंक्ति 1346: विन्देश्वर ठाकुरक “अहा किये कनलौ?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रेम
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९३५. खण्ड 2655, सूचकांक पंक्ति 1346: विन्देश्वर ठाकुरक “अहा किये कनलौ?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक विन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९३६. खण्ड 2655, सूचकांक पंक्ति 1346: विन्देश्वर ठाकुरक “अहा किये कनलौ?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९३७. खण्ड 2655, सूचकांक पंक्ति 1346: विन्देश्वर ठाकुरक “अहा किये कनलौ?”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

९३८. खण्ड 2655, सूचकांक पंक्ति 1346: विन्देश्वर ठाकुरक “अहा किये कनलौ?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९३९. खण्ड 2655, सूचकांक पंक्ति 1346: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2655, सूचकांक पंक्ति 1346मे विन्देश्वर ठाकुरक “अहा किये कनलौ?” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2656 : विदेह-सदेह 16 — विन्देश्वर ठाकुर: ललकार

९४०. खण्ड 2656, सूचकांक पंक्ति 1347: विन्देश्वर ठाकुरक “ललकार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ललकार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४१. खण्ड 2656, सूचकांक पंक्ति 1347: विन्देश्वर ठाकुरक “ललकार”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४२. खण्ड 2656, सूचकांक पंक्ति 1347: विन्देश्वर ठाकुरक “ललकार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४३. खण्ड 2656, सूचकांक पंक्ति 1347: विन्देश्वर ठाकुरक “ललकार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सामाजिक जागरण

१४४. खण्ड 2656, सूचकांक पंक्ति 1347: विन्देश्वर ठाकुरक “ललकार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सामाजिक जागरण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४५. खण्ड 2656, सूचकांक पंक्ति 1347: विन्देश्वर ठाकुरक “ललकार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक विन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४६. खण्ड 2656, सूचकांक पंक्ति 1347: विन्देश्वर ठाकुरक “ललकार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४७. खण्ड 2656, सूचकांक पंक्ति 1347: विन्देश्वर ठाकुरक “ललकार”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४८. खण्ड 2656, सूचकांक पंक्ति 1347: विन्देश्वर ठाकुरक “ललकार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४९. खण्ड 2656, सूचकांक पंक्ति 1347: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2656, सूचकांक पंक्ति 1347मे विन्देश्वर ठाकुरक “ललकार” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक जागरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2657 : विदेह-सदेह 16 — विन्देश्वर ठाकुर: पूसिक शान

१५०. खण्ड 2657, सूचकांक पंक्ति 1348: विन्देश्वर ठाकुरक “पूसिक शान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) पूसिक शान
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५१. खण्ड 2657, सूचकांक पंक्ति 1348: विन्देश्वर ठाकुरक “पूसिक शान”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५२. खण्ड 2657, सूचकांक पंक्ति 1348: विन्देश्वर ठाकुरक “पूसिक शान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५३. खण्ड 2657, सूचकांक पंक्ति 1348: विन्देश्वर ठाकुरक “पूसिक शान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) देशभक्ति

१५४. खण्ड 2657, सूचकांक पंक्ति 1348: विन्देश्वर ठाकुरक “पूसिक शान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) देशभक्ति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५५. खण्ड 2657, सूचकांक पंक्ति 1348: विन्देश्वर ठाकुरक “पूसिक शान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक विन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५६. खण्ड 2657, सूचकांक पंक्ति 1348: विन्देश्वर ठाकुरक “पूसिक शान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५७. खण्ड 2657, सूचकांक पंक्ति 1348: विन्देश्वर ठाकुरक “पूसिक शान”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५८. खण्ड 2657, सूचकांक पंक्ति 1348: विन्देश्वर ठाकुरक “पूसिक शान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५९. खण्ड 2657, सूचकांक पंक्ति 1348: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2657, सूचकांक पंक्ति 1348मे विन्देश्वर ठाकुरक “पूसिक शान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “देशभक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2658 : विदेह-सदेह 16 — पंकज झा: हम बुरबकहा

१६०. खण्ड 2658, सूचकांक पंक्ति 1349: पंकज झाक “हम बुरबकहा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) हम बुरबकहा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६१. खण्ड 2658, सूचकांक पंक्ति 1349: पंकज झाक “हम बुरबकहा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६२. खण्ड 2658, सूचकांक पंक्ति 1349: पंकज झाक “हम बुरबकहा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६३. खण्ड 2658, सूचकांक पंक्ति 1349: पंकज झाक “हम बुरबकहा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सामाजिक विसंगति

१६४. खण्ड 2658, सूचकांक पंक्ति 1349: पंकज झाक “हम बुरबकहा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सामाजिक विसंगति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६५. खण्ड 2658, सूचकांक पंक्ति 1349: पंकज झाक “हम बुरबकहा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक पंकज झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६६. खण्ड 2658, सूचकांक पंक्ति 1349: पंकज झाक “हम बुरबकहा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६७. खण्ड 2658, सूचकांक पंक्ति 1349: पंकज झाक “हम बुरबकहा”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१६८. खण्ड 2658, सूचकांक पंक्ति 1349: पंकज झाक “हम बुरबकहा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६९. खण्ड 2658, सूचकांक पंक्ति 1349: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2658, सूचकांक पंक्ति 1349मे पंकज झाक “हम बुरबकहा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक विसंगति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2659 : विदेह-सदेह 16 — बेचन महतो: खुशीके नोर

१७०. खण्ड 2659, सूचकांक पंक्ति 1350: बेचन महतोक “खुशीके नोर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) खुशीके नोर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७१. खण्ड 2659, सूचकांक पंक्ति 1350: बेचन महतोक “खुशीके नोर”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७२. खण्ड 2659, सूचकांक पंक्ति 1350: बेचन महतोक “खुशीके नोर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७३. खण्ड 2659, सूचकांक पंक्ति 1350: बेचन महतो क “खुशीके नोर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सामाजिक समरसता

१७४. खण्ड 2659, सूचकांक पंक्ति 1350: बेचन महतो क “खुशीके नोर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सामाजिक समरसता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७५. खण्ड 2659, सूचकांक पंक्ति 1350: बेचन महतो क “खुशीके नोर” क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक बेचन महतो, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७६. खण्ड 2659, सूचकांक पंक्ति 1350: बेचन महतो क “खुशीके नोर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७७. खण्ड 2659, सूचकांक पंक्ति 1350: बेचन महतो क “खुशीके नोर”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१७८. खण्ड 2659, सूचकांक पंक्ति 1350: बेचन महतो क “खुशीके नोर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७९. खण्ड 2659, सूचकांक पंक्ति 1350: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2659, सूचकांक पंक्ति 1350मे बेचन महतो क “खुशीके नोर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक समरसता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2660 : विदेह-सदेह 16 — बेचन महतो: आउ हमसब एक हउ

१८०. खण्ड 2660, सूचकांक पंक्ति 1351: बेचन महतो क “आउ हमसब एक हउ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) आउ हमसब एक हउ
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८१. खण्ड 2660, सूचकांक पंक्ति 1351: बेचन महतो क “आउ हमसब एक हउ” क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८२. खण्ड 2660, सूचकांक पंक्ति 1351: बेचन महतो क “आउ हमसब एक हउ” क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८३. खण्ड 2660, सूचकांक पंक्ति 1351: बेचन महतो क “आउ हमसब एक हउ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) एकता

१८४. खण्ड 2660, सूचकांक पंक्ति 1351: बेचन महतो क “आउ हमसब एक हउ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) एकता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८५. खण्ड 2660, सूचकांक पंक्ति 1351: बेचन महतो क “आउ हमसब एक हउ” क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक बेचन महतो, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८६. खण्ड 2660, सूचकांक पंक्ति 1351: बेचन महतो क “आउ हमसब एक हउ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८७. खण्ड 2660, सूचकांक पंक्ति 1351: बेचन महतो क “आउ हमसब एक हउ”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१८८. खण्ड 2660, सूचकांक पंक्ति 1351: बेचन महतो क “आउ हमसब एक हउ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८९. खण्ड 2660, सूचकांक पंक्ति 1351: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2660, सूचकांक पंक्ति 1351मे बेचन महतो “आउ हमसब एक हउ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “एकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2661 : विदेह-सदेह 16 — बेचन महतो: सपनाके बिज

१९०. खण्ड 2661, सूचकांक पंक्ति 1352: बेचन महतो “सपनाके बिज” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सपनाके बिज
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९१. खण्ड 2661, सूचकांक पंक्ति 1352: बेचन महतो “सपनाके बिज”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९२. खण्ड 2661, सूचकांक पंक्ति 1352: बेचन महतो “सपनाके बिज”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९३. खण्ड 2661, सूचकांक पंक्ति 1352: बेचन महतो “सपनाके बिज” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) स्वप्न

१९४. खण्ड 2661, सूचकांक पंक्ति 1352: बेचन महतो “सपनाके बिज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) स्वप्न
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९५. खण्ड 2661, सूचकांक पंक्ति 1352: बेचन महतो “सपनाके बिज”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक बेचन महतो, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९६. खण्ड 2661, सूचकांक पंक्ति 1352: बेचन महतो “सपनाके बिज” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९७. खण्ड 2661, सूचकांक पंक्ति 1352: बेचन महतोक “सपनाके बिज” के विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१९८. खण्ड 2661, सूचकांक पंक्ति 1352: बेचन महतोक “सपनाके बिज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९९. खण्ड 2661, सूचकांक पंक्ति 1352: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2661, सूचकांक पंक्ति 1352मे बेचन महतोक “सपनाके बिज” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “स्वप्न” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2662 : विदेह-सदेह 16 — कृन्दन कृमार कर्ण: हजल (बहुते)

१०००. खण्ड 2662, सूचकांक पंक्ति 1353: कृन्दन कृमार कर्णक “हजल (बहुते)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) हजल (बहुते)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००१. खण्ड 2662, सूचकांक पंक्ति 1353: कृन्दन कृमार कर्णक “हजल (बहुते)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००२. खण्ड 2662, सूचकांक पंक्ति 1353: कृन्दन कृमार कर्णक “हजल (बहुते)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००३. खण्ड 2662, सूचकांक पंक्ति 1353: कृन्दन कृमार कर्णक “हजल (बहुते)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) शृंगार

१००४. खण्ड 2662, सूचकांक पंक्ति 1353: कृन्दन कृमार कर्णक “हजल (बहुते)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) शृंगार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००५. खण्ड 2662, सूचकांक पंक्ति 1353: कृन्दन कृमार कर्णक “हजल (बहुते)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कृन्दन कृमार कर्ण, विधा पद्य, उप-विधा गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००६. खण्ड 2662, सूचकांक पंक्ति 1353: कृन्दन कृमार कर्णक “हजल (बहुते)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००७. खण्ड 2662, सूचकांक पंक्ति 1353: कृन्दन कृमार कर्णक “हजल (बहुते)”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१००८. खण्ड 2662, सूचकांक पंक्ति 1353: कृन्दन कृमार कर्णक “हजल (बहुते)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००९. खण्ड 2662, सूचकांक पंक्ति 1353: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2662, सूचकांक पंक्ति 1353मे कृन्दन कृमार कर्णक “हजल (बहुते)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2663 : विदेह-सदेह 16 — कृन्दन कृमार कर्ण: किछु बाल गजल

१०१०. खण्ड 2663, सूचकांक पंक्ति 1354: कृन्दन कृमार कर्णक “किछु बाल गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) किछु बाल गजल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०११. खण्ड 2663, सूचकांक पंक्ति 1354: कृन्दन कृमार कर्णक “किछु बाल गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०१२. खण्ड 2663, सूचकांक पंक्ति 1354: कृन्दन कृमार कर्णक “किछु बाल गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बाल गजल
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०१३. खण्ड 2663, सूचकांक पंक्ति 1354: कृन्दन कृमार कर्णक “किछु बाल गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बाल-मनोरंजन

१०१४. खण्ड 2663, सूचकांक पंक्ति 1354: कृन्दन कृमार कर्णक “किछु बाल गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बाल-मनोरंजन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०१५. खण्ड 2663, सूचकांक पंक्ति 1354: कृन्दन कृमार कर्णक “किछु बाल गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कृन्दन कृमार कर्ण, विधा पद्य, उप-विधा बाल गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०१६. खण्ड 2663, सूचकांक पंक्ति 1354: कृन्दन कृमार कर्णक “किछु बाल गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०१७. खण्ड 2663, सूचकांक पंक्ति 1354: कृन्दन कृमार कर्णक “किछु बाल गजल”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बाल गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०१८. खण्ड 2663, सूचकांक पंक्ति 1354: कृन्दन कृमार कर्णक “किछु बाल गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०१९. खण्ड 2663, सूचकांक पंक्ति 1354: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2663, सूचकांक पंक्ति 1354मे कृन्दन कृमार कर्णक “किछु बाल गजल” प्रविष्टि पद्य, बाल गजल आ “बाल-मनोरंजन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2664 : विदेह-सदेह 16 — कृन्दन कृमार कर्णः किछु गजल

१०२०. खण्ड 2664, सूचकांक पंक्ति 1355: कृन्दन कृमार कर्णक “किछु गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) किछु गजल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२१. खण्ड 2664, सूचकांक पंक्ति 1355: कृन्दन कृमार कर्णक “किछु गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२२. खण्ड 2664, सूचकांक पंक्ति 1355: कृन्दन कृमार कर्णक “किछु गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२३. खण्ड 2664, सूचकांक पंक्ति 1355: कृन्दन कृमार कर्णक “किछु गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) शृंगार

१०२४. खण्ड 2664, सूचकांक पंक्ति 1355: कृन्दन कृमार कर्णक “किछु गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) शृंगार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२५. खण्ड 2664, सूचकांक पंक्ति 1355: कृन्दन कृमार कर्णक “किछु गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कृन्दन कृमार कर्ण, विधा पद्य, उप-विधा गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२६. खण्ड 2664, सूचकांक पंक्ति 1355: कृन्दन कृमार कर्णक “किछु गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२७. खण्ड 2664, सूचकांक पंक्ति 1355: कृन्दन कृमार कर्णक “किछु गजल”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०२८. खण्ड 2664, सूचकांक पंक्ति 1355: कृन्दन कृमार कर्णक “किछु गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२९. खण्ड 2664, सूचकांक पंक्ति 1355: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2664, सूचकांक पंक्ति 1355मे कृन्दन कृमार कर्णक “किछु गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2665 : विदेह-सदेह 16 — बिनीत ठाकुर: जलवायु परिवर्तन

१०३०. खण्ड 2665, सूचकांक पंक्ति 1356: बिनीत ठाकुरक “जलवायु परिवर्तन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) जलवायु परिवर्तन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३१. खण्ड 2665, सूचकांक पंक्ति 1356: बिनीत ठाकुरक “जलवायु परिवर्तन”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३२. खण्ड 2665, सूचकांक पंक्ति 1356: बिनीत ठाकुरक “जलवायु परिवर्तन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३३. खण्ड 2665, सूचकांक पंक्ति 1356: बिनीत ठाकुरक “जलवायु परिवर्तन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पर्यावरण चेतना

१०३४. खण्ड 2665, सूचकांक पंक्ति 1356: बिनीत ठाकुरक “जलवायु परिवर्तन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पर्यावरण चेतना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३५. खण्ड 2665, सूचकांक पंक्ति 1356: बिनीत ठाकुरक “जलवायु परिवर्तन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक बिनीत ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३६. खण्ड 2665, सूचकांक पंक्ति 1356: बिनीत ठाकुरक “जलवायु परिवर्तन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३७. खण्ड 2665, सूचकांक पंक्ति 1356: बिनीत ठाकुरक “जलवायु परिवर्तन”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०३८. खण्ड 2665, सूचकांक पंक्ति 1356: बिनीत ठाकुरक “जलवायु परिवर्तन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३९. खण्ड 2665, सूचकांक पंक्ति 1356: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2665, सूचकांक पंक्ति 1356मे बिनीत ठाकुरक “जलवायु परिवर्तन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पर्यावरण चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2666 : विदेह-सदेह 16 — राम कुमार मिश्र: किछु रुबाइ

१०४०. खण्ड 2666, सूचकांक पंक्ति 1357: राम कुमार मिश्रक “किछु रुबाइ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) किछु रुबाइ
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४१. खण्ड 2666, सूचकांक पंक्ति 1357: राम कुमार मिश्रक “किछु रुबाइ”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४२. खण्ड 2666, सूचकांक पंक्ति 1357: राम कुमार मिश्रक “किछु रुबाइ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) रुबाइ
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४३. खण्ड 2666, सूचकांक पंक्ति 1357: राम कुमार मिश्रक “किछु रुबाइ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सामाजिक यथार्थ

१०४४. खण्ड 2666, सूचकांक पंक्ति 1357: राम कुमार मिश्रक “किछु रुबाइ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सामाजिक यथार्थ
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४५. खण्ड 2666, सूचकांक पंक्ति 1357: राम कुमार मिश्रक “किछु रुबाइ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक राम कुमार मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा रुबाइ
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४६. खण्ड 2666, सूचकांक पंक्ति 1357: राम कुमार मिश्रक “किछु रुबाइ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४७. खण्ड 2666, सूचकांक पंक्ति 1357: राम कुमार मिश्रक “किछु रुबाइ”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ रुबाइक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०४८. खण्ड 2666, सूचकांक पंक्ति 1357: राम कुमार मिश्रक “किछु रुबाइ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४९. खण्ड 2666, सूचकांक पंक्ति 1357: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2666, सूचकांक पंक्ति 1357मे राम कुमार मिश्रक “किछु रुबाइ” प्रविष्टि पद्य, रुबाइ आ “सामाजिक यथार्थ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2667 : विदेह-सदेह 16 — राम कुमार मिश्र: किछु गजल

१०५०. खण्ड 2667, सूचकांक पंक्ति 1358: राम कुमार मिश्रक “किछु गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) किछु गजल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५१. खण्ड 2667, सूचकांक पंक्ति 1358: राम कुमार मिश्रक “किछु गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५२. खण्ड 2667, सूचकांक पंक्ति 1358: राम कुमार मिश्रक “किछु गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५३. खण्ड 2667, सूचकांक पंक्ति 1358: राम कुमार मिश्रक “किछु गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सामाजिक

१०५४. खण्ड 2667, सूचकांक पंक्ति 1358: राम कुमार मिश्रक “किछु गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सामाजिक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५५. खण्ड 2667, सूचकांक पंक्ति 1358: राम कुमार मिश्रक “किछु गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक राम कुमार मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५६. खण्ड 2667, सूचकांक पंक्ति 1358: राम कुमार मिश्रक “किछु गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५७. खण्ड 2667, सूचकांक पंक्ति 1358: राम कुमार मिश्रक “किछु गजल”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०५८. खण्ड 2667, सूचकांक पंक्ति 1358: राम कुमार मिश्रक “किछु गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५९. खण्ड 2667, सूचकांक पंक्ति 1358: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2667, सूचकांक पंक्ति 1358मे राम कुमार मिश्रक “किछु गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “सामाजिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2668 : विदेह-सदेह 16 — सत्य नारायण झा: प्रियतम

१०६०. खण्ड 2668, सूचकांक पंक्ति 1359: सत्य नारायण झाक “प्रियतम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) प्रियतम
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६१. खण्ड 2668, सूचकांक पंक्ति 1359: सत्य नारायण झाक “प्रियतम”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६२. खण्ड 2668, सूचकांक पंक्ति 1359: सत्य नारायण झाक “प्रियतम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६३. खण्ड 2668, सूचकांक पंक्ति 1359: सत्य नारायण झाक “प्रियतम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रेम

१०६४. खण्ड 2668, सूचकांक पंक्ति 1359: सत्य नारायण झाक “प्रियतम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रेम
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६५. खण्ड 2668, सूचकांक पंक्ति 1359: सत्य नारायण झाक “प्रियतम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सत्य नारायण झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६६. खण्ड 2668, सूचकांक पंक्ति 1359: सत्य नारायण झाक “प्रियतम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६७. खण्ड 2668, सूचकांक पंक्ति 1359: सत्य नारायण झाक “प्रियतम”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०६८. खण्ड 2668, सूचकांक पंक्ति 1359: सत्य नारायण झाक “प्रियतम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६९. खण्ड 2668, सूचकांक पंक्ति 1359: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2668, सूचकांक पंक्ति 1359मे सत्य नारायण झाक “प्रियतम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2669 : विदेह-सदेह 16 — सत्य नारायण झा: व्यथित मोन

१०७०. खण्ड 2669, सूचकांक पंक्ति 1360: सत्य नारायण झाक “व्यथित मोन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) व्यथित मोन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७१. खण्ड 2669, सूचकांक पंक्ति 1360: सत्य नारायण झाक “व्यथित मोन”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७२. खण्ड 2669, सूचकांक पंक्ति 1360: सत्य नारायण झाक “व्यथित मोन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७३. खण्ड 2669, सूचकांक पंक्ति 1360: सत्य नारायण झाक “व्यथित मोन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) आन्तरिक वेदना

१०७४. खण्ड 2669, सूचकांक पंक्ति 1360: सत्य नारायण झाक “व्यथित मोन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) आन्तरिक वेदना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७५. खण्ड 2669, सूचकांक पंक्ति 1360: सत्य नारायण झाक “व्यथित मोन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सत्य नारायण झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७६. खण्ड 2669, सूचकांक पंक्ति 1360: सत्य नारायण झाक “व्यथित मोन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७७. खण्ड 2669, सूचकांक पंक्ति 1360: सत्य नारायण झाक “व्यथित मोन”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०७८. खण्ड 2669, सूचकांक पंक्ति 1360: सत्य नारायण झाक “व्यथित मोन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७९. खण्ड 2669, सूचकांक पंक्ति 1360: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2669, सूचकांक पंक्ति 1360मे सत्य नारायण झाक “व्यथित मोन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आन्तरिक वेदना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2670 : विदेह-सदेह 16 — सत्य नारायण झा: मोनक बात

१०८०. खण्ड 2670, सूचकांक पंक्ति 1361: सत्य नारायण झाक “मोनक बात” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मोनक बात
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०८१. खण्ड 2670, सूचकांक पंक्ति 1361: सत्य नारायण झाक “मोनक बात”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०८२. खण्ड 2670, सूचकांक पंक्ति 1361: सत्य नारायण झाक “मोनक बात”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०८३. खण्ड 2670, सूचकांक पंक्ति 1361: सत्य नारायण झाक “मोनक बात” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) दार्शनिक

१०८४. खण्ड 2670, सूचकांक पंक्ति 1361: सत्य नारायण झाक “मोनक बात” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) दार्शनिक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०८५. खण्ड 2670, सूचकांक पंक्ति 1361: सत्य नारायण झाक “मोनक बात”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सत्य नारायण झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०८६. खण्ड 2670, सूचकांक पंक्ति 1361: सत्य नारायण झाक “मोनक बात” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०८७. खण्ड 2670, सूचकांक पंक्ति 1361: सत्य नारायण झाक “मोनक बात”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०८८. खण्ड 2670, सूचकांक पंक्ति 1361: सत्य नारायण झाक “मोनक बात” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०८९. खण्ड 2670, सूचकांक पंक्ति 1361: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2670, सूचकांक पंक्ति 1361मे सत्य नारायण झाक “मोनक बात” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दार्शनिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2671 : विदेह-सदेह 16 — श्याम शेखर झा: साजन

१०९०. खण्ड 2671, सूचकांक पंक्ति 1362: श्याम शेखर झाक “साजन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) साजन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०९१. खण्ड 2671, सूचकांक पंक्ति 1362: श्याम शेखर झाक “साजन”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०९२. खण्ड 2671, सूचकांक पंक्ति 1362: श्याम शेखर झाक “साजन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता/गीत
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०९३. खण्ड 2671, सूचकांक पंक्ति 1362: श्याम शेखर झाक “साजन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रकृति

१०९४. खण्ड 2671, सूचकांक पंक्ति 1362: श्याम शेखर झाक “साजन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रकृति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०९५. खण्ड 2671, सूचकांक पंक्ति 1362: श्याम शेखर झाक “साजन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक श्याम शेखर झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता/गीत
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०९६. खण्ड 2671, सूचकांक पंक्ति 1362: श्याम शेखर झाक “साजन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०९७. खण्ड 2671, सूचकांक पंक्ति 1362: श्याम शेखर झाक “साजन”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविता/गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०९८. खण्ड 2671, सूचकांक पंक्ति 1362: श्याम शेखर झाक “साजन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०९९. खण्ड 2671, सूचकांक पंक्ति 1362: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2671, सूचकांक पंक्ति 1362मे श्याम शेखर झाक “साजन” प्रविष्टि पद्य, कविता/गीत आ “प्रकृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2672 : विदेह-सदेह 16 — पंकज चौधरी 'नवलश्री': जुनि बिसरू

११००. खण्ड 2672, सूचकांक पंक्ति 1363: पंकज चौधरी 'नवलश्री'क “जुनि बिसरू” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) जुनि बिसरू
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११०१. खण्ड 2672, सूचकांक पंक्ति 1363: पंकज चौधरी 'नवलश्री'क “जुनि बिसरू”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११०२. खण्ड 2672, सूचकांक पंक्ति 1363: पंकज चौधरी 'नवलश्री'क “जुनि बिसरू”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११०३. खण्ड 2672, सूचकांक पंक्ति 1363: पंकज चौधरी 'नवलश्री'क “जुनि बिसरू” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ग्रामीण जीवन

११०४. खण्ड 2672, सूचकांक पंक्ति 1363: पंकज चौधरी 'नवलश्री'क “जुनि बिसरू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ग्रामीण जीवन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११०५. खण्ड 2672, सूचकांक पंक्ति 1363: पंकज चौधरी 'नवलश्री'क “जुनि बिसरू”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक पंकज चौधरी 'नवलश्री', विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११०६. खण्ड 2672, सूचकांक पंक्ति 1363: पंकज चौधरी 'नवलश्री'क “जुनि बिसरू” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११०७. खण्ड 2672, सूचकांक पंक्ति 1363: पंकज चौधरी 'नवलश्री'क “जुनि बिसरू”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११०८. खण्ड 2672, सूचकांक पंक्ति 1363: पंकज चौधरी 'नवलश्री'क “जुनि बिसरू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११०९. खण्ड 2672, सूचकांक पंक्ति 1363: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2672, सूचकांक पंक्ति 1363मे पंकज चौधरी 'नवलश्री'क “जुनि बिसरू” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ग्रामीण जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2673 : विदेह-सदेह 16 — अमित मिश्र: किष्ठ गजल (बहुते)

१११०. खण्ड 2673, सूचकांक पंक्ति 1364: अमित मिश्रक “किष्ठ गजल (बहुते)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) किष्ठ गजल (बहुते)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११११. खण्ड 2673, सूचकांक पंक्ति 1364: अमित मिश्रक “किष्ठ गजल (बहुते)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१११२. खण्ड 2673, सूचकांक पंक्ति 1364: अमित मिश्रक “किष्ठ गजल (बहुते)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१११३. खण्ड 2673, सूचकांक पंक्ति 1364: अमित मिश्रक “किष्ठ गजल (बहुते)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) शृंगार

१११४. खण्ड 2673, सूचकांक पंक्ति 1364: अमित मिश्रक “किष्ठ गजल (बहुते)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) शृंगार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१११५. खण्ड 2673, सूचकांक पंक्ति 1364: अमित मिश्रक “किष्ठ गजल (बहुते)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अमित मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१११६. खण्ड 2673, सूचकांक पंक्ति 1364: अमित मिश्रक “किष्ठ गजल (बहुते)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१११७. खण्ड 2673, सूचकांक पंक्ति 1364: अमित मिश्रक “किष्ठ गजल (बहुते)”कँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१११८. खण्ड 2673, सूचकांक पंक्ति 1364: अमित मिश्रक “किष्ठ गजल (बहुते)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१११९. खण्ड 2673, सूचकांक पंक्ति 1364: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2673, सूचकांक पंक्ति 1364मे अमित मिश्रक “किष्ठ गजल (बहुते)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2674 : विदेह-सदेह 16 — कंचन कुमारी झा: मंजिल

११२०. खण्ड 2674, सूचकांक पंक्ति 1365: कंचन कुमारी झाक “मंजिल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मंजिल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११२१. खण्ड 2674, सूचकांक पंक्ति 1365: कंचन कुमारी झाक “मंजिल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११२२. खण्ड 2674, सूचकांक पंक्ति 1365: कंचन कुमारी झाक “मंजिल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११२३. खण्ड 2674, सूचकांक पंक्ति 1365: कंचन कुमारी झाक “मंजिल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रेरणादायी

११२४. खण्ड 2674, सूचकांक पंक्ति 1365: कंचन कुमारी झाक “मंजिल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रेरणादायी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११२५. खण्ड 2674, सूचकांक पंक्ति 1365: कंचन कुमारी झाक “मंजिल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कंचन कुमारी झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११२६. खण्ड 2674, सूचकांक पंक्ति 1365: कंचन कुमारी झाक “मंजिल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११२७. खण्ड 2674, सूचकांक पंक्ति 1365: कंचन कुमारी झाक “मंजिल”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११२८. खण्ड 2674, सूचकांक पंक्ति 1365: कंचन कुमारी झाक “मंजिल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११२९. खण्ड 2674, सूचकांक पंक्ति 1365: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2674, सूचकांक पंक्ति 1365मे कंचन कुमारी झाक “मंजिल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेरणादायी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2675 : विदेह-सदेह 16 — संजय झा: हे माय तोरा प्रणाम

११३०. खण्ड 2675, सूचकांक पंक्ति 1366: संजय झाक “हे माय तोरा प्रणाम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) हे माय तोरा प्रणाम
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११३१. खण्ड 2675, सूचकांक पंक्ति 1366: संजय झाक “हे माय तोरा प्रणाम”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११३२. खण्ड 2675, सूचकांक पंक्ति 1366: संजय झाक “हे माय तोरा प्रणाम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११३३. खण्ड 2675, सूचकांक पंक्ति 1366: संजय झाक “हे माय तोरा प्रणाम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मातृ-वन्दना

११३४. खण्ड 2675, सूचकांक पंक्ति 1366: संजय झाक “हे माय तोरा प्रणाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मातृ-वन्दना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११३५. खण्ड 2675, सूचकांक पंक्ति 1366: संजय झाक “हे माय तोरा प्रणाम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक संजय झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११३६. खण्ड 2675, सूचकांक पंक्ति 1366: संजय झाक “हे माय तोरा प्रणाम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११३७. खण्ड 2675, सूचकांक पंक्ति 1366: संजय झाक “हे माय तोरा प्रणाम”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११३८. खण्ड 2675, सूचकांक पंक्ति 1366: संजय झाक “हे माय तोरा प्रणाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११३९. खण्ड 2675, सूचकांक पंक्ति 1366: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2675, सूचकांक पंक्ति 1366मे संजय झाक “हे माय तोरा प्रणाम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मातृ-वन्दना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2676 : विदेह-सदेह 16 — शारदा नन्द सिंह: नमरीक भाउ तेहेन ने दरकल

११४०. खण्ड 2676, सूचकांक पंक्ति 1367: शारदा नन्द सिंहक “नमरीक भाउ तेहेन ने दरकल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) नमरीक भाउ तेहेन ने दरकल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११४१. खण्ड 2676, सूचकांक पंक्ति 1367: शारदा नन्द सिंहक “नमरीक भाउ तेहेन ने दरकल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११४२. खण्ड 2676, सूचकांक पंक्ति 1367: शारदा नन्द सिंहक “नमरीक भाउ तेहेन ने दरकल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११४३. खण्ड 2676, सूचकांक पंक्ति 1367: शारदा नन्द सिंहक “नमरीक भाउ तेहेन ने दरकल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) राजनीतिक व्यंग्य

११४४. खण्ड 2676, सूचकांक पंक्ति 1367: शारदा नन्द सिंहक “नमरीक भाउ तेहेन ने दरकल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) राजनीतिक व्यंग्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११४५. खण्ड 2676, सूचकांक पंक्ति 1367: शारदा नन्द सिंहक “नमरीक भाउ तेहेन ने दरकल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शारदा नन्द सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११४६. खण्ड 2676, सूचकांक पंक्ति 1367: शारदा नन्द सिंहक “नमरीक भाउ तेहेन ने दरकल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११४७. खण्ड 2676, सूचकांक पंक्ति 1367: शारदा नन्द सिंहक “नमरीक भाउ तेहेन ने दरकल”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११४८. खण्ड 2676, सूचकांक पंक्ति 1367: शारदा नन्द सिंहक “नमरीक भाउ तेहेन ने दरकल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११४९. खण्ड 2676, सूचकांक पंक्ति 1367: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2676, सूचकांक पंक्ति 1367मे शारदा नन्द सिंहक “नमरीक भाउ तेहेन ने दरकल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “राजनीतिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2677 : विदेह-सदेह 16 — शारदा नन्द सिंह: अयोग्य शासक

११५०. खण्ड 2677, सूचकांक पंक्ति 1368: शारदा नन्द सिंहक “अयोग्य शासक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अयोग्य शासक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११५१. खण्ड 2677, सूचकांक पंक्ति 1368: शारदा नन्द सिंहक “अयोग्य शासक”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११५२. खण्ड 2677, सूचकांक पंक्ति 1368: शारदा नन्द सिंहक “अयोग्य शासक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११५३. खण्ड 2677, सूचकांक पंक्ति 1368: शारदा नन्द सिंहक “अयोग्य शासक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) राजनीतिक व्यंग्य

११५४. खण्ड 2677, सूचकांक पंक्ति 1368: शारदा नन्द सिंहक “अयोग्य शासक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) राजनीतिक व्यंग्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११५५. खण्ड 2677, सूचकांक पंक्ति 1368: शारदा नन्द सिंहक “अयोग्य शासक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शारदा नन्द सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११५६. खण्ड 2677, सूचकांक पंक्ति 1368: शारदा नन्द सिंहक “अयोग्य शासक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११५७. खण्ड 2677, सूचकांक पंक्ति 1368: शारदा नन्द सिंहक “अयोग्य शासक”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११५८. खण्ड 2677, सूचकांक पंक्ति 1368: शारदा नन्द सिंहक “अयोग्य शासक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११५९. खण्ड 2677, सूचकांक पंक्ति 1368: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2677, सूचकांक पंक्ति 1368मे शारदा नन्द सिंहक “अयोग्य शासक” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “राजनीतिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2678 : विदेह-सदेह 16 — शारदा नन्द सिंह: चिरकि जाएब

११६०. खण्ड 2678, सूचकांक पंक्ति 1369: शारदा नन्द सिंहक “चिरकि जाएब” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) चिरकि जाएब
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११६१. खण्ड 2678, सूचकांक पंक्ति 1369: शारदा नन्द सिंहक “चिरकि जाएब”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११६२. खण्ड 2678, सूचकांक पंक्ति 1369: शारदा नन्द सिंहक “चिरकि जाएब”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११६३. खण्ड 2678, सूचकांक पंक्ति 1369: शारदा नन्द सिंहक “चिरकि जाएब” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) जीवन-क्षणभंगुरता

११६४. खण्ड 2678, सूचकांक पंक्ति 1369: शारदा नन्द सिंहक “चिरकि जाएब” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) जीवन-क्षणभंगुरता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११६५. खण्ड 2678, सूचकांक पंक्ति 1369: शारदा नन्द सिंहक “चिरकि जाएब”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शारदा नन्द सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११६६. खण्ड 2678, सूचकांक पंक्ति 1369: शारदा नन्द सिंहक “चिरकि जाएब” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११६७. खण्ड 2678, सूचकांक पंक्ति 1369: शारदा नन्द सिंहक “चिरकि जाएब”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११६८. खण्ड 2678, सूचकांक पंक्ति 1369: शारदा नन्द सिंहक “चिरकि जाएब” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११६१. खण्ड 2678, सूचकांक पंक्ति 1369: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2678, सूचकांक पंक्ति 1369मे शारदा नन्द सिंहक “चिरकि जाएब” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जीवन-क्षणभंगुरता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2679 : विदेह-सदेह 16 — शारदा नन्द सिंह: भूमिजा भैया

११७०. खण्ड 2679, सूचकांक पंक्ति 1370: शारदा नन्द सिंहक “भूमिजा भैया” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) भूमिजा भैया
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११७१. खण्ड 2679, सूचकांक पंक्ति 1370: शारदा नन्द सिंहक “भूमिजा भैया”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११७२. खण्ड 2679, सूचकांक पंक्ति 1370: शारदा नन्द सिंहक “भूमिजा भैया”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११७३. खण्ड 2679, सूचकांक पंक्ति 1370: शारदा नन्द सिंहक “भूमिजा भैया” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सामाजिक सम्बन्ध

११७४. खण्ड 2679, सूचकांक पंक्ति 1370: शारदा नन्द सिंहक “भूमिजा भैया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सामाजिक सम्बन्ध
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११७५. खण्ड 2679, सूचकांक पंक्ति 1370: शारदा नन्द सिंहक “भूमिजा भैया”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शारदा नन्द सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११७६. खण्ड 2679, सूचकांक पंक्ति 1370: शारदा नन्द सिंहक “भूमिजा भैया” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११७७. खण्ड 2679, सूचकांक पंक्ति 1370: शारदा नन्द सिंहक “भूमिजा भैया”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११७८. खण्ड 2679, सूचकांक पंक्ति 1370: शारदा नन्द सिंहक “भूमिजा भैया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११७९. खण्ड 2679, सूचकांक पंक्ति 1370: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2679, सूचकांक पंक्ति 1370मे शारदा नन्द सिंहक “भूमिजा भैया” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2680 : विदेह-सदेह 16 — अरुण चन्द्र राय: अर्थशास्त्र

११८०. खण्ड 2680, सूचकांक पंक्ति 1371: अरुण चन्द्र रायक “अर्थशास्त्र” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अर्थशास्त्र
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११८१. खण्ड 2680, सूचकांक पंक्ति 1371: अरुण चन्द्र रायक “अर्थशास्त्र”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११८२. खण्ड 2680, सूचकांक पंक्ति 1371: अरुण चन्द्र रायक “अर्थशास्त्र”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११८३. खण्ड 2680, सूचकांक पंक्ति 1371: अरुण चन्द्र रायक “अर्थशास्त्र” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) आर्थिक विडम्बना

११८४. खण्ड 2680, सूचकांक पंक्ति 1371: अरुण चन्द्र रायक “अर्थशास्त्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) आर्थिक विडम्बना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११८५. खण्ड 2680, सूचकांक पंक्ति 1371: अरुण चन्द्र रायक “अर्थशास्त्र”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अरुण चन्द्र राय, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११८६. खण्ड 2680, सूचकांक पंक्ति 1371: अरुण चन्द्र रायक “अर्थशास्त्र” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११८७. खण्ड 2680, सूचकांक पंक्ति 1371: अरुण चन्द्र रायक “अर्थशास्त्र”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११८८. खण्ड 2680, सूचकांक पंक्ति 1371: अरुण चन्द्र रायक “अर्थशास्त्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११८९. खण्ड 2680, सूचकांक पंक्ति 1371: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2680, सूचकांक पंक्ति 1371मे अरुण चन्द्र रायक “अर्थशास्त्र” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आर्थिक विडम्बना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2681 : विदेह-सदेह 16 — इरा मलिलक: संग अहाँक पाबि

११९०. खण्ड 2681, सूचकांक पंक्ति 1372: इरा मलिलकक “संग अहाँक पाबि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) संग अहाँक पाबि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११९१. खण्ड 2681, सूचकांक पंक्ति 1372: इरा मलिलकक “संग अहाँक पाबि”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११९२. खण्ड 2681, सूचकांक पंक्ति 1372: इरा मलिलकक “संग अहाँक पाबि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११९३. खण्ड 2681, सूचकांक पंक्ति 1372: इरा मलिलकक “संग अहाँक पाबि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रेम

११९४. खण्ड 2681, सूचकांक पंक्ति 1372: इरा मलिलकक “संग अहाँक पाबि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रेम
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११९५. खण्ड 2681, सूचकांक पंक्ति 1372: इरा मलिलकक “संग अहाँक पाबि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक इरा मलिलक, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११९६. खण्ड 2681, सूचकांक पंक्ति 1372: इरा मलिलकक “संग अहाँक पाबि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११९७. खण्ड 2681, सूचकांक पंक्ति 1372: इरा मलिलकक “संग अहाँक पाबि”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११९८. खण्ड 2681, सूचकांक पंक्ति 1372: इरा मलिलकक “संग अहाँक पाबि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११९९. खण्ड 2681, सूचकांक पंक्ति 1372: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2681, सूचकांक पंक्ति 1372मे इरा मलिलकक “संग अहाँक पाबि” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2682 : विदेह-सदेह 16 — इरा मलिलक: किष्ठ गजल

१२००. खण्ड 2682, सूचकांक पंक्ति 1373: इरा मलिलकक “किष्ठ गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) किष्ठ गजल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२०१. खण्ड 2682, सूचकांक पंक्ति 1373: इरा मलिलकक “किष्ठ गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२०२. खण्ड 2682, सूचकांक पंक्ति 1373: इरा मलिलकक “किष्ठ गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२०३. खण्ड 2682, सूचकांक पंक्ति 1373: इरा मलिलकक “किष्ठ गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) शृंगार

१२०४. खण्ड 2682, सूचकांक पंक्ति 1373: इरा मलिलकक “किष्ठ गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) शृंगार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२०५. खण्ड 2682, सूचकांक पंक्ति 1373: इरा मलिलकक “किष्ठ गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक इरा मलिलक, विधा पद्य, उप-विधा गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२०६. खण्ड 2682, सूचकांक पंक्ति 1373: इरा मलिलकक “किष्ठ गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२०७. खण्ड 2682, सूचकांक पंक्ति 1373: इरा मलिलकक “किष्ठ गजल”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२०८. खण्ड 2682, सूचकांक पंक्ति 1373: इरा मलिलकक “किष्ठ गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२०९. खण्ड 2682, सूचकांक पंक्ति 1373: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2682, सूचकांक पंक्ति 1373मे इरा मलिलकक “किष्ठ गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2683 : विदेह-सदेह 16 — इरा मलिलक: गीत (श्रुनार)

१२१०. खण्ड 2683, सूचकांक पंक्ति 1374: इरा मलिलकक “गीत (श्रुनार)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गीत (श्रुनार)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२११. खण्ड 2683, सूचकांक पंक्ति 1374: इरा मलिलकक “गीत (श्रुनार)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२१२. खण्ड 2683, सूचकांक पंक्ति 1374: इरा मलिलकक “गीत (श्रुनार)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गीत
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२१३. खण्ड 2683, सूचकांक पंक्ति 1374: इरा मलिलकक “गीत (श्रुनार)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) शृंगार

१२१४. खण्ड 2683, सूचकांक पंक्ति 1374: इरा मलिलकक “गीत (श्रुनार)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) शृंगार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२१५. खण्ड 2683, सूचकांक पंक्ति 1374: इरा मलिलकक “गीत (श्रुनार)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक इरा मलिलक, विधा पद्य, उप-विधा गीत
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२१६. खण्ड 2683, सूचकांक पंक्ति 1374: इरा मलिलकक “गीत (श्रुनार)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२१७. खण्ड 2683, सूचकांक पंक्ति 1374: इरा मलिलकक “गीत (शुनार)” के विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२१८. खण्ड 2683, सूचकांक पंक्ति 1374: इरा मलिलकक “गीत (शुनार)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२१९. खण्ड 2683, सूचकांक पंक्ति 1374: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2683, सूचकांक पंक्ति 1374मे इरा मलिलकक “गीत (शुनार)” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2684 : विदेह-सदेह 16 — इरा मलिलक: सूर्जक पहिल किरण

१२२०. खण्ड 2684, सूचकांक पंक्ति 1375: इरा मलिलकक “सूर्जक पहिल किरण” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सूर्जक पहिल किरण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२२१. खण्ड 2684, सूचकांक पंक्ति 1375: इरा मलिलकक “सूर्जक पहिल किरण”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२२२. खण्ड 2684, सूचकांक पंक्ति 1375: इरा मलिलकक “सूर्जक पहिल किरण”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२२३. खण्ड 2684, सूचकांक पंक्ति 1375: इरा मलिलकक “सूर्जक पहिल किरण” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रेम

१२२४. खण्ड 2684, सूचकांक पंक्ति 1375: इरा मलिलकक “सूर्जक पहिल किरण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रेम
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२२५. खण्ड 2684, सूचकांक पंक्ति 1375: इरा मलिलकक “सूर्जक पहिल किरण”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठकर्के की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक इरा मलिलक, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२२६. खण्ड 2684, सूचकांक पंक्ति 1375: इरा मलिलकक “सूर्जक पहिल किरण” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२२७. खण्ड 2684, सूचकांक पंक्ति 1375: इरा मलिलकक “सूर्जक पहिल किरण”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२२८. खण्ड 2684, सूचकांक पंक्ति 1375: इरा मलिलकक “सूर्जक पहिल किरण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२२९. खण्ड 2684, सूचकांक पंक्ति 1375: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2684, सूचकांक पंक्ति 1375मे इरा मलिलकक “सूर्जक पहिल किरण” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2685 : विदेह-सदेह 16 — सुरेन्द्र शैल: पोसुआ कूकूर

१२३०. खण्ड 2685, सूचकांक पंक्ति 1376: सुरेन्द्र शैलक “पोसुआ कूकूर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) पोसुआ कूकूर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२३१. खण्ड 2685, सूचकांक पंक्ति 1376: सुरेन्द्र शैलक “पोसुआ कूकूर”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२३२. खण्ड 2685, सूचकांक पंक्ति 1376: सुरेन्द्र शैलक “पोसुआ कूकूर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२३३. खण्ड 2685, सूचकांक पंक्ति 1376: सुरेन्द्र शैलक “पोसुआ कूकूर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) व्यंग्य

१२३४. खण्ड 2685, सूचकांक पंक्ति 1376: सुरेन्द्र शैलक “पोसुआ कूकूर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) व्यंग्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२३५. खण्ड 2685, सूचकांक पंक्ति 1376: सुरेन्द्र शैलक “पोसुआ कूकूर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुरेन्द्र शैल, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२३६. खण्ड 2685, सूचकांक पंक्ति 1376: सुरेन्द्र शैलक “पोसुआ कूकूर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२३७. खण्ड 2685, सूचकांक पंक्ति 1376: सुरेन्द्र शैलक “पोसुआ कूकूर”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२३८. खण्ड 2685, सूचकांक पंक्ति 1376: सुरेन्द्र शैलक “पोसुआ कूकूर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२३९. खण्ड 2685, सूचकांक पंक्ति 1376: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2685, सूचकांक पंक्ति 1376मे सुरेन्द्र शैलक “पोसुआ कूकूर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2686 : विदेह-सदेह 16 — रसिक लाल सदायः दीनक दुदंशा

१२४०. खण्ड 2686, सूचकांक पंक्ति 1377: रसिक लाल सदायक “दीनक दुदंशा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) दीनक दुदंशा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२४१. खण्ड 2686, सूचकांक पंक्ति 1377: रसिक लाल सदायक “दीनक दुदंशा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२४२. खण्ड 2686, सूचकांक पंक्ति 1377: रसिक लाल सदायक “दीनक दुदंशा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२४३. खण्ड 2686, सूचकांक पंक्ति 1377: रसिक लाल सदायक “दीनक दुदंशा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सामाजिक

१२४४. खण्ड 2686, सूचकांक पंक्ति 1377: रसिक लाल सदायक “दीनक दुदंशा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सामाजिक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२४५. खण्ड 2686, सूचकांक पंक्ति 1377: रसिक लाल सदायक “दीनक दुदंशा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रसिक लाल सदाय, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२४६. खण्ड 2686, सूचकांक पंक्ति 1377: रसिक लाल सदायक “दीनक दुदंशा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२४७. खण्ड 2686, सूचकांक पंक्ति 1377: रसिक लाल सदायक “दीनक दुदंशा”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२४८. खण्ड 2686, सूचकांक पंक्ति 1377: रसिक लाल सदायक “दीनक दुदंशा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२४९. खण्ड 2686, सूचकांक पंक्ति 1377: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2686, सूचकांक पंक्ति 1377मे रसिक लाल सदायक “दीनक दुदंशा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2687 : विदेह-सदेह 16 — रसिक लाल सदाय: अनुभव

१२५०. खण्ड 2687, सूचकांक पंक्ति 1378: रसिक लाल सदायक “अनुभव” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अनुभव
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२५१. खण्ड 2687, सूचकांक पंक्ति 1378: रसिक लाल सदायक “अनुभव”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२५२. खण्ड 2687, सूचकांक पंक्ति 1378: रसिक लाल सदायक “अनुभव”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२५३. खण्ड 2687, सूचकांक पंक्ति 1378: रसिक लाल सदायक “अनुभव” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) जीवन-अनुभव

१२५४. खण्ड 2687, सूचकांक पंक्ति 1378: रसिक लाल सदायक “अनुभव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) जीवन-अनुभव
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२५५. खण्ड 2687, सूचकांक पंक्ति 1378: रसिक लाल सदायक “अनुभव”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रसिक लाल सदाय, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२५६. खण्ड 2687, सूचकांक पंक्ति 1378: रसिक लाल सदायक “अनुभव” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२५७. खण्ड 2687, सूचकांक पंक्ति 1378: रसिक लाल सदायक “अनुभव”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२५८. खण्ड 2687, सूचकांक पंक्ति 1378: रसिक लाल सदायक “अनुभव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२५९. खण्ड 2687, सूचकांक पंक्ति 1378: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2687, सूचकांक पंक्ति 1378मे रसिक लाल सदायक “अनुभव” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जीवन-अनुभव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2688 : विदेह-सदेह 16 — रसिक लाल सदायक: स्कूल गीत

१२६०. खण्ड 2688, सूचकांक पंक्ति 1379: रसिक लाल सदायक “स्कूल गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) स्कूल गीत
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२६१. खण्ड 2688, सूचकांक पंक्ति 1379: रसिक लाल सदायक “स्कूल गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२६२. खण्ड 2688, सूचकांक पंक्ति 1379: रसिक लाल सदायक “स्कूल गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गीत
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२६३. खण्ड 2688, सूचकांक पंक्ति 1379: रसिक लाल सदायक “स्कूल गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) शिक्षा

१२६४. खण्ड 2688, सूचकांक पंक्ति 1379: रसिक लाल सदायक “स्कूल गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) शिक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२६५. खण्ड 2688, सूचकांक पंक्ति 1379: रसिक लाल सदायक “स्कूल गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रसिक लाल सदाय, विधा पद्य, उप-विधा गीत
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२६६. खण्ड 2688, सूचकांक पंक्ति 1379: रसिक लाल सदायक “स्कूल गीत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२६७. खण्ड 2688, सूचकांक पंक्ति 1379: रसिक लाल सदायक “स्कूल गीत”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२६८. खण्ड 2688, सूचकांक पंक्ति 1379: रसिक लाल सदायक “स्कूल गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२६९. खण्ड 2688, सूचकांक पंक्ति 1379: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2688, सूचकांक पंक्ति 1379मे रसिक लाल सदायक “स्कूल गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “शिक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2689 : विदेह-सदेह 16 — महेश झा 'डखरामी': सपना

१२७०. खण्ड 2689, सूचकांक पंक्ति 1380: महेश झा 'डखरामी'क “सपना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सपना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२७१. खण्ड 2689, सूचकांक पंक्ति 1380: महेश झा 'डखरामी'क “सपना”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२७२. खण्ड 2689, सूचकांक पंक्ति 1380: महेश झा 'डखरामी'क “सपना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२७३. खण्ड 2689, सूचकांक पंक्ति 1380: महेश झा 'डखरामी'क “सपना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) शृंगार

१२७४. खण्ड 2689, सूचकांक पंक्ति 1380: महेश झा 'डखरामी'क “सपना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) शृंगार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२७५. खण्ड 2689, सूचकांक पंक्ति 1380: महेश झा 'डखरामी'क “सपना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक महेश झा 'डखरामी', विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२७६. खण्ड 2689, सूचकांक पंक्ति 1380: महेश झा 'डखरामी'क “सपना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२७७. खण्ड 2689, सूचकांक पंक्ति 1380: महेश झा 'डखरामी'क “सपना”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२७८. खण्ड 2689, सूचकांक पंक्ति 1380: महेश झा 'डखरामी'क “सपना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२७९. खण्ड 2689, सूचकांक पंक्ति 1380: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2689, सूचकांक पंक्ति 1380मे महेश झा 'डखरामी'क “सपना” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2690 : विदेह-सदेह 16 — महेश झा 'डखरामी': उनटा बसात

१२८०. खण्ड 2690, सूचकांक पंक्ति 1381: महेश झा 'डखरामी'क “उनटा बसात” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) उनटा बसात
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२८१. खण्ड 2690, सूचकांक पंक्ति 1381: महेश झा 'डखरामी'क “उनटा बसात”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२८२. खण्ड 2690, सूचकांक पंक्ति 1381: महेश झा 'डखरामी'क “उनटा बसात”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२८३. खण्ड 2690, सूचकांक पंक्ति 1381: महेश झा 'डखरामी'क “उनटा बसात” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सामाजिक व्यंग्य

१२८४. खण्ड 2690, सूचकांक पंक्ति 1381: महेश झा 'डखरामी'क “उनटा बसात” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सामाजिक व्यंग्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२८५. खण्ड 2690, सूचकांक पंक्ति 1381: महेश झा 'डखरामी'क “उनटा बसात”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक महेश झा 'डखरामी', विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२८६. खण्ड 2690, सूचकांक पंक्ति 1381: महेश झा 'डखरामी'क “उनटा बसात” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२८७. खण्ड 2690, सूचकांक पंक्ति 1381: महेश झा 'डखरामी'क “उनटा बसात”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२८८. खण्ड 2690, सूचकांक पंक्ति 1381: महेश झा 'डखरामी'क “उनटा बसात” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२८९. खण्ड 2690, सूचकांक पंक्ति 1381: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2690, सूचकांक पंक्ति 1381मे महेश झा 'डखरामी'क “उनटा बसात” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2691 : विदेह-सदेह 16 — महेश झा 'डखरामी': अनुराग

१२९०. खण्ड 2691, सूचकांक पंक्ति 1382: महेश झा 'डखरामी'क “अनुराग” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अनुराग
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२९१. खण्ड 2691, सूचकांक पंक्ति 1382: महेश झा 'डखरामी'क “अनुराग”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२९२. खण्ड 2691, सूचकांक पंक्ति 1382: महेश झा 'डखरामी'क “अनुराग”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२९३. खण्ड 2691, सूचकांक पंक्ति 1382: महेश झा 'डखरामी'क “अनुराग” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रेम

१२९४. खण्ड 2691, सूचकांक पंक्ति 1382: महेश झा 'डखरामी'क “अनुराग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रेम
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२९५. खण्ड 2691, सूचकांक पंक्ति 1382: महेश झा 'डखरामी'क “अनुराग”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक महेश झा 'डखरामी', विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२९६. खण्ड 2691, सूचकांक पंक्ति 1382: महेश झा 'डखरामी'क “अनुराग” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२९७. खण्ड 2691, सूचकांक पंक्ति 1382: महेश झा 'डखरामी'क “अनुराग”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२९८. खण्ड 2691, सूचकांक पंक्ति 1382: महेश झा 'डखरामी'क “अनुराग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२९९. खण्ड 2691, सूचकांक पंक्ति 1382: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2691, सूचकांक पंक्ति 1382मे महेश झा 'डखरामी'क “अनुराग” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2692 : विदेह-सदेह 16 — महेश झा 'डखरामी': राधे श्याम

१३००. खण्ड 2692, सूचकांक पंक्ति 1383: महेश झा 'डखरामी'क “राधे श्याम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) राधे श्याम
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३०१. खण्ड 2692, सूचकांक पंक्ति 1383: महेश झा 'डखरामी'क “राधे श्याम”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३०२. खण्ड 2692, सूचकांक पंक्ति 1383: महेश झा 'डखरामी'क “राधे श्याम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) भजन
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३०३. खण्ड 2692, सूचकांक पंक्ति 1383: महेश झा 'डखरामी'क “राधे श्याम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भक्ति

१३०४. खण्ड 2692, सूचकांक पंक्ति 1383: महेश झा 'डखरामी'क “राधे श्याम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भक्ति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३०५. खण्ड 2692, सूचकांक पंक्ति 1383: महेश झा 'डखरामी'क “राधे श्याम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक महेश झा 'डखरामी', विधा पद्य, उप-विधा भजन
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३०६. खण्ड 2692, सूचकांक पंक्ति 1383: महेश झा 'डखरामी'क “राधे श्याम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३०७. खण्ड 2692, सूचकांक पंक्ति 1383: महेश झा 'डखरामी'क “राधे श्याम”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ भजनक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३०८. खण्ड 2692, सूचकांक पंक्ति 1383: महेश झा 'डखरामी'क “राधे श्याम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३०९. खण्ड 2692, सूचकांक पंक्ति 1383: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2692, सूचकांक पंक्ति 1383मे महेश झा 'डखरामी'क “राधे श्याम” प्रविष्टि पद्य, भजन आ “भक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2693 : विदेह-सदेह 16 — महेश झा 'डखरामी': बेटी

१३१०. खण्ड 2693, सूचकांक पंक्ति 1384: महेश झा 'डखरामी'क “बेटी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बेटी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३११. खण्ड 2693, सूचकांक पंक्ति 1384: महेश झा 'डखरामी'क “बेटी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३१२. खण्ड 2693, सूचकांक पंक्ति 1384: महेश झा 'डखरामी'क “बेटी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३१३. खण्ड 2693, सूचकांक पंक्ति 1384: महेश झा 'डखरामी'क “बेटी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नारी-जीवन

१३१४. खण्ड 2693, सूचकांक पंक्ति 1384: महेश झा 'डखरामी'क “बेटी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नारी-जीवन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३१५. खण्ड 2693, सूचकांक पंक्ति 1384: महेश झा 'डखरामी'क “बेटी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक महेश झा 'डखरामी', विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३१६. खण्ड 2693, सूचकांक पंक्ति 1384: महेश झा 'डखरामी'क “बेटी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३१७. खण्ड 2693, सूचकांक पंक्ति 1384: महेश झा 'डखरामी'क “बेटी”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३१८. खण्ड 2693, सूचकांक पंक्ति 1384: महेश झा 'डखरामी'क “बेटी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३१९. खण्ड 2693, सूचकांक पंक्ति 1384: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2693, सूचकांक पंक्ति 1384मे महेश झा 'डखरामी'क “बेटी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी-जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2694 : विदेह-सदेह 16 — महेश झा 'डखरामी': मनोदगार

१३२०. खण्ड 2694, सूचकांक पंक्ति 1385: महेश झा 'डखरामी'क “मनोदगार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मनोदगार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३२१. खण्ड 2694, सूचकांक पंक्ति 1385: महेश झा 'डखरामी'क “मनोदगार”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३२२. खण्ड 2694, सूचकांक पंक्ति 1385: महेश झा 'डखरामी'क “मनोदगार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३२३. खण्ड 2694, सूचकांक पंक्ति 1385: महेश झा 'डखरामी'क “मनोदगार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रेम

१३२४. खण्ड 2694, सूचकांक पंक्ति 1385: महेश झा 'डखरामी'क “मनोदगार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रेम
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३२५. खण्ड 2694, सूचकांक पंक्ति 1385: महेश झा 'डखरामी'क “मनोदगार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक महेश झा 'डखरामी', विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३२६. खण्ड 2694, सूचकांक पंक्ति 1385: महेश झा 'डखरामी'क “मनोदगार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३२७. खण्ड 2694, सूचकांक पंक्ति 1385: महेश झा 'डखरामी'क “मनोदगार”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३२८. खण्ड 2694, सूचकांक पंक्ति 1385: महेश झा 'डखरामी'क “मनोदगार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३२९. खण्ड 2694, सूचकांक पंक्ति 1385: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2694, सूचकांक पंक्ति 1385मे महेश झा 'डखरामी'क “मनोदगार” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2695 : विदेह-सदेह 16 — महेश झा 'डखरामी': क्रोध

१३३०. खण्ड 2695, सूचकांक पंक्ति 1386: महेश झा 'डखरामी'क “क्रोध” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) क्रोध
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३३१. खण्ड 2695, सूचकांक पंक्ति 1386: महेश झा 'डखरामी'क “क्रोध”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३३२. खण्ड 2695, सूचकांक पंक्ति 1386: महेश झा 'डखरामी'क “क्रोध”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३३३. खण्ड 2695, सूचकांक पंक्ति 1386: महेश झा 'डखरामी'क “क्रोध” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) रौद्र रस

१३३४. खण्ड 2695, सूचकांक पंक्ति 1386: महेश झा 'डखरामी'क “क्रोध” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) रौद्र रस
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३३५. खण्ड 2695, सूचकांक पंक्ति 1386: महेश झा 'डखरामी'क “क्रोध”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक महेश झा 'डखरामी', विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३३६. खण्ड 2695, सूचकांक पंक्ति 1386: महेश झा 'डखरामी'क “क्रोध” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३३७. खण्ड 2695, सूचकांक पंक्ति 1386: महेश झा 'डखरामी'क “क्रोध”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३३८. खण्ड 2695, सूचकांक पंक्ति 1386: महेश झा 'डखरामी'क “क्रोध” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३३९. खण्ड 2695, सूचकांक पंक्ति 1386: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2695, सूचकांक पंक्ति 1386मे महेश झा 'डखरामी'क “क्रोध” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “रौद्र रस” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2696 : विदेह-सदेह 16 — महेश झा 'डखरामी': छैडत मैय्या

१३४०. खण्ड 2696, सूचकांक पंक्ति 1387: महेश झा 'डखरामी'क “छैडत मैय्या” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) छैडत मैय्या
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३४१. खण्ड 2696, सूचकांक पंक्ति 1387: महेश झा 'डखरामी'क “छैडत मैय्या”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३४२. खण्ड 2696, सूचकांक पंक्ति 1387: महेश झा 'डखरामी'क “छैडत मैय्या”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) भजन
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३४३. खण्ड 2696, सूचकांक पंक्ति 1387: महेश झा 'डखरामी'क “छैडत मैय्या” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भक्ति

१३४४. खण्ड 2696, सूचकांक पंक्ति 1387: महेश झा 'डखरामी'क “छैडत मैय्या” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भक्ति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३४५. खण्ड 2696, सूचकांक पंक्ति 1387: महेश झा 'डखरामी'क “छैडत मैय्या”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक महेश झा 'डखरामी', विधा पद्य, उप-विधा भजन
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३४६. खण्ड 2696, सूचकांक पंक्ति 1387: महेश झा 'डखरामी'क “छैडत मैय्या” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३४७. खण्ड 2696, सूचकांक पंक्ति 1387: महेश झा 'डखरामी'क “छैडत मैय्या”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ भजनक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३४८. खण्ड 2696, सूचकांक पंक्ति 1387: महेश झा 'डखरामी'क “छैडत मैय्या” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३४९. खण्ड 2696, सूचकांक पंक्ति 1387: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2696, सूचकांक पंक्ति 1387मे महेश झा 'डखरामी'क “छैडत मैय्या” प्रविष्टि पद्य, भजन आ “भक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2697 : विदेह-सदेह 16 — महेश झा 'डखरामी': नारी

१३५०. खण्ड 2697, सूचकांक पंक्ति 1388: महेश झा 'डखरामी'क “नारी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) नारी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३५१. खण्ड 2697, सूचकांक पंक्ति 1388: महेश झा 'डखरामी'क “नारी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३५२. खण्ड 2697, सूचकांक पंक्ति 1388: महेश झा 'डखरामी'क “नारी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३५३. खण्ड 2697, सूचकांक पंक्ति 1388: महेश झा 'डखरामी'क “नारी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नारी-गरिमा

१३५४. खण्ड 2697, सूचकांक पंक्ति 1388: महेश झा 'डखरामी'क “नारी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नारी-गरिमा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३५५. खण्ड 2697, सूचकांक पंक्ति 1388: महेश झा 'डखरामी'क “नारी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक महेश झा 'डखरामी', विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३५६. खण्ड 2697, सूचकांक पंक्ति 1388: महेश झा 'डखरामी'क “नारी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३५७. खण्ड 2697, सूचकांक पंक्ति 1388: महेश झा 'डखरामी'क “नारी”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३५८. खण्ड 2697, सूचकांक पंक्ति 1388: महेश झा 'डखरामी'क “नारी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३५९. खण्ड 2697, सूचकांक पंक्ति 1388: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2697, सूचकांक पंक्ति 1388मे महेश झा 'डखरामी'क “नारी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी-गरिमा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2698 : विदेह-सदेह 16 — शेफालिका वर्मा: दीयाबाती मनेलौं आली

१३६०. खण्ड 2698, सूचकांक पंक्ति 1389: शेफालिका वर्माक “दीयाबाती मनेलौं आली” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) दीयाबाती मनेलौं आली
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३६१. खण्ड 2698, सूचकांक पंक्ति 1389: शेफालिका वर्माक “दीयाबाती मनेलौं आली”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३६२. खण्ड 2698, सूचकांक पंक्ति 1389: शेफालिका वर्माक “दीयाबाती मनेलौं आली”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३६३. खण्ड 2698, सूचकांक पंक्ति 1389: शेफालिका वर्माक “दीयाबाती मनेलौं आली” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) दीपावली

१३६४. खण्ड 2698, सूचकांक पंक्ति 1389: शेफालिका वर्माक “दीयाबाती मनेलौं आली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) दीपावली
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३६५. खण्ड 2698, सूचकांक पंक्ति 1389: शेफालिका वर्माक “दीयाबाती मनेलौं आली”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शेफालिका वर्मा, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३६६. खण्ड 2698, सूचकांक पंक्ति 1389: शेफालिका वर्माक “दीयाबाती मनेलौं आली” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३६७. खण्ड 2698, सूचकांक पंक्ति 1389: शेफालिका वर्माक “दीयाबाती मनेलौं आली”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३६८. खण्ड 2698, सूचकांक पंक्ति 1389: शेफालिका वर्माक “दीयाबाती मनेलौं आली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३६९. खण्ड 2698, सूचकांक पंक्ति 1389: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2698, सूचकांक पंक्ति 1389मे शेफालिका वर्माक “दीयाबाती मनेलौं आली” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दीपावली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2699 : विदेह-सदेह 16 — केलाशः जहिना करब ओहिना पाएब

१३७०. खण्ड 2699, सूचकांक पंक्ति 1390: केलाशक “जहिना करब ओहिना पाएब” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) जहिना करब ओहिना पाएब
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३७१. खण्ड 2699, सूचकांक पंक्ति 1390: केलाशक “जहिना करब ओहिना पाएब”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३७२. खण्ड 2699, सूचकांक पंक्ति 1390: केलाशक “जहिना करब ओहिना पाएब”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३७३. खण्ड 2699, सूचकांक पंक्ति 1390: केलाशक “जहिना करब ओहिना पाएब” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पारिवारिक

१३७४. खण्ड 2699, सूचकांक पंक्ति 1390: केलाशक “जहिना करब ओहिना पाएब” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पारिवारिक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३७५. खण्ड 2699, सूचकांक पंक्ति 1390: केलाशक “जहिना करब ओहिना पाएब”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक केलाश, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३७६. खण्ड 2699, सूचकांक पंक्ति 1390: केलाशक “जहिना करब ओहिना पाएब” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३७७. खण्ड 2699, सूचकांक पंक्ति 1390: केलाशक “जहिना करब ओहिना पाएब”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३७८. खण्ड 2699, सूचकांक पंक्ति 1390: केलाशक “जहिना करब ओहिना पाएब” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३७९. खण्ड 2699, सूचकांक पंक्ति 1390: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2699, सूचकांक पंक्ति 1390मे केलाशक “जहिना करब ओहिना पाएब” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पारिवारिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2700 : विदेह-सदेह 16 — संतोष कुमार राय 'चंदू': गिरवी

१३८०. खण्ड 2700, सूचकांक पंक्ति 1391: संतोष कुमार राय 'चंदू'क “गिरवी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गिरवी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३८१. खण्ड 2700, सूचकांक पंक्ति 1391: संतोष कुमार राय 'चंदू'क “गिरवी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३८२. खण्ड 2700, सूचकांक पंक्ति 1391: संतोष कुमार राय 'चंदू'क “गिरवी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३८३. खण्ड 2700, सूचकांक पंक्ति 1391: संतोष कुमार राय 'चंदू'क “गिरवी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) गरीबी

१३८४. खण्ड 2700, सूचकांक पंक्ति 1391: संतोष कुमार राय 'चंदू'क “गिरवी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) गरीबी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३८५. खण्ड 2700, सूचकांक पंक्ति 1391: संतोष कुमार राय 'चंदू'क “गिरवी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक संतोष कुमार राय 'चंदू', विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३८६. खण्ड 2700, सूचकांक पंक्ति 1391: संतोष कुमार राय 'चंदू'क “गिरवी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३८७. खण्ड 2700, सूचकांक पंक्ति 1391: संतोष कुमार राय 'चंदू'क “गिरवी”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३८८. खण्ड 2700, सूचकांक पंक्ति 1391: संतोष कुमार राय 'चंदू'क “गिरवी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३८९. खण्ड 2700, सूचकांक पंक्ति 1391: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2700, सूचकांक पंक्ति 1391मे संतोष कुमार राय 'चंदू'क “गिरवी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “गरीबी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2701 : विदेह-सदेह 16 — संतोष कुमार राय 'चंदू': प्रधानमंत्री के छथि?

१३९०. खण्ड 2701, सूचकांक पंक्ति 1392: संतोष कुमार राय 'चंदू'क “प्रधानमंत्री के छथि?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) प्रधानमंत्री के छथि?
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३९१. खण्ड 2701, सूचकांक पंक्ति 1392: संतोष कुमार राय 'चंदू'क “प्रधानमंत्री के छथि?”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३९२. खण्ड 2701, सूचकांक पंक्ति 1392: संतोष कुमार राय 'चंदू'क “प्रधानमंत्री के छथि?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३९३. खण्ड 2701, सूचकांक पंक्ति 1392: संतोष कुमार राय 'चंदू'क “प्रधानमंत्री के छथि?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) राजनीतिक व्यंग्य

१३९४. खण्ड 2701, सूचकांक पंक्ति 1392: संतोष कुमार राय 'चंदू'क “प्रधानमंत्री के छथि?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) राजनीतिक व्यंग्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३९५. खण्ड 2701, सूचकांक पंक्ति 1392: संतोष कुमार राय 'चंदू'क “प्रधानमंत्री के छथि?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक संतोष कुमार राय 'चंदू', विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३९६. खण्ड 2701, सूचकांक पंक्ति 1392: संतोष कुमार राय 'चंदू'क “प्रधानमंत्री के छथि?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३९७. खण्ड 2701, सूचकांक पंक्ति 1392: संतोष कुमार राय 'चंदू'क “प्रधानमंत्री के छथि?”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३९८. खण्ड 2701, सूचकांक पंक्ति 1392: संतोष कुमार राय 'चंदू'क “प्रधानमंत्री के छथि?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३९९. खण्ड 2701, सूचकांक पंक्ति 1392: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2701, सूचकांक पंक्ति 1392मे संतोष कुमार राय 'चंदू'क “प्रधानमंत्री के छथि?” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “राजनीतिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2702 : विदेह-सदेह 16 — डॉ. शिशधर कुमार 'विदेह': ओजोन

१४००. खण्ड 2702, सूचकांक पंक्ति 1393: डॉ. शिशधर कुमार 'विदेह'क “ओजोन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ओजोन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४०१. खण्ड 2702, सूचकांक पंक्ति 1393: डॉ. शिशधर कुमार 'विदेह'क “ओजोन”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४०२. खण्ड 2702, सूचकांक पंक्ति 1393: डॉ. शिशधर कुमार 'विदेह'क “ओजोन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४०३. खण्ड 2702, सूचकांक पंक्ति 1393: डॉ. शिशधर कुमार 'विदेह'क “ओजोन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) विज्ञान चेतना

१४०४. खण्ड 2702, सूचकांक पंक्ति 1393: डॉ. शिशधर कुमार 'विदेह'क “ओजोन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) विज्ञान चेतना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४०५. खण्ड 2702, सूचकांक पंक्ति 1393: डॉ. शिशधर कुमार 'विदेह'क “ओजोन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. शिशधर कुमार 'विदेह', विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४०६. खण्ड 2702, सूचकांक पंक्ति 1393: डॉ. शिशधर कुमार 'विदेह'क “ओजोन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४०७. खण्ड 2702, सूचकांक पंक्ति 1393: डॉ. शिशधर कुमार 'विदेह'क “ओजोन”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४०८. खण्ड 2702, सूचकांक पंक्ति 1393: डॉ. शिशधर कुमार 'विदेह'क “ओजोन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४०९. खण्ड 2702, सूचकांक पंक्ति 1393: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2702, सूचकांक पंक्ति 1393मे डॉ. शिशधर कुमार 'विदेह'क “ओजोन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “विज्ञान चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2703 : विदेह-सदेह 16 — डॉ. शिशधर कुमार 'विदेह': प्रदूषण

१४१०. खण्ड 2703, सूचकांक पंक्ति 1394: डॉ. शिशधर कुमार 'विदेह'क “प्रदूषण” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) प्रदूषण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४११. खण्ड 2703, सूचकांक पंक्ति 1394: डॉ. शिशधर कुमार 'विदेह'क “प्रदूषण”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४१२. खण्ड 2703, सूचकांक पंक्ति 1394: डॉ. शिशधर कुमार 'विदेह'क “प्रदूषण”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४१३. खण्ड 2703, सूचकांक पंक्ति 1394: डॉ. शिशधर कुमार 'विदेह'क “प्रदूषण” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पर्यावरण

१४१४. खण्ड 2703, सूचकांक पंक्ति 1394: डॉ. शिशधर कुमार 'विदेह'क “प्रदूषण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पर्यावरण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४१५. खण्ड 2703, सूचकांक पंक्ति 1394: डॉ. शिशधर कुमार 'विदेह'क “प्रदूषण”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. शिशधर कुमार 'विदेह', विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४१६. खण्ड 2703, सूचकांक पंक्ति 1394: डॉ. शिशधर कुमार 'विदेह'क “प्रदूषण” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४१७. खण्ड 2703, सूचकांक पंक्ति 1394: डॉ. शिशधर कुमार 'विदेह'क “प्रदूषण”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४१८. खण्ड 2703, सूचकांक पंक्ति 1394: डॉ. शिशधर कुमार 'विदेह'क “प्रदूषण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४१९. खण्ड 2703, सूचकांक पंक्ति 1394: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2703, सूचकांक पंक्ति 1394मे डॉ. शिशधर कुमार 'विदेह'क “प्रदूषण” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पर्यावरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2704 : विदेह-सदेह 16 — राजीव रंजन मिश्र: गजल

१४२०. खण्ड 2704, सूचकांक पंक्ति 1395: राजीव रंजन मिश्रक “गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गजल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४२१. खण्ड 2704, सूचकांक पंक्ति 1395: राजीव रंजन मिश्रक “गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४२२. खण्ड 2704, सूचकांक पंक्ति 1395: राजीव रंजन मिश्रक “गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४२३. खण्ड 2704, सूचकांक पंक्ति 1395: राजीव रंजन मिश्रक “गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) श्रृंगार

१४२४. खण्ड 2704, सूचकांक पंक्ति 1395: राजीव रंजन मिश्रक “गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) श्रृंगार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४२५. खण्ड 2704, सूचकांक पंक्ति 1395: राजीव रंजन मिश्रक “गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक राजीव रंजन मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४२६. खण्ड 2704, सूचकांक पंक्ति 1395: राजीव रंजन मिश्रक “गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४२७. खण्ड 2704, सूचकांक पंक्ति 1395: राजीव रंजन मिश्रक “गजल”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४२८. खण्ड 2704, सूचकांक पंक्ति 1395: राजीव रंजन मिश्रक “गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४२९. खण्ड 2704, सूचकांक पंक्ति 1395: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2704, सूचकांक पंक्ति 1395मे राजीव रंजन मिश्रक “गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2705 : विदेह-सदेह 16 — स्व. कविवर सीताराम झा: गजल (भवक्त गजल)

१४३०. खण्ड 2705, सूचकांक पंक्ति 1396: स्व. कविवर सीताराम झाक “गजल (भवक्त गजल)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गजल (भवक्त गजल)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४३१. खण्ड 2705, सूचकांक पंक्ति 1396: स्व. कविवर सीताराम झाक “गजल (भवक्त गजल)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४३२. खण्ड 2705, सूचकांक पंक्ति 1396: स्व. कविवर सीताराम झाक “गजल (भवक्त गजल)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४३३. खण्ड 2705, सूचकांक पंक्ति 1396: स्व. कविवर सीताराम झाक “गजल (भवक्त गजल)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भक्ति

१४३४. खण्ड 2705, सूचकांक पंक्ति 1396: स्व. कविवर सीताराम झाक “गजल (भवक्त गजल)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भक्ति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४३५. खण्ड 2705, सूचकांक पंक्ति 1396: स्व. कविवर सीताराम झाक “गजल (भवक्त गजल)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक स्व. कविवर सीताराम झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४३६. खण्ड 2705, सूचकांक पंक्ति 1396: स्व. कविवर सीताराम झाक “गजल (भवक्त गजल)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४३७. खण्ड 2705, सूचकांक पंक्ति 1396: स्व. कविवर सीताराम झाक “गजल (भवक्त गजल)”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४३८. खण्ड 2705, सूचकांक पंक्ति 1396: स्व. कविवर सीताराम झाक “गजल (भवक्त गजल)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४३९. खण्ड 2705, सूचकांक पंक्ति 1396: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2705, सूचकांक पंक्ति 1396मे स्व. कविवर सीताराम झाक “गजल (भवक्त गजल)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “भक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2706 : विदेह-सदेह 16 — अब्दुर रज्जाक: घोरमठा राजनैतिक

१४४०. खण्ड 2706, सूचकांक पंक्ति 1397: अब्दुर रज्जाकक “घोरमठा राजनैतिक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) घोरमठा राजनैतिक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४४१. खण्ड 2706, सूचकांक पंक्ति 1397: अब्दुर रज्जाकक “घोरमठा राजनैतिक”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४४२. खण्ड 2706, सूचकांक पंक्ति 1397: अब्दुर रज्जाकक “घोरमठा राजनैतिक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४४३. खण्ड 2706, सूचकांक पंक्ति 1397: अब्दुर रज्जाकक “घोरमठा राजनैतिक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नेपाल

१४४४. खण्ड 2706, सूचकांक पंक्ति 1397: अब्दुर रज्जाकक “घोरमठा राजनैतिक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नेपाल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४४५. खण्ड 2706, सूचकांक पंक्ति 1397: अब्दुर रज्जाकक “घोरमठा राजनैतिक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अब्दुर रज्जाक, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४४६. खण्ड 2706, सूचकांक पंक्ति 1397: अब्दुर रज्जाकक “घोरमठा राजनैतिक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४४७. खण्ड 2706, सूचकांक पंक्ति 1397: अब्दुर रज्जाकक “घोरमठा राजनैतिक”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४४८. खण्ड 2706, सूचकांक पंक्ति 1397: अब्दुर रज्जाकक “घोरमठा राजनैतिक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४४९. खण्ड 2706, सूचकांक पंक्ति 1397: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2706, सूचकांक पंक्ति 1397मे अब्दुर रज्जाकक “घोरमठा राजनैतिक” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2707 : विदेह-सदेह 16 — किशन कारीर: बीर जबान

१४५०. खण्ड 2707, सूचकांक पंक्ति 1398: किशन कारीरक “बीर जबान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बीर जबान
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४५१. खण्ड 2707, सूचकांक पंक्ति 1398: किशन कारीरक “बीर जबान”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४५२. खण्ड 2707, सूचकांक पंक्ति 1398: किशन कारीरक “बीर जबान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४५३. खण्ड 2707, सूचकांक पंक्ति 1398: किशन कारीरक “बीर जबान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) देशभक्ति

१४५४. खण्ड 2707, सूचकांक पंक्ति 1398: किशन कारीरक “बीर जबान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) देशभक्ति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४५५. खण्ड 2707, सूचकांक पंक्ति 1398: किशन कारीरक “बीर जबान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक किशन कारीर, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४५६. खण्ड 2707, सूचकांक पंक्ति 1398: किशन कारीरक “बीर जबान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४५७. खण्ड 2707, सूचकांक पंक्ति 1398: किशन कारीरक “बीर जबान”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४५८. खण्ड 2707, सूचकांक पंक्ति 1398: किशन कारीरक “बीर जबान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४५९. खण्ड 2707, सूचकांक पंक्ति 1398: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2707, सूचकांक पंक्ति 1398मे किशन कारीरक “बीर जबान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “देशभक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2708 : विदेह-सदेह 16 — किशन कारीर: बारूद के ढेड़ी पर बैसि

१४६०. खण्ड 2708, सूचकांक पंक्ति 1399: किशन कारीरक “बारूद के ढेड़ी पर बैसि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बारूद के ढेड़ी पर बैसि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४६१. खण्ड 2708, सूचकांक पंक्ति 1399: किशन कारीरक “बारूद के ढेड़ी पर बैसि”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४६२. खण्ड 2708, सूचकांक पंक्ति 1399: किशन कारीरक “बारूद के ढेड़ी पर बैसि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४६३. खण्ड 2708, सूचकांक पंक्ति 1399: किशन कारीरक “बारूद के ढेड़ी पर बैसि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) आतंकवाद विरोधी

१४६४. खण्ड 2708, सूचकांक पंक्ति 1399: किशन कारीरक “बारूद के ढेड़ी पर बैसि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) आतंकवाद विरोधी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४६५. खण्ड 2708, सूचकांक पंक्ति 1399: किशन कारीरक “बारूद के ढेड़ी पर बैसि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक किशन कारीर, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४६६. खण्ड 2708, सूचकांक पंक्ति 1399: किशन कारीरक “बारूद के ढेड़ी पर बैसि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४६७. खण्ड 2708, सूचकांक पंक्ति 1399: किशन कारीरक “बारूद के ढेड़ी पर बैसि”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४६८. खण्ड 2708, सूचकांक पंक्ति 1399: किशन कारीरक “बारूद के ढेड़ी पर बैसि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४६९. खण्ड 2708, सूचकांक पंक्ति 1399: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2708, सूचकांक पंक्ति 1399मे किशन कारीरक “बारूद के ढेड़ी पर बैसि” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आतंकवाद विरोधी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2709 : विदेह-सदेह 16 — किशन कारीर: गजल सन किछु

१४७०. खण्ड 2709, सूचकांक पंक्ति 1400: किशन कारीरक “गजल सन किछु” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गजल सन किछु
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४७१. खण्ड 2709, सूचकांक पंक्ति 1400: किशन कारीरक “गजल सन किछु”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४७२. खण्ड 2709, सूचकांक पंक्ति 1400: किशन कारीरक “गजल सन किछु”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४७३. खण्ड 2709, सूचकांक पंक्ति 1400: किशन कारीरक “गजल सन किछु” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रेम

१४७४. खण्ड 2709, सूचकांक पंक्ति 1400: किशन कारीरक “गजल सन किछु” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रेम
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४७५. खण्ड 2709, सूचकांक पंक्ति 1400: किशन कारीरक “गजल सन किछु”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक किशन कारीर, विधा पद्य, उप-विधा गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४७६. खण्ड 2709, सूचकांक पंक्ति 1400: किशन कारीरक “गजल सन किछु” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४७७. खण्ड 2709, सूचकांक पंक्ति 1400: किशन कारीरक “गजल सन किछु”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४७८. खण्ड 2709, सूचकांक पंक्ति 1400: किशन कारीरक “गजल सन किछु” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४७९. खण्ड 2709, सूचकांक पंक्ति 1400: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2709, सूचकांक पंक्ति 1400मे किशन कारीरक “गजल सन किछु” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2710 : विदेह-सदेह 16 — प्रदीप पुष्प: शेर, रुबाइ (बहुते)

१४८०. खण्ड 2710, सूचकांक पंक्ति 1401: प्रदीप पुष्पक “शेर, रुबाइ (बहुते)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) शेर, रुबाइ (बहुते)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४८१. खण्ड 2710, सूचकांक पंक्ति 1401: प्रदीप पुष्पक “शेर, रुबाइ (बहुते)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४८२. खण्ड 2710, सूचकांक पंक्ति 1401: प्रदीप पुष्पक “शेर, रुबाइ (बहुते)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) रुबाइ/गजल
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४८३. खण्ड 2710, सूचकांक पंक्ति 1401: प्रदीप पुष्पक “शेर, रुबाइ (बहुते)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) शृंगार

१४८४. खण्ड 2710, सूचकांक पंक्ति 1401: प्रदीप पुष्पक “शेर, रुबाइ (बहुते)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) शृंगार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४८५. खण्ड 2710, सूचकांक पंक्ति 1401: प्रदीप पुष्पक “शेर, रुबाइ (बहुते)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक प्रदीप पुष्प, विधा पद्य, उप-विधा रुबाइ/गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४८६. खण्ड 2710, सूचकांक पंक्ति 1401: प्रदीप पुष्पक “शेर, रुबाइ (बहुते)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४८७. खण्ड 2710, सूचकांक पंक्ति 1401: प्रदीप पुष्पक “शेर, रुबाइ (बहुते)” के विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ रुबाइ/गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४८८. खण्ड 2710, सूचकांक पंक्ति 1401: प्रदीप पुष्पक “शेर, रुबाइ (बहुते)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४८९. खण्ड 2710, सूचकांक पंक्ति 1401: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2710, सूचकांक पंक्ति 1401मे प्रदीप पुष्पक “शेर, रुबाइ (बहुते)” प्रविष्टि पद्य, रुबाइ/गजल आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2711 : विदेह-सदेह 16 — मो. अशरफ राईन: रुबाइ; कता; आजाद गजल; गीत (बहुते)

१४९०. खण्ड 2711, सूचकांक पंक्ति 1402: मो. अशरफ राईनक “रुबाइ; कता; आजाद गजल; गीत (बहुते)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) रुबाइ; कता; आजाद गजल; गीत (बहुते)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४९१. खण्ड 2711, सूचकांक पंक्ति 1402: मो. अशरफ राईनक “रुबाइ; कता; आजाद गजल; गीत (बहुते)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४९२. खण्ड 2711, सूचकांक पंक्ति 1402: मो. अशरफ राईनक “रुबाइ; कता; आजाद गजल; गीत (बहुते)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल/रुबाइ/गीत
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४९३. खण्ड 2711, सूचकांक पंक्ति 1402: मो. अशरफ राईनक “रुबाइ; कता; आजाद गजल; गीत (बहुते)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नेपाल

१४९४. खण्ड 2711, सूचकांक पंक्ति 1402: मो. अशरफ राईनक “रुबाइ; कता; आजाद गजल; गीत (बहुते)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नेपाल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४९५. खण्ड 2711, सूचकांक पंक्ति 1402: मो. अशरफ राईनक “रुबाइ; कता; आजाद गजल; गीत (बहुते)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक मो. अशरफ राईन, विधा पद्य, उप-विधा गजल/रुबाइ/गीत
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४९६. खण्ड 2711, सूचकांक पंक्ति 1402: मो. अशरफ राईनक “रुबाइ; कता; आजाद गजल; गीत (बहुते)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४९७. खण्ड 2711, सूचकांक पंक्ति 1402: मो. अशरफ राईनक “रुबाइ; कता; आजाद गजल; गीत (बहुते)”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजल/रुबाइ/गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४९८. खण्ड 2711, सूचकांक पंक्ति 1402: मो. अशरफ राईनक “रुबाइ; कता; आजाद गजल; गीत (बहुते)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४९९. खण्ड 2711, सूचकांक पंक्ति 1402: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2711, सूचकांक पंक्ति 1402मे मो. अशरफ राईनक “रुबाइ; कता; आजाद गजल; गीत (बहुते)” प्रविष्टि पद्य, गजल/रुबाइ/गीत आ “नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2712 : विदेह-सदेह 16 — राजदेव मण्डल: हेतार

१५००. खण्ड 2712, सूचकांक पंक्ति 1403: राजदेव मण्डलक “हेतार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) हेतार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५०१. खण्ड 2712, सूचकांक पंक्ति 1403: राजदेव मण्डलक “हेतार”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५०२. खण्ड 2712, सूचकांक पंक्ति 1403: राजदेव मण्डलक “हेतार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५०३. खण्ड 2712, सूचकांक पंक्ति 1403: राजदेव मण्डलक “हेतार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रतीकात्मक

१५०४. खण्ड 2712, सूचकांक पंक्ति 1403: राजदेव मण्डलक “हेतार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रतीकात्मक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५०५. खण्ड 2712, सूचकांक पंक्ति 1403: राजदेव मण्डलक “हेतार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५०६. खण्ड 2712, सूचकांक पंक्ति 1403: राजदेव मण्डलक “हेतार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५०७. खण्ड 2712, सूचकांक पंक्ति 1403: राजदेव मण्डलक “हेतार”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५०८. खण्ड 2712, सूचकांक पंक्ति 1403: राजदेव मण्डलक “हेतार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५०९. खण्ड 2712, सूचकांक पंक्ति 1403: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2712, सूचकांक पंक्ति 1403मे राजदेव मण्डलक “हेतार” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रतीकात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2713 : विदेह-सदेह 16 — सुनीति मोहन ठाकुर: अहि बेर देखि फागु

१५१०. खण्ड 2713, सूचकांक पंक्ति 1404: सुनीति मोहन ठाकुरक “अहि बेर देखि फागु” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अहि बेर देखि फागु
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५११. खण्ड 2713, सूचकांक पंक्ति 1404: सुनीति मोहन ठाकुरक “अहि बेर देखि फागु”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५१२. खण्ड 2713, सूचकांक पंक्ति 1404: सुनीति मोहन ठाकुरक “अहि बेर देखि फागु”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५१३. खण्ड 2713, सूचकांक पंक्ति 1404: सुनीति मोहन ठाकुरक “अहि बेर देखि फागु” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ऋतु-वर्णन

१५१४. खण्ड 2713, सूचकांक पंक्ति 1404: सुनीति मोहन ठाकुरक “अहि बेर देखि फागु” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ऋतु-वर्णन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५१५. खण्ड 2713, सूचकांक पंक्ति 1404: सुनीति मोहन ठाकुरक “अहि बेर देखि फागु”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुनीति मोहन ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५१६. खण्ड 2713, सूचकांक पंक्ति 1404: सुनीति मोहन ठाकुरक “अहि बेर देखि फागु” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५१७. खण्ड 2713, सूचकांक पंक्ति 1404: सुनीति मोहन ठाकुरक “अहि बेर देखि फागु”क विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५१८. खण्ड 2713, सूचकांक पंक्ति 1404: सुनीति मोहन ठाकुरक “अहि बेर देखि फागु” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५१९. खण्ड 2713, सूचकांक पंक्ति 1404: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2713, सूचकांक पंक्ति 1404मे सुनीति मोहन ठाकुरक “अहि बेर देखि फागु” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ऋतु-वर्णन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2714 : विदेह-सदेह 16 — नवहदनी पाठक: ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल

१५२०. खण्ड 2714, सूचकांक पंक्ति 1405: नवहदनी पाठकक “ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५२१. खण्ड 2714, सूचकांक पंक्ति 1405: नवहदनी पाठकक “ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५२२. खण्ड 2714, सूचकांक पंक्ति 1405: नवहदनी पाठकक “ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५२३. खण्ड 2714, सूचकांक पंक्ति 1405: नवहदनी पाठकक “ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) व्यंग्य

१५२४. खण्ड 2714, सूचकांक पंक्ति 1405: नवहदनी पाठकक “ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) व्यंग्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५२५. खण्ड 2714, सूचकांक पंक्ति 1405: नवहदनी पाठकक “ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक नवहदनी पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५२६. खण्ड 2714, सूचकांक पंक्ति 1405: नवहदनी पाठकक “ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५२७. खण्ड 2714, सूचकांक पंक्ति 1405: नवहदनी पाठकक “ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल”केँ विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५२८. खण्ड 2714, सूचकांक पंक्ति 1405: नवहदनी पाठकक “ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५२९. खण्ड 2714, सूचकांक पंक्ति 1405: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2714, सूचकांक पंक्ति 1405मे नवहदनी पाठकक “ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2715 : विदेह-सदेह 16 — मो. सुभान: गीत — छोटका किसान

१५३०. खण्ड 2715, सूचकांक पंक्ति 1406: मो. सुभानक “गीत — छोटका किसान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गीत — छोटका किसान
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५३१. खण्ड 2715, सूचकांक पंक्ति 1406: मो. सुभानक “गीत — छोटका किसान”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५३२. खण्ड 2715, सूचकांक पंक्ति 1406: मो. सुभानक “गीत — छोटका किसान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गीत
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५३३. खण्ड 2715, सूचकांक पंक्ति 1406: मो. सुभानक “गीत — छोटका किसान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) किसान-जीवन

१५३४. खण्ड 2715, सूचकांक पंक्ति 1406: मो. सुभानक “गीत — छोटका किसान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) किसान-जीवन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५३५. खण्ड 2715, सूचकांक पंक्ति 1406: मो. सुभानक “गीत — छोटका किसान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक मो. सुभान, विधा पद्य, उप-विधा गीत
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५३६. खण्ड 2715, सूचकांक पंक्ति 1406: मो. सुभानक “गीत — छोटका किसान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५३७. खण्ड 2715, सूचकांक पंक्ति 1406: मो. सुभानक “गीत — छोटका किसान”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५३८. खण्ड 2715, सूचकांक पंक्ति 1406: मो. सुभानक “गीत — छोटका किसान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५३९. खण्ड 2715, सूचकांक पंक्ति 1406: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2715, सूचकांक पंक्ति 1406मे मो. सुभानक “गीत — छोटका किसान” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “किसान-जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2716 : विदेह-सदेह 16 — शारदानन्द दास 'परिमल': पूर्णहिंदु नभांगनमे; फागुनक गीत

१५४०. खण्ड 2716, सूचकांक पंक्ति 1407: शारदानन्द दास 'परिमल'क “पूर्णहिंदु नभांगनमे; फागुनक गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) पूर्णहिंदु नभांगनमे; फागुनक गीत
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५४१. खण्ड 2716, सूचकांक पंक्ति 1407: शारदानन्द दास 'परिमल'क “पूर्णहिंदु नभांगनमे; फागुनक गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५४२. खण्ड 2716, सूचकांक पंक्ति 1407: शारदानन्द दास 'परिमल'क “पूर्णहिंदु नभांगनमे; फागुनक गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता/गीत
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५४३. खण्ड 2716, सूचकांक पंक्ति 1407: शारदानन्द दास 'परिमल'क “पूर्णहिंदु नभांगनमे; फागुनक गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) आध्यात्मिक

१५४४. खण्ड 2716, सूचकांक पंक्ति 1407: शारदानन्द दास 'परिमल'क “पूर्णहिंदु नभांगनमे; फागुनक गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) आध्यात्मिक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५४५. खण्ड 2716, सूचकांक पंक्ति 1407: शारदानन्द दास 'परिमल'क “पूर्णहिंदु नभांगनमे; फागुनक गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शारदानन्द दास 'परिमल', विधा पद्य, उप-विधा कविता/गीत
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५४६. खण्ड 2716, सूचकांक पंक्ति 1407: शारदानन्द दास 'परिमल'क “पूर्णहिंदु नभांगनमे; फागुनक गीत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५४७. खण्ड 2716, सूचकांक पंक्ति 1407: शारदानन्द दास 'परिमल'क “पूर्णहिंदु नभांगनमे; फागुनक गीत”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविता/गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५४८. खण्ड 2716, सूचकांक पंक्ति 1407: शारदानन्द दास 'परिमल'क “पूर्णहिंदु नभांगनमे; फागुनक गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५४९. खण्ड 2716, सूचकांक पंक्ति 1407: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2716, सूचकांक पंक्ति 1407मे शारदानन्द दास 'परिमल'क “पूर्णहिंदु नभांगनमे; फागुनक गीत” प्रविष्टि पद्य, कविता/गीत आ “आध्यात्मिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2717 : विदेह-सदेह 16 — योगानन्द हीरा: गजल (बहुते); बाल गजल

१५५०. खण्ड 2717, सूचकांक पंक्ति 1408: योगानन्द हीराक “गजल (बहुते); बाल गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गजल (बहुते); बाल गजल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५५१. खण्ड 2717, सूचकांक पंक्ति 1408: योगानन्द हीराक “गजल (बहुते); बाल गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५५२. खण्ड 2717, सूचकांक पंक्ति 1408: योगानन्द हीराक “गजल (बहुते); बाल गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल/बाल गजल
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५५३. खण्ड 2717, सूचकांक पंक्ति 1408: योगानन्द हीराक “गजल (बहुते); बाल गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) शृंगार

१५५४. खण्ड 2717, सूचकांक पंक्ति 1408: योगानन्द हीराक “गजल (बहुते); बाल गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) शृंगार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५५५. खण्ड 2717, सूचकांक पंक्ति 1408: योगानन्द हीराक “गजल (बहुते); बाल गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक योगानन्द हीरा, विधा पद्य, उप-विधा गजल/बाल गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५५६. खण्ड 2717, सूचकांक पंक्ति 1408: योगानन्द हीराक “गजल (बहुते); बाल गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५५७. खण्ड 2717, सूचकांक पंक्ति 1408: योगानन्द हीराक “गजल (बहुते); बाल गजल”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजल/बाल गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५५८. खण्ड 2717, सूचकांक पंक्ति 1408: योगानन्द हीराक “गजल (बहुते); बाल गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५५९. खण्ड 2717, सूचकांक पंक्ति 1408: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2717, सूचकांक पंक्ति 1408मे योगानन्द हीराक “गजल (बहुते); बाल गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल/बाल गजल आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2718 : विदेह-सदेह 16 — विमिहर झा: बाल गजल; शेर; कता

१५६०. खण्ड 2718, सूचकांक पंक्ति 1409: विमिहर झाक “बाल गजल; शेर; कता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बाल गजल; शेर; कता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५६१. खण्ड 2718, सूचकांक पंक्ति 1409: विमिहर झाक “बाल गजल; शेर; कता”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५६२. खण्ड 2718, सूचकांक पंक्ति 1409: विमिहर झाक “बाल गजल; शेर; कता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल/कता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५६३. खण्ड 2718, सूचकांक पंक्ति 1409: विमिहर झाक “बाल गजल; शेर; कता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बाल-साहित्य

१५६४. खण्ड 2718, सूचकांक पंक्ति 1409: विमिहर झाक “बाल गजल; शेर; कता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बाल-साहित्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५६५. खण्ड 2718, सूचकांक पंक्ति 1409: विमिहर झाक “बाल गजल; शेर; कता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक विमिहर झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल/कता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५६६. खण्ड 2718, सूचकांक पंक्ति 1409: विमिहर झाक “बाल गजल; शेर; कता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५६७. खण्ड 2718, सूचकांक पंक्ति 1409: विमिहर झाक “बाल गजल; शेर; कता”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजल/कताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५६८. खण्ड 2718, सूचकांक पंक्ति 1409: विमिहर झाक “बाल गजल; शेर; कता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५६९. खण्ड 2718, सूचकांक पंक्ति 1409: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2718, सूचकांक पंक्ति 1409मे विमिहर झाक “बाल गजल; शेर; कता” प्रविष्टि पद्य, गजल/कता आ “बाल-साहित्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2719 : विदेह-सदेह 16 — वृषेश चन्द्र लाल: चारुभर पसरल अछि; बाल गीत; होरीक गीत

१५७०. खण्ड 2719, सूचकांक पंक्ति 1410: वृषेश चन्द्र लालक “चारुभर पसरल अछि; बाल गीत; होरीक गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) चारुभर पसरल अछि; बाल गीत; होरीक गीत
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५७१. खण्ड 2719, सूचकांक पंक्ति 1410: वृषेश चन्द्र लालक “चारुभर पसरल अछि; बाल गीत; होरीक गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५७२. खण्ड 2719, सूचकांक पंक्ति 1410: वृषेश चन्द्र लालक “चारुभर पसरल अछि; बाल गीत; होरीक गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गीत/कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५७३. खण्ड 2719, सूचकांक पंक्ति 1410: वृषेश चन्द्र लालक “चारुभर पसरल अछि; बाल गीत; होरीक गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रकृति

१५७४. खण्ड 2719, सूचकांक पंक्ति 1410: वृषेश चन्द्र लालक “चारुभर पसरल अछि; बाल गीत; होरीक गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रकृति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५७५. खण्ड 2719, सूचकांक पंक्ति 1410: वृषेश चन्द्र लालक “चारुभर पसरल अछि; बाल गीत; होरीक गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक वृषेश चन्द्र लाल, विधा पद्य, उप-विधा गीत/कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५७६. खण्ड 2719, सूचकांक पंक्ति 1410: वृषेश चन्द्र लालक “चारुभर पसरल अछि; बाल गीत; होरीक गीत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५७७. खण्ड 2719, सूचकांक पंक्ति 1410: वृषेश चन्द्र लालक “चारुभर पसरल अछि; बाल गीत; होरीक गीत”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गीत/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५७८. खण्ड 2719, सूचकांक पंक्ति 1410: वृषेश चन्द्र लालक “चारुभर पसरल अछि; बाल गीत; होरीक गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५७९. खण्ड 2719, सूचकांक पंक्ति 1410: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2719, सूचकांक पंक्ति 1410मे वृषेश चन्द्र लालक “चारुभर पसरल अछि; बाल गीत; होरीक गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत/कविता आ “प्रकृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2720 : विदेह-सदेह 16 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': हाइकू/शेनयूट; तानका (बहुते); शोक सभा; काल-चक्र; हमर अपन कविता

१५८०. खण्ड 2720, सूचकांक पंक्ति 1411: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “हाइकू/शेनयूट; तानका (बहुते); शोक सभा; काल-चक्र; हमर अपन कविता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) हाइकू/शेनयूट; तानका (बहुते); शोक सभा; काल-चक्र; हमर अपन कविता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५८१. खण्ड 2720, सूचकांक पंक्ति 1411: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “हाइकू/शेनयूट; तानका (बहुते); शोक सभा; काल-चक्र; हमर अपन कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५८२. खण्ड 2720, सूचकांक पंक्ति 1411: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “हाइकू/शेनयूट; तानका (बहुते); शोक सभा; काल-चक्र; हमर अपन कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) हाइकू/तानका/कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५८३. खण्ड 2720, सूचकांक पंक्ति 1411: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “हाइकू/शेनयूट; तानका (बहुते); शोक सभा; काल-चक्र; हमर अपन कविता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रकृति

१५८४. खण्ड 2720, सूचकांक पंक्ति 1411: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “हाइकू/शेनयूट; तानका (बहुते); शोक सभा; काल-चक्र; हमर अपन कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रकृति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५८५. खण्ड 2720, सूचकांक पंक्ति 1411: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “हाइकू/शेनयूट; तानका (बहुते); शोक सभा; काल-चक्र; हमर अपन कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा पद्य, उप-विधा हाइकू/तानका/कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५८६. खण्ड 2720, सूचकांक पंक्ति 1411: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “हाइकू/शेनयूट; तानका (बहुते); शोक सभा; काल-चक्र; हमर अपन कविता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५८७. खण्ड 2720, सूचकांक पंक्ति 1411: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “हाइकू/शेनयूट; तानका (बहुते); शोक सभा; काल-चक्र; हमर अपन कविता”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ हाइकू/तानका/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५८८. खण्ड 2720, सूचकांक पंक्ति 1411: शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “हाइकू/शेनयूट; तानका (बहुते); शोक सभा; काल-चक्र; हमर अपन कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५८९. खण्ड 2720, सूचकांक पंक्ति 1411: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2720, सूचकांक पंक्ति 1411मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “हाइकू/शेनयूट; तानका (बहुते); शोक सभा; काल-चक्र; हमर अपन कविता” प्रविष्टि पद्य, हाइकू/तानका/कविता आ “प्रकृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2721 : विदेह-सदेह 16 — पम्मी प्रिया झा: रौ सिरगुनमा

१५९०. खण्ड 2721, सूचकांक पंक्ति 1412: पम्मी प्रिया झाक “रौ सिरगुनमा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) रौ सिरगुनमा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५९१. खण्ड 2721, सूचकांक पंक्ति 1412: पम्मी प्रिया झाक “रौ सिरगुनमा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५९२. खण्ड 2721, सूचकांक पंक्ति 1412: पम्मी प्रिया झाक “रौ सिरगुनमा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५९३. खण्ड 2721, सूचकांक पंक्ति 1412: पम्मी प्रिया झाक “रौ सिरगुनमा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सामाजिक विसंगति

१५९४. खण्ड 2721, सूचकांक पंक्ति 1412: पम्मी प्रिया झाक “रौ सिरगुनमा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सामाजिक विसंगति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५९५. खण्ड 2721, सूचकांक पंक्ति 1412: पम्मी प्रिया झाक “रौ सिरगुनमा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक पम्मी प्रिया झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५९६. खण्ड 2721, सूचकांक पंक्ति 1412: पम्मी प्रिया झाक “रौ सिरगुनमा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५९७. खण्ड 2721, सूचकांक पंक्ति 1412: पम्मी प्रिया झाक “रौ सिरगुनमा”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५९८. खण्ड 2721, सूचकांक पंक्ति 1412: पम्मी प्रिया झाक “रौ सिरगुनमा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५९९. खण्ड 2721, सूचकांक पंक्ति 1412: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2721, सूचकांक पंक्ति 1412मे पम्मी प्रिया झाक “रौ सिरगुनमा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक विसंगति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2722 : विदेह-सदेह 16 — झा हेमन्त 'बापी': दानग

१६००. खण्ड 2722, सूचकांक पंक्ति 1413: झा हेमन्त 'बापी'क “दानग” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) दानग
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६०१. खण्ड 2722, सूचकांक पंक्ति 1413: झा हेमन्त 'बापी'क “दानग”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६०२. खण्ड 2722, सूचकांक पंक्ति 1413: झा हेमन्त 'बापी'क “दानग”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६०३. खण्ड 2722, सूचकांक पंक्ति 1413: झा हेमन्त 'बापी'क “दानग” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) दहेज प्रथा विरोधी

१६०४. खण्ड 2722, सूचकांक पंक्ति 1413: झा हेमन्त 'बापी'क “दानग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) दहेज प्रथा विरोधी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६०५. खण्ड 2722, सूचकांक पंक्ति 1413: झा हेमन्त 'बापी'क “दानग”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक झा हेमन्त 'बापी', विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६०६. खण्ड 2722, सूचकांक पंक्ति 1413: झा हेमन्त 'बापी'क “दानग” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६०७. खण्ड 2722, सूचकांक पंक्ति 1413: झा हेमन्त 'बापी'क “दानग”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१६०८. खण्ड 2722, सूचकांक पंक्ति 1413: झा हेमन्त 'बापी'क “दानग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६०९. खण्ड 2722, सूचकांक पंक्ति 1413: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2722, सूचकांक पंक्ति 1413मे झा हेमन्त 'बापी'क “दानग” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दहेज प्रथा विरोधी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2723 : विदेह-सदेह 16 — नवहदनी पाठक: ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल

१६१०. खण्ड 2723, सूचकांक पंक्ति 1414: नवहदनी पाठकक “ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६११. खण्ड 2723, सूचकांक पंक्ति 1414: नवहदनी पाठकक “ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६१२. खण्ड 2723, सूचकांक पंक्ति 1414: नवहदनी पाठकक “ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६१३. खण्ड 2723, सूचकांक पंक्ति 1414: नवहदनी पाठकक “ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) राजनीतिक व्यंग्य

१६१४. खण्ड 2723, सूचकांक पंक्ति 1414: नवहदनी पाठकक “ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) राजनीतिक व्यंग्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६१५. खण्ड 2723, सूचकांक पंक्ति 1414: नवहदनी पाठकक “ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक नवहदनी पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६१६. खण्ड 2723, सूचकांक पंक्ति 1414: नवहदनी पाठकक “ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६१७. खण्ड 2723, सूचकांक पंक्ति 1414: नवहदनी पाठकक “ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल”कें विदेह-सदेह 16क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१६१८. खण्ड 2723, सूचकांक पंक्ति 1414: नवहदनी पाठकक “ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 16क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६१९. खण्ड 2723, सूचकांक पंक्ति 1414: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2723, सूचकांक पंक्ति 1414मे नवहदनी पाठकक “ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “राजनीतिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 5267 : विदेह-सदेह 16 — सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर — विदेह प्रवेशिका (अंक १६)

१६२०. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १६)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) गंगेश गुंजनक 'राधा'क दोसर खेप; मैथिली रिपोर्ताज।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१६२१. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १६)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) गंगेश गुंजनक 'राधा'क दोसर खेप; मैथिली रिपोर्ताज।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१६२२. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १६)’कें सम्पादकीय रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) गंगेश गुंजनक 'राधा'क दोसर खेप; मैथिली रिपोर्ताज।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१६२३. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १६)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक गंगेश गुंजनक 'राधा'क दोसर खेप; मैथिली रिपोर्ताज। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१६२४. 'विदेह प्रवेशिका (अंक १६)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) गंगेश गुंजनक 'राधा'क दोसर खेप; मैथिली रिपोर्टाज।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१६२५. 'विदेह प्रवेशिका (अंक १६)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) गंगेश गुंजनक 'राधा'क दोसर खेप; मैथिली रिपोर्टाज।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१६२६. 'विदेह प्रवेशिका (अंक १६)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) गंगेश गुंजनक 'राधा'क दोसर खेप; मैथिली रिपोर्टाज।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१६२७. 'विदेह प्रवेशिका (अंक १६)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) गंगेश गुंजनक 'राधा'क दोसर खेप; मैथिली रिपोर्टाज।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१६२८. 'विदेह प्रवेशिका (अंक १६)'मे सम्पादकीयक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) सम्पादकीयक रूप गंगेश गुंजनक 'राधा'क दोसर खेप; मैथिली रिपोर्टाज। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१६२९. 'विदेह प्रवेशिका (अंक १६)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ गंगेश गुंजनक 'राधा'क दोसर खेप; मैथिली रिपोर्टाज। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5268 : विदेह-सदेह 16 — जितेन्द्र झा — जितेन्द्र झा रिपोर्टिंग: नेपालक मिथिला-मैथिली समाचार

१६३०. 'जितेन्द्र झा रिपोर्टिंग: नेपालक मिथिला-मैथिली समाचार'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) भाषा-राजनीति; मलंगियाक सिंहासन-वक्तव्य।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१६३१. 'जितेन्द्र झा रिपोर्टिंग: नेपालक मिथिला-मैथिली समाचार'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) भाषा-राजनीति; मलंगियाक सिंहासन-वक्तव्य।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१६३२. 'जितेन्द्र झा रिपोर्टिंग: नेपालक मिथिला-मैथिली समाचार'कें रिपोर्ताज रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) भाषा-राजनीति; मलंगियाक सिंहासन-वक्तव्य।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१६३३. 'जितेन्द्र झा रिपोर्टिंग: नेपालक मिथिला-मैथिली समाचार'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक भाषा-राजनीति; मलंगियाक सिंहासन-वक्तव्य। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१६३४. 'जितेन्द्र झा रिपोर्टिंग: नेपालक मिथिला-मैथिली समाचार'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) भाषा-राजनीति; मलंगियाक सिंहासन-वक्तव्य।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१६३५. 'जितेन्द्र झा रिपोर्टिंग: नेपालक मिथिला-मैथिली समाचार'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) भाषा-राजनीति; मलंगियाक सिंहासन-वक्तव्य।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१६३६. 'जितेन्द्र झा रिपोर्टिंग: नेपालक मिथिला-मैथिली समाचार'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) भाषा-राजनीति; मलंगियाक सिंहासन-वक्तव्य।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१६३७. 'जितेन्द्र झा रिपोर्टिंग: नेपालक मिथिला-मैथिली समाचार' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) भाषा-राजनीति; मलंगियाक सिंहासन-वक्तव्य।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१६३८. 'जितेन्द्र झा रिपोर्टिंग: नेपालक मिथिला-मैथिली समाचार'मे रिपोर्ताजक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) रिपोर्ताजक रूप भाषा-राजनीति; मलंगियाक सिंहासन-वक्तव्य। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१६३९. 'जितेन्द्र झा रिपोर्टिंग: नेपालक मिथिला-मैथिली समाचार' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ भाषा-राजनीति; मलंगियाक सिंहासन-वक्तव्य। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5269 : विदेह-सदेह 16 — ज्योति प्रकाश लाल — आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व

१६४०. 'आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) कम्प्युटर साक्षरता; सॉफ्टवेयर-हार्डवेयर सुझाव।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१६४१. 'आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) कम्प्युटर साक्षरता; सॉफ्टवेयर-हार्डवेयर सुझाव।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१६४२. 'आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व'कें निबन्ध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) कम्प्युटर साक्षरता; सॉफ्टवेयर-हार्डवेयर सुझाव।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१६४३. 'आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक कम्प्युटर साक्षरता; सॉफ्टवेयर-हार्डवेयर सुझाव। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१६४४. 'आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) कम्प्युटर साक्षरता; सॉफ्टवेयर-हार्डवेयर सुझाव।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१६४५. 'आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) कम्प्युटर साक्षरता; सॉफ्टवेयर-हार्डवेयर सुझाव।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१६४६. 'आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) कम्प्युटर साक्षरता; सॉफ्टवेयर-हार्डवेयर सुझाव।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१६४७. 'आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) कम्प्युटर साक्षरता; सॉफ्टवेयर-हार्डवेयर सुझाव।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१६४८. 'आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व'मे निबन्धक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) निबन्धक रूप कम्प्युटर साक्षरता; सॉफ्टवेयर-हार्डवेयर सुझाव। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१६४९. 'आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ कम्प्युटर साक्षरता; सॉफ्टवेयर-हार्डवेयर सुझाव। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5270 : विदेह-सदेह 16 — सुशांत झा — की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?

१६५०. 'की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) मौर्य-पालकालीन किलाक पुरातात्विक विवरण।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१६५१. 'की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) मौर्य-पालकालीन किलाक पुरातात्विक विवरण।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१६५२. 'की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?'केँ शोध-निबन्ध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) मौर्य-पालकालीन किलाक पुरातात्विक विवरण।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१६५३. 'की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक मौर्य-पालकालीन किलाक पुरातात्विक विवरण। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१६५४. 'की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) मौर्य-पालकालीन किलाक पुरातात्विक विवरण।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१६५५. 'की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) मौर्य-पालकालीन किलाक पुरातात्विक विवरण।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१६५६. 'की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?' मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) मौर्य-पालकालीन किलाक पुरातात्विक विवरण।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१६५७. 'की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) मौर्य-पालकालीन किलाक पुरातात्विक विवरण।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१६५८. 'की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?' मे शोध-निबन्धक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) शोध-निबन्धक रूप मौर्य-पालकालीन किलाक पुरातात्विक विवरण। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१६५९. 'की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ मौर्य-पालकालीन किलाक पुरातात्विक विवरण। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5271 : विदेह-सदेह 16 — प्रेमशंकर सिंह — बीसम शताब्दी: स्वर्णिम युग (कथा-नाटक-निबन्ध)

१६६०. 'बीसम शताब्दी: स्वर्णिम युग (कथा-नाटक-निबन्ध)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) हरिमोहन-मणिपद्म परम्परा; निबन्धमे व्यंग्य।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१६६१. 'बीसम शताब्दी: स्वर्णिम युग (कथा-नाटक-निबन्ध)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) हरिमोहन-मणिपद्म परम्परा; निबन्धमे व्यंग्य।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१६६२. 'बीसम शताब्दी: स्वर्णिम युग (कथा-नाटक-निबन्ध)'केँ साहित्येतिहास रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) हरिमोहन-मणिपद्म परम्परा; निबन्धमे व्यंग्य।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१६६३. 'बीसम शताब्दी: स्वर्णिम युग (कथा-नाटक-निबन्ध)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक हरिमोहन-मणिपद्म परम्परा; निबन्धमे व्यंग्य। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१६६४. 'बीसम शताब्दी: स्वर्णिम युग (कथा-नाटक-निबन्ध)' में पाठक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) हरिमोहन-मणिपद्म परम्परा; निबन्धमे व्यंग्य।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१६६५. 'बीसम शताब्दी: स्वर्णिम युग (कथा-नाटक-निबन्ध)' क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) हरिमोहन-मणिपद्म परम्परा; निबन्धमे व्यंग्य।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१६६६. 'बीसम शताब्दी: स्वर्णिम युग (कथा-नाटक-निबन्ध)' में सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) हरिमोहन-मणिपद्म परम्परा; निबन्धमे व्यंग्य।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१६६७. 'बीसम शताब्दी: स्वर्णिम युग (कथा-नाटक-निबन्ध)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) हरिमोहन-मणिपद्म परम्परा; निबन्धमे व्यंग्य। क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१६६८. 'बीसम शताब्दी: स्वर्णिम युग (कथा-नाटक-निबन्ध)' में साहित्येतिहासक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) साहित्येतिहासक रूप हरिमोहन-मणिपद्म परम्परा; निबन्धमे व्यंग्य। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१६६९. 'बीसम शताब्दी: स्वर्णिम युग (कथा-नाटक-निबन्ध)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ हरिमोहन-मणिपद्म परम्परा; निबन्धमे व्यंग्य। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5272 : विदेह-सदेह 16 — गजेन्द्र ठाकुर — सहस्रबाढ़नि (आगाँ)

१६७०. 'सहस्रबाढ़नि (आगाँ)' क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) नन्दक तांत्रिकक जालमे फँसबाक प्रसंग।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१६७१. 'सहस्रबाढ़नि (आगाँ)' में कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) नन्दक तांत्रिकक जालमे फँसबाक प्रसंग।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१६७२. 'सहस्रबाढ़नि (आगाँ)'कें उपन्यास रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) नन्दक तांत्रिकक जालमे फँसबाक प्रसंग।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१६७३. 'सहस्रबाढ़नि (आगाँ)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक नन्दक तांत्रिकक जालमे फँसबाक प्रसंग। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१६७४. 'सहस्रबाढ़नि (आगाँ)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) नन्दक तांत्रिकक जालमे फँसबाक प्रसंग।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१६७५. 'सहस्रबाढ़नि (आगाँ)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) नन्दक तांत्रिकक जालमे फँसबाक प्रसंग।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१६७६. 'सहस्रबाढ़नि (आगाँ)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) नन्दक तांत्रिकक जालमे फँसबाक प्रसंग।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१६७७. 'सहस्रबाढ़नि (आगाँ)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) नन्दक तांत्रिकक जालमे फँसबाक प्रसंग।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१६७८. 'सहस्रबाढ़नि (आगाँ)'मे उपन्यासक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) उपन्यासक रूप नन्दक तांत्रिकक जालमे फँसबाक प्रसंग। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१६७९. 'सहस्रबाढ़नि (आगाँ)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ नन्दक तांत्रिकक जालमे फँसबाक प्रसंग। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5273 : विदेह-सदेह 16 — ज्योति झा चौधरी — दैनिकी (तेसर दिन)

१६८०. 'दैनिकी (तेसर दिन)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) बिरला तारामण्डल, नेहरू चिल्ड्रन्स म्यूजियम।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१६८१. 'दैनिकी (तेसर दिन)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) बिरला तारामण्डल, नेहरू चिल्ड्रन्स म्यूजियम।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१६८२. 'दैनिकी (तेसर दिन)'कें यात्रा-वृत्तान्त रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) बिरला तारामण्डल, नेहरू चिल्ड्रन्स म्यूजियम।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१६८३. 'दैनिकी (तेसर दिन)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक बिरला तारामण्डल, नेहरू चिल्ड्रन्स म्यूजियम। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१६८४. 'दैनिकी (तेसर दिन)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) बिरला तारामण्डल, नेहरू चिल्ड्रन्स म्यूजियम।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१६८५. 'दैनिकी (तेसर दिन)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) बिरला तारामण्डल, नेहरू चिल्ड्रन्स म्यूजियम।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१६८६. 'दैनिकी (तेसर दिन)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) बिरला तारामण्डल, नेहरू चिल्ड्रन्स म्यूजियम।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१६८७. 'दैनिकी (तेसर दिन)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) बिरला तारामण्डल, नेहरू चिल्ड्रन्स म्यूजियम।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१६८८. 'दैनिकी (तेसर दिन)' मे यात्रा-वृत्तान्तक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) यात्रा-वृत्तान्तक रूप बिरला तारामण्डल, नेहरू चिल्ड्रन्स म्यूजियम। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१६८९. 'दैनिकी (तेसर दिन)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ बिरला तारामण्डल, नेहरू चिल्ड्रन्स म्यूजियम। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5274 : विदेह-सदेह 16 — सम्पादकीय — हरिमोहन झा समग्र (रचना-सूची आ समर्पण)

१६९०. 'हरिमोहन झा समग्र (रचना-सूची आ समर्पण)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) कन्यादान, खट्टर ककाक समर्पण; कृति-सूची।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१६९१. 'हरिमोहन झा समग्र (रचना-सूची आ समर्पण)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) कन्यादान, खट्टर ककाक समर्पण; कृति-सूची।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१६९२. 'हरिमोहन झा समग्र (रचना-सूची आ समर्पण)'केँ शोध-निबन्ध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) कन्यादान, खट्टर ककाक समर्पण; कृति-सूची।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१६९३. 'हरिमोहन झा समग्र (रचना-सूची आ समर्पण)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक कन्यादान, खट्टर ककाक समर्पण; कृति-सूची। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१६९४. 'हरिमोहन झा समग्र (रचना-सूची आ समर्पण)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) कन्यादान, खट्टर ककाक समर्पण; कृति-सूची।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१६९५. 'हरिमोहन झा समग्र (रचना-सूची आ समर्पण)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) कन्यादान, खट्टर ककाक समर्पण; कृति-सूची।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१६९६. 'हरिमोहन झा समग्र (रचना-सूची आ समर्पण)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) कन्यादान, खट्टर ककाक समर्पण; कृति-सूची।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१६९७. 'हरिमोहन झा समग्र (रचना-सूची आ समर्पण)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) कन्यादान, खट्टर ककाक समर्पण; कृति-सूची।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१६९८. 'हरिमोहन झा समग्र (रचना-सूची आ समर्पण)'मे शोध-निबन्धक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) शोध-निबन्धक रूप कन्यादान, खट्टर ककाक समर्पण; कृति-सूची। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१६९९. 'हरिमोहन झा समग्र (रचना-सूची आ समर्पण)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ कन्यादान, खट्टर ककाक समर्पण; कृति-सूची। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5275 : विदेह-सदेह 16 — जितमोहन झा — थम्हने राखू ई डोरी (वृद्ध-समस्या)

१७००. 'थम्हने राखू ई डोरी (वृद्ध-समस्या)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) बुजुर्गक उपेक्षा पर संवेदनशील टिप्पणी।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१७०१. 'थम्हने राखू ई डोरी (वृद्ध-समस्या)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) बुजुर्गक उपेक्षा पर संवेदनशील टिप्पणी।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१७०२. 'थम्हने राखू ई डोरी (वृद्ध-समस्या)'केँ सामाजिक लेख रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) बुजुर्गक उपेक्षा पर संवेदनशील टिप्पणी।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१७०३. 'थम्हने राखू ई डोरी (वृद्ध-समस्या)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक बुजुर्गक उपेक्षा पर संवेदनशील टिप्पणी। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१७०४. 'थम्हने राखू ई डोरी (वृद्ध-समस्या)' मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) बुजुर्गक उपेक्षा पर संवेदनशील टिप्पणी।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१७०५. 'थम्हने राखू ई डोरी (वृद्ध-समस्या)' क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) बुजुर्गक उपेक्षा पर संवेदनशील टिप्पणी।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१७०६. 'थम्हने राखू ई डोरी (वृद्ध-समस्या)' मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) बुजुर्गक उपेक्षा पर संवेदनशील टिप्पणी।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१७०७. 'थम्हने राखू ई डोरी (वृद्ध-समस्या)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) बुजुर्गक उपेक्षा पर संवेदनशील टिप्पणी। क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१७०८. 'थम्हने राखू ई डोरी (वृद्ध-समस्या)' मे सामाजिक लेखक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) सामाजिक लेखक रूप बुजुर्गक उपेक्षा पर संवेदनशील टिप्पणी। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१७०९. 'थम्हने राखू ई डोरी (वृद्ध-समस्या)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ बुजुर्गक उपेक्षा पर संवेदनशील टिप्पणी। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5276 : विदेह-सदेह 16 — उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' — अन्तर्द्वन्द्व (नचिकेता)

१७१०. 'अन्तर्द्वन्द्व (नचिकेता)' क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) ज्वालामुखीक प्रतीकात्मकता; शब्द-अर्थक दर्शन।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१७११. 'अन्तर्द्वन्द्व (नचिकेता)' मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ज्वालामुखीक प्रतीकात्मकता; शब्द-अर्थक दर्शन।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१७१२. 'अन्तर्द्वन्द्व (नचिकेता)'कें पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) ज्वालामुखीक प्रतीकात्मकता; शब्द-अर्थक दर्शन।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१७१३. 'अन्तर्द्वन्द्व (नचिकेता)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक ज्वालामुखीक प्रतीकात्मकता; शब्द-अर्थक दर्शन। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१७१४. 'अन्तर्द्वन्द्व (नचिकेता)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) ज्वालामुखीक प्रतीकात्मकता; शब्द-अर्थक दर्शन।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१७१५. 'अन्तर्द्वन्द्व (नचिकेता)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) ज्वालामुखीक प्रतीकात्मकता; शब्द-अर्थक दर्शन।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१७१६. 'अन्तर्द्वन्द्व (नचिकेता)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) ज्वालामुखीक प्रतीकात्मकता; शब्द-अर्थक दर्शन।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१७१७. 'अन्तर्द्वन्द्व (नचिकेता)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) ज्वालामुखीक प्रतीकात्मकता; शब्द-अर्थक दर्शन।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१७१८. 'अन्तर्द्वन्द्व (नचिकेता)'मे पद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) पद्यक रूप ज्वालामुखीक प्रतीकात्मकता; शब्द-अर्थक दर्शन। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१७१९. 'अन्तर्द्वन्द्व (नचिकेता)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ ज्वालामुखीक प्रतीकात्मकता; शब्द-अर्थक दर्शन। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5277 : विदेह-सदेह 16 — विनीत उत्पल — ककर गलती / मनुखो नहि भेल (उत्पल)

१७२०. 'ककर गलती / मनुखो नहि भेल (उत्पल)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) विधवा-जीवन; प्रवासी-अस्मिता।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१७२१. 'ककर गलती / मनुखो नहि भेल (उत्पल)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) विधवा-जीवन; प्रवासी-अस्मिता।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१७२२. 'ककर गलती / मनुखो नहि भेल (उत्पल)'कें पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) विधवा-जीवन; प्रवासी-अस्मिता।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१७२३. 'ककर गलती / मनुखो नहि भेल (उत्पल)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक विधवा-जीवन; प्रवासी-अस्मिता। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१७२४. 'ककर गलती / मनुखो नहि भेल (उत्पल)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) विधवा-जीवन; प्रवासी-अस्मिता।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१७२५. 'ककर गलती / मनुखो नहि भेल (उत्पल)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) विधवा-जीवन; प्रवासी-अस्मिता।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१७२६. 'ककर गलती / मनुखो नहि भेल (उत्पल)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) विधवा-जीवन; प्रवासी-अस्मिता।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१७२७. 'ककर गलती / मनुखो नहि भेल (उत्पल)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) विधवा-जीवन; प्रवासी-अस्मिता।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१७२८. 'ककर गलती / मनुखो नहि भेल (उत्पल)' मे पद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) पद्यक रूप विधवा-जीवन; प्रवासी-अस्मिता। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१७२९. 'ककर गलती / मनुखो नहि भेल (उत्पल)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ विधवा-जीवन; प्रवासी-अस्मिता। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5278 : विदेह-सदेह 16 — रामजी चौधरी — विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन भैरवी/विहाग/चैत)

१७३०. 'विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन भैरवी/विहाग/चैत)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) राम-शिव-गौरीक भक्ति; चैत-विरहक लोक-राग।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१७३१. 'विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन भैरवी/विहाग/चैत)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) राम-शिव-गौरीक भक्ति; चैत-विरहक लोक-राग।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१७३२. 'विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन भैरवी/विहाग/चैत)'केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) राम-शिव-गौरीक भक्ति; चैत-विरहक लोक-राग।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१७३३. 'विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन भैरवी/विहाग/चैत)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक राम-शिव-गौरीक भक्ति; चैत-विरहक लोक-राग। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१७३४. 'विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन भैरवी/विहाग/चैत)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) राम-शिव-गौरीक भक्ति; चैत-विरहक लोक-राग।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१७३५. 'विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन भैरवी/विहाग/चैत)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) राम-शिव-गौरीक भक्ति; चैत-विरहक लोक-राग।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थधारित पठन करब

१७३६. 'विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन भैरवी/विहाग/चैत)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) राम-शिव-गौरीक भक्ति; चैत-विरहक लोक-राग।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१७३७. 'विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन भैरवी/विहाग/चैत)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) राम-शिव-गौरीक भक्ति; चैत-विरहक लोक-राग।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१७३८. 'विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन भैरवी/विहाग/चैत)'मे पद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) पद्यक रूप राम-शिव-गौरीक भक्ति; चैत-विरहक लोक-राग। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१७३९. 'विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजन भैरवी/विहाग/चैत)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ राम-शिव-गौरीक भक्ति; चैत-विरहक लोक-राग। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5279 : विदेह-सदेह 16 — गंगेश गुंजन — राधा (दोसर खेप)

१७४०. 'राधा (दोसर खेप)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) देह-पिजरामे आत्माक मुक्ति-आकांक्षा।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१७४१. 'राधा (दोसर खेप)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) देह-पिजरामे आत्माक मुक्ति-आकांक्षा।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१७४२. 'राधा (दोसर खेप)'केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) देह-पिजरामे आत्माक मुक्ति-आकांक्षा।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१७४३. 'राधा (दोसर खेप)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक देह-पिजरामे आत्माक मुक्ति-आकांक्षा। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१७४४. 'राधा (दोसर खेप)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) देह-पिजरामे आत्माक मुक्ति-आकांक्षा।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१७४५. 'राधा (दोसर खेप)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) देह-पिजरामे आत्माक मुक्ति-आकांक्षा।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१७४६. 'राधा (दोसर खेप)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) देह-पिजरामे आत्माक मुक्ति-आकांक्षा।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१७४७. 'राधा (दोसर खेप)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) देह-पिजरामे आत्माक मुक्ति-आकांक्षा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१७४८. 'राधा (दोसर खेप)'मे पद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) पद्यक रूप देह-पिजरामे आत्माक मुक्ति-आकांक्षा। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१७४९. 'राधा (दोसर खेप)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ देह-पिजरामे आत्माक मुक्ति-आकांक्षा। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5280 : विदेह-सदेह 16 — ज्योति झा चौधरी — खरहाक भोज

१७५०. 'खरहाक भोज'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) परिश्रम बिना फल-प्राप्ति नहि।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१७५१. 'खरहाक भोज'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) परिश्रम बिना फल-प्राप्ति नहि।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१७५२. 'खरहाक भोज'कें पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) परिश्रम बिना फल-प्राप्ति नहि।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१७५३. 'खरहाक भोज'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक परिश्रम बिना फल-प्राप्ति नहि। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१७५४. 'खरहाक भोज'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) परिश्रम बिना फल-प्राप्ति नहि।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१७५५. 'खरहाक भोज'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) परिश्रम बिना फल-प्राप्ति नहि।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१७५६. 'खरहाक भोज'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) परिश्रम बिना फल-प्राप्ति नहि।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१७५७. 'खरहाक भोज' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) परिश्रम बिना फल-प्राप्ति नहि।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१७५८. 'खरहाक भोज'मे पद्यक रूप कथ्य कें कोना सहारा दैत अछि?

- (A) पद्यक रूप परिश्रम बिना फल-प्राप्ति नहि। कें स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकें मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१७५९. 'खरहाक भोज' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकें परिश्रम बिना फल-प्राप्ति नहि। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5281 : विदेह-सदेह 16 — प्रकाश झा — हमर मिथिलाक दर्शन

१७६०. 'हमर मिथिलाक दर्शन'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) मिथिलाक लोक-जीवनक गौरव-गान।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१७६१. 'हमर मिथिलाक दर्शन'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) मिथिलाक लोक-जीवनक गौरव-गान।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१७६२. 'हमर मिथिलाक दर्शन'कें पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) मिथिलाक लोक-जीवनक गौरव-गान।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१७६३. 'हमर मिथिलाक दर्शन'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक मिथिलाक लोक-जीवनक गौरव-गान। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१७६४. 'हमर मिथिलाक दर्शन'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) मिथिलाक लोक-जीवनक गौरव-गान।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१७६५. 'हमर मिथिलाक दर्शन'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) मिथिलाक लोक-जीवनक गौरव-गान।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१७६६. 'हमर मिथिलाक दर्शन'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) मिथिलाक लोक-जीवनक गौरव-गान।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१७६७. 'हमर मिथिलाक दर्शन' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) मिथिलाक लोक-जीवनक गौरव-गान।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१७६८. 'हमर मिथिलाक दर्शन'मे पद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) पद्यक रूप मिथिलाक लोक-जीवनक गौरव-गान। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१७६९. 'हमर मिथिलाक दर्शन' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ मिथिलाक लोक-जीवनक गौरव-गान। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5282 : विदेह-सदेह 16 — शैलेन्द्र मोहन झा — सपना

१७७०. 'सपना'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) आधुनिक युवा-प्रणयक रोचक गीतात्मक कविता।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१७७१. 'सपना'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) आधुनिक युवा-प्रणयक रोचक गीतात्मक कविता।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१७७२. 'सपना'केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) आधुनिक युवा-प्रणयक रोचक गीतात्मक कविता।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१७७३. 'सपना'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक आधुनिक युवा-प्रणयक रोचक गीतात्मक कविता। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१७७४. 'सपना'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) आधुनिक युवा-प्रणयक रोचक गीतात्मक कविता।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१७७५. 'सपना'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) आधुनिक युवा-प्रणयक रोचक गीतात्मक कविता।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१७७६. 'सपना'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) आधुनिक युवा-प्रणयक रोचक गीतात्मक कविता।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१७७७. 'सपना' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) आधुनिक युवा-प्रणयक रोचक गीतात्मक कविता।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१७७८. 'सपना'मे पद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) पद्यक रूप आधुनिक युवा-प्रणयक रोचक गीतात्मक कविता। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१७७९. 'सपना' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ आधुनिक युवा-प्रणयक रोचक गीतात्मक कविता। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5283 : विदेह-सदेह 16 — गजेन्द्र ठाकुर — महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व शर-शय्या सँ द्रोण-पर्व

१७८०. 'महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व शर-शय्या सँ द्रोण-पर्व'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) भीष्मक गेरुआ-प्रसंग; कर्णक सेनापत्य।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१७८१. 'महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व शर-शय्या सँ द्रोण-पर्व'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) भीष्मक गेरुआ-प्रसंग; कर्णक सेनापत्य।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१७८२. 'महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व शर-शय्या सँ द्रोण-पर्व'केँ पद्य-कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) भीष्मक गेरुआ-प्रसंग; कर्णक सेनापत्य।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१७८३. 'महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व शर-शय्या सँ द्रोण-पर्व'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक भीष्मक गेरुआ-प्रसंग; कर्णक सेनापत्य। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१७८४. 'महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व शर-शय्या सँ द्रोण-पर्व'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) भीष्मक गेरुआ-प्रसंग; कर्णक सेनापत्य।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१७८५. 'महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व शर-शय्या सँ द्रोण-पर्व'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) भीष्मक गेरुआ-प्रसंग; कर्णक सेनापत्य।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१७८६. 'महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व शर-शय्या सँ द्रोण-पर्व'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) भीष्मक गेरुआ-प्रसंग; कर्णक सेनापत्य।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१७८७. 'महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व शर-शय्या सँ द्रोण-पर्व' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) भीष्मक गेरुआ-प्रसंग; कर्णक सेनापत्य।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१७८८. 'महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व शर-शय्या सँ द्रोण-पर्व'मे पद्य-कथाक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) पद्य-कथाक रूप भीष्मक गेरुआ-प्रसंग; कर्णक सेनापत्य। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१७८९. 'महाभारत (आगाँ): भीष्म-पर्व शर-शय्या सँ द्रोण-पर्व' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ भीष्मक गेरुआ-प्रसंग; कर्णक सेनापत्य। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5284 : विदेह-सदेह 16 — गजेन्द्र ठाकुर — संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)

१७९०. 'संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) आचार्य-पाद-चतुष्टय; ऐतिहासिक सम्भाषण।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१७९१. 'संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) आचार्य-पाद-चतुष्टय; ऐतिहासिक सम्भाषण।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१७९२. 'संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगों)'कें शिक्षा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) आचार्य-पाद-चतुष्टय; ऐतिहासिक सम्भाषण।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१७९३. 'संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगों)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक आचार्य-पाद-चतुष्टय; ऐतिहासिक सम्भाषण। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१७९४. 'संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगों)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) आचार्य-पाद-चतुष्टय; ऐतिहासिक सम्भाषण।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१७९५. 'संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगों)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) आचार्य-पाद-चतुष्टय; ऐतिहासिक सम्भाषण।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१७९६. 'संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगों)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) आचार्य-पाद-चतुष्टय; ऐतिहासिक सम्भाषण।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१७९७. 'संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगों)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) आचार्य-पाद-चतुष्टय; ऐतिहासिक सम्भाषण।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१७९८. 'संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगों)'मे शिक्षाक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) शिक्षाक रूप आचार्य-पाद-चतुष्टय; ऐतिहासिक सम्भाषण। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१७९९. 'संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगों)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ आचार्य-पाद-चतुष्टय; ऐतिहासिक सम्भाषण। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5285 : विदेह-सदेह 16 — तुलिका — मिथिला कला: देवोत्थान अरिपन

१८००. 'मिथिला कला: देवोत्थान अरिपन'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला पारम्परिक अरिपन।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१८०१. 'मिथिला कला: देवोत्थान अरिपन'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला पारम्परिक अरिपन।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१८०२. 'मिथिला कला: देवोत्थान अरिपन'कें कला रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला पारम्परिक अरिपन।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१८०३. 'मिथिला कला: देवोत्थान अरिपन'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला पारम्परिक अरिपन। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१८०४. 'मिथिला कला: देवोत्थान अरिपन'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला पारम्परिक अरिपन।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१८०५. 'मिथिला कला: देवोत्थान अरिपन'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला पारम्परिक अरिपन।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१८०६. 'मिथिला कला: देवोत्थान अरिपन'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला पारम्परिक अरिपन।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१८०७. 'मिथिला कला: देवोत्थान अरिपन' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला पारम्परिक अरिपन।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१८०८. 'मिथिला कला: देवोत्थान अरिपन' मे कलाक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) कलाक रूप तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला पारम्परिक अरिपन। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१८०९. 'मिथिला कला: देवोत्थान अरिपन' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला पारम्परिक अरिपन। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5286 : विदेह-सदेह 16 — प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन' — पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: भगवती

१८१०. 'पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: भगवती'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) सप्तमातृका, दशमहाविद्या, चौसठ योगिनी।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१८११. 'पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: भगवती'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) सप्तमातृका, दशमहाविद्या, चौसठ योगिनी।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१८१२. 'पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: भगवती'केँ शोध-निबन्ध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) सप्तमातृका, दशमहाविद्या, चौसठ योगिनी।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१८१३. 'पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: भगवती'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक सप्तमातृका, दशमहाविद्या, चौसठ योगिनी। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१८१४. 'पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: भगवती'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) सप्तमातृका, दशमहाविद्या, चौसठ योगिनी।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१८१५. 'पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: भगवती'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) सप्तमातृका, दशमहाविद्या, चौसठ योगिनी।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थधारित पठन करब

१८१६. 'पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: भगवती'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) सप्तमातृका, दशमहाविद्या, चौसठ योगिनी।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१८१७. 'पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: भगवती' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) सप्तमातृका, दशमहाविद्या, चौसठ योगिनी।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१८१८. 'पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: भगवती'मे शोध-निबन्धक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) शोध-निबन्धक रूप सप्तमातृका, दशमहाविद्या, चौसठ योगिनी। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१८१९. 'पंचदेवोपासक भूमि मिथिला: भगवती' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ सप्तमातृका, दशमहाविद्या, चौसठ योगिनी। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5287 : विदेह-सदेह 16 — गजेन्द्र ठाकुर / नूतन झा — कृष्णाष्टमी/जन्माष्टमी; कुशी अमावस्या

१८२०. 'कृष्णाष्टमी/जन्माष्टमी; कुशी अमावस्या'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) व्रत-कथा आ कुश-उपाटनक मंत्र।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१८२१. 'कृष्णाष्टमी/जन्माष्टमी; कुशी अमावस्या'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) व्रत-कथा आ कुश-उपाटनक मंत्र।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१८२२. 'कृष्णाष्टमी/जन्माष्टमी; कुशी अमावस्या'केँ निबन्ध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) व्रत-कथा आ कुश-उपाटनक मंत्र।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१८२३. 'कृष्णाष्टमी/जन्माष्टमी; कुशी अमावस्या'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक व्रत-कथा आ कुश-उपाटनक मंत्र। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१८२४. 'कृष्णाष्टमी/जन्माष्टमी; कुशी अमावस्या'मे पाठक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) व्रत-कथा आ कुश-उपाटनक मंत्र।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१८२५. 'कृष्णाष्टमी/जन्माष्टमी; कुशी अमावस्या'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) व्रत-कथा आ कुश-उपाटनक मंत्र।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१८२६. 'कृष्णाष्टमी/जन्माष्टमी; कुशी अमावस्या'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) व्रत-कथा आ कुश-उपाटनक मंत्र।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१८२७. 'कृष्णाष्टमी/जन्माष्टमी; कुशी अमावस्या' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) व्रत-कथा आ कुश-उपाटनक मंत्र।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१८२८. 'कृष्णाष्टमी/जन्माष्टमी; कुशी अमावस्या'मे निबन्धक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) निबन्धक रूप व्रत-कथा आ कुश-उपाटनक मंत्र। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१८२९. 'कृष्णाष्टमी/जन्माष्टमी; कुशी अमावस्या' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ व्रत-कथा आ कुश-उपाटनक मंत्र। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5288 : विदेह-सदेह 16 — रामाश्रय झा 'रामरंग' — राग विद्यापति कल्याण (त्रिताल मध्य लय)

१८३०. 'राग विद्यापति कल्याण (त्रिताल मध्य लय)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) शिव-स्तुति पर आधारित मैथिली बंदिशक स्वरलिपि।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१८३१. 'राग विद्यापति कल्याण (त्रिताल मध्य लय)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) शिव-स्तुति पर आधारित मैथिली बंदिशक स्वरलिपि।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१८३२. 'राग विद्यापति कल्याण (त्रिताल मध्य लय)' के संगीत रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) शिव-स्तुति पर आधारित मैथिली बंदिशक स्वरलिपि।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१८३३. 'राग विद्यापति कल्याण (त्रिताल मध्य लय)' क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक शिव-स्तुति पर आधारित मैथिली बंदिशक स्वरलिपि। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१८३४. 'राग विद्यापति कल्याण (त्रिताल मध्य लय)' मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) शिव-स्तुति पर आधारित मैथिली बंदिशक स्वरलिपि।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१८३५. 'राग विद्यापति कल्याण (त्रिताल मध्य लय)' क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) शिव-स्तुति पर आधारित मैथिली बंदिशक स्वरलिपि।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१८३६. 'राग विद्यापति कल्याण (त्रिताल मध्य लय)' मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) शिव-स्तुति पर आधारित मैथिली बंदिशक स्वरलिपि।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१८३७. 'राग विद्यापति कल्याण (त्रिताल मध्य लय)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) शिव-स्तुति पर आधारित मैथिली बंदिशक स्वरलिपि। क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१८३८. 'राग विद्यापति कल्याण (त्रिताल मध्य लय)' मे संगीतक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) संगीतक रूप शिव-स्तुति पर आधारित मैथिली बंदिशक स्वरलिपि। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१८३९. 'राग विद्यापति कल्याण (त्रिताल मध्य लय)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ शिव-स्तुति पर आधारित मैथिली बंदिशक स्वरलिपि। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5289 : विदेह-सदेह 16 — गजेन्द्र ठाकुर — रघुनी मरर

१८४०. 'रघुनी मरर'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) देवी-भक्त रघुनीक जादू-टोनासँ संघर्ष।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१८४१. 'रघुनी मरर'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) देवी-भक्त रघुनीक जादू-टोनासँ संघर्ष।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१८४२. 'रघुनी मरर'कें बाल-कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) देवी-भक्त रघुनीक जादू-टोनासँ संघर्ष।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१८४३. 'रघुनी मरर'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक देवी-भक्त रघुनीक जादू-टोनासँ संघर्ष। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१८४४. 'रघुनी मरर'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) देवी-भक्त रघुनीक जादू-टोनासँ संघर्ष।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१८४५. 'रघुनी मरर'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) देवी-भक्त रघुनीक जादू-टोनासँ संघर्ष।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१८४६. 'रघुनी मरर'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) देवी-भक्त रघुनीक जादू-टोनासँ संघर्ष।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१८४७. 'रघुनी मरर' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) देवी-भक्त रघुनीक जादू-टोनासँ संघर्ष।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१८४८. 'रघुनी मरर'मे बाल-कथाक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) बाल-कथाक रूप देवी-भक्त रघुनीक जादू-टोनासँ संघर्ष। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१८४९. 'रघुनी मरर' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ देवी-भक्त रघुनीक जादू-टोनासँ संघर्ष। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तरमाला — अध्याय २ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (A) तमिल — मुताल्लिफ तमिल भाषा बजैत छथि, जे नाटकक भाषिक-संकटक केन्द्रीय थीम बनैत अछि — कियो हुनकर भाषा नहि बुझैत छथि।

२. (A) भाषा अनुवादक (बा अनुवादिका) — नाटकमे एक विशेष पात्र 'भाषा अनुवादक (बा अनुवादिका)' मुताल्लिफक इशारा-भाषाकेँ बजि कऽ अन्य पात्रकेँ बुझाबैत अछि।

३. (A) कोर्टक हाजत (जेल जाइत क्रममे) — नाटकक प्रथम अंक कोर्टक हाजतमे आरम्भ होइत अछि, जतय मुताल्लिफकेँ जेल लऽ जाओल जा रहल अछि।

४. (A) मादक पदार्थ-तस्करीसँ सम्बद्ध — ओकीलक कथन अनुसार मुताल्लिफपर मादक पदार्थ-तस्करीसँ सम्बद्ध अपराधक आरोप अछि, यद्यपि खुफिया अधिकारी एकरा एकटा छोट कड़ी (शतरंजक प्यादा) मात्र मानैत छथि।

५. (A) तस्करक सरदार — हबीबुल्ला नाटकमे तस्करक सरदार (मुख्य अपराधी) क भूमिकाक पात्र छथि।

६. (A) दिल्लीक तिहार जेल — मुताल्लिफकेँ दिल्लीक तिहार जेलमे राखल जेबाक प्रस्ताव अछि, जतय तमिलनाडु पुलिसक एक टुकड़ी सेहो जाइ छथि।

७. (A) एकटा तमिल-भाषी ओकील — एकटा तमिल-भाषी ओकील सोझाँ अबैत छथि, जे एहन भाषिक-संकटसँ ग्रसित तमिल भाषी सभक मुकदमा लड़ने छथि — मुदा ओ सरकारी ओकील होएबाक कारणे मुताल्लिफक पक्षमे खुलेआम नहि बाजि सकैत छथि।

८. (A) समाजमे असमानता आ भाग्यक भेद — लुल्हा (पाँव-पैदल बाबाधाम जाइनिहार) आ पीअर बच्चा (हवागाड़ीसँ जाइनिहार) क प्रसंग समाजमे आर्थिक असमानता आ भाग्यक भेदक प्रतीकात्मक उप-कथा थिक।

९. (A) भाषिक अल्पसंख्यक, न्याय-व्यवस्था आ सामाजिक असमानताक अन्तर्संबंध — 'मचण्ड' नाटक भाषिक अल्पसंख्यकक संकट (मुताल्लिफक तमिल भाषा), न्याय-व्यवस्थाक जटिलता आ सामाजिक असमानता — तीनू विषयकेँ एक संग गूँथैत अछि।

१०. (A) सदेह १६ मे रचना — सूचकांक पंक्ति 1254मे साहित्यकारक नामक प्रविष्टि "सदेह १६ मे रचना" रूपमे देल अछि।

११. (B) विधा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "विधा" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१२. (C) उप-विधा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "उप-विधा" अछि।

१३. (D) समालोचनात्मक टिप्पणी — टिप्पणीक पहिल संकेत "समालोचनात्मक टिप्पणी" अछि।

१४. (A) समालोचनात्मक टिप्पणी — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "समालोचनात्मक टिप्पणी" रूपमे देखाइत अछि।

१५. (B) लेखक साहित्यकारक नाम, विधा विधा, उप-विधा उप-विधा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१७. (D) ई पाठ उप-विधाक रूपमे विधा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१९. (B) खण्ड 2563, सूचकांक पंक्ति 1254मे साहित्यकारक नामक "सदेह १६ मे रचना" प्रविष्टि विधा, उप-विधा आ "समालोचनात्मक टिप्पणी" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२०. (A) मचण्ड (नाटक) — सूचकांक पंक्ति 1255मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि "मचण्ड (नाटक)" रूपमे देल अछि।

२१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२२. (C) नाटक — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाटक” अछि।
२३. (D) आतंकवाद — टिप्पणीक पहिल संकेत “आतंकवाद” अछि।
२४. (A) आतंकवाद — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आतंकवाद” रूपमे देखाइत अछि।
२५. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा नाटक — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२७. (D) ई पाठ नाटकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२९. (B) खण्ड 2564, सूचकांक पंक्ति 1255मे गजेन्द्र ठाकुरक “मचण्ड (नाटक)” प्रविष्टि गद्य, नाटक आ “आतंकवाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३०. (A) कियो बूझि नै सकल हमरा — गजलकार श्री ओम प्रकाश झा पर आलेख — सूचकांक पंक्ति 1256मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “कियो बूझि नै सकल हमरा — गजलकार श्री ओम प्रकाश झा पर आलेख” रूपमे देल अछि।
३१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३२. (C) आलेख/समालोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख/समालोचना” अछि।
३३. (D) गजलकार ओम प्रकाश झाक गजल-कलाक विवेचन — टिप्पणीक पहिल संकेत “गजलकार ओम प्रकाश झाक गजल-कलाक विवेचन” अछि।
३४. (A) गजलकार ओम प्रकाश झाक गजल-कलाक विवेचन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गजलकार ओम प्रकाश झाक गजल-कलाक विवेचन” रूपमे देखाइत अछि।
३५. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा आलेख/समालोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३७. (D) ई पाठ आलेख/समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३९. (B) खण्ड 2565, सूचकांक पंक्ति 1256मे गजेन्द्र ठाकुरक “कियो बूझि नै सकल हमरा — गजलकार श्री ओम प्रकाश झा पर आलेख” प्रविष्टि गद्य, आलेख/समालोचना आ “गजलकार ओम प्रकाश झाक गजल-कलाक विवेचन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४०. (A) रेस (बाल विहिन) — सूचकांक पंक्ति 1257मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “रेस (बाल विहिन)” रूपमे देल अछि।
४१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४२. (C) बाल विहिन — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल विहिन” अछि।
४३. (D) खेल-भावना — टिप्पणीक पहिल संकेत “खेल-भावना” अछि।
४४. (A) खेल-भावना — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “खेल-भावना” रूपमे देखाइत अछि।
४५. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा बाल विहिन — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४७. (D) ई पाठ बाल विहिनक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४९. (B) खण्ड 2566, सूचकांक पंक्ति 1257मे गजेन्द्र ठाकुरक “रेस (बाल विहिन)” प्रविष्टि गद्य, बाल विहिन आ “खेल-भावना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५०. (A) संपादकीय — मैथिली विकिपीडिया, 'सगर राति दीप जरय' इतिहास — सूचकांक पंक्ति 1258मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “संपादकीय — मैथिली विकिपीडिया, 'सगर राति दीप जरय' इतिहास” रूपमे देल अछि।
५१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५२. (C) सम्पादकीय — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सम्पादकीय” अछि।
५३. (D) मैथिली विकिपीडियाक ऐतिहासिक दस्तावेज — टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली विकिपीडियाक ऐतिहासिक दस्तावेज” अछि।
५४. (A) मैथिली विकिपीडियाक ऐतिहासिक दस्तावेज — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली विकिपीडियाक ऐतिहासिक दस्तावेज” रूपमे देखाइत अछि।
५५. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा सम्पादकीय — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५७. (D) ई पाठ सम्पादकीयक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५९. (B) खण्ड 2567, सूचकांक पंक्ति 1258मे गजेन्द्र ठाकुरक “संपादकीय — मैथिली विकिपीडिया, 'सगर राति दीप जरय' इतिहास” प्रविष्टि गद्य, सम्पादकीय आ “मैथिली विकिपीडियाक ऐतिहासिक दस्तावेज” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६०. (A) प्रेमक अधिकार — सूचकांक पंक्ति 1259मे अक्षय कुमार झाक प्रविष्टि “प्रेमक अधिकार” रूपमे देल अछि।
६१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६२. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।
६३. (D) पारिवारिक सम्बन्धक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण — टिप्पणीक पहिल संकेत “पारिवारिक सम्बन्धक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण” अछि।
६४. (A) पारिवारिक सम्बन्धक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पारिवारिक सम्बन्धक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण” रूपमे देखाइत अछि।
६५. (B) लेखक अक्षय कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६७. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६९. (B) खण्ड 2568, सूचकांक पंक्ति 1259मे अक्षय कुमार झाक “प्रेमक अधिकार” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “पारिवारिक सम्बन्धक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७०. (A) पलभरि — सूचकांक पंक्ति 1260मे जगदीश प्रसाद मण्डलक प्रविष्टि “पलभरि” रूपमे देल अछि।
७१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७२. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
७३. (D) यथार्थवादी — टिप्पणीक पहिल संकेत “यथार्थवादी” अछि।
७४. (A) यथार्थवादी — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “यथार्थवादी” रूपमे देखाइत अछि।
७५. (B) लेखक जगदीश प्रसाद मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
७६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७७. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

७८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७९. (B) खण्ड 2569, सूचकांक पंक्ति 1260मे जगदीश प्रसाद मण्डलक “पलभरि” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “यथार्थवादी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८०. (A) रिजल्ट — सूचकांक पंक्ति 1261मे जगदीश प्रसाद मण्डलक प्रविष्टि “रिजल्ट” रूपमे देल अछि।
८१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८२. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
८३. (D) परीक्षा-परिणामक चिन्ता — टिप्पणीक पहिल संकेत “परीक्षा-परिणामक चिन्ता” अछि।
८४. (A) परीक्षा-परिणामक चिन्ता — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “परीक्षा-परिणामक चिन्ता” रूपमे देखाइत अछि।
८५. (B) लेखक जगदीश प्रसाद मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
८६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८७. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
८८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८९. (B) खण्ड 2570, सूचकांक पंक्ति 1261मे जगदीश प्रसाद मण्डलक “रिजल्ट” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “परीक्षा-परिणामक चिन्ता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
९०. (A) अजोह — सूचकांक पंक्ति 1262मे उमेश पासवानक प्रविष्टि “अजोह” रूपमे देल अछि।
९१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
९२. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
९३. (D) बाल-जीवनक शरारत — टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल-जीवनक शरारत” अछि।
९४. (A) बाल-जीवनक शरारत — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल-जीवनक शरारत” रूपमे देखाइत अछि।
९५. (B) लेखक उमेश पासवान, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
९६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
९७. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
९८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
९९. (B) खण्ड 2571, सूचकांक पंक्ति 1262मे उमेश पासवानक “अजोह” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “बाल-जीवनक शरारत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१००. (A) दुष्टपना — सूचकांक पंक्ति 1263मे लक्ष्मी दासक प्रविष्टि “दुष्टपना” रूपमे देल अछि।
१०१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१०२. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।
१०३. (D) किसानक पीड़ा — टिप्पणीक पहिल संकेत “किसानक पीड़ा” अछि।
१०४. (A) किसानक पीड़ा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “किसानक पीड़ा” रूपमे देखाइत अछि।
१०५. (B) लेखक लक्ष्मी दास, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१०६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१०७. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

१०८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१०९. (B) खण्ड 2572, सूचकांक पंक्ति 1263मे लक्ष्मी दासक “दुष्टपना” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “किसानक पीड़ा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
११०. (A) खजाना — सूचकांक पंक्ति 1264मे योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क प्रविष्टि “खजाना” रूपमे देल अछि।
१११. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
११२. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
११३. (D) प्रवासी बालक — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रवासी बालक” अछि।
११४. (A) प्रवासी बालक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रवासी बालक” रूपमे देखाइत अछि।
११५. (B) लेखक योगेन्द्र पाठक 'वियोगी', विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
११६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
११७. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
११८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
११९. (B) खण्ड 2573, सूचकांक पंक्ति 1264मे योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “खजाना” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “प्रवासी बालक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१२०. (A) विजय (१ आ २) — सूचकांक पंक्ति 1265मे योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क प्रविष्टि “विजय (१ आ २)” रूपमे देल अछि।
१२१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१२२. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
१२३. (D) नारी सशक्तिकरण — टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी सशक्तिकरण” अछि।
१२४. (A) नारी सशक्तिकरण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी सशक्तिकरण” रूपमे देखाइत अछि।
१२५. (B) लेखक योगेन्द्र पाठक 'वियोगी', विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१२६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१२७. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१२८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१२९. (B) खण्ड 2574, सूचकांक पंक्ति 1265मे योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “विजय (१ आ २)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नारी सशक्तिकरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१३०. (A) बेटी रूपी बोझ — सूचकांक पंक्ति 1266मे जे.पी.गुप्ता 'प्रसिद्ध मोनूजी'क प्रविष्टि “बेटी रूपी बोझ” रूपमे देल अछि।
१३१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१३२. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
१३३. (D) दहेज प्रथा — टिप्पणीक पहिल संकेत “दहेज प्रथा” अछि।
१३४. (A) दहेज प्रथा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दहेज प्रथा” रूपमे देखाइत अछि।
१३५. (B) लेखक जे.पी.गुप्ता 'प्रसिद्ध मोनूजी', विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१३६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१३७. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

१३८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१३९. (B) खण्ड 2575, सूचकांक पंक्ति 1266मे जे.पी.गुप्ता 'प्रसिद्ध मोनूजी'क “बेटी रूपी बोझ” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “दहेज प्रथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१४०. (A) की करब से अहीं कहू (विहिनि कथा) — सूचकांक पंक्ति 1267मे शारदा नन्द सिंहक प्रविष्टि “की करब से अहीं कहू (विहिनि कथा)” रूपमे देल अछि।
१४१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१४२. (C) विहिनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “विहिनि कथा” अछि।
१४३. (D) ग्रामीण ऋणग्रस्तता — टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण ऋणग्रस्तता” अछि।
१४४. (A) ग्रामीण ऋणग्रस्तता — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण ऋणग्रस्तता” रूपमे देखाइत अछि।
१४५. (B) लेखक शारदा नन्द सिंह, विधा गद्य, उप-विधा विहिनि कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१४६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१४७. (D) ई पाठ विहिनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१४८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१४९. (B) खण्ड 2576, सूचकांक पंक्ति 1267मे शारदा नन्द सिंहक “की करब से अहीं कहू (विहिनि कथा)” प्रविष्टि गद्य, विहिनि कथा आ “ग्रामीण ऋणग्रस्तता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१५०. (A) बडका खीरा — सूचकांक पंक्ति 1268मे कपिलेश्वर राउतक प्रविष्टि “बडका खीरा” रूपमे देल अछि।
१५१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१५२. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
१५३. (D) प्रयोगात्मक कृषि — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रयोगात्मक कृषि” अछि।
१५४. (A) प्रयोगात्मक कृषि — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रयोगात्मक कृषि” रूपमे देखाइत अछि।
१५५. (B) लेखक कपिलेश्वर राउत, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१५६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१५७. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१५८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१५९. (B) खण्ड 2577, सूचकांक पंक्ति 1268मे कपिलेश्वर राउतक “बडका खीरा” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “प्रयोगात्मक कृषि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१६०. (A) अधला — सूचकांक पंक्ति 1269मे कपिलेश्वर राउतक प्रविष्टि “अधला” रूपमे देल अछि।
१६१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१६२. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
१६३. (D) लोक-कथा शैली — टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक-कथा शैली” अछि।
१६४. (A) लोक-कथा शैली — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक-कथा शैली” रूपमे देखाइत अछि।
१६५. (B) लेखक कपिलेश्वर राउत, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१६६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१६७. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

१६८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१६९. (B) खण्ड 2578, सूचकांक पंक्ति 1269मे कपिलेश्वर राउतक “अधला” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “लोक-कथा शैली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१७०. (A) बुधि — सूचकांक पंक्ति 1270मे दुर्गानन्द मण्डलक प्रविष्टि “बुधि” रूपमे देल अछि।
१७१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१७२. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
१७३. (D) लोक-कथा रंग — टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक-कथा रंग” अछि।
१७४. (A) लोक-कथा रंग — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक-कथा रंग” रूपमे देखाइत अछि।
१७५. (B) लेखक दुर्गानन्द मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१७६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१७७. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१७८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१७९. (B) खण्ड 2579, सूचकांक पंक्ति 1270मे दुर्गानन्द मण्डलक “बुधि” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “लोक-कथा रंग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१८०. (A) छुतहरि — सूचकांक पंक्ति 1271मे दुर्गानन्द मण्डलक प्रविष्टि “छुतहरि” रूपमे देल अछि।
१८१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१८२. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
१८३. (D) सामाजिक मूल्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक मूल्य” अछि।
१८४. (A) सामाजिक मूल्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक मूल्य” रूपमे देखाइत अछि।
१८५. (B) लेखक दुर्गानन्द मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१८६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१८७. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१८८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१८९. (B) खण्ड 2580, सूचकांक पंक्ति 1271मे दुर्गानन्द मण्डलक “छुतहरि” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “सामाजिक मूल्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१९०. (A) रुसल बौआ (बाल विहिन) — सूचकांक पंक्ति 1272मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “रुसल बौआ (बाल विहिन)” रूपमे देल अछि।
१९१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१९२. (C) विहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “विहिन कथा” अछि।
१९३. (D) बाल-मनोविज्ञान — टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल-मनोविज्ञान” अछि।
१९४. (A) बाल-मनोविज्ञान — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल-मनोविज्ञान” रूपमे देखाइत अछि।
१९५. (B) लेखक राजदेव मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा विहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१९६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१९७. (D) ई पाठ विहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१९८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१९९. (B) खण्ड 2581, सूचकांक पंक्ति 1272मे राजदेव मण्डलक “रुसल बौआ (बाल विहिन)” प्रविष्टि गद्य, विहिन कथा आ “बाल-मनोविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२००. (A) दोख केकर — सूचकांक पंक्ति 1273मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “दोख केकर” रूपमे देल अछि।
२०१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२०२. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।
२०३. (D) सास-बहू सम्बन्ध — टिप्पणीक पहिल संकेत “सास-बहू सम्बन्ध” अछि।
२०४. (A) सास-बहू सम्बन्ध — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सास-बहू सम्बन्ध” रूपमे देखाइत अछि।
२०५. (B) लेखक राजदेव मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२०६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२०७. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२०८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२०९. (B) खण्ड 2582, सूचकांक पंक्ति 1273मे राजदेव मण्डलक “दोख केकर” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “सास-बहू सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२१०. (A) जाल (पटकथा) — सूचकांक पंक्ति 1274मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “जाल (पटकथा)” रूपमे देल अछि।
२११. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२१२. (C) पटकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पटकथा” अछि।
२१३. (D) मैथिली पटकथाक प्रथम प्रयोग — टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली पटकथाक प्रथम प्रयोग” अछि।
२१४. (A) मैथिली पटकथाक प्रथम प्रयोग — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली पटकथाक प्रथम प्रयोग” रूपमे देखाइत अछि।
२१५. (B) लेखक राजदेव मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा पटकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२१६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२१७. (D) ई पाठ पटकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२१८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२१९. (B) खण्ड 2583, सूचकांक पंक्ति 1274मे राजदेव मण्डलक “जाल (पटकथा)” प्रविष्टि गद्य, पटकथा आ “मैथिली पटकथाक प्रथम प्रयोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२२०. (A) गतिविधि; सांस्कृतिक सम्मानसँ मजबुत हएत राष्ट्रियता: बिमल — सूचकांक पंक्ति 1275मे जितेन्द्र झाक प्रविष्टि “गतिविधि; सांस्कृतिक सम्मानसँ मजबुत हएत राष्ट्रियता: बिमल” रूपमे देल अछि।
२२१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२२२. (C) रिपोर्टाज — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्टाज” अछि।
२२३. (D) नेपाल — टिप्पणीक पहिल संकेत “नेपाल” अछि।
२२४. (A) नेपाल — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नेपाल” रूपमे देखाइत अछि।
२२५. (B) लेखक जितेन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्टाज — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२२६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२२७. (D) ई पाठ रिपोर्टाजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२२८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२२९. (B) खण्ड 2584, सूचकांक पंक्ति 1275मे जितेन्द्र झाक “गतिविधि; सांस्कृतिक सम्मानसँ मजबुत हएत राष्ट्रियता: बिमल” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२३०. (A) सभासद् साह फरार — की भेटत जनकपुर बमकाण्ड पीडितके न्याय? — सूचकांक पंक्ति 1276मे जितेन्द्र झाक प्रविष्टि “सभासद् साह फरार — की भेटत जनकपुर बमकाण्ड पीडितके न्याय?” रूपमे देल अछि।
२३१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२३२. (C) रिपोर्ताज — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।
२३३. (D) जनकपुर बमकाण्डक राजनीतिक विश्लेषण — टिप्पणीक पहिल संकेत “जनकपुर बमकाण्डक राजनीतिक विश्लेषण” अछि।
२३४. (A) जनकपुर बमकाण्डक राजनीतिक विश्लेषण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जनकपुर बमकाण्डक राजनीतिक विश्लेषण” रूपमे देखाइत अछि।
२३५. (B) लेखक जितेन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२३६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२३७. (D) ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२३८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२३९. (B) खण्ड 2585, सूचकांक पंक्ति 1276मे जितेन्द्र झाक “सभासद् साह फरार — की भेटत जनकपुर बमकाण्ड पीडितके न्याय?” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “जनकपुर बमकाण्डक राजनीतिक विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२४०. (A) अनमोल झा जीक “टेकनोलजी” क समीक्षा — सूचकांक पंक्ति 1277मे जगदानन्द झा ‘मनु’क प्रविष्टि “अनमोल झा जीक “टेकनोलजी” क समीक्षा” रूपमे देल अछि।
२४१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२४२. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
२४३. (D) विहिनि कथा संग्रहक सूक्ष्म समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “विहिनि कथा संग्रहक सूक्ष्म समीक्षा” अछि।
२४४. (A) विहिनि कथा संग्रहक सूक्ष्म समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विहिनि कथा संग्रहक सूक्ष्म समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
२४५. (B) लेखक जगदानन्द झा ‘मनु’, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२४६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२४७. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२४८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२४९. (B) खण्ड 2586, सूचकांक पंक्ति 1277मे जगदानन्द झा ‘मनु’क “अनमोल झा जीक “टेकनोलजी” क समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “विहिनि कथा संग्रहक सूक्ष्म समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२५०. (A) मैथिलीमे एकरूपताक अभाव — सूचकांक पंक्ति 1278मे जगदानन्द झा ‘मनु’क प्रविष्टि “मैथिलीमे एकरूपताक अभाव” रूपमे देल अछि।
२५१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२५२. (C) भाषा-निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भाषा-निबन्ध” अछि।
२५३. (D) मानक मैथिलीक पैरवी — टिप्पणीक पहिल संकेत “मानक मैथिलीक पैरवी” अछि।
२५४. (A) मानक मैथिलीक पैरवी — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मानक मैथिलीक पैरवी” रूपमे देखाइत अछि।

२५५. (B) लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा भाषा-निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२५६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२५७. (D) ई पाठ भाषा-निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२५८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२५९. (B) खण्ड 2587, सूचकांक पंक्ति 1278मे जगदानन्द झा 'मनु'क “मैथिलीमे एकरूपताक अभाव” प्रविष्टि गद्य, भाषा-निबन्ध आ “मानक मैथिलीक पैरवी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२६०. (A) मनुखक जीवन — सूचकांक पंक्ति 1279मे जगदानन्द झा 'मनु'क प्रविष्टि “मनुखक जीवन” रूपमे देल अछि।
२६१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२६२. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।
२६३. (D) मनुष्यताक दार्शनिक प्रश्न — टिप्पणीक पहिल संकेत “मनुष्यताक दार्शनिक प्रश्न” अछि।
२६४. (A) मनुष्यताक दार्शनिक प्रश्न — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मनुष्यताक दार्शनिक प्रश्न” रूपमे देखाइत अछि।
२६५. (B) लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२६६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२६७. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२६८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२६९. (B) खण्ड 2588, सूचकांक पंक्ति 1279मे जगदानन्द झा 'मनु'क “मनुखक जीवन” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “मनुष्यताक दार्शनिक प्रश्न” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२७०. (A) बाबीक पिआर — सूचकांक पंक्ति 1280मे जगदानन्द झा 'मनु'क प्रविष्टि “बाबीक पिआर” रूपमे देल अछि।
२७१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२७२. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।
२७३. (D) प्रवासी सन्तानक मातृभूमि-प्रेम — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रवासी सन्तानक मातृभूमि-प्रेम” अछि।
२७४. (A) प्रवासी सन्तानक मातृभूमि-प्रेम — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रवासी सन्तानक मातृभूमि-प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।
२७५. (B) लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२७६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२७७. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२७८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२७९. (B) खण्ड 2589, सूचकांक पंक्ति 1280मे जगदानन्द झा 'मनु'क “बाबीक पिआर” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “प्रवासी सन्तानक मातृभूमि-प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२८०. (A) अरण्य देश — सूचकांक पंक्ति 1281मे सत्य नारायण झाक प्रविष्टि “अरण्य देश” रूपमे देल अछि।
२८१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२८२. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
२८३. (D) रूपकात्मक — टिप्पणीक पहिल संकेत “रूपकात्मक” अछि।
२८४. (A) रूपकात्मक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रूपकात्मक” रूपमे देखाइत अछि।

२८५. (B) लेखक सत्य नारायण झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२८६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२८७. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२८८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२८९. (B) खण्ड 2590, सूचकांक पंक्ति 1281मे सत्य नारायण झाक “अरण्य देश” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “रूपकात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२९०. (A) जनक (विहिनि कथा) — सूचकांक पंक्ति 1282मे सत्य नारायण झाक प्रविष्टि “जनक (विहिनि कथा)” रूपमे देल अछि।
२९१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२९२. (C) विहिनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “विहिनि कथा” अछि।
२९३. (D) पिता-पुत्र सम्बन्ध — टिप्पणीक पहिल संकेत “पिता-पुत्र सम्बन्ध” अछि।
२९४. (A) पिता-पुत्र सम्बन्ध — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पिता-पुत्र सम्बन्ध” रूपमे देखाइत अछि।
२९५. (B) लेखक सत्य नारायण झा, विधा गद्य, उप-विधा विहिनि कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२९६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२९७. (D) ई पाठ विहिनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२९८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२९९. (B) खण्ड 2591, सूचकांक पंक्ति 1282मे सत्य नारायण झाक “जनक (विहिनि कथा)” प्रविष्टि गद्य, विहिनि कथा आ “पिता-पुत्र सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३००. (A) निशीथ (विहिनि कथा) — सूचकांक पंक्ति 1283मे सत्य नारायण झाक प्रविष्टि “निशीथ (विहिनि कथा)” रूपमे देल अछि।
३०१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३०२. (C) विहिनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “विहिनि कथा” अछि।
३०३. (D) प्रेमक विरह — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेमक विरह” अछि।
३०४. (A) प्रेमक विरह — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेमक विरह” रूपमे देखाइत अछि।
३०५. (B) लेखक सत्य नारायण झा, विधा गद्य, उप-विधा विहिनि कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३०६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३०७. (D) ई पाठ विहिनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३०८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३०९. (B) खण्ड 2592, सूचकांक पंक्ति 1283मे सत्य नारायण झाक “निशीथ (विहिनि कथा)” प्रविष्टि गद्य, विहिनि कथा आ “प्रेमक विरह” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३१०. (A) बेचारा लोक — सूचकांक पंक्ति 1284मे सत्य नारायण झाक प्रविष्टि “बेचारा लोक” रूपमे देल अछि।
३११. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३१२. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
३१३. (D) आर्थिक विषमता — टिप्पणीक पहिल संकेत “आर्थिक विषमता” अछि।
३१४. (A) आर्थिक विषमता — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आर्थिक विषमता” रूपमे देखाइत अछि।
३१५. (B) लेखक सत्य नारायण झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३१६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठकके केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३१७. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३१८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३१९. (B) खण्ड 2593, सूचकांक पंक्ति 1284मे सत्य नारायण झाक “बेचारा लोक” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “आर्थिक विषमता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३२०. (A) स्मृति (विहिनि कथा) — सूचकांक पंक्ति 1285मे सत्य नारायण झाक प्रविष्टि “स्मृति (विहिनि कथा)” रूपमे देल अछि।
३२१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३२२. (C) विहिनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “विहिनि कथा” अछि।
३२३. (D) प्रेम-स्मृति — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम-स्मृति” अछि।
३२४. (A) प्रेम-स्मृति — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम-स्मृति” रूपमे देखाइत अछि।
३२५. (B) लेखक सत्य नारायण झा, विधा गद्य, उप-विधा विहिनि कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३२६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३२७. (D) ई पाठ विहिनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३२८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३२९. (B) खण्ड 2594, सूचकांक पंक्ति 1285मे सत्य नारायण झाक “स्मृति (विहिनि कथा)” प्रविष्टि गद्य, विहिनि कथा आ “प्रेम-स्मृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३३०. (A) गंगाजलक धोल — सूचकांक पंक्ति 1286मे लक्ष्मी दासक प्रविष्टि “गंगाजलक धोल” रूपमे देल अछि।
३३१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३३२. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।
३३३. (D) दाम्पत्य-जीवनक व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “दाम्पत्य-जीवनक व्यंग्य” अछि।
३३४. (A) दाम्पत्य-जीवनक व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दाम्पत्य-जीवनक व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।
३३५. (B) लेखक लक्ष्मी दास, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३३६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३३७. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३३८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३३९. (B) खण्ड 2595, सूचकांक पंक्ति 1286मे लक्ष्मी दासक “गंगाजलक धोल” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “दाम्पत्य-जीवनक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३४०. (A) छोटकी — सूचकांक पंक्ति 1287मे गौरी शंकर साहक प्रविष्टि “छोटकी” रूपमे देल अछि।
३४१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३४२. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
३४३. (D) चरित्र-प्रधान — टिप्पणीक पहिल संकेत “चरित्र-प्रधान” अछि।
३४४. (A) चरित्र-प्रधान — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चरित्र-प्रधान” रूपमे देखाइत अछि।
३४५. (B) लेखक गौरी शंकर साह, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३४६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३४७. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
३४८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३४९. (B) खण्ड 2596, सूचकांक पंक्ति 1287मे गौरी शंकर साहक “छोटकी” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “चरित्र-प्रधान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३५०. (A) सखारी-पेटारी करे तानी-भरनी (समीक्षा) — सूचकांक पंक्ति 1288मे डा. शिवकुमार प्रसादक प्रविष्टि “सखारी-पेटारी करे तानी-भरनी (समीक्षा)” रूपमे देल अछि।
३५१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३५२. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
३५३. (D) नन्द विलास रायकृत 'सखारी-पेटारी'क सूक्ष्म विश्लेषण — टिप्पणीक पहिल संकेत “नन्द विलास रायकृत 'सखारी-पेटारी'क सूक्ष्म विश्लेषण” अछि।
३५४. (A) नन्द विलास रायकृत 'सखारी-पेटारी'क सूक्ष्म विश्लेषण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नन्द विलास रायकृत 'सखारी-पेटारी'क सूक्ष्म विश्लेषण” रूपमे देखाइत अछि।
३५५. (B) लेखक डा. शिवकुमार प्रसाद, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
३५६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३५७. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
३५८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३५९. (B) खण्ड 2597, सूचकांक पंक्ति 1288मे डा. शिवकुमार प्रसादक “सखारी-पेटारी करे तानी-भरनी (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “नन्द विलास रायकृत 'सखारी-पेटारी'क सूक्ष्म विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३६०. (A) अदिया इमकी — सूचकांक पंक्ति 1289मे डा. शिवकुमार प्रसादक प्रविष्टि “अदिया इमकी” रूपमे देल अछि।
३६१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३६२. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
३६३. (D) शिक्षा व्यवस्था — टिप्पणीक पहिल संकेत “शिक्षा व्यवस्था” अछि।
३६४. (A) शिक्षा व्यवस्था — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शिक्षा व्यवस्था” रूपमे देखाइत अछि।
३६५. (B) लेखक डा. शिवकुमार प्रसाद, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
३६६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३६७. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
३६८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३६९. (B) खण्ड 2598, सूचकांक पंक्ति 1289मे डा. शिवकुमार प्रसादक “अदिया इमकी” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “शिक्षा व्यवस्था” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३७०. (A) कूलच्छनी — सूचकांक पंक्ति 1290मे ओम प्रकाश झाक प्रविष्टि “कूलच्छनी” रूपमे देल अछि।
३७१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३७२. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
३७३. (D) पुत्र-मोह आ पुत्री-उपेक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “पुत्र-मोह आ पुत्री-उपेक्षा” अछि।
३७४. (A) पुत्र-मोह आ पुत्री-उपेक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पुत्र-मोह आ पुत्री-उपेक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

३७५. (B) लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३७६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३७७. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३७८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३७९. (B) खण्ड 2599, सूचकांक पंक्ति 1290मे ओम प्रकाश झाक “कूलच्छनी” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “पुत्र-मोह आ पुत्री-उपेक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३८०. (A) बेटीक बिआह — सूचकांक पंक्ति 1291मे ओम प्रकाश झाक प्रविष्टि “बेटीक बिआह” रूपमे देल अछि।
३८१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३८२. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
३८३. (D) दहेज प्रथा पर करारा प्रहार — टिप्पणीक पहिल संकेत “दहेज प्रथा पर करारा प्रहार” अछि।
३८४. (A) दहेज प्रथा पर करारा प्रहार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दहेज प्रथा पर करारा प्रहार” रूपमे देखाइत अछि।
३८५. (B) लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३८६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३८७. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३८८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३८९. (B) खण्ड 2600, सूचकांक पंक्ति 1291मे ओम प्रकाश झाक “बेटीक बिआह” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “दहेज प्रथा पर करारा प्रहार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३९०. (A) शेफाली, फूलपरासवाली आ हम — सूचकांक पंक्ति 1292मे डॉ. कीर्तिनाथ झाक प्रविष्टि “शेफाली, फूलपरासवाली आ हम” रूपमे देल अछि।
३९१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३९२. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
३९३. (D) आत्म-कथात्मक — टिप्पणीक पहिल संकेत “आत्म-कथात्मक” अछि।
३९४. (A) आत्म-कथात्मक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आत्म-कथात्मक” रूपमे देखाइत अछि।
३९५. (B) लेखक डॉ. कीर्तिनाथ झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३९६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३९७. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३९८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३९९. (B) खण्ड 2601, सूचकांक पंक्ति 1292मे डॉ. कीर्तिनाथ झाक “शेफाली, फूलपरासवाली आ हम” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “आत्म-कथात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४००. (A) निरपेक्ष-गुट-निरपेक्ष (व्यंग्य निबन्ध) — सूचकांक पंक्ति 1293मे आशीष अनिचन्हारक प्रविष्टि “निरपेक्ष-गुट-निरपेक्ष (व्यंग्य निबन्ध)” रूपमे देल अछि।
४०१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४०२. (C) व्यंग्य निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य निबन्ध” अछि।
४०३. (D) तीख व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “तीख व्यंग्य” अछि।
४०४. (A) तीख व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “तीख व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

४०५. (B) लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
४०६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४०७. (D) ई पाठ व्यंग्य निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
४०८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४०९. (B) खण्ड 2602, सूचकांक पंक्ति 1293मे आशीष अनिचन्हारक “निरपेक्ष-गुट-निरपेक्ष (व्यंग्य निबन्ध)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य निबन्ध आ “तीख व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४१०. (A) लास्ट टाइम सजेशन (व्यंग्य निबन्ध) — सूचकांक पंक्ति 1294मे आशीष अनिचन्हारक प्रविष्टि “लास्ट टाइम सजेशन (व्यंग्य निबन्ध)” रूपमे देल अछि।
४११. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४१२. (C) व्यंग्य निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य निबन्ध” अछि।
४१३. (D) शिक्षा व्यवस्था पर करारा व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “शिक्षा व्यवस्था पर करारा व्यंग्य” अछि।
४१४. (A) शिक्षा व्यवस्था पर करारा व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शिक्षा व्यवस्था पर करारा व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।
४१५. (B) लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
४१६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४१७. (D) ई पाठ व्यंग्य निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
४१८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४१९. (B) खण्ड 2603, सूचकांक पंक्ति 1294मे आशीष अनिचन्हारक “लास्ट टाइम सजेशन (व्यंग्य निबन्ध)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य निबन्ध आ “शिक्षा व्यवस्था पर करारा व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४२०. (A) मैथिली गजल व्याकरणक शुरुआती प्रयोग (समालोचना) — सूचकांक पंक्ति 1295मे आशीष अनिचन्हारक प्रविष्टि “मैथिली गजल व्याकरणक शुरुआती प्रयोग (समालोचना)” रूपमे देल अछि।
४२१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४२२. (C) समालोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समालोचना” अछि।
४२३. (D) श्री गजेन्द्र ठाकुरकृत 'मैथिली गजल शास्त्र'क सूक्ष्म विवेचन — टिप्पणीक पहिल संकेत “श्री गजेन्द्र ठाकुरकृत 'मैथिली गजल शास्त्र'क सूक्ष्म विवेचन” अछि।
४२४. (A) श्री गजेन्द्र ठाकुरकृत 'मैथिली गजल शास्त्र'क सूक्ष्म विवेचन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “श्री गजेन्द्र ठाकुरकृत 'मैथिली गजल शास्त्र'क सूक्ष्म विवेचन” रूपमे देखाइत अछि।
४२५. (B) लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
४२६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४२७. (D) ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
४२८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४२९. (B) खण्ड 2604, सूचकांक पंक्ति 1295मे आशीष अनिचन्हारक “मैथिली गजल व्याकरणक शुरुआती प्रयोग (समालोचना)” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “श्री गजेन्द्र ठाकुरकृत 'मैथिली गजल शास्त्र'क सूक्ष्म विवेचन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४३०. (A) चिकनी माटिमे उपजल नागफेनी (समालोचना) — सूचकांक पंक्ति 1296मे आशीष अनिचन्हारक प्रविष्टि “चिकनी माटिमे उपजल नागफेनी (समालोचना)” रूपमे देल अछि।
४३१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४३२. (C) समालोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समालोचना” अछि।
४३३. (D) रमेशजीक गजल-संग्रह 'नागफेनी'क आलोचनात्मक विश्लेषण — टिप्पणीक पहिल संकेत “रमेशजीक गजल-संग्रह 'नागफेनी'क आलोचनात्मक विश्लेषण” अछि।
४३४. (A) रमेशजीक गजल-संग्रह 'नागफेनी'क आलोचनात्मक विश्लेषण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रमेशजीक गजल-संग्रह 'नागफेनी'क आलोचनात्मक विश्लेषण” रूपमे देखाइत अछि।
४३५. (B) लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४३६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४३७. (D) ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४३८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४३९. (B) खण्ड 2605, सूचकांक पंक्ति 1296मे आशीष अनिचन्हारक “चिकनी माटिमे उपजल नागफेनी (समालोचना)” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “रमेशजीक गजल-संग्रह 'नागफेनी'क आलोचनात्मक विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४४०. (A) मायानंद मिश्रक “मैथिली साहित्यिक इतिहास” (समालोचना) — सूचकांक पंक्ति 1297मे आशीष अनिचन्हारक प्रविष्टि “मायानंद मिश्रक “मैथिली साहित्यिक इतिहास” (समालोचना)” रूपमे देल अछि।
४४१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४४२. (C) समालोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समालोचना” अछि।
४४३. (D) इतिहास-लेखनक त्रुटिपर प्रश्नचिह्न — टिप्पणीक पहिल संकेत “इतिहास-लेखनक त्रुटिपर प्रश्नचिह्न” अछि।
४४४. (A) इतिहास-लेखनक त्रुटिपर प्रश्नचिह्न — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “इतिहास-लेखनक त्रुटिपर प्रश्नचिह्न” रूपमे देखाइत अछि।
४४५. (B) लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४४६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४४७. (D) ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४४८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४४९. (B) खण्ड 2606, सूचकांक पंक्ति 1297मे आशीष अनिचन्हारक “मायानंद मिश्रक “मैथिली साहित्यिक इतिहास” (समालोचना)” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “इतिहास-लेखनक त्रुटिपर प्रश्नचिह्न” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४५०. (A) मैथिली काव्यशास्त्रमे झारू छंदक अवधारणा — सूचकांक पंक्ति 1298मे आशीष अनिचन्हारक प्रविष्टि “मैथिली काव्यशास्त्रमे झारू छंदक अवधारणा” रूपमे देल अछि।
४५१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४५२. (C) शोध-आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-आलेख” अछि।
४५३. (D) रामदेव मण्डल 'झारूदार'क 'झारू छंद'क सैद्धान्तिकी — टिप्पणीक पहिल संकेत “रामदेव मण्डल 'झारूदार'क 'झारू छंद'क सैद्धान्तिकी” अछि।
४५४. (A) रामदेव मण्डल 'झारूदार'क 'झारू छंद'क सैद्धान्तिकी — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रामदेव मण्डल 'झारूदार'क 'झारू छंद'क सैद्धान्तिकी” रूपमे देखाइत अछि।
४५५. (B) लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४५६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४५७. (D) ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
४५८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४५९. (B) खण्ड 2607, सूचकांक पंक्ति 1298मे आशीष अनिचन्हारक “मैथिली काव्यशास्त्रमे झारू छंदक अवधारणा” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “रामदेव मण्डल 'झारूदार'क 'झारू छंद'क सैद्धान्तिकी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४६०. (A) नेपालक नोर मरुभूमिमे (समालोचना) — सूचकांक पंक्ति 1299मे आशीष अनिचन्हारक प्रविष्टि “नेपालक नोर मरुभूमिमे (समालोचना)” रूपमे देल अछि।
४६१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४६२. (C) समालोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समालोचना” अछि।
४६३. (D) विन्देश्वर ठाकुरक पोथीक समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “विन्देश्वर ठाकुरक पोथीक समीक्षा” अछि।
४६४. (A) विन्देश्वर ठाकुरक पोथीक समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विन्देश्वर ठाकुरक पोथीक समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
४६५. (B) लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
४६६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४६७. (D) ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
४६८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४६९. (B) खण्ड 2608, सूचकांक पंक्ति 1299मे आशीष अनिचन्हारक “नेपालक नोर मरुभूमिमे (समालोचना)” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “विन्देश्वर ठाकुरक पोथीक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४७०. (A) कलंकित चान (समालोचना) — सूचकांक पंक्ति 1300मे आशीष अनिचन्हारक प्रविष्टि “कलंकित चान (समालोचना)” रूपमे देल अछि।
४७१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४७२. (C) समालोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समालोचना” अछि।
४७३. (D) राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'क गजल-संग्रहक समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'क गजल-संग्रहक समीक्षा” अछि।
४७४. (A) राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'क गजल-संग्रहक समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'क गजल-संग्रहक समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
४७५. (B) लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
४७६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४७७. (D) ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
४७८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४७९. (B) खण्ड 2609, सूचकांक पंक्ति 1300मे आशीष अनिचन्हारक “कलंकित चान (समालोचना)” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'क गजल-संग्रहक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४८०. (A) तीन टा बिंदु — भाषा करे मनोविज्ञान — सूचकांक पंक्ति 1301मे आशीष अनिचन्हारक प्रविष्टि “तीन टा बिंदु — भाषा करे मनोविज्ञान” रूपमे देल अछि।
४८१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४८२. (C) शोध-आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-आलेख” अछि।
४८३. (D) भाषा-मनोविज्ञान — टिप्पणीक पहिल संकेत “भाषा-मनोविज्ञान” अछि।

४८४. (A) भाषा-मनोविज्ञान — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषा-मनोविज्ञान” रूपमे देखाइत अछि।
४८५. (B) लेखक आशीष अनिचन्हार, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४८६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४८७. (D) ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४८८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४८९. (B) खण्ड 2610, सूचकांक पंक्ति 1301मे आशीष अनिचन्हारक “तीन टा बिंदु — भाषा करे मनोविज्ञान” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “भाषा-मनोविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४९०. (A) सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा — सूचकांक पंक्ति 1302मे डॉ अरुण कुमार सिंहक प्रविष्टि “सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा” रूपमे देल अछि।
४९१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४९२. (C) शोध/क्षेत्रीय अध्ययन — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध/क्षेत्रीय अध्ययन” अछि।
४९३. (D) कोशी क्षेत्रक भौगोलिक-आर्थिक-सांस्कृतिक लेखा-जोखा — टिप्पणीक पहिल संकेत “कोशी क्षेत्रक भौगोलिक-आर्थिक-सांस्कृतिक लेखा-जोखा” अछि।
४९४. (A) कोशी क्षेत्रक भौगोलिक-आर्थिक-सांस्कृतिक लेखा-जोखा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कोशी क्षेत्रक भौगोलिक-आर्थिक-सांस्कृतिक लेखा-जोखा” रूपमे देखाइत अछि।
४९५. (B) लेखक डॉ अरुण कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा शोध/क्षेत्रीय अध्ययन — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४९६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४९७. (D) ई पाठ शोध/क्षेत्रीय अध्ययनक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४९८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४९९. (B) खण्ड 2611, सूचकांक पंक्ति 1302मे डॉ अरुण कुमार सिंहक “सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा” प्रविष्टि गद्य, शोध/क्षेत्रीय अध्ययन आ “कोशी क्षेत्रक भौगोलिक-आर्थिक-सांस्कृतिक लेखा-जोखा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५००. (A) बडका साहेव: परम्परागत संस्कार केर पराभव — भाग २ — सूचकांक पंक्ति 1303मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “बडका साहेव: परम्परागत संस्कार केर पराभव — भाग २” रूपमे देल अछि।
५०१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५०२. (C) नाटक-समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाटक-समीक्षा” अछि।
५०३. (D) ब्राह्मणवादी मानसिकताक पतन — टिप्पणीक पहिल संकेत “ब्राह्मणवादी मानसिकताक पतन” अछि।
५०४. (A) ब्राह्मणवादी मानसिकताक पतन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ब्राह्मणवादी मानसिकताक पतन” रूपमे देखाइत अछि।
५०५. (B) लेखक शिवकुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा नाटक-समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५०६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५०७. (D) ई पाठ नाटक-समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५०८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५०९. (B) खण्ड 2612, सूचकांक पंक्ति 1303मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “बडका साहेव: परम्परागत संस्कार केर पराभव — भाग २” प्रविष्टि गद्य, नाटक-समीक्षा आ “ब्राह्मणवादी मानसिकताक पतन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५१०. (A) दुःखक दुपहरिया: संसारी संवेदनाक तीख अनुभूति — सूचकांक पंक्ति 1304मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “दुःखक दुपहरिया: संसारी संवेदनाक तीख अनुभूति” रूपमे देल अछि।
५११. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५१२. (C) काव्य-समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “काव्य-समीक्षा” अछि।
५१३. (D) कवि संजेश गुंजनक काव्य-संकलनक समालोचना — टिप्पणीक पहिल संकेत “कवि संजेश गुंजनक काव्य-संकलनक समालोचना” अछि।
५१४. (A) कवि संजेश गुंजनक काव्य-संकलनक समालोचना — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कवि संजेश गुंजनक काव्य-संकलनक समालोचना” रूपमे देखाइत अछि।
५१५. (B) लेखक शिवकुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा काव्य-समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५१६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५१७. (D) ई पाठ काव्य-समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५१८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५१९. (B) खण्ड 2613, सूचकांक पंक्ति 1304मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “दुःखक दुपहरिया: संसारी संवेदनाक तीख अनुभूति” प्रविष्टि गद्य, काव्य-समीक्षा आ “कवि संजेश गुंजनक काव्य-संकलनक समालोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५२०. (A) देवीजी: बालमनोविज्ञानक सहज स्पर्शन — सूचकांक पंक्ति 1305मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “देवीजी: बालमनोविज्ञानक सहज स्पर्शन” रूपमे देल अछि।
५२१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५२२. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
५२३. (D) ज्योति झा चौधरीक बाल-साहित्यक विवेचन — टिप्पणीक पहिल संकेत “ज्योति झा चौधरीक बाल-साहित्यक विवेचन” अछि।
५२४. (A) ज्योति झा चौधरीक बाल-साहित्यक विवेचन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ज्योति झा चौधरीक बाल-साहित्यक विवेचन” रूपमे देखाइत अछि।
५२५. (B) लेखक शिवकुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५२६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५२७. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५२८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५२९. (B) खण्ड 2614, सूचकांक पंक्ति 1305मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “देवीजी: बालमनोविज्ञानक सहज स्पर्शन” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “ज्योति झा चौधरीक बाल-साहित्यक विवेचन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५३०. (A) सहज प्रवृत्तिक गुणात्मक प्रयोग: गुम्म भेल ठाढ़ छी — सूचकांक पंक्ति 1306मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “सहज प्रवृत्तिक गुणात्मक प्रयोग: गुम्म भेल ठाढ़ छी” रूपमे देल अछि।
५३१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५३२. (C) काव्य-समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “काव्य-समीक्षा” अछि।
५३३. (D) कवि सोपाल झा 'सोपेश'क काव्य-संग्रहक समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “कवि सोपाल झा 'सोपेश'क काव्य-संग्रहक समीक्षा” अछि।
५३४. (A) कवि सोपाल झा 'सोपेश'क काव्य-संग्रहक समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कवि सोपाल झा 'सोपेश'क काव्य-संग्रहक समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
५३५. (B) लेखक शिवकुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा काव्य-समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५३६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५३७. (D) ई पाठ काव्य-समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
५३८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५३९. (B) खण्ड 2615, सूचकांक पंक्ति 1306मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “सहज प्रवृत्तिक गुणात्मक प्रयोग: गुम्म भेल ठाढ़ छी” प्रविष्टि गद्य, काव्य-समीक्षा आ “कवि सोपाल झा 'सोपेश'क काव्य-संग्रहक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५४०. (A) घृष्ट शिरोमणि महामहोपाध्याय गोनु झा — सूचकांक पंक्ति 1307मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “घृष्ट शिरोमणि महामहोपाध्याय गोनु झा” रूपमे देल अछि।
५४१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५४२. (C) नाटक-समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाटक-समीक्षा” अछि।
५४३. (D) बैकुण्ठ झाक नाटकक समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “बैकुण्ठ झाक नाटकक समीक्षा” अछि।
५४४. (A) बैकुण्ठ झाक नाटकक समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बैकुण्ठ झाक नाटकक समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
५४५. (B) लेखक शिवकुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा नाटक-समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
५४६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५४७. (D) ई पाठ नाटक-समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
५४८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५४९. (B) खण्ड 2616, सूचकांक पंक्ति 1307मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “घृष्ट शिरोमणि महामहोपाध्याय गोनु झा” प्रविष्टि गद्य, नाटक-समीक्षा आ “बैकुण्ठ झाक नाटकक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५५०. (A) मैथिली बाल साहित्य उद्भव ओ विकास — सूचकांक पंक्ति 1308मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “मैथिली बाल साहित्य उद्भव ओ विकास” रूपमे देल अछि।
५५१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५५२. (C) शोध-आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-आलेख” अछि।
५५३. (D) बाल-साहित्यक इतिहास आ विधाक विकास-यात्रा — टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल-साहित्यक इतिहास आ विधाक विकास-यात्रा” अछि।
५५४. (A) बाल-साहित्यक इतिहास आ विधाक विकास-यात्रा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल-साहित्यक इतिहास आ विधाक विकास-यात्रा” रूपमे देखाइत अछि।
५५५. (B) लेखक शिवकुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
५५६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५५७. (D) ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
५५८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५५९. (B) खण्ड 2617, सूचकांक पंक्ति 1308मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “मैथिली बाल साहित्य उद्भव ओ विकास” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “बाल-साहित्यक इतिहास आ विधाक विकास-यात्रा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५६०. (A) “आब ओ नहि एथुन” (लघु कथा) — सूचकांक पंक्ति 1309मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “आब ओ नहि एथुन” (लघु कथा) रूपमे देल अछि।
५६१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५६२. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

५६३. (D) पारिवारिक सम्बन्ध — टिप्पणीक पहिल संकेत “पारिवारिक सम्बन्ध” अछि।
५६४. (A) पारिवारिक सम्बन्ध — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पारिवारिक सम्बन्ध” रूपमे देखाइत अछि।
५६५. (B) लेखक शिवकुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५६६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५६७. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५६८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५६९. (B) खण्ड 2618, सूचकांक पंक्ति 1309मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “आब ओ नहि एथुन” (लघु कथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “पारिवारिक सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५७०. (A) पेटक मारि (बाल विहिनि कथा) — सूचकांक पंक्ति 1310मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “पेटक मारि (बाल विहिनि कथा)” रूपमे देल अछि।
५७१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५७२. (C) बाल विहिनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल विहिनि कथा” अछि।
५७३. (D) हास्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य” अछि।
५७४. (A) हास्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “हास्य” रूपमे देखाइत अछि।
५७५. (B) लेखक शिवकुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा बाल विहिनि कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५७६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५७७. (D) ई पाठ बाल विहिनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५७८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५७९. (B) खण्ड 2619, सूचकांक पंक्ति 1310मे शिवकुमार झा 'टिल्लू'क “पेटक मारि (बाल विहिनि कथा)” प्रविष्टि गद्य, बाल विहिनि कथा आ “हास्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५८०. (A) सुजीतक गन्ध सुगन्ध छोडि रहल — सूचकांक पंक्ति 1311मे अमर कान्त अमरक प्रविष्टि “सुजीतक गन्ध सुगन्ध छोडि रहल” रूपमे देल अछि।
५८१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५८२. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
५८३. (D) सुजीत झाक रचना-संसारक सकारात्मक आकलन — टिप्पणीक पहिल संकेत “सुजीत झाक रचना-संसारक सकारात्मक आकलन” अछि।
५८४. (A) सुजीत झाक रचना-संसारक सकारात्मक आकलन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सुजीत झाक रचना-संसारक सकारात्मक आकलन” रूपमे देखाइत अछि।
५८५. (B) लेखक अमर कान्त अमर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५८६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५८७. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५८८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५८९. (B) खण्ड 2620, सूचकांक पंक्ति 1311मे अमर कान्त अमरक “सुजीतक गन्ध सुगन्ध छोडि रहल” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “सुजीत झाक रचना-संसारक सकारात्मक आकलन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५९०. (A) दूध — सूचकांक पंक्ति 1312मे उमेश मण्डलक प्रविष्टि “दूध” रूपमे देल अछि।

५९१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५९२. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
५९३. (D) हास्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य” अछि।
५९४. (A) हास्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “हास्य” रूपमे देखाइत अछि।
५९५. (B) लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५९६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५९७. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५९८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५९९. (B) खण्ड 2621, सूचकांक पंक्ति 1312मे उमेश मण्डलक “दूध” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “हास्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६००. (A) 81म सगर राति दीप जरए — देवघर (रिपोर्ताज) — सूचकांक पंक्ति 1313मे उमेश मण्डलक प्रविष्टि “81म सगर राति दीप जरए — देवघर (रिपोर्ताज)” रूपमे देल अछि।
६०१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६०२. (C) रिपोर्ताज — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।
६०३. (D) 'सगर राति' आन्दोलनक महत्वपूर्ण दस्तावेज — टिप्पणीक पहिल संकेत “'सगर राति' आन्दोलनक महत्वपूर्ण दस्तावेज” अछि।
६०४. (A) 'सगर राति' आन्दोलनक महत्वपूर्ण दस्तावेज — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “'सगर राति' आन्दोलनक महत्वपूर्ण दस्तावेज” रूपमे देखाइत अछि।
६०५. (B) लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६०६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६०७. (D) ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६०८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६०९. (B) खण्ड 2622, सूचकांक पंक्ति 1313मे उमेश मण्डलक “81म सगर राति दीप जरए — देवघर (रिपोर्ताज)” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “'सगर राति' आन्दोलनक महत्वपूर्ण दस्तावेज” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६१०. (A) मैथिली: सरकार आ हम सभ (भाषण) — सूचकांक पंक्ति 1314मे उमेश मण्डलक प्रविष्टि “मैथिली: सरकार आ हम सभ (भाषण)” रूपमे देल अछि।
६११. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६१२. (C) भाषण — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भाषण” अछि।
६१३. (D) भाषा-राजनीति — टिप्पणीक पहिल संकेत “भाषा-राजनीति” अछि।
६१४. (A) भाषा-राजनीति — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाषा-राजनीति” रूपमे देखाइत अछि।
६१५. (B) लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा भाषण — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६१६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६१७. (D) ई पाठ भाषणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६१८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६१९. (B) खण्ड 2623, सूचकांक पंक्ति 1314मे उमेश मण्डलक “मैथिली: सरकार आ हम सभ (भाषण)” प्रविष्टि गद्य, भाषण आ “भाषा-राजनीति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६२०. (A) 80म सगर राति — निर्मलीमे 45 गोट पोथीक लोकापर्ण (रिपोर्ताज) — सूचकांक पंक्ति 1315मे उमेश मण्डलक प्रविष्टि “80म सगर राति — निर्मलीमे 45 गोट पोथीक लोकापर्ण (रिपोर्ताज)” रूपमे देल अछि।
६२१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६२२. (C) रिपोर्ताज — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।
६२३. (D) सगर राति आन्दोलन — टिप्पणीक पहिल संकेत “सगर राति आन्दोलन” अछि।
६२४. (A) सगर राति आन्दोलन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सगर राति आन्दोलन” रूपमे देखाइत अछि।
६२५. (B) लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
६२६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६२७. (D) ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
६२८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६२९. (B) खण्ड 2624, सूचकांक पंक्ति 1315मे उमेश मण्डलक “80म सगर राति — निर्मलीमे 45 गोट पोथीक लोकापर्ण (रिपोर्ताज)” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “सगर राति आन्दोलन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६३०. (A) विदेह द्वारा मैथिली पोथी प्रदर्शनी (इतिहास) — सूचकांक पंक्ति 1316मे उमेश मण्डलक प्रविष्टि “विदेह द्वारा मैथिली पोथी प्रदर्शनी (इतिहास)” रूपमे देल अछि।
६३१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६३२. (C) इतिहास/दस्तावेज — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “इतिहास/दस्तावेज” अछि।
६३३. (D) विदेहक २८ टा पोथी प्रदर्शनीक सम्पूर्ण इतिहास — टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेहक २८ टा पोथी प्रदर्शनीक सम्पूर्ण इतिहास” अछि।
६३४. (A) विदेहक २८ टा पोथी प्रदर्शनीक सम्पूर्ण इतिहास — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विदेहक २८ टा पोथी प्रदर्शनीक सम्पूर्ण इतिहास” रूपमे देखाइत अछि।
६३५. (B) लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा इतिहास/दस्तावेज — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
६३६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६३७. (D) ई पाठ इतिहास/दस्तावेजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
६३८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६३९. (B) खण्ड 2625, सूचकांक पंक्ति 1316मे उमेश मण्डलक “विदेह द्वारा मैथिली पोथी प्रदर्शनी (इतिहास)” प्रविष्टि गद्य, इतिहास/दस्तावेज आ “विदेहक २८ टा पोथी प्रदर्शनीक सम्पूर्ण इतिहास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६४०. (A) मदन-अमर — सूचकांक पंक्ति 1317मे नन्द विलास रायक प्रविष्टि “मदन-अमर” रूपमे देल अछि।
६४१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६४२. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
६४३. (D) जातिगत भेदभाव — टिप्पणीक पहिल संकेत “जातिगत भेदभाव” अछि।
६४४. (A) जातिगत भेदभाव — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जातिगत भेदभाव” रूपमे देखाइत अछि।
६४५. (B) लेखक नन्द विलास राय, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
६४६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६४७. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
६४८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६४९. (B) खण्ड 2626, सूचकांक पंक्ति 1317मे नन्द विलास रायक “मदन-अमर” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “जातिगत भेदभाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६५०. (A) “सगर राधत दीप जरय” — ७९म आ ८०म आयोजनक रिपोर्टाज — सूचकांक पंक्ति 1318मे पूनम मण्डलक प्रविष्टि “सगर राधत दीप जरय” — ७९म आ ८०म आयोजनक रिपोर्टाज” रूपमे देल अछि।
६५१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६५२. (C) रिपोर्टाज — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्टाज” अछि।
६५३. (D) सगर राति आन्दोलनक कथा-गोष्ठीक विवरण — टिप्पणीक पहिल संकेत “सगर राति आन्दोलनक कथा-गोष्ठीक विवरण” अछि।
६५४. (A) सगर राति आन्दोलनक कथा-गोष्ठीक विवरण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सगर राति आन्दोलनक कथा-गोष्ठीक विवरण” रूपमे देखाइत अछि।
६५५. (B) लेखक पूनम मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्टाज — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
६५६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६५७. (D) ई पाठ रिपोर्टाजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
६५८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६५९. (B) खण्ड 2627, सूचकांक पंक्ति 1318मे पूनम मण्डलक “सगर राधत दीप जरय” — ७९म आ ८०म आयोजनक रिपोर्टाज” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्टाज आ “सगर राति आन्दोलनक कथा-गोष्ठीक विवरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६६०. (A) बाल-बोध — सूचकांक पंक्ति 1319मे राम विलास साहुक प्रविष्टि “बाल-बोध” रूपमे देल अछि।
६६१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६६२. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
६६३. (D) गरीबी — टिप्पणीक पहिल संकेत “गरीबी” अछि।
६६४. (A) गरीबी — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गरीबी” रूपमे देखाइत अछि।
६६५. (B) लेखक राम विलास साहु, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
६६६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६६७. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
६६८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६६९. (B) खण्ड 2628, सूचकांक पंक्ति 1319मे राम विलास साहुक “बाल-बोध” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “गरीबी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६७०. (A) धनुष यज्ञ — सीता स्वयंवर आ जयमाल — सूचकांक पंक्ति 1320मे सुरेन्द्र शैलक प्रविष्टि “धनुष यज्ञ — सीता स्वयंवर आ जयमाल” रूपमे देल अछि।
६७१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६७२. (C) शोध-आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-आलेख” अछि।
६७३. (D) पौराणिक परम्पराक विवेचन — टिप्पणीक पहिल संकेत “पौराणिक परम्पराक विवेचन” अछि।
६७४. (A) पौराणिक परम्पराक विवेचन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पौराणिक परम्पराक विवेचन” रूपमे देखाइत अछि।

६७५. (B) लेखक सुरेन्द्र शैल, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६७६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६७७. (D) ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६७८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६७९. (B) खण्ड 2629, सूचकांक पंक्ति 1320मे सुरेन्द्र शैलक “धनुष यज्ञ — सीता स्वयंवर आ जयमाल” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “पौराणिक परम्पराक विवेचन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६८०. (A) बस एकटा गल्फ्रेड — सूचकांक पंक्ति 1321मे अमित मिश्रक प्रविष्टि “बस एकटा गल्फ्रेड” रूपमे देल अछि।
६८१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६८२. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।
६८३. (D) व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “व्यंग्य” अछि।
६८४. (A) व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।
६८५. (B) लेखक अमित मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६८६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६८७. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६८८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६८९. (B) खण्ड 2630, सूचकांक पंक्ति 1321मे अमित मिश्रक “बस एकटा गल्फ्रेड” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६९०. (A) सासुरक साइधकलक कथा-बेथा — सूचकांक पंक्ति 1322मे डॉ. बचेश्वर झाक प्रविष्टि “सासुरक साइधकलक कथा-बेथा” रूपमे देल अछि।
६९१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६९२. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
६९३. (D) हास्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य” अछि।
६९४. (A) हास्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “हास्य” रूपमे देखाइत अछि।
६९५. (B) लेखक डॉ. बचेश्वर झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६९६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६९७. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६९८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६९९. (B) खण्ड 2631, सूचकांक पंक्ति 1322मे डॉ. बचेश्वर झाक “सासुरक साइधकलक कथा-बेथा” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “हास्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७००. (A) स्ट्रेस बस्टर — सूचकांक पंक्ति 1323मे जवाहर लाल कश्यपक प्रविष्टि “स्ट्रेस बस्टर” रूपमे देल अछि।
७०१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७०२. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
७०३. (D) नारी-पुरुष सम्बन्ध — टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी-पुरुष सम्बन्ध” अछि।
७०४. (A) नारी-पुरुष सम्बन्ध — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी-पुरुष सम्बन्ध” रूपमे देखाइत अछि।

७०५. (B) लेखक जवाहर लाल कश्यप, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
७०६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७०७. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
७०८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७०९. (B) खण्ड 2632, सूचकांक पंक्ति 1323मे जवाहर लाल कश्यपक “स्ट्रेस बस्टर” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नारी-पुरुष सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७१०. (A) माइक डॉट — सूचकांक पंक्ति 1324मे फागुलाल साहुक प्रविष्टि “माइक डॉट” रूपमे देल अछि।
७११. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७१२. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
७१३. (D) प्रेरणादायी — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेरणादायी” अछि।
७१४. (A) प्रेरणादायी — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेरणादायी” रूपमे देखाइत अछि।
७१५. (B) लेखक फागुलाल साहु, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
७१६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७१७. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
७१८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७१९. (B) खण्ड 2633, सूचकांक पंक्ति 1324मे फागुलाल साहुक “माइक डॉट” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “प्रेरणादायी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७२०. (A) ललियाएल मुँह — सूचकांक पंक्ति 1325मे अखिलेश मण्डलक प्रविष्टि “ललियाएल मुँह” रूपमे देल अछि।
७२१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७२२. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।
७२३. (D) व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “व्यंग्य” अछि।
७२४. (A) व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।
७२५. (B) लेखक अखिलेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
७२६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७२७. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
७२८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७२९. (B) खण्ड 2634, सूचकांक पंक्ति 1325मे अखिलेश मण्डलक “ललियाएल मुँह” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७३०. (A) सरकारीए नौकरी किए? — सूचकांक पंक्ति 1326मे बिपिन कुमार कर्ण 'करण'क प्रविष्टि “सरकारीए नौकरी किए?” रूपमे देल अछि।
७३१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७३२. (C) कथा/साक्षात्कार — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा/साक्षात्कार” अछि।
७३३. (D) बिहारक सरकारी नौकरीक मोह — टिप्पणीक पहिल संकेत “बिहारक सरकारी नौकरीक मोह” अछि।
७३४. (A) बिहारक सरकारी नौकरीक मोह — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बिहारक सरकारी नौकरीक मोह” रूपमे देखाइत अछि।

७३५. (B) लेखक बिपिन कुमार कर्ण 'करण', विधा गद्य, उप-विधा कथा/साक्षात्कार — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
७३६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७३७. (D) ई पाठ कथा/साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
७३८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७३९. (B) खण्ड 2635, सूचकांक पंक्ति 1326मे बिपिन कुमार कर्ण 'करण'क “सरकारी नौकरी किए?” प्रविष्टि गद्य, कथा/साक्षात्कार आ “बिहारक सरकारी नौकरीक मोह” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७४०. (A) हरिया इन्सपेक्टर — सूचकांक पंक्ति 1327मे बेचन ठाकुरक प्रविष्टि “हरिया इन्सपेक्टर” रूपमे देल अछि।
७४१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७४२. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।
७४३. (D) व्यवस्था पर व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “व्यवस्था पर व्यंग्य” अछि।
७४४. (A) व्यवस्था पर व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “व्यवस्था पर व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।
७४५. (B) लेखक बेचन ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
७४६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७४७. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
७४८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७४९. (B) खण्ड 2636, सूचकांक पंक्ति 1327मे बेचन ठाकुरक “हरिया इन्सपेक्टर” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “व्यवस्था पर व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७५०. (A) एकन्त — सूचकांक पंक्ति 1328मे संजय कुमार मण्डलक प्रविष्टि “एकन्त” रूपमे देल अछि।
७५१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७५२. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
७५३. (D) गरीबी — टिप्पणीक पहिल संकेत “गरीबी” अछि।
७५४. (A) गरीबी — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गरीबी” रूपमे देखाइत अछि।
७५५. (B) लेखक संजय कुमार मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
७५६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७५७. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
७५८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७५९. (B) खण्ड 2637, सूचकांक पंक्ति 1328मे संजय कुमार मण्डलक “एकन्त” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “गरीबी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७६०. (A) स्कूलक फीस — सूचकांक पंक्ति 1329मे ललन कुमार कामतक प्रविष्टि “स्कूलक फीस” रूपमे देल अछि।
७६१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७६२. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।
७६३. (D) गरीबी — टिप्पणीक पहिल संकेत “गरीबी” अछि।
७६४. (A) गरीबी — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गरीबी” रूपमे देखाइत अछि।

७६५. (B) लेखक ललन कुमार कामत, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
७६६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७६७. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
७६८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७६९. (B) खण्ड 2638, सूचकांक पंक्ति 1329मे ललन कुमार कामतक “स्कूलक फीस” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “गरीबी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७७०. (A) सफरनामा — सूचकांक पंक्ति 1330मे ललन कुमार कामतक प्रविष्टि “सफरनामा” रूपमे देल अछि।
७७१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७७२. (C) यात्रा-वृत्तान्त — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “यात्रा-वृत्तान्त” अछि।
७७३. (D) 'सगर राति' यात्राक रोचक विवरण — टिप्पणीक पहिल संकेत “'सगर राति' यात्राक रोचक विवरण” अछि।
७७४. (A) 'सगर राति' यात्राक रोचक विवरण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “'सगर राति' यात्राक रोचक विवरण” रूपमे देखाइत अछि।
७७५. (B) लेखक ललन कुमार कामत, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
७७६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७७७. (D) ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
७७८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७७९. (B) खण्ड 2639, सूचकांक पंक्ति 1330मे ललन कुमार कामतक “सफरनामा” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “'सगर राति' यात्राक रोचक विवरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७८०. (A) बेटी — सूचकांक पंक्ति 1331मे ललन कुमार कामतक प्रविष्टि “बेटी” रूपमे देल अछि।
७८१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७८२. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
७८३. (D) पिता-पुत्री सम्बन्ध — टिप्पणीक पहिल संकेत “पिता-पुत्री सम्बन्ध” अछि।
७८४. (A) पिता-पुत्री सम्बन्ध — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पिता-पुत्री सम्बन्ध” रूपमे देखाइत अछि।
७८५. (B) लेखक ललन कुमार कामत, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
७८६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७८७. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
७८८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७८९. (B) खण्ड 2640, सूचकांक पंक्ति 1331मे ललन कुमार कामतक “बेटी” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “पिता-पुत्री सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७९०. (A) छुट्टी भड गेले (बाल कविता) — सूचकांक पंक्ति 1332मे जगदानंद झा 'मनु'क प्रविष्टि “छुट्टी भड गेले (बाल कविता)” रूपमे देल अछि।
७९१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७९२. (C) बाल कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल कविता” अछि।
७९३. (D) बाल-मनोविज्ञान — टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल-मनोविज्ञान” अछि।
७९४. (A) बाल-मनोविज्ञान — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल-मनोविज्ञान” रूपमे देखाइत अछि।

७९५. (B) लेखक जगदानंद झा 'मनु', विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
७९६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७९७. (D) ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
७९८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७९९. (B) खण्ड 2641, सूचकांक पंक्ति 1332मे जगदानंद झा 'मनु'क “छुट्टी भड गेले (बाल कविता)” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “बाल-मनोविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८००. (A) प्रकृति (बाल कविता) — सूचकांक पंक्ति 1333मे जगदानंद झा 'मनु'क प्रविष्टि “प्रकृति (बाल कविता)” रूपमे देल अछि।
८०१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८०२. (C) बाल कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल कविता” अछि।
८०३. (D) प्रकृति-वर्णन — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रकृति-वर्णन” अछि।
८०४. (A) प्रकृति-वर्णन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रकृति-वर्णन” रूपमे देखाइत अछि।
८०५. (B) लेखक जगदानंद झा 'मनु', विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
८०६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८०७. (D) ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
८०८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८०९. (B) खण्ड 2642, सूचकांक पंक्ति 1333मे जगदानंद झा 'मनु'क “प्रकृति (बाल कविता)” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “प्रकृति-वर्णन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८१०. (A) किछु गजल (बहुते) — सूचकांक पंक्ति 1334मे जगदानंद झा 'मनु'क प्रविष्टि “किछु गजल (बहुते)” रूपमे देल अछि।
८११. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८१२. (C) गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।
८१३. (D) शृंगार — टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार” अछि।
८१४. (A) शृंगार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।
८१५. (B) लेखक जगदानंद झा 'मनु', विधा पद्य, उप-विधा गजल — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
८१६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८१७. (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
८१८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८१९. (B) खण्ड 2643, सूचकांक पंक्ति 1334मे जगदानंद झा 'मनु'क “किछु गजल (बहुते)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८२०. (A) भवित गजल — सूचकांक पंक्ति 1335मे जगदानंद झा 'मनु'क प्रविष्टि “भवित गजल” रूपमे देल अछि।
८२१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८२२. (C) गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।
८२३. (D) भक्ति — टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति” अछि।
८२४. (A) भक्ति — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भक्ति” रूपमे देखाइत अछि।

८२५. (B) लेखक जगदानंद झा 'मनु', विधा पद्य, उप-विधा गजल — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
८२६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८२७. (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
८२८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८२९. (B) खण्ड 2644, सूचकांक पंक्ति 1335मे जगदानंद झा 'मनु'क “भवित गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “भक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८३०. (A) प्रेमक बुन्नी — सूचकांक पंक्ति 1336मे नीतीश कर्णक प्रविष्टि “प्रेमक बुन्नी” रूपमे देल अछि।
८३१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८३२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
८३३. (D) प्रेम — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम” अछि।
८३४. (A) प्रेम — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।
८३५. (B) लेखक नीतीश कर्ण, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
८३६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८३७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
८३८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८३९. (B) खण्ड 2645, सूचकांक पंक्ति 1336मे नीतीश कर्णक “प्रेमक बुन्नी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८४०. (A) कोना सुनाबु — सूचकांक पंक्ति 1337मे नीतीश कर्णक प्रविष्टि “कोना सुनाबु” रूपमे देल अछि।
८४१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८४२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
८४३. (D) प्रेम — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम” अछि।
८४४. (A) प्रेम — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।
८४५. (B) लेखक नीतीश कर्ण, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
८४६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८४७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
८४८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८४९. (B) खण्ड 2646, सूचकांक पंक्ति 1337मे नीतीश कर्णक “कोना सुनाबु” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८५०. (A) जिनगी — सूचकांक पंक्ति 1338मे बिनीता झाक प्रविष्टि “जिनगी” रूपमे देल अछि।
८५१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८५२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
८५३. (D) जीवन-दर्शन — टिप्पणीक पहिल संकेत “जीवन-दर्शन” अछि।
८५४. (A) जीवन-दर्शन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जीवन-दर्शन” रूपमे देखाइत अछि।
८५५. (B) लेखक बिनीता झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

८५६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८५७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
८५८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८५९. (B) खण्ड 2647, सूचकांक पंक्ति 1338मे बिनीता झाक “जिनगी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जीवन-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८६०. (A) किछु पाँति राधाकृष्ण सरकार लेल — सूचकांक पंक्ति 1339मे बिनीता झाक प्रविष्टि “किछु पाँति राधाकृष्ण सरकार लेल” रूपमे देल अछि।
८६१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८६२. (C) भजन — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भजन” अछि।
८६३. (D) आध्यात्मिकता — टिप्पणीक पहिल संकेत “आध्यात्मिकता” अछि।
८६४. (A) आध्यात्मिकता — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आध्यात्मिकता” रूपमे देखाइत अछि।
८६५. (B) लेखक बिनीता झा, विधा पद्य, उप-विधा भजन — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
८६६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८६७. (D) ई पाठ भजनक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
८६८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८६९. (B) खण्ड 2648, सूचकांक पंक्ति 1339मे बिनीता झाक “किछु पाँति राधाकृष्ण सरकार लेल” प्रविष्टि पद्य, भजन आ “आध्यात्मिकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८७०. (A) पैसा एतड कमा रहल छी — सूचकांक पंक्ति 1340मे विन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “पैसा एतड कमा रहल छी” रूपमे देल अछि।
८७१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८७२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
८७३. (D) प्रवासी मजदूरक पीड़ा — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रवासी मजदूरक पीड़ा” अछि।
८७४. (A) प्रवासी मजदूरक पीड़ा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रवासी मजदूरक पीड़ा” रूपमे देखाइत अछि।
८७५. (B) लेखक विन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
८७६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८७७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
८७८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८७९. (B) खण्ड 2649, सूचकांक पंक्ति 1340मे विन्देश्वर ठाकुरक “पैसा एतड कमा रहल छी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रवासी मजदूरक पीड़ा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८८०. (A) एना मनाएब एहिबेरक दशै — सूचकांक पंक्ति 1341मे विन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “एना मनाएब एहिबेरक दशै” रूपमे देल अछि।
८८१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८८२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
८८३. (D) नेपाल — टिप्पणीक पहिल संकेत “नेपाल” अछि।
८८४. (A) नेपाल — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नेपाल” रूपमे देखाइत अछि।
८८५. (B) लेखक विन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
८८६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

८८७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
८८८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८८९. (B) खण्ड 2650, सूचकांक पंक्ति 1341मे विन्देश्वर ठाकुरक “एना मनाएब एहिबेरक दशै” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८९०. (A) गजल, गजल सन, गीत (बहुते) — सूचकांक पंक्ति 1342मे विन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “गजल, गजल सन, गीत (बहुते)” रूपमे देल अछि।
८९१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८९२. (C) गजल/गीत — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल/गीत” अछि।
८९३. (D) प्रेम — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम” अछि।
८९४. (A) प्रेम — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।
८९५. (B) लेखक विन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा गजल/गीत — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
८९६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८९७. (D) ई पाठ गजल/गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
८९८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८९९. (B) खण्ड 2651, सूचकांक पंक्ति 1342मे विन्देश्वर ठाकुरक “गजल, गजल सन, गीत (बहुते)” प्रविष्टि पद्य, गजल/गीत आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
९००. (A) भेटब दोसर दिवालीमे — सूचकांक पंक्ति 1343मे विन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “भेटब दोसर दिवालीमे” रूपमे देल अछि।
९०१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
९०२. (C) गीत — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।
९०३. (D) सांस्कृतिक — टिप्पणीक पहिल संकेत “सांस्कृतिक” अछि।
९०४. (A) सांस्कृतिक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सांस्कृतिक” रूपमे देखाइत अछि।
९०५. (B) लेखक विन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा गीत — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
९०६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
९०७. (D) ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
९०८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
९०९. (B) खण्ड 2652, सूचकांक पंक्ति 1343मे विन्देश्वर ठाकुरक “भेटब दोसर दिवालीमे” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “सांस्कृतिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
९१०. (A) छठिक शुभकामना — सूचकांक पंक्ति 1344मे विन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “छठिक शुभकामना” रूपमे देल अछि।
९११. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
९१२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
९१३. (D) लोक-आस्था — टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक-आस्था” अछि।
९१४. (A) लोक-आस्था — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक-आस्था” रूपमे देखाइत अछि।
९१५. (B) लेखक विन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
९१६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
९१७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

११८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
११९. (B) खण्ड 2653, सूचकांक पंक्ति 1344मे विन्देश्वर ठाकुरक “छठिक शुभकामना” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “लोक-आस्था” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१२०. (A) रक्षाबन्धन — सूचकांक पंक्ति 1345मे विन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “रक्षाबन्धन” रूपमे देल अछि।
१२१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१२२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
१२३. (D) भाई-बहिनक प्रेम — टिप्पणीक पहिल संकेत “भाई-बहिनक प्रेम” अछि।
१२४. (A) भाई-बहिनक प्रेम — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाई-बहिनक प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।
१२५. (B) लेखक विन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१२६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१२७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१२८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१२९. (B) खण्ड 2654, सूचकांक पंक्ति 1345मे विन्देश्वर ठाकुरक “रक्षाबन्धन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भाई-बहिनक प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१३०. (A) अहा किये कनलौ? — सूचकांक पंक्ति 1346मे विन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “अहा किये कनलौ?” रूपमे देल अछि।
१३१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१३२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
१३३. (D) प्रेम — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम” अछि।
१३४. (A) प्रेम — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।
१३५. (B) लेखक विन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१३६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१३७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१३८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१३९. (B) खण्ड 2655, सूचकांक पंक्ति 1346मे विन्देश्वर ठाकुरक “अहा किये कनलौ?” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१४०. (A) ललकार — सूचकांक पंक्ति 1347मे विन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “ललकार” रूपमे देल अछि।
१४१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१४२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
१४३. (D) सामाजिक जागरण — टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक जागरण” अछि।
१४४. (A) सामाजिक जागरण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक जागरण” रूपमे देखाइत अछि।
१४५. (B) लेखक विन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१४६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१४७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१४८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१४९. (B) खण्ड 2656, सूचकांक पंक्ति 1347मे विन्देश्वर ठाकुरक “ललकार” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक जागरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१५०. (A) पूसिक शान — सूचकांक पंक्ति 1348मे विन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “पूसिक शान” रूपमे देल अछि।
१५१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१५२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
१५३. (D) देशभक्ति — टिप्पणीक पहिल संकेत “देशभक्ति” अछि।
१५४. (A) देशभक्ति — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “देशभक्ति” रूपमे देखाइत अछि।
१५५. (B) लेखक विन्देश्वर ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१५६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१५७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१५८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१५९. (B) खण्ड 2657, सूचकांक पंक्ति 1348मे विन्देश्वर ठाकुरक “पूसिक शान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “देशभक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१६०. (A) हम बुरबकहा — सूचकांक पंक्ति 1349मे पंकज झाक प्रविष्टि “हम बुरबकहा” रूपमे देल अछि।
१६१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१६२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
१६३. (D) सामाजिक विसंगति — टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक विसंगति” अछि।
१६४. (A) सामाजिक विसंगति — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक विसंगति” रूपमे देखाइत अछि।
१६५. (B) लेखक पंकज झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१६६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१६७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१६८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१६९. (B) खण्ड 2658, सूचकांक पंक्ति 1349मे पंकज झाक “हम बुरबकहा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक विसंगति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१७०. (A) खुशीके नोर — सूचकांक पंक्ति 1350मे बेचन महलोक प्रविष्टि “खुशीके नोर” रूपमे देल अछि।
१७१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१७२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
१७३. (D) सामाजिक समरसता — टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक समरसता” अछि।
१७४. (A) सामाजिक समरसता — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक समरसता” रूपमे देखाइत अछि।
१७५. (B) लेखक बेचन महतो, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१७६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१७७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१७८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१७९. (B) खण्ड 2659, सूचकांक पंक्ति 1350मे बेचन महतोक “खुशीके नोर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक समरसता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१८०. (A) आउ हमसब एक हउ — सूचकांक पंक्ति 1351मे बेचन महतोक प्रविष्टि “आउ हमसब एक हउ” रूपमे देल अछि।
१८१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१८२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
१८३. (D) एकता — टिप्पणीक पहिल संकेत “एकता” अछि।
१८४. (A) एकता — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एकता” रूपमे देखाइत अछि।
१८५. (B) लेखक बेचन महतो, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१८६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१८७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१८८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१८९. (B) खण्ड 2660, सूचकांक पंक्ति 1351मे बेचन महतोक “आउ हमसब एक हउ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “एकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१९०. (A) सपनाके बिज — सूचकांक पंक्ति 1352मे बेचन महतोक प्रविष्टि “सपनाके बिज” रूपमे देल अछि।
१९१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१९२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
१९३. (D) स्वप्न — टिप्पणीक पहिल संकेत “स्वप्न” अछि।
१९४. (A) स्वप्न — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्वप्न” रूपमे देखाइत अछि।
१९५. (B) लेखक बेचन महतो, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१९६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१९७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१९८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१९९. (B) खण्ड 2661, सूचकांक पंक्ति 1352मे बेचन महतोक “सपनाके बिज” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “स्वप्न” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१०००. (A) हजल (बहुते) — सूचकांक पंक्ति 1353मे कृन्दन कृमार कर्णक प्रविष्टि “हजल (बहुते)” रूपमे देल अछि।
१००१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१००२. (C) गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।
१००३. (D) शृंगार — टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार” अछि।
१००४. (A) शृंगार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।
१००५. (B) लेखक कृन्दन कृमार कर्ण, विधा पद्य, उप-विधा गजल — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१००६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१००७. (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

१००८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१००९. (B) खण्ड 2662, सूचकांक पंक्ति 1353मे कृन्दन कृमार कर्णक “हजल (बहुते)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१०१०. (A) किछु बाल गजल — सूचकांक पंक्ति 1354मे कृन्दन कृमार कर्णक प्रविष्टि “किछु बाल गजल” रूपमे देल अछि।
१०११. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१०१२. (C) बाल गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल गजल” अछि।
१०१३. (D) बाल-मनोरंजन — टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल-मनोरंजन” अछि।
१०१४. (A) बाल-मनोरंजन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल-मनोरंजन” रूपमे देखाइत अछि।
१०१५. (B) लेखक कृन्दन कृमार कर्ण, विधा पद्य, उप-विधा बाल गजल — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१०१६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१०१७. (D) ई पाठ बाल गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१०१८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१०१९. (B) खण्ड 2663, सूचकांक पंक्ति 1354मे कृन्दन कृमार कर्णक “किछु बाल गजल” प्रविष्टि पद्य, बाल गजल आ “बाल-मनोरंजन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१०२०. (A) किछु गजल — सूचकांक पंक्ति 1355मे कृन्दन कृमार कर्णक प्रविष्टि “किछु गजल” रूपमे देल अछि।
१०२१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१०२२. (C) गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।
१०२३. (D) शृंगार — टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार” अछि।
१०२४. (A) शृंगार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।
१०२५. (B) लेखक कृन्दन कृमार कर्ण, विधा पद्य, उप-विधा गजल — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१०२६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१०२७. (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१०२८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१०२९. (B) खण्ड 2664, सूचकांक पंक्ति 1355मे कृन्दन कृमार कर्णक “किछु गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१०३०. (A) जलवायु परिवर्तन — सूचकांक पंक्ति 1356मे बिनीत ठाकुरक प्रविष्टि “जलवायु परिवर्तन” रूपमे देल अछि।
१०३१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१०३२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
१०३३. (D) पर्यावरण चेतना — टिप्पणीक पहिल संकेत “पर्यावरण चेतना” अछि।
१०३४. (A) पर्यावरण चेतना — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पर्यावरण चेतना” रूपमे देखाइत अछि।
१०३५. (B) लेखक बिनीत ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१०३६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१०३७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

१०३८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१०३९. (B) खण्ड 2665, सूचकांक पंक्ति 1356मे बिनीत ठाकुरक “जलवायु परिवर्तन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पर्यावरण चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१०४०. (A) किछु रुबाइ — सूचकांक पंक्ति 1357मे राम कृमार मिश्रक प्रविष्टि “किछु रुबाइ” रूपमे देल अछि।
१०४१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१०४२. (C) रुबाइ — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रुबाइ” अछि।
१०४३. (D) सामाजिक यथार्थ — टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक यथार्थ” अछि।
१०४४. (A) सामाजिक यथार्थ — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक यथार्थ” रूपमे देखाइत अछि।
१०४५. (B) लेखक राम कृमार मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा रुबाइ — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१०४६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१०४७. (D) ई पाठ रुबाइक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१०४८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१०४९. (B) खण्ड 2666, सूचकांक पंक्ति 1357मे राम कृमार मिश्रक “किछु रुबाइ” प्रविष्टि पद्य, रुबाइ आ “सामाजिक यथार्थ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१०५०. (A) किछु गजल — सूचकांक पंक्ति 1358मे राम कृमार मिश्रक प्रविष्टि “किछु गजल” रूपमे देल अछि।
१०५१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१०५२. (C) गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।
१०५३. (D) सामाजिक — टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक” अछि।
१०५४. (A) सामाजिक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक” रूपमे देखाइत अछि।
१०५५. (B) लेखक राम कृमार मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा गजल — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१०५६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१०५७. (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१०५८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१०५९. (B) खण्ड 2667, सूचकांक पंक्ति 1358मे राम कृमार मिश्रक “किछु गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “सामाजिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१०६०. (A) प्रियतम — सूचकांक पंक्ति 1359मे सत्य नारायण झाक प्रविष्टि “प्रियतम” रूपमे देल अछि।
१०६१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१०६२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
१०६३. (D) प्रेम — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम” अछि।
१०६४. (A) प्रेम — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।
१०६५. (B) लेखक सत्य नारायण झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१०६६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१०६७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१०६८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१०६९. (B) खण्ड 2668, सूचकांक पंक्ति 1359मे सत्य नारायण झाक “प्रियतम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१०७०. (A) व्यथित मोन — सूचकांक पंक्ति 1360मे सत्य नारायण झाक प्रविष्टि “व्यथित मोन” रूपमे देल अछि।
१०७१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१०७२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
१०७३. (D) आन्तरिक वेदना — टिप्पणीक पहिल संकेत “आन्तरिक वेदना” अछि।
१०७४. (A) आन्तरिक वेदना — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आन्तरिक वेदना” रूपमे देखाइत अछि।
१०७५. (B) लेखक सत्य नारायण झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१०७६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१०७७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१०७८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१०७९. (B) खण्ड 2669, सूचकांक पंक्ति 1360मे सत्य नारायण झाक “व्यथित मोन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आन्तरिक वेदना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१०८०. (A) मोनक बात — सूचकांक पंक्ति 1361मे सत्य नारायण झाक प्रविष्टि “मोनक बात” रूपमे देल अछि।
१०८१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१०८२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
१०८३. (D) दार्शनिक — टिप्पणीक पहिल संकेत “दार्शनिक” अछि।
१०८४. (A) दार्शनिक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दार्शनिक” रूपमे देखाइत अछि।
१०८५. (B) लेखक सत्य नारायण झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१०८६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१०८७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१०८८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१०८९. (B) खण्ड 2670, सूचकांक पंक्ति 1361मे सत्य नारायण झाक “मोनक बात” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दार्शनिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१०९०. (A) साजन — सूचकांक पंक्ति 1362मे श्याम शेखर झाक प्रविष्टि “साजन” रूपमे देल अछि।
१०९१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१०९२. (C) कविता/गीत — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता/गीत” अछि।
१०९३. (D) प्रकृति — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रकृति” अछि।
१०९४. (A) प्रकृति — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रकृति” रूपमे देखाइत अछि।
१०९५. (B) लेखक श्याम शेखर झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता/गीत — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१०९६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१०९७. (D) ई पाठ कविता/गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१०९८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१०९९. (B) खण्ड 2671, सूचकांक पंक्ति 1362मे श्याम शेखर झाक “साजन” प्रविष्टि पद्य, कविता/गीत आ “प्रकृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
११००. (A) जुनि बिसरू — सूचकांक पंक्ति 1363मे पंकज चौधरी 'नवलश्री'क प्रविष्टि “जुनि बिसरू” रूपमे देल अछि।
११०१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
११०२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
११०३. (D) ग्रामीण जीवन — टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण जीवन” अछि।
११०४. (A) ग्रामीण जीवन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण जीवन” रूपमे देखाइत अछि।
११०५. (B) लेखक पंकज चौधरी 'नवलश्री', विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
११०६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
११०७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
११०८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
११०९. (B) खण्ड 2672, सूचकांक पंक्ति 1363मे पंकज चौधरी 'नवलश्री'क “जुनि बिसरू” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ग्रामीण जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१११०. (A) किष्ठ गजल (बहुते) — सूचकांक पंक्ति 1364मे अमित मिश्रक प्रविष्टि “किष्ठ गजल (बहुते)” रूपमे देल अछि।
११११. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१११२. (C) गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।
१११३. (D) शृंगार — टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार” अछि।
१११४. (A) शृंगार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।
१११५. (B) लेखक अमित मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा गजल — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१११६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१११७. (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१११८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१११९. (B) खण्ड 2673, सूचकांक पंक्ति 1364मे अमित मिश्रक “किष्ठ गजल (बहुते)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
११२०. (A) मंजिल — सूचकांक पंक्ति 1365मे कंचन कुमारी झाक प्रविष्टि “मंजिल” रूपमे देल अछि।
११२१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
११२२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
११२३. (D) प्रेरणादायी — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेरणादायी” अछि।
११२४. (A) प्रेरणादायी — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेरणादायी” रूपमे देखाइत अछि।
११२५. (B) लेखक कंचन कुमारी झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
११२६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
११२७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

११२८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
११२९. (B) खण्ड 2674, सूचकांक पंक्ति 1365मे कंचन कुमारी झाक “मंजिल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेरणादायी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
११३०. (A) हे माय तोरा प्रणाम — सूचकांक पंक्ति 1366मे संजय झाक प्रविष्टि “हे माय तोरा प्रणाम” रूपमे देल अछि।
११३१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
११३२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
११३३. (D) मातृ-वन्दना — टिप्पणीक पहिल संकेत “मातृ-वन्दना” अछि।
११३४. (A) मातृ-वन्दना — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मातृ-वन्दना” रूपमे देखाइत अछि।
११३५. (B) लेखक संजय झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
११३६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
११३७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
११३८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
११३९. (B) खण्ड 2675, सूचकांक पंक्ति 1366मे संजय झाक “हे माय तोरा प्रणाम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मातृ-वन्दना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
११४०. (A) नमरीक भाउ तेहेन ने दरकल — सूचकांक पंक्ति 1367मे शारदा नन्द सिंहक प्रविष्टि “नमरीक भाउ तेहेन ने दरकल” रूपमे देल अछि।
११४१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
११४२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
११४३. (D) राजनीतिक व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनीतिक व्यंग्य” अछि।
११४४. (A) राजनीतिक व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनीतिक व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।
११४५. (B) लेखक शारदा नन्द सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
११४६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
११४७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
११४८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
११४९. (B) खण्ड 2676, सूचकांक पंक्ति 1367मे शारदा नन्द सिंहक “नमरीक भाउ तेहेन ने दरकल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “राजनीतिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
११५०. (A) अयोग्य शासक — सूचकांक पंक्ति 1368मे शारदा नन्द सिंहक प्रविष्टि “अयोग्य शासक” रूपमे देल अछि।
११५१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
११५२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
११५३. (D) राजनीतिक व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनीतिक व्यंग्य” अछि।
११५४. (A) राजनीतिक व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनीतिक व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।
११५५. (B) लेखक शारदा नन्द सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
११५६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
११५७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

११५८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
११५९. (B) खण्ड 2677, सूचकांक पंक्ति 1368मे शारदा नन्द सिंहक “अयोग्य शासक” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “राजनीतिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
११६०. (A) चिरकि जाएब — सूचकांक पंक्ति 1369मे शारदा नन्द सिंहक प्रविष्टि “चिरकि जाएब” रूपमे देल अछि।
११६१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
११६२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
११६३. (D) जीवन-क्षणभंगुरता — टिप्पणीक पहिल संकेत “जीवन-क्षणभंगुरता” अछि।
११६४. (A) जीवन-क्षणभंगुरता — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जीवन-क्षणभंगुरता” रूपमे देखाइत अछि।
११६५. (B) लेखक शारदा नन्द सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
११६६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
११६७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
११६८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
११६९. (B) खण्ड 2678, सूचकांक पंक्ति 1369मे शारदा नन्द सिंहक “चिरकि जाएब” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जीवन-क्षणभंगुरता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
११७०. (A) भूमिजा भैया — सूचकांक पंक्ति 1370मे शारदा नन्द सिंहक प्रविष्टि “भूमिजा भैया” रूपमे देल अछि।
११७१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
११७२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
११७३. (D) सामाजिक सम्बन्ध — टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक सम्बन्ध” अछि।
११७४. (A) सामाजिक सम्बन्ध — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक सम्बन्ध” रूपमे देखाइत अछि।
११७५. (B) लेखक शारदा नन्द सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
११७६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
११७७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
११७८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
११७९. (B) खण्ड 2679, सूचकांक पंक्ति 1370मे शारदा नन्द सिंहक “भूमिजा भैया” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
११८०. (A) अर्थशास्त्र — सूचकांक पंक्ति 1371मे अरुण चन्द्र रायक प्रविष्टि “अर्थशास्त्र” रूपमे देल अछि।
११८१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
११८२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
११८३. (D) आर्थिक विडम्बना — टिप्पणीक पहिल संकेत “आर्थिक विडम्बना” अछि।
११८४. (A) आर्थिक विडम्बना — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आर्थिक विडम्बना” रूपमे देखाइत अछि।
११८५. (B) लेखक अरुण चन्द्र राय, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
११८६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
११८७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

११८८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
११८९. (B) खण्ड 2680, सूचकांक पंक्ति 1371मे अरुण चन्द्र रायक “अर्थशास्त्र” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आर्थिक विडम्बना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
११९०. (A) संग अहाँक पाबि — सूचकांक पंक्ति 1372मे इरा मलिलकक प्रविष्टि “संग अहाँक पाबि” रूपमे देल अछि।
११९१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
११९२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
११९३. (D) प्रेम — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम” अछि।
११९४. (A) प्रेम — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।
११९५. (B) लेखक इरा मलिलक, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
११९६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
११९७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
११९८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
११९९. (B) खण्ड 2681, सूचकांक पंक्ति 1372मे इरा मलिलकक “संग अहाँक पाबि” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१२००. (A) किष्ठ गजल — सूचकांक पंक्ति 1373मे इरा मलिलकक प्रविष्टि “किष्ठ गजल” रूपमे देल अछि।
१२०१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१२०२. (C) गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।
१२०३. (D) शृंगार — टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार” अछि।
१२०४. (A) शृंगार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।
१२०५. (B) लेखक इरा मलिलक, विधा पद्य, उप-विधा गजल — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१२०६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१२०७. (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१२०८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१२०९. (B) खण्ड 2682, सूचकांक पंक्ति 1373मे इरा मलिलकक “किष्ठ गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१२१०. (A) गीत (श्रुनार) — सूचकांक पंक्ति 1374मे इरा मलिलकक प्रविष्टि “गीत (श्रुनार)” रूपमे देल अछि।
१२११. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१२१२. (C) गीत — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।
१२१३. (D) शृंगार — टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार” अछि।
१२१४. (A) शृंगार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।
१२१५. (B) लेखक इरा मलिलक, विधा पद्य, उप-विधा गीत — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१२१६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१२१७. (D) ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१२१८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१२१९. (B) खण्ड 2683, सूचकांक पंक्ति 1374मे इरा मलिलकक “गीत (शुनार)” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१२२०. (A) सूर्जक पहिल किरण — सूचकांक पंक्ति 1375मे इरा मलिलकक प्रविष्टि “सूर्जक पहिल किरण” रूपमे देल अछि।
१२२१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१२२२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
१२२३. (D) प्रेम — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम” अछि।
१२२४. (A) प्रेम — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।
१२२५. (B) लेखक इरा मलिलक, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१२२६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१२२७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१२२८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१२२९. (B) खण्ड 2684, सूचकांक पंक्ति 1375मे इरा मलिलकक “सूर्जक पहिल किरण” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१२३०. (A) पोसुआ कूकूर — सूचकांक पंक्ति 1376मे सुरेन्द्र शैलक प्रविष्टि “पोसुआ कूकूर” रूपमे देल अछि।
१२३१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१२३२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
१२३३. (D) व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “व्यंग्य” अछि।
१२३४. (A) व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।
१२३५. (B) लेखक सुरेन्द्र शैल, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१२३६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१२३७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१२३८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१२३९. (B) खण्ड 2685, सूचकांक पंक्ति 1376मे सुरेन्द्र शैलक “पोसुआ कूकूर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१२४०. (A) दीनक दुदंशा — सूचकांक पंक्ति 1377मे रसिक लाल सदायक प्रविष्टि “दीनक दुदंशा” रूपमे देल अछि।
१२४१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१२४२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
१२४३. (D) सामाजिक — टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक” अछि।
१२४४. (A) सामाजिक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक” रूपमे देखाइत अछि।
१२४५. (B) लेखक रसिक लाल सदाय, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१२४६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१२४७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

१२४८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१२४९. (B) खण्ड 2686, सूचकांक पंक्ति 1377मे रसिक लाल सदायक “दीनक दुदंशा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१२५०. (A) अनुभव — सूचकांक पंक्ति 1378मे रसिक लाल सदायक प्रविष्टि “अनुभव” रूपमे देल अछि।
१२५१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१२५२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
१२५३. (D) जीवन-अनुभव — टिप्पणीक पहिल संकेत “जीवन-अनुभव” अछि।
१२५४. (A) जीवन-अनुभव — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जीवन-अनुभव” रूपमे देखाइत अछि।
१२५५. (B) लेखक रसिक लाल सदाय, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१२५६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१२५७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१२५८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१२५९. (B) खण्ड 2687, सूचकांक पंक्ति 1378मे रसिक लाल सदायक “अनुभव” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जीवन-अनुभव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१२६०. (A) स्कूल गीत — सूचकांक पंक्ति 1379मे रसिक लाल सदायक प्रविष्टि “स्कूल गीत” रूपमे देल अछि।
१२६१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१२६२. (C) गीत — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।
१२६३. (D) शिक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “शिक्षा” अछि।
१२६४. (A) शिक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शिक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
१२६५. (B) लेखक रसिक लाल सदाय, विधा पद्य, उप-विधा गीत — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१२६६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१२६७. (D) ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१२६८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१२६९. (B) खण्ड 2688, सूचकांक पंक्ति 1379मे रसिक लाल सदायक “स्कूल गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “शिक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१२७०. (A) सपना — सूचकांक पंक्ति 1380मे महेश झा 'डखरामी'क प्रविष्टि “सपना” रूपमे देल अछि।
१२७१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१२७२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
१२७३. (D) शृंगार — टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार” अछि।
१२७४. (A) शृंगार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।
१२७५. (B) लेखक महेश झा 'डखरामी', विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१२७६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१२७७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

१२७८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१२७९. (B) खण्ड 2689, सूचकांक पंक्ति 1380मे महेश झा 'डखरामी'क “सपना” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१२८०. (A) उनटा बसात — सूचकांक पंक्ति 1381मे महेश झा 'डखरामी'क प्रविष्टि “उनटा बसात” रूपमे देल अछि।
१२८१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१२८२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
१२८३. (D) सामाजिक व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक व्यंग्य” अछि।
१२८४. (A) सामाजिक व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।
१२८५. (B) लेखक महेश झा 'डखरामी', विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१२८६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१२८७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१२८८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१२८९. (B) खण्ड 2690, सूचकांक पंक्ति 1381मे महेश झा 'डखरामी'क “उनटा बसात” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१२९०. (A) अनुराग — सूचकांक पंक्ति 1382मे महेश झा 'डखरामी'क प्रविष्टि “अनुराग” रूपमे देल अछि।
१२९१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१२९२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
१२९३. (D) प्रेम — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम” अछि।
१२९४. (A) प्रेम — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।
१२९५. (B) लेखक महेश झा 'डखरामी', विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१२९६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१२९७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१२९८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१२९९. (B) खण्ड 2691, सूचकांक पंक्ति 1382मे महेश झा 'डखरामी'क “अनुराग” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१३००. (A) राधे श्याम — सूचकांक पंक्ति 1383मे महेश झा 'डखरामी'क प्रविष्टि “राधे श्याम” रूपमे देल अछि।
१३०१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१३०२. (C) भजन — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भजन” अछि।
१३०३. (D) भक्ति — टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति” अछि।
१३०४. (A) भक्ति — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भक्ति” रूपमे देखाइत अछि।
१३०५. (B) लेखक महेश झा 'डखरामी', विधा पद्य, उप-विधा भजन — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१३०६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१३०७. (D) ई पाठ भजनक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

१३०८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१३०९. (B) खण्ड 2692, सूचकांक पंक्ति 1383मे महेश झा 'डखरामी'क “राधे श्याम” प्रविष्टि पद्य, भजन आ “भक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१३१०. (A) बेटी — सूचकांक पंक्ति 1384मे महेश झा 'डखरामी'क प्रविष्टि “बेटी” रूपमे देल अछि।
१३११. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१३१२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
१३१३. (D) नारी-जीवन — टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी-जीवन” अछि।
१३१४. (A) नारी-जीवन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी-जीवन” रूपमे देखाइत अछि।
१३१५. (B) लेखक महेश झा 'डखरामी', विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१३१६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१३१७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१३१८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१३१९. (B) खण्ड 2693, सूचकांक पंक्ति 1384मे महेश झा 'डखरामी'क “बेटी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी-जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१३२०. (A) मनोदगार — सूचकांक पंक्ति 1385मे महेश झा 'डखरामी'क प्रविष्टि “मनोदगार” रूपमे देल अछि।
१३२१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१३२२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
१३२३. (D) प्रेम — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम” अछि।
१३२४. (A) प्रेम — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।
१३२५. (B) लेखक महेश झा 'डखरामी', विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१३२६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१३२७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१३२८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१३२९. (B) खण्ड 2694, सूचकांक पंक्ति 1385मे महेश झा 'डखरामी'क “मनोदगार” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१३३०. (A) क्रोध — सूचकांक पंक्ति 1386मे महेश झा 'डखरामी'क प्रविष्टि “क्रोध” रूपमे देल अछि।
१३३१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१३३२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
१३३३. (D) रौद्र रस — टिप्पणीक पहिल संकेत “रौद्र रस” अछि।
१३३४. (A) रौद्र रस — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रौद्र रस” रूपमे देखाइत अछि।
१३३५. (B) लेखक महेश झा 'डखरामी', विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१३३६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१३३७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

१३३८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१३३९. (B) खण्ड 2695, सूचकांक पंक्ति 1386मे महेश झा 'डखरामी'क “क्रोध” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “रौद्र रस” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१३४०. (A) छैडत मैय्या — सूचकांक पंक्ति 1387मे महेश झा 'डखरामी'क प्रविष्टि “छैडत मैय्या” रूपमे देल अछि।
१३४१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१३४२. (C) भजन — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भजन” अछि।
१३४३. (D) भक्ति — टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति” अछि।
१३४४. (A) भक्ति — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भक्ति” रूपमे देखाइत अछि।
१३४५. (B) लेखक महेश झा 'डखरामी', विधा पद्य, उप-विधा भजन — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१३४६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१३४७. (D) ई पाठ भजनक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१३४८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१३४९. (B) खण्ड 2696, सूचकांक पंक्ति 1387मे महेश झा 'डखरामी'क “छैडत मैय्या” प्रविष्टि पद्य, भजन आ “भक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१३५०. (A) नारी — सूचकांक पंक्ति 1388मे महेश झा 'डखरामी'क प्रविष्टि “नारी” रूपमे देल अछि।
१३५१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१३५२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
१३५३. (D) नारी-गरिमा — टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी-गरिमा” अछि।
१३५४. (A) नारी-गरिमा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी-गरिमा” रूपमे देखाइत अछि।
१३५५. (B) लेखक महेश झा 'डखरामी', विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१३५६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१३५७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१३५८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१३५९. (B) खण्ड 2697, सूचकांक पंक्ति 1388मे महेश झा 'डखरामी'क “नारी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी-गरिमा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१३६०. (A) दीयाबाती मनेलीं आली — सूचकांक पंक्ति 1389मे शेफालिका वर्माक प्रविष्टि “दीयाबाती मनेलीं आली” रूपमे देल अछि।
१३६१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१३६२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
१३६३. (D) दीपावली — टिप्पणीक पहिल संकेत “दीपावली” अछि।
१३६४. (A) दीपावली — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दीपावली” रूपमे देखाइत अछि।
१३६५. (B) लेखक शेफालिका वर्मा, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१३६६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१३६७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

१३६८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१३६९. (B) खण्ड 2698, सूचकांक पंक्ति 1389मे शेफालिका वर्माक “दीयाबाती मनेलौं आली” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दीपावली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१३७०. (A) जहिना करब ओहिना पाएब — सूचकांक पंक्ति 1390मे केलाशक प्रविष्टि “जहिना करब ओहिना पाएब” रूपमे देल अछि।
१३७१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१३७२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
१३७३. (D) पारिवारिक — टिप्पणीक पहिल संकेत “पारिवारिक” अछि।
१३७४. (A) पारिवारिक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पारिवारिक” रूपमे देखाइत अछि।
१३७५. (B) लेखक केलाश, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१३७६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१३७७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१३७८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१३७९. (B) खण्ड 2699, सूचकांक पंक्ति 1390मे केलाशक “जहिना करब ओहिना पाएब” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पारिवारिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१३८०. (A) गिरवी — सूचकांक पंक्ति 1391मे संतोष कुमार राय 'चंदू'क प्रविष्टि “गिरवी” रूपमे देल अछि।
१३८१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१३८२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
१३८३. (D) गरीबी — टिप्पणीक पहिल संकेत “गरीबी” अछि।
१३८४. (A) गरीबी — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गरीबी” रूपमे देखाइत अछि।
१३८५. (B) लेखक संतोष कुमार राय 'चंदू', विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१३८६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१३८७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१३८८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१३८९. (B) खण्ड 2700, सूचकांक पंक्ति 1391मे संतोष कुमार राय 'चंदू'क “गिरवी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “गरीबी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१३९०. (A) प्रधानमंत्री के छथि? — सूचकांक पंक्ति 1392मे संतोष कुमार राय 'चंदू'क प्रविष्टि “प्रधानमंत्री के छथि?” रूपमे देल अछि।
१३९१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१३९२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
१३९३. (D) राजनीतिक व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनीतिक व्यंग्य” अछि।
१३९४. (A) राजनीतिक व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनीतिक व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।
१३९५. (B) लेखक संतोष कुमार राय 'चंदू', विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१३९६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१३९७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

१३९८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१३९९. (B) खण्ड 2701, सूचकांक पंक्ति 1392मे संतोष कुमार राय 'चंदू'क “प्रधानमंत्री के छथि?” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “राजनीतिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१४००. (A) ओजोन — सूचकांक पंक्ति 1393मे डॉ. शिशधर कुमार 'विदेह'क प्रविष्टि “ओजोन” रूपमे देल अछि।
१४०१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१४०२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
१४०३. (D) विज्ञान चेतना — टिप्पणीक पहिल संकेत “विज्ञान चेतना” अछि।
१४०४. (A) विज्ञान चेतना — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विज्ञान चेतना” रूपमे देखाइत अछि।
१४०५. (B) लेखक डॉ. शिशधर कुमार 'विदेह', विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१४०६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१४०७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१४०८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१४०९. (B) खण्ड 2702, सूचकांक पंक्ति 1393मे डॉ. शिशधर कुमार 'विदेह'क “ओजोन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “विज्ञान चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१४१०. (A) प्रदूषण — सूचकांक पंक्ति 1394मे डॉ. शिशधर कुमार 'विदेह'क प्रविष्टि “प्रदूषण” रूपमे देल अछि।
१४११. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१४१२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
१४१३. (D) पर्यावरण — टिप्पणीक पहिल संकेत “पर्यावरण” अछि।
१४१४. (A) पर्यावरण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पर्यावरण” रूपमे देखाइत अछि।
१४१५. (B) लेखक डॉ. शिशधर कुमार 'विदेह', विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१४१६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१४१७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१४१८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१४१९. (B) खण्ड 2703, सूचकांक पंक्ति 1394मे डॉ. शिशधर कुमार 'विदेह'क “प्रदूषण” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पर्यावरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१४२०. (A) गजल — सूचकांक पंक्ति 1395मे राजीव रंजन मिश्रक प्रविष्टि “गजल” रूपमे देल अछि।
१४२१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१४२२. (C) गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।
१४२३. (D) शृंगार — टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार” अछि।
१४२४. (A) शृंगार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।
१४२५. (B) लेखक राजीव रंजन मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा गजल — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१४२६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१४२७. (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

१४२८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१४२९. (B) खण्ड 2704, सूचकांक पंक्ति 1395मे राजीव रंजन मिश्रक “गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१४३०. (A) गजल (भवक्त गजल) — सूचकांक पंक्ति 1396मे स्व. कविवर सीताराम झाक प्रविष्टि “गजल (भवक्त गजल)” रूपमे देल अछि।
१४३१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१४३२. (C) गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।
१४३३. (D) भक्ति — टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति” अछि।
१४३४. (A) भक्ति — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भक्ति” रूपमे देखाइत अछि।
१४३५. (B) लेखक स्व. कविवर सीताराम झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१४३६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१४३७. (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१४३८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१४३९. (B) खण्ड 2705, सूचकांक पंक्ति 1396मे स्व. कविवर सीताराम झाक “गजल (भवक्त गजल)” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “भक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१४४०. (A) घोरमठा राजनैतिक — सूचकांक पंक्ति 1397मे अब्दुर रज्जाकक प्रविष्टि “घोरमठा राजनैतिक” रूपमे देल अछि।
१४४१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१४४२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
१४४३. (D) नेपाल — टिप्पणीक पहिल संकेत “नेपाल” अछि।
१४४४. (A) नेपाल — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नेपाल” रूपमे देखाइत अछि।
१४४५. (B) लेखक अब्दुर रज्जाक, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१४४६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१४४७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१४४८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१४४९. (B) खण्ड 2706, सूचकांक पंक्ति 1397मे अब्दुर रज्जाकक “घोरमठा राजनैतिक” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१४५०. (A) बीर जबान — सूचकांक पंक्ति 1398मे किशन कारीरक प्रविष्टि “बीर जबान” रूपमे देल अछि।
१४५१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१४५२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
१४५३. (D) देशभक्ति — टिप्पणीक पहिल संकेत “देशभक्ति” अछि।
१४५४. (A) देशभक्ति — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “देशभक्ति” रूपमे देखाइत अछि।
१४५५. (B) लेखक किशन कारीर, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१४५६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१४५७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

१४५८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१४५९. (B) खण्ड 2707, सूचकांक पंक्ति 1398मे किशन कारीरक “बीर जबान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “देशभक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१४६०. (A) बारूद के ढेड़ी पर बैसि — सूचकांक पंक्ति 1399मे किशन कारीरक प्रविष्टि “बारूद के ढेड़ी पर बैसि” रूपमे देल अछि।
१४६१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१४६२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
१४६३. (D) आतंकवाद विरोधी — टिप्पणीक पहिल संकेत “आतंकवाद विरोधी” अछि।
१४६४. (A) आतंकवाद विरोधी — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आतंकवाद विरोधी” रूपमे देखाइत अछि।
१४६५. (B) लेखक किशन कारीर, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१४६६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१४६७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१४६८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१४६९. (B) खण्ड 2708, सूचकांक पंक्ति 1399मे किशन कारीरक “बारूद के ढेड़ी पर बैसि” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आतंकवाद विरोधी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१४७०. (A) गजल सन किछु — सूचकांक पंक्ति 1400मे किशन कारीरक प्रविष्टि “गजल सन किछु” रूपमे देल अछि।
१४७१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१४७२. (C) गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।
१४७३. (D) प्रेम — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम” अछि।
१४७४. (A) प्रेम — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।
१४७५. (B) लेखक किशन कारीर, विधा पद्य, उप-विधा गजल — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१४७६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१४७७. (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१४७८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१४७९. (B) खण्ड 2709, सूचकांक पंक्ति 1400मे किशन कारीरक “गजल सन किछु” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१४८०. (A) शेर, रुबाइ (बहुते) — सूचकांक पंक्ति 1401मे प्रदीप पुष्पक प्रविष्टि “शेर, रुबाइ (बहुते)” रूपमे देल अछि।
१४८१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१४८२. (C) रुबाइ/गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रुबाइ/गजल” अछि।
१४८३. (D) शृंगार — टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार” अछि।
१४८४. (A) शृंगार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।
१४८५. (B) लेखक प्रदीप पुष्प, विधा पद्य, उप-विधा रुबाइ/गजल — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१४८६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१४८७. (D) ई पाठ रुबाइ/गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१४८८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१४८९. (B) खण्ड 2710, सूचकांक पंक्ति 1401मे प्रदीप पुष्पक “शेर, रुबाइ (बहुते)” प्रविष्टि पद्य, रुबाइ/गजल आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१४९०. (A) रुबाइ; कता; आजाद गजल; गीत (बहुते) — सूचकांक पंक्ति 1402मे मो. अशरफ राईनक प्रविष्टि “रुबाइ; कता; आजाद गजल; गीत (बहुते)” रूपमे देल अछि।
१४९१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१४९२. (C) गजल/रुबाइ/गीत — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल/रुबाइ/गीत” अछि।
१४९३. (D) नेपाल — टिप्पणीक पहिल संकेत “नेपाल” अछि।
१४९४. (A) नेपाल — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नेपाल” रूपमे देखाइत अछि।
१४९५. (B) लेखक मो. अशरफ राईन, विधा पद्य, उप-विधा गजल/रुबाइ/गीत — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१४९६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१४९७. (D) ई पाठ गजल/रुबाइ/गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१४९८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१४९९. (B) खण्ड 2711, सूचकांक पंक्ति 1402मे मो. अशरफ राईनक “रुबाइ; कता; आजाद गजल; गीत (बहुते)” प्रविष्टि पद्य, गजल/रुबाइ/गीत आ “नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१५००. (A) हेतार — सूचकांक पंक्ति 1403मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “हेतार” रूपमे देल अछि।
१५०१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१५०२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
१५०३. (D) प्रतीकात्मक — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रतीकात्मक” अछि।
१५०४. (A) प्रतीकात्मक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रतीकात्मक” रूपमे देखाइत अछि।
१५०५. (B) लेखक राजदेव मण्डल, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१५०६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१५०७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१५०८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१५०९. (B) खण्ड 2712, सूचकांक पंक्ति 1403मे राजदेव मण्डलक “हेतार” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रतीकात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१५१०. (A) अहि बेर देखि फागु — सूचकांक पंक्ति 1404मे सुनीति मोहन ठाकुरक प्रविष्टि “अहि बेर देखि फागु” रूपमे देल अछि।
१५११. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१५१२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
१५१३. (D) ऋतु-वर्णन — टिप्पणीक पहिल संकेत “ऋतु-वर्णन” अछि।
१५१४. (A) ऋतु-वर्णन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ऋतु-वर्णन” रूपमे देखाइत अछि।
१५१५. (B) लेखक सुनीति मोहन ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१५१६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१५१७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१५१८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१५१९. (B) खण्ड 2713, सूचकांक पंक्ति 1404मे सुनीति मोहन ठाकुरक “अहि बेर देखि फागु” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ऋतु-वर्णन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१५२०. (A) ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल — सूचकांक पंक्ति 1405मे नवहदनी पाठकक प्रविष्टि “ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल” रूपमे देल अछि।
१५२१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१५२२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
१५२३. (D) व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “व्यंग्य” अछि।
१५२४. (A) व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।
१५२५. (B) लेखक नवहदनी पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१५२६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१५२७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१५२८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१५२९. (B) खण्ड 2714, सूचकांक पंक्ति 1405मे नवहदनी पाठकक “ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१५३०. (A) गीत — छोटका किसान — सूचकांक पंक्ति 1406मे मो. सुभानक प्रविष्टि “गीत — छोटका किसान” रूपमे देल अछि।
१५३१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१५३२. (C) गीत — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।
१५३३. (D) किसान-जीवन — टिप्पणीक पहिल संकेत “किसान-जीवन” अछि।
१५३४. (A) किसान-जीवन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “किसान-जीवन” रूपमे देखाइत अछि।
१५३५. (B) लेखक मो. सुभान, विधा पद्य, उप-विधा गीत — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१५३६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१५३७. (D) ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१५३८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१५३९. (B) खण्ड 2715, सूचकांक पंक्ति 1406मे मो. सुभानक “गीत — छोटका किसान” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “किसान-जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१५४०. (A) पूर्णहिंदु नभांगनमे; फागुनक गीत — सूचकांक पंक्ति 1407मे शारदानन्द दास 'परिमल'क प्रविष्टि “पूर्णहिंदु नभांगनमे; फागुनक गीत” रूपमे देल अछि।
१५४१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१५४२. (C) कविता/गीत — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता/गीत” अछि।
१५४३. (D) आध्यात्मिक — टिप्पणीक पहिल संकेत “आध्यात्मिक” अछि।
१५४४. (A) आध्यात्मिक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आध्यात्मिक” रूपमे देखाइत अछि।
१५४५. (B) लेखक शारदानन्द दास 'परिमल', विधा पद्य, उप-विधा कविता/गीत — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१५४६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१५४७. (D) ई पाठ कविता/गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

१५४८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१५४९. (B) खण्ड 2716, सूचकांक पंक्ति 1407मे शारदानन्द दास 'परिमल'क “पूर्णहिंदु नभागनमे; फागुनक गीत” प्रविष्टि पद्य, कविता/गीत आ “आध्यात्मिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१५५०. (A) गजल (बहुते); बाल गजल — सूचकांक पंक्ति 1408मे योगानन्द हीराक प्रविष्टि “गजल (बहुते); बाल गजल” रूपमे देल अछि।
१५५१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१५५२. (C) गजल/बाल गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल/बाल गजल” अछि।
१५५३. (D) शृंगार — टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार” अछि।
१५५४. (A) शृंगार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।
१५५५. (B) लेखक योगानन्द हीरा, विधा पद्य, उप-विधा गजल/बाल गजल — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१५५६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१५५७. (D) ई पाठ गजल/बाल गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१५५८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१५५९. (B) खण्ड 2717, सूचकांक पंक्ति 1408मे योगानन्द हीराक “गजल (बहुते); बाल गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल/बाल गजल आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१५६०. (A) बाल गजल; शेर; कता — सूचकांक पंक्ति 1409मे विमिहर झाक प्रविष्टि “बाल गजल; शेर; कता” रूपमे देल अछि।
१५६१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१५६२. (C) गजल/कता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल/कता” अछि।
१५६३. (D) बाल-साहित्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल-साहित्य” अछि।
१५६४. (A) बाल-साहित्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल-साहित्य” रूपमे देखाइत अछि।
१५६५. (B) लेखक विमिहर झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल/कता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१५६६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१५६७. (D) ई पाठ गजल/कताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१५६८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१५६९. (B) खण्ड 2718, सूचकांक पंक्ति 1409मे विमिहर झाक “बाल गजल; शेर; कता” प्रविष्टि पद्य, गजल/कता आ “बाल-साहित्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१५७०. (A) चारुभर पसरल अछि; बाल गीत; होरीक गीत — सूचकांक पंक्ति 1410मे वृषेश चन्द्र लालक प्रविष्टि “चारुभर पसरल अछि; बाल गीत; होरीक गीत” रूपमे देल अछि।
१५७१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१५७२. (C) गीत/कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत/कविता” अछि।
१५७३. (D) प्रकृति — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रकृति” अछि।
१५७४. (A) प्रकृति — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रकृति” रूपमे देखाइत अछि।
१५७५. (B) लेखक वृषेश चन्द्र लाल, विधा पद्य, उप-विधा गीत/कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१५७६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१५७७. (D) ई पाठ गीत/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१५७८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१५७९. (B) खण्ड 2719, सूचकांक पंक्ति 1410मे वृषेश चन्द्र लालक “चारुभर पसरल अछि; बाल गीत; होरीक गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत/कविता आ “प्रकृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१५८०. (A) हाइकू/शेनयूट; तानका (बहुते); शोक सभा; काल-चक्र; हमर अपन कविता — सूचकांक पंक्ति 1411मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि “हाइकू/शेनयूट; तानका (बहुते); शोक सभा; काल-चक्र; हमर अपन कविता” रूपमे देल अछि।
१५८१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१५८२. (C) हाइकू/तानका/कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “हाइकू/तानका/कविता” अछि।
१५८३. (D) प्रकृति — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रकृति” अछि।
१५८४. (A) प्रकृति — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रकृति” रूपमे देखाइत अछि।
१५८५. (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा पद्य, उप-विधा हाइकू/तानका/कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१५८६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१५८७. (D) ई पाठ हाइकू/तानका/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१५८८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१५८९. (B) खण्ड 2720, सूचकांक पंक्ति 1411मे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “हाइकू/शेनयूट; तानका (बहुते); शोक सभा; काल-चक्र; हमर अपन कविता” प्रविष्टि पद्य, हाइकू/तानका/कविता आ “प्रकृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१५९०. (A) रौ सिरगुनमा — सूचकांक पंक्ति 1412मे पम्मी प्रिया झाक प्रविष्टि “रौ सिरगुनमा” रूपमे देल अछि।
१५९१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१५९२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
१५९३. (D) सामाजिक विसंगति — टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक विसंगति” अछि।
१५९४. (A) सामाजिक विसंगति — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक विसंगति” रूपमे देखाइत अछि।
१५९५. (B) लेखक पम्मी प्रिया झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१५९६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१५९७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१५९८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१५९९. (B) खण्ड 2721, सूचकांक पंक्ति 1412मे पम्मी प्रिया झाक “रौ सिरगुनमा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक विसंगति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१६००. (A) दानग — सूचकांक पंक्ति 1413मे झा हेमन्त 'बापी'क प्रविष्टि “दानग” रूपमे देल अछि।
१६०१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१६०२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
१६०३. (D) दहेज प्रथा विरोधी — टिप्पणीक पहिल संकेत “दहेज प्रथा विरोधी” अछि।
१६०४. (A) दहेज प्रथा विरोधी — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दहेज प्रथा विरोधी” रूपमे देखाइत अछि।
१६०५. (B) लेखक झा हेमन्त 'बापी', विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१६०६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१६०७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१६०८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१६०९. (B) खण्ड 2722, सूचकांक पंक्ति 1413मे झा हेमन्त 'बापी'क “दानग” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दहेज प्रथा विरोधी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१६१०. (A) ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल — सूचकांक पंक्ति 1414मे नवहदनी पाठकक प्रविष्टि “ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल” रूपमे देल अछि।
१६११. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१६१२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
१६१३. (D) राजनीतिक व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनीतिक व्यंग्य” अछि।
१६१४. (A) राजनीतिक व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनीतिक व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।
१६१५. (B) लेखक नवहदनी पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१६१६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१६१७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१६१८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१६१९. (B) खण्ड 2723, सूचकांक पंक्ति 1414मे नवहदनी पाठकक “ई कोन हाथ? ई तऽ छाप भऽ गेल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “राजनीतिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 16क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१६२०. (A) गंगेश गुंजनक 'राधा'क दोसर खेप; मैथिली रिपोर्टाज। — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कें गंगेश गुंजनक 'राधा'क दोसर खेप; मैथिली रिपोर्टाज। सँ जोड़ैत अछि।
१६२१. (A) गंगेश गुंजनक 'राधा'क दोसर खेप; मैथिली रिपोर्टाज। — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।
१६२२. (A) गंगेश गुंजनक 'राधा'क दोसर खेप; मैथिली रिपोर्टाज। — सुरक्षित पठन स्रोत-सार गंगेश गुंजनक 'राधा'क दोसर खेप; मैथिली रिपोर्टाज। धरि सीमित रहैत अछि।
१६२३. (A) शीर्षक गंगेश गुंजनक 'राधा'क दोसर खेप; मैथिली रिपोर्टाज। दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।
१६२४. (A) गंगेश गुंजनक 'राधा'क दोसर खेप; मैथिली रिपोर्टाज। — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल गंगेश गुंजनक 'राधा'क दोसर खेप; मैथिली रिपोर्टाज। सँ बनैत अछि।
१६२५. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।
१६२६. (A) गंगेश गुंजनक 'राधा'क दोसर खेप; मैथिली रिपोर्टाज। — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ गंगेश गुंजनक 'राधा'क दोसर खेप; मैथिली रिपोर्टाज।क आधार पर ग्रहणीय अछि।
१६२७. (A) गंगेश गुंजनक 'राधा'क दोसर खेप; मैथिली रिपोर्टाज।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।
१६२८. (A) सम्पादकीयक रूप गंगेश गुंजनक 'राधा'क दोसर खेप; मैथिली रिपोर्टाज। कें स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।
१६२९. (A) उत्तरकें गंगेश गुंजनक 'राधा'क दोसर खेप; मैथिली रिपोर्टाज। धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।
१६३०. (A) भाषा-राजनीति; मलंगियाक सिंहासन-वक्तव्य। — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कें भाषा-राजनीति; मलंगियाक सिंहासन-वक्तव्य। सँ जोड़ैत अछि।
१६३१. (A) भाषा-राजनीति; मलंगियाक सिंहासन-वक्तव्य। — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।
१६३२. (A) भाषा-राजनीति; मलंगियाक सिंहासन-वक्तव्य। — सुरक्षित पठन स्रोत-सार भाषा-राजनीति; मलंगियाक सिंहासन-वक्तव्य। धरि सीमित रहैत अछि।

૧૬૩૩. (A) શીર્ષક ભાષા-રાજનીતિ; મલંગિયાક સિંહાસન-વક્તવ્ય। દિસ સંકેત કરૈત અછિ — શીર્ષક આ કથ્યક સમ્બન્ધ સ્રોત-સૂત્ર સँ પુષ્ટ હોઇત અછિ।

१६३४. (A) भाषा-राजनीति; मलंगियाक सिंहासन-वक्तव्य। — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल भाषा-राजनीति; मलंगियाक सिंहासन-वक्तव्य। सँ बनैत अछि।

૧૬૩૫. (A) સ્રોત-સારસં બાહર અપ્રમાણિત ઘટના જોડબ — એહિ quiz મે સ્રોત-બાદ્ય દાવા સ્વીકાર નહિ કયલ ગેલ।

१६३६. (A) भाषा-राजनीति; मलंगियाक सिंहासन-वक्तव्य। — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ भाषा-राजनीति; मलंगियाक सिंहासन-वक्तव्य। क आधार पर ग्रहणीय अछि।

१६३७. (A) भाषा-राजनीति; मलंगियाक सिंहासन-वक्तव्य।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

१६३८. (A) रिपोर्ताजक रूप भाषा-राजनीति; मलंगियाक सिंहासन-वक्तव्य। कै स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

१६३९. (A) उत्तरकें भाषा-राजनीति; मलंगियाक सिंहासन-वक्तव्य। धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

१६४०. (A) कम्प्युटर साक्षरता; सॉफ्टवेयर-हार्डवेयर सुझाव। — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ कम्प्युटर साक्षरता; सॉफ्टवेयर-हार्डवेयर सुझाव। सँ जोड़ैत अछि।

१६४१. (A) कम्प्युटर साक्षरता; सॉफ्टवेअर-हार्डवेअर सुझाव। — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

१६४२. (A) कम्प्युटर साक्षरता; सॉफ्टवेयर-हार्डवेयर सुझाव। — सुरक्षित पठन स्रोत-सार कम्प्युटर साक्षरता; सॉफ्टवेयर-हार्डवेयर सुझाव। धरि सीमित रहैत अछि।

१६४३. (A) शीर्षक कम्प्युटर साक्षरता; सॉफ्टवेयर-हार्डवेयर सुझाव। दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

१६४४. (A) कम्प्युटर साक्षरता; सॉफ्टवेयर-हार्डवेयर सुझाव। — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल कम्प्युटर साक्षरता; सॉफ्टवेयर-हार्डवेयर सुझाव। सँ बनैत अछि।

१६४५. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

१६४६. (A) कम्प्युटर साक्षरता; सॉफ्टवेयर-हार्डवेयर सुझाव। — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ कम्प्युटर साक्षरता; सॉफ्टवेयर-हार्डवेयर सुझाव। क आधार पर ग्रहणीय अछि।

१६४९. (A) कम्प्युटर साक्षरता; सॉफ्टवेयर-हार्डवेयर सुझाव।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

१६४८. (A) निबन्धक रूप कम्प्युटर साक्षरता; सॉफ्टवेयर-हार्डवेयर सुझाव। कै स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

१६४९. (A) उत्तरकें कम्प्युटर साक्षरता; सॉफ्टवेयर-हार्डवेयर सुझाव। धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

१६५०. (A) मौर्य-पालकालीन किलाक पुरातात्विक विवरण। — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ मौर्य-पालकालीन किलाक पुरातात्विक विवरण। सँ जोड़ैत अछि।

१६५१. (A) मौर्य-पालकालीन किलाक पुरातात्विक विवरण। — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

१६५२. (A) मौर्य-पालकालीन किलाक पुरातात्विक विवरण। — सुरक्षित पठन स्रोत-सार मौर्य-पालकालीन किलाक पुरातात्विक विवरण। धरि सीमित रहैत अछि।

૧૬૫૩. (A) શીર્ષક મૌર્ય-પાલકાલીન કિલાક પુરાતાત્વિક વિવરણ। દિસ સંકેત કરૈત અછિ — શીર્ષક આ કથ્યક સમ્બન્ધ સ્રોત-સૂત્ર સँ પુષ્ટ હોઇત અછિ।

१६५४. (A) मौर्य-पालकालीन किलाक पुरातात्विक विवरण। — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मौर्य-पालकालीन किलाक पुरातात्विक विवरण। सँ बनैत अछि।

१६५५. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

१६५६. (A) मौर्य-पालकालीन किलाक पुरातात्विक विवरण। — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मौर्य-पालकालीन किलाक पुरातात्विक विवरण।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

१६५७. (A) मौर्य-पालकालीन किलाक पुरातात्विक विवरण।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्वपूर्ण अछि।

१६५८. (A) शोध-निबन्धक रूप मौर्य-पालकालीन किलाक पुरातात्विक विवरण। केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

१६५९. (A) उत्तरकेँ मौर्य-पालकालीन किलाक परातात्विक विवरण। धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

१६९१. (A) कन्यादान, खट्टर ककाक समर्पण; कृति-सूची। — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

१६९२. (A) कन्यादान, खट्टर ककाक समर्पण; कृति-सूची। — सुरक्षित पठन स्रोत-सार कन्यादान, खट्टर ककाक समर्पण; कृति-सूची। धरि सीमित रहैत अछि।

૧૬૧૩. (A) શીર્ષક કન્યાદાન, ખટ્ટર કકાક સમર્પણ; કૃતિ-સૂચી। દિસ સંકેત કરૈત અછિ — શીર્ષક આ કથ્યક સમ્બન્ધ સ્રોત-સૂત્ર સँ પુષ્ટ હોઇત અછિ।

१६९४. (A) कन्यादान, खट्टर ककाक समर्पण; कृति-सूची। — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल कन्यादान, खट्टर ककाक समर्पण; कृति-सूची। सँ बनैत अछि।

१६९५. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

१६१६. (A) कन्यादान, खट्टर ककाक समर्पण; कृति-सूची। — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ कन्यादान, खट्टर ककाक समर्पण; कृति-सूची।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

१६१७. (A) कन्यादान, खट्टर ककाक समर्पण; कृति-सूची।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

१६९८. (A) शोध-निबन्धक रूप कन्यादान, खट्टर ककाक समर्पण; कृति-सूची। कै स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

१६९९. (A) उत्तरकँ कन्यादान, खट्टर ककाक समर्पण; कृति-सूची। धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

१७००. (A) बुजुर्गक उपेक्षा पर संवेदनशील टिप्पणी। — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ बुजुर्गक उपेक्षा पर संवेदनशील टिप्पणी। सँ जोड़ैत अछि।

१७०१. (A) बुजुर्गक उपेक्षा पर संवेदनशील टिप्पणी। — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

१७०२. (A) बुजुर्गक उपेक्षा पर संवेदनशील टिप्पणी। — सुरक्षित पठन स्रोत-सार बुजुर्गक उपेक्षा पर संवेदनशील टिप्पणी। धरि सीमित रहैत अछि।

१७०३. (A) शीर्षक बुजुर्गक उपेक्षा पर संवेदनशील टिप्पणी। दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पृष्ठ होइत अछि।

१७०४. (A) बुजुर्गक उपेक्षा पर संवेदनशील टिप्पणी। — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल बुजुर्गक उपेक्षा पर संवेदनशील टिप्पणी। सँ बनैत अछि।

१७०५. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

१७०६. (A) बुजुर्गक उपेक्षा पर संवेदनशील टिप्पणी। — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ बुजुर्गक उपेक्षा पर संवेदनशील टिप्पणी।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

१७०७. (A) बुजुर्गक उपेक्षा पर संवेदनशील टिप्पणी।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

१७०८. (A) सामाजिक लेखक रूप बुजुर्गक उपेक्षा पर संवेदनशील टिप्पणी। कैं स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

१७०९. (A) उत्तरकें बुजुर्गक उपेक्षा पर संवेदनशील टिप्पणी। धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

१७१०. (A) ज्वालामुखीक प्रतीकात्मकता; शब्द-अर्थक दर्शन। — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ ज्वालामुखीक प्रतीकात्मकता; शब्द-अर्थक दर्शन। सँ जोड़ैत अछि।

१७११. (A) ज्वालामुखीक प्रतीकात्मकता; शब्द-अर्थक दर्शन। — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

१७१२. (A) ज्वालामुखीक प्रतीकात्मकता; शब्द-अर्थक दर्शन। — सुरक्षित पठन स्रोत-सार ज्वालामुखीक प्रतीकात्मकता; शब्द-अर्थक दर्शन। धरि सीमित रहैत अछि।

१७१३. (A) शीर्षक ज्वालामुखीक प्रतीकात्मकता; शब्द-अर्थक दर्शन। दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

१७१४. (A) ज्वालामुखीक प्रतीकात्मकता; शब्द-अर्थक दर्शन। — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल ज्वालामुखीक प्रतीकात्मकता; शब्द-अर्थक दर्शन। सँ बनैत अछि।

१७१५. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोडब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

१७१६. (A) ज्वालामुखीक प्रतीकात्मकता; शब्द-अर्थक दर्शन। — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ ज्वालामुखीक प्रतीकात्मकता; शब्द-अर्थक दर्शन।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

१७१७. (A) ज्वालामुखीक प्रतीकात्मकता; शब्द-अर्थक दर्शनाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

१७१८. (A) पद्यक रूप ज्वालामुखीक प्रतीकात्मकता; शब्द-अर्थक दर्शन। कै स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

१७१९. (A) उत्तरकेँ ज्वालामुखीक प्रतीकात्मकता; शब्द-अर्थक दर्शन। धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

१७८४. (A) भीष्मक गेरुआ-प्रसंग; कर्णक सेनापत्य। — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल भीष्मक गेरुआ-प्रसंग; कर्णक सेनापत्य। सँ बनैत अछि।
१७८५. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।
१७८६. (A) भीष्मक गेरुआ-प्रसंग; कर्णक सेनापत्य। — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ भीष्मक गेरुआ-प्रसंग; कर्णक सेनापत्य।क आधार पर ग्रहणीय अछि।
१७८७. (A) भीष्मक गेरुआ-प्रसंग; कर्णक सेनापत्य।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।
१७८८. (A) पद्य-कथाक रूप भीष्मक गेरुआ-प्रसंग; कर्णक सेनापत्य। केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।
१७८९. (A) उत्तरकेँ भीष्मक गेरुआ-प्रसंग; कर्णक सेनापत्य। धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।
१७९०. (A) आचार्य-पाद-चतुष्टय; ऐतिहासिक सम्भाषण। — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ आचार्य-पाद-चतुष्टय; ऐतिहासिक सम्भाषण। सँ जोड़ैत अछि।
१७९१. (A) आचार्य-पाद-चतुष्टय; ऐतिहासिक सम्भाषण। — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।
१७९२. (A) आचार्य-पाद-चतुष्टय; ऐतिहासिक सम्भाषण। — सुरक्षित पठन स्रोत-सार आचार्य-पाद-चतुष्टय; ऐतिहासिक सम्भाषण। धरि सीमित रहैत अछि।
१७९३. (A) शीर्षक आचार्य-पाद-चतुष्टय; ऐतिहासिक सम्भाषण। दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।
१७९४. (A) आचार्य-पाद-चतुष्टय; ऐतिहासिक सम्भाषण। — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल आचार्य-पाद-चतुष्टय; ऐतिहासिक सम्भाषण। सँ बनैत अछि।
१७९५. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।
१७९६. (A) आचार्य-पाद-चतुष्टय; ऐतिहासिक सम्भाषण। — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ आचार्य-पाद-चतुष्टय; ऐतिहासिक सम्भाषण।क आधार पर ग्रहणीय अछि।
१७९७. (A) आचार्य-पाद-चतुष्टय; ऐतिहासिक सम्भाषण।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।
१७९८. (A) शिक्षाक रूप आचार्य-पाद-चतुष्टय; ऐतिहासिक सम्भाषण। केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।
१७९९. (A) उत्तरकेँ आचार्य-पाद-चतुष्टय; ऐतिहासिक सम्भाषण। धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।
१८००. (A) तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला पारम्परिक अरिपन। — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला पारम्परिक अरिपन। सँ जोड़ैत अछि।
१८०१. (A) तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला पारम्परिक अरिपन। — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।
१८०२. (A) तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला पारम्परिक अरिपन। — सुरक्षित पठन स्रोत-सार तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला पारम्परिक अरिपन। धरि सीमित रहैत अछि।
१८०३. (A) शीर्षक तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला पारम्परिक अरिपन। दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।
१८०४. (A) तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला पारम्परिक अरिपन। — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला पारम्परिक अरिपन। सँ बनैत अछि।
१८०५. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।
१८०६. (A) तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला पारम्परिक अरिपन। — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला पारम्परिक अरिपन। क आधार पर ग्रहणीय अछि।
१८०७. (A) तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला पारम्परिक अरिपन।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।
१८०८. (A) कलाक रूप तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला पारम्परिक अरिपन। केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।
१८०९. (A) उत्तरकेँ तुलसी-चौरा पर बनाओल जायबला पारम्परिक अरिपन। धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।
१८१०. (A) सप्तमातृका, दशमहाविद्या, चौसठ योगिनी। — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ सप्तमातृका, दशमहाविद्या, चौसठ योगिनी। सँ जोड़ैत अछि।
१८११. (A) सप्तमातृका, दशमहाविद्या, चौसठ योगिनी। — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

१८१२. (A) सप्तमातृका, दशमहाविद्या, चौसठ योगिनी। — सुरक्षित पठन स्रोत-सार सप्तमातृका, दशमहाविद्या, चौसठ योगिनी। धरि सीमित रहैत अछि।
१८१३. (A) शीर्षक सप्तमातृका, दशमहाविद्या, चौसठ योगिनी। दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।
१८१४. (A) सप्तमातृका, दशमहाविद्या, चौसठ योगिनी। — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल सप्तमातृका, दशमहाविद्या, चौसठ योगिनी। सँ बनैत अछि।
१८१५. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।
१८१६. (A) सप्तमातृका, दशमहाविद्या, चौसठ योगिनी। — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ सप्तमातृका, दशमहाविद्या, चौसठ योगिनी।क आधार पर ग्रहणीय अछि।
१८१७. (A) सप्तमातृका, दशमहाविद्या, चौसठ योगिनी।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्वपूर्ण अछि।
१८१८. (A) शोध-निबन्धक रूप सप्तमातृका, दशमहाविद्या, चौसठ योगिनी। कें स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।
१८१९. (A) उत्तरकें सप्तमातृका, दशमहाविद्या, चौसठ योगिनी। धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।
१८२०. (A) व्रत-कथा आ कुश-उपाटनक मंत्र। — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कें व्रत-कथा आ कुश-उपाटनक मंत्र। सँ जोड़ैत अछि।
१८२१. (A) व्रत-कथा आ कुश-उपाटनक मंत्र। — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।
१८२२. (A) व्रत-कथा आ कुश-उपाटनक मंत्र। — सुरक्षित पठन स्रोत-सार व्रत-कथा आ कुश-उपाटनक मंत्र। धरि सीमित रहैत अछि।
१८२३. (A) शीर्षक व्रत-कथा आ कुश-उपाटनक मंत्र। दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।
१८२४. (A) व्रत-कथा आ कुश-उपाटनक मंत्र। — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल व्रत-कथा आ कुश-उपाटनक मंत्र। सँ बनैत अछि।
१८२५. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।
१८२६. (A) व्रत-कथा आ कुश-उपाटनक मंत्र। — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ व्रत-कथा आ कुश-उपाटनक मंत्र।क आधार पर ग्रहणीय अछि।
१८२७. (A) व्रत-कथा आ कुश-उपाटनक मंत्र।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्वपूर्ण अछि।
१८२८. (A) निबन्धक रूप व्रत-कथा आ कुश-उपाटनक मंत्र। कें स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।
१८२९. (A) उत्तरकें व्रत-कथा आ कुश-उपाटनक मंत्र। धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।
१८३०. (A) शिव-स्तुति पर आधारित मैथिली बंदिशक स्वरलिपि। — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कें शिव-स्तुति पर आधारित मैथिली बंदिशक स्वरलिपि। सँ जोड़ैत अछि।
१८३१. (A) शिव-स्तुति पर आधारित मैथिली बंदिशक स्वरलिपि। — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।
१८३२. (A) शिव-स्तुति पर आधारित मैथिली बंदिशक स्वरलिपि। — सुरक्षित पठन स्रोत-सार शिव-स्तुति पर आधारित मैथिली बंदिशक स्वरलिपि। धरि सीमित रहैत अछि।
१८३३. (A) शीर्षक शिव-स्तुति पर आधारित मैथिली बंदिशक स्वरलिपि। दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।
१८३४. (A) शिव-स्तुति पर आधारित मैथिली बंदिशक स्वरलिपि। — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल शिव-स्तुति पर आधारित मैथिली बंदिशक स्वरलिपि। सँ बनैत अछि।
१८३५. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।
१८३६. (A) शिव-स्तुति पर आधारित मैथिली बंदिशक स्वरलिपि। — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ शिव-स्तुति पर आधारित मैथिली बंदिशक स्वरलिपि।क आधार पर ग्रहणीय अछि।
१८३७. (A) शिव-स्तुति पर आधारित मैथिली बंदिशक स्वरलिपि।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्वपूर्ण अछि।
१८३८. (A) संगीतक रूप शिव-स्तुति पर आधारित मैथिली बंदिशक स्वरलिपि। कें स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।
१८३९. (A) उत्तरकें शिव-स्तुति पर आधारित मैथिली बंदिशक स्वरलिपि। धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।
१८४०. (A) देवी-भक्त रघुनीक जादू-टोनासँ संघर्ष। — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कें देवी-भक्त रघुनीक जादू-टोनासँ संघर्ष। सँ जोड़ैत अछि।

१८४१. (A) देवी-भक्त रघुनीक जादू-टोनासँ संघर्ष। — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।
१८४२. (A) देवी-भक्त रघुनीक जादू-टोनासँ संघर्ष। — सुरक्षित पठन स्रोत-सार देवी-भक्त रघुनीक जादू-टोनासँ संघर्ष। धरि सीमित रहैत अछि।
१८४३. (A) शीर्षक देवी-भक्त रघुनीक जादू-टोनासँ संघर्ष। दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।
१८४४. (A) देवी-भक्त रघुनीक जादू-टोनासँ संघर्ष। — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल देवी-भक्त रघुनीक जादू-टोनासँ संघर्ष। सँ बनैत अछि।
१८४५. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।
१८४६. (A) देवी-भक्त रघुनीक जादू-टोनासँ संघर्ष। — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ देवी-भक्त रघुनीक जादू-टोनासँ संघर्ष।क आधार पर ग्रहणीय अछि।
१८४७. (A) देवी-भक्त रघुनीक जादू-टोनासँ संघर्ष।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्वपूर्ण अछि।
१८४८. (A) बाल-कथाक रूप देवी-भक्त रघुनीक जादू-टोनासँ संघर्ष। केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।
१८४९. (A) उत्तरकेँ देवी-भक्त रघुनीक जादू-टोनासँ संघर्ष। धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।